रघुवंशभाषा

अयोध्या के रघुवंशी राजाओं के चरित

महाकवि श्रीकालिदास के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ का
भाषा छन्दों में अनुवाद

श्रीअवधवासीभूपउपनाम
लाला सीताराम बी० ए०
का रचा हुआ

(FIFTH COMPLETE EDITION)

प्रकाशक,
नेशनल प्रेस-प्रयाग
सन् १९१९ ई०
मूल्य ॥)

PREFACE TO THE FIRST COMPLETE EDITION.

A hundred years have passed since Kalidasa was first brought to the notice of European scholars as the author of the beautiful Shakuntala, in the English translation of Sir William Jones. His works were studied and admired and his fame spread, till at the present moment he has been, by unanimous consent, assigned a very high place "among the glorious company of the Sons of Song."

His work Raghuvansa, of which a metrical Hindi version is now offered to the public, is, as Colebrooke remarked in 1808, " among the most admired compositions in the Sanskrit tongue." It contains "the history of Râma and of his predecessors and successors from Dilipa, father of Raghu, to Agnivarna, a slothful prince who was succeeded by his widow." The subject is a more suitable one for history than for poetry but the skill of the great master has added life and beauty to the commonest incidents in the lives of these extraordinary personages. "It is the most independent in character and on that account ranks next to the Ramayana." (Weber). " The adventures of Râma are here recounted with far greater spirit than by the sacred poets not excepting even Vâlmiki." (Colebrooke). " It abounds in trully poetical ideas and displays great fertility of imagination and power of description." (Monier-Williams.)

This work has been translated into most European languages. A Latin and a French translation I found in the Benares College Library. A metrical English version of selected pieces by Mr. Griffith, was published under the title of "Idylls from the Sanskrit" in 1868. The only Hindi translation that I know of, is one by Râjâ Lachhman

Singh. But as it is, in the main, a paraphrase in prose, the translation of each Sloka being printed against the original Sanskrit, it is obviously meant only to help students trying to learn Sanskrit. I have therefore ventured to publish the work in its present garb, having been encouraged by the reception given to my works from the moment of their first appearance. In preparing the present version, no pains have been spared to oust the spirits of paraphrase that pervades most works of the kind, and to render it as attractive as possible. Yet it will be admitted that to express the rich imagery of Kalidasa, even the inimitable sweetness of Sanskrit would fail, if manipulated by an inferior hand.

FYZABAD HIGH SCHOOL : }
15th September, 1892. }

SITARAM.
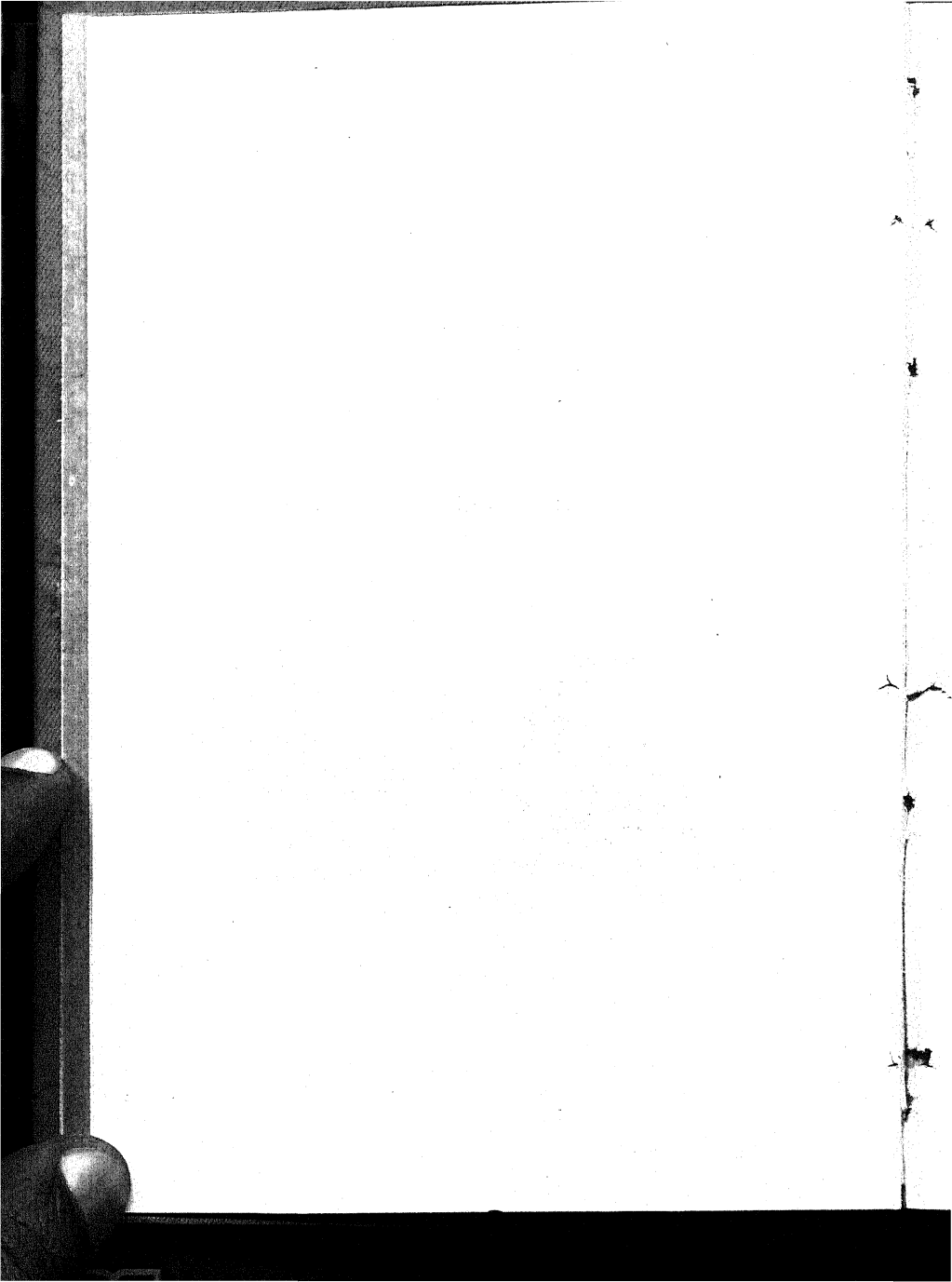
पाँचवीं आवृत्ति की भूमिका।

अवधपुरी सुखमाअवधि ता मधि स्वर्गद्वारि।
जगपावनि सरयू जहाँ बहत सुहावन वारि॥
तहाँ रह्यो कायस्थ इक श्री शिवरत्न उदार।
श्रीरघुपतिपद्कमल महँ ताकी भक्ति अपार॥
सियरघुवरयुगचरनरत तासुत सीताराम।
राशिनाम कवितासुगम धरत भूप उपनाम॥
कालिदास भवभूति जे भारत के कविराय।
रह्यो आनहूँ देस में जासु विमल जस छाय॥
लखे जिनहिँ रवि सम गनिय जग के कवि खद्योत।
जिनकी रचनाजोन्ह ढिग जग कविता तम होत॥
तिनके नाटक काव्य कर सियवरचरनप्रसाद।
भाषा छन्दन महँ रचे काशी महँ अनुवाद॥
रचि भाषा रघुवंश की शक मुनिनभवसुचन्द।
सात सर्ग सियवरचरित लह्यो प्रकासि अनन्द॥
सुखद रामश्रुतिन्दशशि संवत भादौं मास।
सात सर्ग रघुचरित के कीन्हें तहँहिँ प्रकास॥
शाके श्रुतिशशिधृति शरद हृदय राखि श्रीराम।
पूरन ग्रन्थ प्रकास किय वसि कोसलपुरधाम॥
लक्ष्मणपुर करि वास पुनि सोधी चौथी बार।
भानुवंश को सुजस यह कीन्ह लोकउपहार॥
पाँचवीं बार तेहि सोधि पुनि तीर्थराज करि बास।
करत प्रकास, पढ़ैं सु तेहि सज्जन सहित हुलास॥

प्रयाग,
भाद्र १९७९
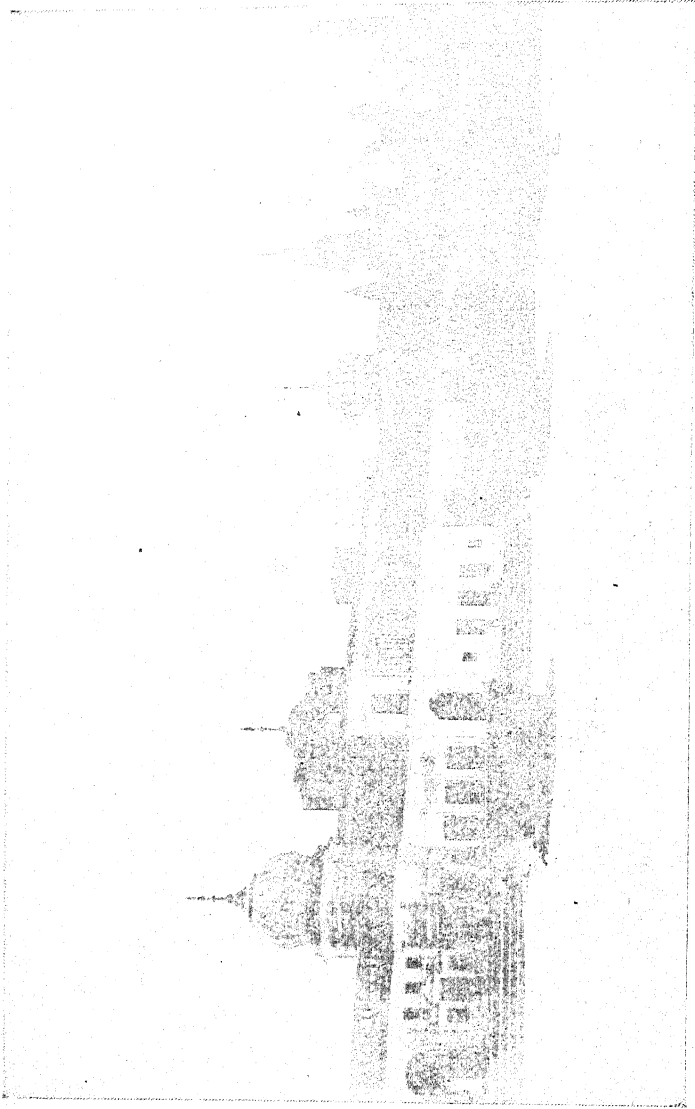
सीताराम।

अयोध्या । Front

॥ श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ॥

॥ श्रीरघुवंशभाषा ॥

पहिला सर्ग

राजा दिलीप का वसिष्ठ के आश्रम को जाना

जगत मातु पितु, नित मिले बानी अर्थ समान ।
बन्दौं बानी अर्थ हित पारबती भगवान ॥
कहँ मो मति अति थोरि कहँ दिनपतिबंस उदार ।
चहौं मनहुँ लघु तरनि चढ़ि चलन सिन्धु के पार ॥
अवसि ढिठाई निरखि मम हँसिहैं सुजन समाज ।
बौनहिं लपकत देखि ज्यों ऊँचे तरु फल काज ॥
लिखि कुलजस मो हित तदपि कीन्ह पूर्व कविलोग ।
द्वार बज्र सम रतन महँ सूत जान के जोग ॥
यह निज हिये बिचारि कै मैं कहिहौं अब गाय ।
दिनकरकुल के नृपन की सुन्दर कथा सुहाय ॥
सिन्धुतीर लौं कीन्ह जिन सदा अकण्टक राज ।
एक सिद्धिहि के हित रहे नित जिनके सब काज ॥
जन्मशुद्ध, जिनके चले नभ महँ यान अनूप ।
जाचक तोष्यो यज्ञ जिन कीन्ह बेद अनुरूप ॥

धन सिरज्यो जिन दान हित सुत हित कीन्ह विवाह ।
सत्य काज मित बात कहि जस हित बिजय उछाह ॥
वेदपढ़न किय बालपन, जोबन भोगविलास ।
तज्यो तनहि पुनि जोग सन लहि पीछे बनबास ॥
गुनग्राहक पण्डित सुनैं सोइ चरित्र मन लाय ।
सुवरन के गुन दोष सब आगिहि देत जनाय ॥
रह्यो आदि नृप विबुधगनमाननीय मनु नाम ।
छन्दन महँ ओंकार सम दिनकरसुत गुनधाम ॥
उपज्यो ताके बंस महँ एक दिलीप नरेस ।
नृपगनससि छीरोद सन मनहु विमल राकेस ॥
उठो कण्ठ, उर भुज बिपुल, सिर उन्नत जिमि साल ।
रही धर्म के जोग जनु ताकी देह बिसाल ॥
अतुल सार बल तेज सन जग नृपताप दुराय ।
रह्यो देह सन अवधपति, सुरगिरिछबि अधिकाय ॥
धरे बुद्धि आकार सम बुद्धि सरिस श्रुतिज्ञान ।
ज्ञान सरिस उद्योग अरु सिद्धि प्रयत्न समान ॥
रुचिर भयङ्कर गुन सहित जन्तु रत्न सन पूर ।
रह्यो भृत्य हित सिन्धु सम, खैंचत तट करि दूर ॥
भइ न धर्मपथ पर चलत नेकु प्रजागति बक्र ।
चतुर सारथी पाइ जिमि चलन यान के चक्र ॥
लीन्ह प्रजा सन शुल्क कर तिनहीं के हित काज ।
रस खैंचत जिमि देन हित गुन सहस्र दिनराज ॥
रहे एक नृप चीन्ह सम ताके दल चतुरङ्ग ।
करत अर्थ सब सिद्ध जब नृपनय चाप निषङ्ग ॥
धरत मन्त्र निज गुप्त सोइ निज मन भाव छिपाय ।
प्रगटायो निज यत्न नृप नित परिणाम जनाय ॥

ह्वै निसंक रक्षा करत धर्म लहत नीरोग।
बिना लोभ लै धन कियो बिन असक्ति सुख भोग॥
दियो यदपि बहु दान पै करत न कछु जस चाह।
क्षमासील यद्यपि रह्यो बीर अवधपुरनाह॥
सकल ज्ञान सम्पन्न तउँ रहे मौन नित राय।
गुन बिरुद्ध तेहि महँ भये एक संग जिमि संग पाय॥
जानत बेद अथाह सोइ रहि न विषय महँ लीन।
बिनहि बुढ़ापे के रह्यो वृद्ध नरेस प्रवीन॥
पालिपोसि रक्षा करत बिधिवत विनय सिखाय।
प्रजा पिता ह्वै पितन कहँ दीन्हों जनक बनाय॥
दंड्यो दोष न लोक हित सुत हित कीन्ह विवाह।
धर्म काज तेहि महँ रही अर्थ काम की चाह॥
तोष्यो हरि सोइ यज्ञ करि हरि तेहि जल बरसाय।
पाल्यो नभ महि इन्द्र नृप यहि बिधि प्रीति जनाय॥
प्रजापाल अवधेस जस लह्यो और नृप नाहिं।
नाममात्र हित रहि गई जब चोरी जग माहिं॥
सज्जन बैरिहु प्रिय रह्यो रुज महँ अगद समान।
तज्यो फनि-डसी अँगुरि सम दुष्ट बन्धु सन्धान॥
विरच्यो भूत समाधि सन कमलासन सो राज।
ताके गुन यहि हेतु सब रहे पराये काज॥
करि सागर खाई सरिस तटगिरि शहरपनाह।
एक पुरी सम अवनि पर कीन्ह राज नरनाह॥
मगधराजतनया रही तासु रानि गुनधाम।
यज्ञदक्षिणा के सरिस सोइ सुदक्षिणा नाम॥
यदपि अनेकन रानि तेहि तऊ नरेस महान।
तेहि अरु लछिमिहि नितलख्यो अवनि समान प्रधान॥

तेहि सन लहन उछाह महँ बालक निज अनुरूप ।
लखि बिलम्ब फल मिलन महँ दिन बितये बहु भूप ॥
सन्तति हेत उपाय सोइ वेगि करन हिय धारि ।
दीन्ह राजधुर अवधपति सचिवहि जोग बिचारि ॥
पूजि यथाबिधि बिधिहि दोउ गये पुत्र के काम ।
दम्पति दिनपतिवंशगुरु मुनि वशिष्ठ के धाम ॥
करत मधुर धुनि रथ सुभग चढ़े सहित अनुराग ।
जिमि वर्षा बादर चढ़त दामिनि औ सुरनाग ॥
लै सेवक कछु कहन हित 'जनि तपसिन दुख होय' ।
चले लगन सेनासहित निज प्रतापबस दोय ॥
चलत सालरस गन्ध मिलि बन तरु सकल हिलाय ।
अङ्ग लागि सुख देन हित मिली बाय मग आय ॥
सुनि स्यन्दन धुनि मधुर तहँ बदन उठाइ सुबानि ।
तिनहिं सुनायो मोर मग रुचिर बोलि दुइ खानि ॥
निकट मार्ग तजि भजत दोउ रथ दिसि दृष्टि लगाय ।
लखे मिथुन तहँ मृगन के निज दृग उपमा पाय ॥
बोलि मधुर बिन खम्भ के नभ तोरन की भाँति ।
मुख उठाय देखत चले कहुँ सारस की पाँति ॥
मुनि आश्रम दिसि चलन हित वायु सुमङ्गल मूरि ।
परी केश सरपेच नहिं उठि हय पद सन धूरि ॥
ह्वै सीतल जलसेक बस कमल सुगन्ध अनूप ।
चले लहत मग माहिं दोउ निज उसास अनुरूप ॥
मख हित अर्पित गाँव महँ चले होत अवनीस ।
अर्घ्य सहित पावत सफल नित यजमान असीस ॥
लै माखनउपहार तेहि मिले घोस तहँ आय ।
तिन सन पूँछत बन्य तरु नाम अवधपुरराय ॥

चलत दुहुन छवि किमि कहौं है उपमा अति मन्द।
मनहु शिशिर बीते चलत मिलि चित्रा अरु चन्द॥
दिखरावत वस्तुन प्रियहि सब बिचित्र मग माहिं।
कटिहु राह सोइ बुध सरिस भूपति जानी नाहिं॥
दुर्लभ कीरति जासु जग सोइ दिलीप नरपाल।
ऋषिआश्रम रानी सहित पहुँच्यो सायङ्काल॥
जहँ लौटत बनछोर सन लै घृत कुश फल मूर।
मिलत अगिन ह्वै अलख जेहि सोइ तपसिन से पूर॥
ऋषिनारिन के हाथ सन लेन हेत नीवार।
खड़े हरिन जहँ पुत्र सम रोकि कुटी के द्वार॥
पियन काज जहँ खगन के बनतरुथालन माहिं।
मुनिकन्या विश्वास हित जहँ जल भरि ढुरि जाहिं॥
धान छीलि जहँ न्यार कहँ अँगन देहिं छितराय।
गये धाम पागुर करत बैठे मृग जहँ आय॥
हव्यगन्ध सन यज्ञ के जहाँ धूम अँग डारि।
आश्रम दिसि आवत अतिथि पावन करत बयारि॥
"देहु हयन विश्राम" अस नृप सारथिहि सिखाय।
पतिनिहि प्रथम उतारिकै उतरे कोशलराय॥
सन्ध्याविधि के अन्त महँ लख्यो दिलीप महान।
अरुन्धती सँग मुनिहि जिमि स्वाहा सहित कृसान॥
तिन के पदपङ्कज गहे सादर राजा रानि।
कियो अनन्दित तिन दुहुन दै असीस सनमानि॥
करि विधिवत स्वागत तिनहिं मारग श्रमहि मिटाय।
राजधाममुनि सन कुसल तब पूछी मुनिराय॥
बस कीन्हे जिन लोक सब रिपुदल सकल सँहारि।
सोइ नृप श्रुतिनिधि सौंह तब बोले बचन बिचारि॥

"होइ कुसल मो राजमहँ केहि कारन नहिं नाथ।
जाकी दैविक मानुषिक बिपति हरन तव हाथ॥
बिनसत प्रभु तव मन्त्र बस दूरहि शत्रुसमाज।
दृश्यलक्ष्यघातक भए मो सायक बेकाज॥
वेदमन्त्र अनुरूप लहि हवि तुम सन मुनिधीर।
सुरगन सूखिहु सालि हित बरसावत नित नीर॥
बचे ईति सन सब जियत पूरे आयुद्वार।
सकल प्रजा सुख हेत सोइ प्रभु तव तेज अपार॥
ब्रह्मयोनि गुरु लेत सुधि यहि बिधि तुम प्रभु जासु।
होइ विघ्न केहि हेत कहु सम्पति रहै न तासु ?॥
देखे बिन तव दासि महँ संतति निज अनुरूप।
सुख न देत मोहिं महि यदपि धारत रतन अनूप॥
पिण्ड लोप समुझत लगे स्वधा बटोरन माहिं।
करत श्राद्ध महँ पितृगन मन भरि भोजन नाहिं॥
मो पाछे मानहुँ पितर दुर्लभ मिलन बिचारि।
पियत अजहुँ निज स्वाससन करत गरम नित बारि॥
यज्ञ होम बस शुद्धि लहि रहि पुनि बिन सन्तान।
भयों तेज बिन तेज सह लोकालोक समान॥
पुण्य तपस्या दान सब परलोकहि सुख देत।
होत शुद्धि सन्तति सदा जग अनन्द को हेत॥
तोहि न होत दुख नाथ कहु सो बिहीन मोहिं देखि।
निज सींचे अनुराग सन फलबिन तरु सम लेखि॥
सोचि पितर रिन होत मोहिं परम दुसह दुख जानु।
बिन न्हाये गजराज कहँ खम्भ सरिस अनुमानु॥
छूटों रिन सन भाँति जेहि अब सोइ करहु उपाय।
इक्ष्वाकुन सङ्कट परे तुमहीं होत सहाय"॥

सुनि यहि बिधि नरपति बचन नैन मूँदि धरि ध्यान।
एक छिन सोई मीन सँग रह्यो तड़ाग समान॥
भूपतिसन्ततिरोक कर जानि हेत मुनिदेव।
देखि लगाय समाधि पुनि कह्यो ताहि सब भेव॥
"एक समय महि दिसि चलत पूजि देवगननाह।
कामधेनु मग महँ रही खड़ी कलपतरु छाँह॥
ऋतुन्हाई रानिहि तबहिं अवधभूप हिय धारि।
कीन्ह न आदर तासु तुम धर्मबिनाश विचारि॥
दीन्ह स्राप तिन कोप करि "जो पूजेसि नहिं मोहि।
मो सन्तति पूजे बिना ह्वैहै पुत्र न तोहि" ॥
दान स्रवत दिग्गज नदत मन्दाकिनि जल माहिं।
सुन्यो स्राप सोइ शब्द महँ भूप सारथिहु नाहिं॥
लगत न सोइ अपमान बस मन वाँछित फल आज।
गुरुपूजा महँ चूक नित रोकत मङ्गल साज॥
कामधेनु पाताल महँ घृत आदिक के हेत।
फनि के रोके द्वार में रहत प्रचेतनिकेत॥
ताकी दुहितहि शुद्ध ह्वै प्रतिनिधि तासु बनाय।
पूजिय भए प्रसन्न सो देहैं फल नरराय" ॥
ज्यों कोशलपुरनाह सन यह बोले मुनिराय।
धेनु नन्दिनी नाम त्यों पहुँची वन सों आय॥
लखत मनहु सन्ध्या रुचिर नव पल्लवसी लाल।
स्वेत रङ्ग बाँका धरे ससि सम टीका भाल॥
बच्छ बिलोकत बहि चलो थन बिसाल सन छीर।
आश्रम महि पावन करत मनहुँ यज्ञ के नीर॥
ताके खुर सन उठत रज परत अवधपति गात।
होत शुद्ध सोइ मनहुँ कोउ तीरथ नीर नहात॥

निरखि तासु पावन बदन सगुन सुखद अनुमानि ।
सफल मनोरथ जाचकहि कही योगिबर बानि ॥
"जिय जानहु नृपकाज सब ह्वैहैं सिद्ध तुम्हार ।
नाम लेत पहुँची लखहु यह मङ्गलआगार ॥
कन्द मूल फल खाय अब रहि याके नित साथ ।
विद्या सम अभ्यास करि यहि मनाउ नरनाथ ॥
या बैठत बैठो धरनि चलत चलौ सँग लागि ।
खड़े ठाढ़ रहि, जल पियत पियहु नीर अनुरागि ॥
प्रात समय बन छोर लौं नित याके सँग जाहि ।
मिलै भक्ति सन नित बधू साँझ समय मग माँहि ॥
करि सेवा यहि तोषि नृप लहिहैा सुत बरदान ।
नसैं विघ्न तब पितन महँ होइय भूप प्रधान" ॥
चतुर शिष्य जानत सकल देश काल की नीति ।
सिर धरि गुरुअज्ञा लई रानी सहित सप्रीति ॥
अवधनृपहि बिधितनय मुनि समुझावत यहि भाँति ।
सोवन की आज्ञा दई गई कछुक जब राति ॥
रह्यो यदपि तप सिद्धि सन सब समरथ मुनिराय ।
तऊँ जानि ब्रत एक कुटी भूपहि दीन्ह बताय ॥
सुनि ऋषीश के बैन पर्णकुटी महँ जाइ नृप ।
कीन्ह दर्भ पर सैन पतिबरता रानी सहित ॥
भए प्रात नरनाह गुरु शिष्यन कर पाठ सुनि ।
उठे समेत उछाह दिवस काज निज हिये गुनि ॥

दूसरा सर्ग

नन्दनी का वरदान देना

भये प्रभात धेनु ढिग जाई। पूजि रानि माला पहिनाई॥
बच्छ पियाइ बाँधि तब राजा। खोल्यो ताहि चरावन काजा॥
परत धरनि गोचरन सुहावन। जो मग धूरि होत अति पावन॥
चली भूपतिय सोइ मगमाहीं। स्मृतश्रुति अर्थ संग जिमि जाहीं॥
चौ सिन्धुन थन रुचिर बनाई। धरनी मनहु बनी तहँ गाई॥
प्रिया फेरि अवधेश कृपाला। रक्षा कीन्ह तासु तेहि काला॥
व्रत महँ चले गाय करि आगे। सेवक शेष सकल नृप त्यागे॥
इक केवल निज तेज अपारा। मनुसन्ततितनरक्षनहारा॥
कबहुँक मृदुतृन नोचि खिलावत। हाँकि माँछि कहुँ तनहिं खुजावत॥
जो दिसि चलत चलत सोइ राहा। यहि विधि तेहि सेवत नरनाहा॥
जहँ बैठी सोइ धेनु अनूपा। बैठे तहँहि अवधपुरभूपा॥
खड़े ताहि ठाढ़ी नृप जानी। चले चलत धेनुहि अनुमानी॥
पियत नीर कीन्हो जल पाना। रहे तासु सँग छाहँ समाना॥
राजचिन्ह यद्यपि सब त्यागे। तऊ तेज बस नृप कोइ लागे॥
छिपे दान रेखा के सङ्गा। होत मनहुँ मदमत्त मतङ्गा॥
केश लता सन बाँधि बनाये। बन बिचस्रो धनु बान चढ़ाये॥
ऋषय धेनुरक्षक जनु होई। आयो पशुन सुधारन सोई॥
बरुन सरिस धरि तेज प्रभाऊ। चले यदपि सेवक बिन राऊ॥
तरुपंछिन करि शब्द सुहावा। जनु चहुँदिसि जयघोष सुनावा॥
जानि निकट कोशलपति आए। फूल बायुबस लता गिराए॥
जिमि नरेश निजपुर जब आवहिं। खील नगरकन्या बरसावहिं॥

चले यदपि नृप कर धनु धारी । तउँ दयालु तेहि हरिनि बिचारी ॥
निरखत तासु शरीर मनोहर । लोचनफल पायो तेहि अवसर ॥
भरि भरि पवन रन्ध्र युत बाँसा । वेणुशब्द तब करत प्रकासा ॥
बनदेविन कुञ्जन महँ जाई । नृप कीरति तहँ गाइ सुनाई ॥
जानि घाम बस म्लान सरीरा । लै सुगन्ध तेहि मिलत समीरा ॥
बनरक्षक तेहि आवत जानी । बिना वृष्टि बन आगि बुझानी ॥
निबलहि सबल सतायो नाहीं । भे फल फूल अधिक बन माहीं ॥
करि पवित्र दिसि चहुँदिसि जाई । धेनु साँझ आश्रम कहँ आई ॥
यज्ञश्राद्धसाधन सोइ साथा । इमि सोहत तहँ कोशलनाथा ॥
श्रद्धा मनहुँ दृश्यतनु धारी । सोहत सन्त प्रयत्न मझारी ॥
जल सन उठत बराहि समूहा । चलत रूखदिशि नभचर जूहा ।
हरी घास जहँ बैठ कुरङ्गा । चल्यो लखत सोइ सौरभि सङ्गा ॥
एक भरे थनभार दुखारी । धरे सरीर एक अति भारी ॥
मन्द चाल सन दोउ तहँ आई । तपबनसोभा अधिक बढ़ाई ॥
चलत बसिष्ठधेनु के पाछे । लौटत अवधभूप छबि आछे ॥
प्यासे दृगन बिलास बिसारी । लख्यो ताहि मगधेसकुमारी ॥
आगे खड़ी रानि मग माहीं । पीछे भूप मनहुँ परछाहीं ॥
सोहत बीच धेनु यहि भाँती । सन्ध्या संग मनहुँ दिन राती ॥
अछत पात्र कर धरे सयानी । फिरीं गाय चहुँदिशि तब रानी ॥
चरन बन्दि गोमाथ बिशाला । पूजो अवधरानि तेहि काला ॥
मिलन हेत बच्छहि अकुलानी । यद्यपि रहीं धेनु गुनखानी ॥
पूजन काज रहीं सोइ ठाढ़ी । सो लखि प्रीति भूप मन बाढ़ी ॥
समरथ चहत देन फल जेही । प्रथम प्रसाद जनावत तेही ॥
पुनि सन्ध्याविधि नृप निपटाई । सादर गुरुपदकमल दबाई ॥
जिन नृप भुजबल शत्रु गिराये । दुहन-अन्त गोसेवन आये ॥
पुनि पत्नी संग भूप दिलीपा । धारि धेनु आगे बलि दीपा ॥

सोए तहँ तेहि सोवत जानी। जागे जगी धेनु अनुमानी॥
सन्तति हित सेवत यहि भाँती। बीते त्रिगुण सप्त दिन राती॥
भूप भक्ति परखन इक बारा। हिमगिरि गुहा धेनु पगुधारा॥
ध्यानहु सक न जन्तु यहि मारी। यह नरेस मन माहिं बिचारी॥
नग-छबि लगे लखन नरनाई। धेनुहि धस्यो सिंह इक धाई॥
तड़पत सिंह गुहा के द्वारा। भयो तुरत तहँ शब्द अपारा॥
भूपदृष्टि भूधरपति लागी। परी धेनु पर नग-दिसि त्यागी॥
सिंहहिं लख्यो धेनु पर कैसा। गेरू गुहा लोध्र-तरु जैसा॥
भयो क्रोध नाहरबध काजा। खैंचन चह्यो तीर तब राजा॥
नख-छबि कंक-पत्र महँ डारी। अँगुरिन विशिख-पुंख तहँ धारी॥
हरिमारन हित खैंचत बाना। रह्यो दछिन कर चित्र समाना॥
लखि अपराधिहि सौंहहि ठाढ़ा। अवधनरेस क्रोध अति बाढ़ा॥
बिबस नाग सम मन्त्र प्रभाऊ। बस्यो स्वतेजन कोशलराऊ॥
मृगपति सरिस तेजबलधारी। भयो चकित निज दसा बिचारी॥
मनुकुलकेतु-अचर्ज बढ़ाई। बोल्यो हरि नर-बोलि बनाई॥
"बस! नरेस! श्रम व्यर्थ तुम्हारा। लगत न मोहिं चलहु हथियारा॥
यदपि बायु तरुमूल उखारहि। पै नहिं सकत हिलाय पहारहि॥
जासु पीठ वृष चढ़त पुरारी। पावन करत चरन नित धारी॥
जानु निकुम्भमित्र मोहिं चेरा। कुम्भोदर त्रिभुवनपतिकेरा॥
देवदारु जो लखहु सुजाना। तेहि मानत हर पुत्र समाना॥
जों पाछे पय पियो कुमारा। यह सोइ पय-रस चाखनहारा॥
एक बार कनपटी खुजाई। तासु छाल बन-गजन गिराई॥
भा गिरिजहि लखि सोच अपारा। असुर-अस्त्र जिमि लगे कुमारा॥
तब सन मोहिं बनाइ मृगराजा। दै आये पशु भोजन काजा॥
नित बनगजन डरावन हेतू। राख्यो गुहा मोहिं वृषकेतू॥
जानि समय मम क्षुधा निवारन। भेजी नाथ मोहिं यह पारन॥

अहो भूप गुरुपद अनुरागी । अब फिरि जाहु लाज सब त्यागी ॥
जो न शस्त्र सन रत्तन योगा । शस्त्रि-दोष तहँ देहिँ न लोगा ॥
सुनि यहि भाँति गर्व-रस-सानी । कोशलपति मृगपति की बानी" ॥
ईश-प्रभाव मोघ सर जानी । कीन्ह न मन कछु भूप गलानी ॥
शरप्रयोग महँ पहिलेहि बारा । निजश्रम भूपति व्यर्थ बिचारा ॥
मारत बज्र मनहुँ सुरनाथा । भयो शम्भु-द्रुगबस जड़ हाथा ॥
बोलै, "बिबश-बचन मृगराजू । सदा हँसत सुनि सन्त समाजू ॥
तऊँ तोहि सर्वज्ञ बिचारी । कहौं सुनिय हरि बिनय हमारी ॥
रचि पालत जो जगहि सँहारत । को कहु तासु बचन नर टारत ॥
पै यजमान-पूज्य-गुरु-थाती । सौंहहिँ नसत लखौं केहि भाँती ॥
ह्वै कृपाल मम देहहि खाई । अब होइय निवृत्त मृगराई ॥
घर महँ बच्छ मिलन अनुरागी । देहु ऋषीस धेनु यह त्यागी" ॥
दसन-ज्योति गिरि-खोहन केरा । पञ्चानन तब नासि अँधेरा ॥
भूतनाथ-अनुचर मुसुकाई । बोल्यो बचन, "सुनहु नरराई ॥
भोगहु जगत अकण्टक राजू । लहे रूप गुण बय सुखसाजू ॥
तजत थोर हित बहु निज देहा । अहसि मूढ़मति नहिं सन्देहा ॥
जो दयाल तो लखु मन माहीं । बचत गाय जो भूप नसाहीं ॥
कोटि बिघ्न सन धारत प्राना । प्रजा पालिये पिता समाना ॥
जो इक गाय नास अपराधा । लखि गुरु-कोप होत मनबाधा ॥
कुम्भ सरिस थन की सत गाई । दै तेहि सकिय नरेस मनाई ॥
यहि सन मन-फल भोगन हेतू । राखिय देह भानुकुल केतू ॥
महि महँ स्वर्ग कहावत सोई । ऋद्धि समेत राज्य जहँ होई" ॥
भयो मौन नाहर अस भाखी । सुनत मनहुँ सोइ भूधर साखी ॥
करि प्रति शब्द गुहन अस लागा । जनु सोइ कह्यो भूप अनुरागा ॥
सुनि हरि बचन अवधपुर पालक । बोल्यो शत्रु-वृन्ददल-घालक ॥
धेनुहि सिंह काल-बस देखी । उपजत नृप मन कृपा बिसेखी ॥

"छत्रियअर्थ सिद्ध जग सोई। छत सन सुजन बचावै जोई ॥
धिक सो राज छत्रिय गुनहीना। वृथा अजसबस प्रान मलीना ॥
ह्वै हैं मुनि प्रसन्न केहि भाँती। दीन्हेउ सकल धेनु की जाती ॥
निश्चय लखिय सिंह मनमाहीं। कामधेनु सन यह कम नाहीं ॥
छुइ न सकत यहि हरि संसारा। हर-प्रभाव तुम कीन्ह प्रहारा ॥
अब मम उचित धर्म लखु एही। दै निज देह बचावौं तेही ॥
तव अहार मुनिकर मखकाजा। रहिहैं दोउ अविघ्न मृगराजा ॥
तुमहुँ मित्र यह लखहु बिचारी। देवदारु यह थाति तुम्हारी ॥
रक्षय नासि बिन आप नसाने। स्वामि सौंह किमि जाहिँ सयाने ॥
बधत मोहिँ लागति जो दाया। मों जसदेह राखु मृगराया ॥
निश्चय नास देह कर जानत। मो सम तनहि तुच्छ करि मानत ॥
जन सम्बन्ध सकल जग माहीं। सम्बादहि सन होत लखाहीं ॥
भयो मिलन सन बन महँ सोऊ। हैं यहि हेत मित्र हम दोऊ ॥
प्रथम विनय मम मृगपति टारन। उचित न तोहि मित्र यहि कारन" ॥
"जो तुम चहहु" कह्योसुनि नाहर। खुली नरेश-बाँह तेहि अवसर ॥
डारि अस्त्र अवधेश महाना। हरहि दीन्ह तन पिण्ड समाना ॥
झुके सीस तहँ सिंह-प्रहारा। जोहत छन छन भूप उदारा ॥
करि जय जय नभ-फूल सुहावा। विद्याधर नृप पर बरसावा ॥
'उठिय वत्स' सौरभि की बानी। सुनत नरेश अमिय-रस-सानी ॥
उठि निज मातु सरिस तेहि ठामा। ठाढ़ी लखी धेनु अभिरामा ॥
कह्यो धेनु तेहि चकित निहारी। 'मैं परखी नृप, भक्ति तुम्हारी ॥
जो मोहिं यमहु सकत हनि नाहीं। ताहि जन्तु केहि लेखे माहीं ॥
माँगिय बर प्रसन्न मोहिँ जानी। लखि तव भक्ति भूप गुन खानी ॥
मैं न होहुँ साधारन गाई। गनु मोहिं कामधेनु नरराई ॥"
निज-बल-वीर प्रसिद्ध महीसा। दोउ कर जोरि नाय पद सीसा ॥
बोले मातु अनुग्रह कीजे। ह्वै प्रसन्न मोहि यह वर दीजै ॥

मिलै मागधी सन सुत सोई। चहुँदिशि विदित जासु यश होई॥
करि पूरन नरेश अभिलाषा। 'एवमस्तु' सौरभि तहँ भाषा॥
"दुहि ममदूध पत्र महँ राऊ। पिय लहु सुत इक अमित प्रभाऊ॥
"मख हित दुहि पुनि बच्छु पियाई। शेष दूध ऋषि आयसु पाई॥
चाहहुँ करन मातु मैं पाना। रक्षित महि षटभाग समाना" ॥
सुन यहि भाँति अवधपति बानी। मुनिवर-धेनु अतिहि हरषानी॥
भूधरराज-गुहा पुनि त्यागी। लौटी धेनु भूप सङ्ग लागी॥
अति प्रसन्न गुरु सन नरदेवा। बिकसत बदन कह्यो सब भेवा॥
लखिपति मुदित सफल अनुमाना। बिनहि कहे रानी सब जाना॥
धेनु-दूध पुनि विधि अनुरूपा। पियो रानि संग कोशल भूपा॥
भये प्रभात बसिष्ठ मुनीसा। तिनहिं देइ प्रस्थान असीसा॥
कह्यो "भूप अब अवधहि जाहू। भोगहु जन्म सुकीरति लाहू" ॥
सुनि यहि भाँति देवमुनिबैना। रानी सहित भूप गुनऐना॥
धेनु बच्छ सङ्ग यज्ञकृशानुहि। तिय समेत मुनि मन तम भानुहि॥
करि प्रदक्षिणा रानि समेता। चले अवध दिशि शीलनिकेता॥
देत वेग हित अनन्द अपारा। करत मधुर-धुनि रथ असवारा॥
पुत्र-काज-व्रत बस कृश अङ्गा। चले दिलीप मागधी सङ्गा॥
बढ़त उछाह दरस बिनु पाये। तेहि उघारि दृग टकी लगाये॥
पावत प्रजा अनन्द विशेषा। तेहि नव चन्द सरिस तब देखा॥
चहुँदिसि नगर लोग जस गावत। रथ ऊपर शुचि ध्वजा उड़ावत॥
धरे इन्द्र सम तेज विशाला। कोशलनगर पैठि महिपाला॥
निज भुज शेष-सरिस-बलसारा। धस्यो बहोरि भूप महि भारा॥

तेज अत्रि मुनि नयनकर जिमि लीन्हों आकास।
लीन्ह देवसरि गङ्ग ज्यों शङ्करज्योति उजास॥
लोकपाल शुचि तेजमय प्रबल तेज गुनखानि।
नरपतिकुलकी वृद्धि हित धस्यो गर्भ तिमि रानि॥

तीसरा सर्ग

रघु का जन्म

सखिन हेत ससि उदय समाना। भानुवंश सन्तान निदाना॥
रह्यो नाथ मन वाञ्छित जोई। धार्यो गर्भ मागधी सोई॥
धरे कछुक भूषन कृस-गाता। पीयर परत बदन जलजाता॥
भई मनहुँ कछु तारन धारी। प्रात रैन सम राजकुमारी॥
मृतिक गन्धयुत मुख तेहि काला। सूँघत होत न तृप्त नृपाला॥
तप बीते जल भरे तड़ागा। ज्यों नहिं तजत मत्त बन नागा॥
स्वर्गहि इन्द्र सरिस सुत मोरा। भोगै जीति धरन चहुँओरा॥
अस बिचारि पहिलहि नृपरानी। खाई जनु मृत्तिका सयानी॥
"जो कछु वस्तु रानि मन भावत। सो न लाजवश मोहि बतावत"॥
प्रिया सखिन सादर यहि भाँती। पूँछत अवधभूप दिन राती॥
गर्भ धरे जो कछु मनभावा। सोइ तुरन्त आगे निज पावा॥
नहिं अस वस्तु अकासहु माहीं। राजहि रही सुलभ जो नाहीं॥
गर्भ-दुःख दिन तुरत बिताई। धरी रानि तहँ छबि अधिकाई॥
ज्यों पुरान सब पत्र गिरावत। नव पल्लवन लता छबि पावत॥
दिन दिन कछुक नील मुख होई। सोहत तासु भरे कुच दोई॥
मनहुँ लसत भँवरन के सङ्गा। कीन्ही तिन सरोजछबि भङ्गा॥
सरस्वती सँग नीर छिपाई। गुप्त निधिन सँग जिमि महि-गाई॥
अग्नि अंश सँग शमी समाना। गर्भ सहित रानिहि नृप जाना॥
मन-उछाह निज पद अनुकूला। कीन्ह कर्म सब मङ्गल मूला॥
सुरपति अंश गर्भ अँग धारी। आसन सन सोइ उठत सँभारी॥
अञ्जलि बँधन हेत कर थाके। आलस हेत तरल दृग ताके॥
कोशलपति घर आवत जानी। यहि विधि आदर दीन्ह सयानी॥

वालचिकित्सक वैदन हाथा। पोथी लखी रानि नर नाथा॥
पाँचहु ग्रह ऊँचे पद पाये। तजे भानु जो बार सुहाये॥
सोइ दिन सुतहि भूप तिय जाई। साधन रुचिर अर्थ की नाईं॥
चहुँदिशि चली बयारि सुहावनि। निरमल भई दिशा मन भावनि॥
जो बलि हैन हेत जन दीन्हा। तेहि बढ़ि यज्ञ अग्नि तब लीन्हा॥
जेहि छन रघु दिलीप गृह जायो। सगुन सुखद जग वस्तु जनायो॥
ऐसे जन जनमत जग माहीं। करत लोक हित संशय नाहीं॥
फैल्यो सकल सौर-मन्दिर महँ। करत प्रकाश कुमार तेज तहँ॥
अर्द्ध राति दीपक की जोती। लखि सोइ चित्र जोतिसम होती॥
पुत्र-जन्म सन्देस सुहावा। जो सेवक तेहि आनि जनावा॥
तजि निज छत्र चँवर पुनि दोऊ। रह्यो न तेहि अदेय धन कोऊ॥
बिना बात पङ्कज छवि पाई। नैनन सुतहि लख्यो नरराई॥
लखत चन्द छीरोद समाना। नहिं तन महँ नृप हर्ष समाना॥
तपसि पुरोहित आइ प्रवीना। जाति कर्म सब सुत कर कीना॥
चढ़त सानमनि सरिस कुमारू। उठ्यो झलकि पावत छबिचारू॥
मङ्गल बजन होत श्रुति सुखसुनि। मंजुल गनिकन यूथ नाचधुनि॥
भरो न एक भूप आगारा। उठ्यो गूँजि चहुँदिशि नभसारा॥
सुनि सुत जन्म न छाँड़त जेही। रह्यौ न अस बन्दी कोउ तेही॥
सो आपहि सुत पाइ अनूपा। छुटो पितरऋन सन जब भूपा॥
करै युद्ध महँ शत्रु सँहारा। पहुँचै सकल शास्त्र के पारा॥
अस विचारि भूपति गुणधामा। धस्यौ यथारथ रघु सुतनामा॥
यतन हेतु ऋधि युक्ति पिता के। दिन दिन बढ़े अङ्ग इमि ताके॥
जिमि पावत नित रविकर जोती। नवशशि वृद्धि दिनहुँ दिन होती॥
ज्यों कुमार सँग उमा महेशा। ज्यों जयन्त लहि शची सुरेशा॥
त्यों तिन सरिस भूप अरु रानी। भये सुखी लहि सुत गुनखानी॥
चक्रवाक युग सम तिन केरा। रह्यो परस्पर प्रेम घनेरा॥

यदपि बँटत जग सुत लहि सोई। पै तहँ बढ़्यो एक जनु होई॥
दाई कह्यो बचन सोइ बोला। अँगुरी पकरि तासु सोइ डोला॥
तिन प्रणाम हित सीस झुकावा। सो लखि पितु अनन्द अतिपावा॥
नृप निज सुतहि गोद बैठारी। निजअँग अमियवृष्टि समडारी॥
मूँदत नयन दिलीप सुजाना। पुत्रपरससुख तुरत न जाना॥
शुद्धजन्म सन्तति सोइ पाई। कुलप्रतिष्ठ मानी नरराई॥
हरिहि विरचिजिमि जगकरतारा। मान्यो सफल सृजनव्यवहारा॥
मुण्डन भये बाल अभिरामा। गयो मन्त्रिसुत सँग गुरुधामा॥
बिधि अनुरूप लेखसरि द्वारा। शब्द शास्त्र सरिपति पगुधारा॥
करि कुमारउपनयन सुहावा। तेहिविधिवतसबगुरुनसिखावा॥
रह्यो प्रयत्न बिफल सो नाहीं। द्रव्यहिं क्रिया फलै जग माहीं॥
चारि शास्त्र जलनिधि के पारा। निज बुधि गयो दिलीपकुमारा॥
पवन सरिस घोड़न के साथा। चहुँदिशि लोक चलत दिननाथा॥
पितु सन सकल शस्त्र के कर्मा। सीखे धरे कृष्णमृगचर्मा॥
जिमि दिलीप सम भूप न कोई। धन्वी अतुल रह्यो पुनि सोई॥
वृषभ होहिं जिमि बच्छ समाजू। कलभ होत क्रम सन गजराजू॥
तिमि दिलीपमनकमलदिवाकर। जोबन लहत लहे अँग सुन्दर॥
करि गोदान तासु नरनाहा। नृप कन्यन सँग कीन्ह बिवाहा॥
लहि सो पति सोहीं सो कैसी। दक्षसुता निशिपति सँग जैसी॥
भे युव जुवा सरिस भुज धारे। दीर्घ कण्ठ उर दुर्ग किवारे॥
पितहि जीत तन महँ नृपढोटा। तऊ नम्र रहि लागत छोटा॥
बहु दिन धरत धरनिधुर राजा। अब तेहि हलुक करन के काजा॥
सुत स्वभाव सन नम्र बिचारी। किय युवराज शब्द अधिकारी॥
नृपतन मूल निसर रघु पाई। सोही श्रिय लहि छबि अधिकाई॥
सोहत मनहुँ कमल मुखत्यागी। उत्पल मिलत सुछबि अनुरागी॥
सरद लहत दिननाथ समाना। पाइ वायु सँग मनहुँ कृशाना॥

लहत दानमद मनहुँ मतङ्गा। भयो प्रबल नरपति सुत सङ्गा ॥
करि तेहि अश्वमेधहयरत्तक। कीन्हो भूप शत्रु मदभत्तक ॥
बिना विघ्न सोइ गुनपरिपाटी। अश्वमेध मख सत इक घाटी ॥
करन काज पीछे सोई यागा। यथाउचित इक हय तिन त्यागा ॥
धन्विन सौंह गूढ़तन होई। हर्‍यो तुरत सुरपति हय सोई ॥
अकस्मात हय भागत देखी। सैनहिं भयो अचर्ज बिसेखी ॥
तेहि अवसर बसिष्ठमुनिगाई। जगत बिदित तहँ आप हिआई ॥
ताके विमल अङ्ग सन नीरा। निसरत लखि कुमार रनधीरा ॥
तेहि निज दृग लगाइ नृपनन्दन। लख्यो अगोचर रिपुमदकन्दन ॥
चपल अश्व रथ महँ सोइ बाँधे। बल करि ताहि सारथी साधे ॥
दिशि पूरब सोइ रथ असवारा। सुरनाथहि नृप बाल निहारा ॥
लखि दृग सहस निमेष बिहीना। हरे नयन रघुबीर प्रवीना ॥
जानि इन्द्र करि शब्द अपारा। जनु बरजन हित ताहि पुकारा ॥
"जो सुर यज्ञअंश नित पावहिं। तिन महँ प्रथम देव तोहि गावहिं ॥
यहिविधि मेंापितुक्रियाबिगारन। चहै। नाथ बोलहु केहि कारन ॥
त्रिभुवननाथ दिव्य चखु धारे। तुम मखशत्रु निवारनहारे ॥
भये जो यज्ञविघ्न तुम सोई। नस्यो धर्म आश्रय बिन होई ॥
अब सोइ महायज्ञकर अङ्गा। तजिय धर्म निज जानि तुरङ्गा ॥
जो प्रभुश्रुतिपथजगहिसिखावत। कबहुँ सो नीचकर्म मनलावत" ॥
देवनाथ रघु की यह बानी। सुनि यहि भाँति गर्बरससानी ॥
चकित होत निज रथ लौटारी। बोले प्रभु तब बचन बिचारी ॥
"जो कछु कह्यो नरेशकुमारा। अहै सत्य सब बचन तुम्हारा ॥
परसन निज जस राखन जोगा। मानत सकल यशोधन लोगा ॥
जग महँ जगतविदित जसमोरा। चाहत करन तुच्छ पितु तोरा ॥
पुरुषोत्तम पद जिमि हरि पायो। जिमि महेश इक शम्भु कहायो ॥
त्योंसतमखकहिमुनि मोहिजाना। यह पद सकै लेइ नहिं आना ॥

यहि सन कपिल सरिस मैं होई। हरयौं तोर पितु मखहय सोई॥
अब तुम बृथा जतन जनि करहू। सगरसुतनपथ पग जनि धरहू"॥
हय रच्छक बलधीर अडोला। बिहँसि बचन इन्द्रहि तब बोला॥
"लेहु शस्त्र जो यह मन माहीं। रघु जीते बिन तव जस नाहीं"॥
मुख उठाय इन्द्रहि अस भाखी। धनुपर बिसिखतुरत सोइ राखी॥
ऐंचि बढ़ाइ अङ्ग कछु आगे। रघु तेहिं छन पशुपति समलागे॥
खम्भ सरिस लागत रघुवाना। उठी भड़कि हरिक्रोध-कृसाना॥
नव घन छिनक चिन्ह कोदण्डा। धरयो इन्द्र तब बान प्रचण्डा॥
निसिचररुधिरउचितजेहिचूसन। लखि सोइ अवधभूपसुत केतन॥
मानुषरुधिर स्वाद अभिलाखा। तिन जनु तासु रकत तहँ चाखा॥
अँगुरी जहँ कठोर जग परसत। शचि अँगचित्र रङ्ग जहँ दरसत॥
सोइ हरिकर अवधेशकुमारा। नामअँकित सर कीन्ह प्रहारा॥
मोरपत्रसर सन रन बाँका। काटी रघु हरि अशनि पताका॥
सुरश्रियकेस कटी तेहि माना। कीन्हो अतिहि कोप मघवाना॥
चलत स्वर्ग महिदिसितहँ बाना। लखन पङ्खयुत सर्प समाना॥
तिन महँ भयो युद्ध तहँ घोरा। सुर नर लखत खड़े चहुँओरा॥
दुसह तेज रवि बंस कुमारहि। तहँ बरसाइ अस्त्रजल धारहि॥
तेहि दबाइ नहिं सुरपति सकेऊ। बिजुरी हित घन सम सोईथकेऊ॥
लगे दिव्य चन्दन सोहत कर। सिन्धु प्रथम सम बजत भयंकर॥
अर्धचन्द्र बानहिं रघु प्रेरी। काटी डोरि इन्द्रधनु केरी॥
डारि चाप कोप्यो सुरराजा। रिपु अति प्रबल बिनासन काजा॥
अचल पङ्ख जिन काटि गिरावा। प्रभा लसत सोइ अस्त्र चलावा॥
लगत बज्र नरपतिसुत अङ्गा। गिरयो धरनि दलआँसुन सङ्गा॥
छिनकव्यथित कछु ताबस होई। उठेउ सेन सुखधुनि सँग सोई॥
रिपुहि अस्त्र महँ क्रूर बिचारी। लड़त बेर सन ताहि निहारी॥
भये प्रसन्न इन्द्र मन माहीं। गुन निज काम करै कहँ नाहीं॥

"जो नहिं तोरत रुक्यो पहारा। सह्यो तुमहिं यह अस्त्र हमारा॥
हयतजि मोहिं प्रसन्न अबजानो। चहसि काह" बोले हरि बानी॥
अँगुरिहि रँगी जासु हुनगाँसी। सोइ तीरहि कछु बीर निकासी॥
अवधनाथसुत धरि तूनीरा। हरिहि दीन्ह उत्तर ह्वै धीरा॥
"जो नहिं तजहु अश्व सुरभूपा। भये पूर्ण मख विधि अनुरूपा॥
जो नित यज्ञ माहिं मन लावहिं। मख समग्रफल पितु सोइ पावहिं॥
बैठो सभा बीच अवधेसा। तव दूतनमुख यह सन्देसा॥
सुनै आप मो पितु जेहि भाँती। करिय सो यत्न वृत्र आराती"॥
"ऐसहि होइ" भाषि सुरनाथा। गये मातली सारथि साथा॥
ह्वै न प्रसन्न दिलीप कुमारा। पिताराजगृह दिसि पगुधारा॥
हरिचर मुख सब सुनि नरनाहू। मिल्यो सुतहि मन सहितउछाहू॥
बज्रघाव अङ्कित निज सुततन। छुयो हर्ष बस कँपत हाथसन॥
एकघट सवैं वर्ष एहि भाँती। करि पूरन नृप मखकी पाँती॥
स्वर्ग चलन लालच नरराई। सीढ़ी मनहुँ अनूप बनाई॥

मन सन विषय दुराइ नृप जोग जानि तब दीन्ह।
स्वेतछत्रनिज पुत्र कहँ चक्रराजपद चीन्ह॥
कीन्ह बास रानी सहित पुनि मुनिबनतरुछाँह।
भये वृद्ध कुलधर्म यह करत भानुकुलनाह॥

चौथा सर्ग

राजा रघु का दिग्विजय

पितु पाछे कोशलपुरराजा । लहि रघु अतुलवीर इमि छाजा ॥
गये दिवस जिमि रवि सन पाई । होत कृशानु तेज अधिकाई ॥
सुनि तहि लहत राज महिपाला । भड़की तुरत बैर की ज्वाला ॥
इन्द्रध्वजा सम उन्नति ताकी । निरखि भई अति प्रीति प्रजाकी॥
गज सम चढ़ि इक अङ्ग दबावा । अरिमण्डल पितुमञ्च सुहावा ॥
कमला जानि राज रघु पायो । कमल छत्र ह्वै गुप्त लगायो ॥
प्रभामण्डलहि निरखि सुजाना । कीन्ह तासु तेहिछन अनुमाना ॥
बन्दीजन समीप नित जाई । नृप अस्तुतिबानी तहँ गाई ॥
मनु दिलीप आदिक नरपाला । भोगी यदपि धरनि बहुकाला ॥
रघु हित तऊ धरनि अनुरागी । अनभोगी समान तब लागी ॥
उचित दण्ड अपराधिन दीन्हा । सो करि पुरजन मन हरिलीन्हा॥
सीतल कछुक गरम कछु होई । मलयानिल समान भे सोई ॥
निरखि तासु गुनग्राम अपारा । प्रजा दिलीप नरेश बिसारा ॥
जिमि निहारि रसपूरन आमा । भूलत लोग बौर अभिरामा ॥
नये नृपहि सब धर्म अधर्मा । सिखये नीति चतुर नृप कर्मा ॥
पहिलहि एक भूप रघु लहेऊ । दूजो ज्ञान मात्र हित रहेऊ ॥
नृप गुन बढ़े तासु तन माहीं । ताहित भयो काह तब नाहीं ॥
दै ससि अनँद चन्दपद पावा । रवि प्रताप बस तपन कहावा ॥
प्रजा मनहि नित रञ्जन काजा । तिमि रघु भयो यथारथ राजा ॥
यदपि कान लगि दृग बिस्तारा । ज्ञान दृगन निज काज निहारा ॥
कियर्याहिविधि नृपथिर निज राजू । सकल जुहाय प्रजा सुखसाजू ॥
दूजी नृपश्रिय सरिस सुहाई । पङ्कज सहित सरद ऋतु आई ॥

लघु मेघन सन जल बरसाई । भानुतेज मग सन दुरिजाई ॥
तेहि छन चहुँदिसि भानु प्रतापा । अवध नरेस तेज सम व्यापा ॥
वृष्टि हेत धनु इन्द्र उठायो । रिपु जीतन रघु चाप चढ़ायो ॥
प्रजाकाज साधनहि बिचारी । क्रम सन भये दोउ धनु धारी ॥
विकसित कासहि चमर बनाये । सुन्दर पङ्कज छत्र लगाये ॥
सोइ ऋतु इमि छबि लहत अनूपा । चह्यो होन जनु नृप अनुरूपा ॥
विमल चन्द रघु बदन सुहावा । लखि रस सकल मनुज तबपावा ॥
हंस नछत्र विमल जल पाई । फैली भूप सुजस उजराई ॥
बैठी ऊँख छाँह रखवारी । कही गाइ नृपकीरति सारी ॥
उवत घटज नभ तेज अपारा । भे जल बिमल सकल संसारा ॥
उदय होत रघुतेज बिचारी । भये मलिन रिपु मानत हारी ॥
महाकन्ध तोरत सरि कूला । लह्यो वृषभ बल नृप अनुकूला ॥
सप्तपर्ण-नवकुसुम सुगन्धा । लखि जनु होड़करत मद अन्धा ॥
कीन्ह क्रोध तेहि बस नृपबारन । स्रवत दानमद जनु सत धारन ॥
करि सुखतरन जोग सरिजगकी । सकल सुखाइ कीच तब मगकी ॥
करन दण्डबिचरन जग केरा । मानहु सरद आप तेहि प्रेरा ॥
बिधिवत करत होम नरपाला । यज्ञ आगि नीराजन काला ॥
ज्वाल लपट मिस हाथ बढ़ाई । यज्ञ अग्नि नृप जीति मनाई ॥
घर अरु प्रान्त बचावन हारा । जिन पीछे रिपु सकल सँहारा ॥
षट प्रकार दल सहित नरेसा । चल्यो वीर जीतन चहुँ देसा ॥
रघु चढ़ि चलत वृद्ध पुरनारी । धानमूठ भरि तापर डारी ॥
मथत छीर निधि गिरिमन्दरसन । परे छींट जिमि श्रीपति केतन ॥
चलत बायु बस केतु उड़ावत । जनु तर्जनि सन नृपन डेरावत ॥
हरि समकीर्ति जासु जगमाँची । गयो प्रथम सोइ नृप दिसिप्राची ॥
लै घन सम गज धूरि उड़ावत । धरनि स्वर्ग नभधरनि बनावत ॥
चल्यो प्रताप प्रथम बढ़ि दूरी । पीछे शब्द चली तब धूरी ॥

पीछे चली सेन चतुरङ्गा। क्रम सन सकल अवधपतिसङ्गा॥
जो नद तरत नाव चढ़ि लोगा। सो भे सुगम तरन के जोगा॥
विपिनिन तरु बिहीन नरराऊ। करत चल्यो निज शक्ति प्रभाऊ॥
पूर्वसिन्धु ढिग चलत विशाला। सोहत सेन सहित नरपाला॥
शङ्कर जटा छाँड़ि जिमि गङ्गा। सो दिसि गई भगीरथ सङ्गा॥
करि बिनफल नृप तरुन गिरावत। चल्यो नाग सम मार्ग जनावत॥
पूर्व देस जीतत नृप बीरा। पहुँच्यो महासिन्धु के तीरा॥
घन तालीबन बस जो ठामा। चहुँदिसि छबिपावतअतिश्यामा॥
जर सन अरिहि उखारत जोई। तेहि लखि सुह्मवेंत सम होई॥
काँपत रिपुगन सीस झुकाई। रघुसरि सन निज जाति बचाई॥
लड़त नाव चढ़ि बङ्ग निवासी। तासु शक्ति नृप निजबल नासी॥
गङ्गास्त्रोत दीप महँ जाई। गाड़े निज जयखम्भ सुहाई॥
रघुचरननि लगि सीस झुकाये। सोइ महिपन फिरिदेस बसाये॥
जमत उखरि सोइ नृप जनुधाना। दै धन बिपुल रघुहि सनमाना॥
चलत बाँधि मग महँ गजसेतू। सेना सहित भानुकुलकेतू॥
कपिशा उतरि कलिङ्गहि आवा। उत्कलनृप तेहि पन्थ बतावा॥
चढ़ि गज सरिस महेन्द्र पहाड़ा। निज प्रताप अङ्कुश तहँ गाड़ा॥
लै गजयूथन अस्त्र चलाई। मिलो कलिङ्ग भूप तेहि आई॥
नग जिमि पंखन काटनहारहि। मिले चलाइ शिला जलधारहि॥
अरि-सरवृष्टि-नीर जनु न्हाई। जय लछिमी कोसलपति पाई॥
तहँ बिछाइ रचि रचि बहु पाना। सजि थल करनहेत मदपाना॥
पियो बैठि रघुदल के बीरा। रिपुजस सरिस नारियर तीरा॥
जानि धर्म जय नगपति केरी। लै जयश्रिय दीन्ही महि फेरी॥
सुलभजानि जिनजोति न माँगी। महासिन्धु तीरहि तहँ लागी॥
पूग वृक्ष जहँ सोह बिशाला। गयो अगस्त्य दिशा नरपाला॥
नदी पार निज सेन उतारी। गजमदगन्ध नीर महँ डारी॥

भइ कावेरी महँ सोइ देखी। संका सरिपति चित्त बिसेखी ॥
चलि भड़काइ मरीच बिहंगा। परी मलयगिरि तट चतुरंगा ॥
उड़ी अश्वपदसन फल धूरी। गजकट परी गन्ध सन पूरी ॥
यदपि जात दक्खिनदिसि माहीं। तेज दिनेसहु कर घटि जाहीं ॥
पै रविकुलशशि तेज अनूपा। नहिंसहि सक्यो पांड्यकुल भूपा॥
मिलत सिन्धु जहँ ताम्रपर्णि सरि। तहँ नृपबिनयसहित रघुपदपरि ॥
मानहुँ निज जस संचित कीन्हा। तहँ उपजत मोती तेहि दीन्हा ॥
चल्यो नरेस शत्रुबल कन्दन। लगे जासु ऊपर बहु चन्दन ॥
दर्दुर मलय नाम गिरि दोई। दिसि केकुचन बीच जनु होई ॥
दुसह अरिन कहँ जासु प्रकासू। सो नप तज्यो सिन्धु तट तासू॥
महि नितम्ब सन बस्त्र बिहाये। सोइगिरि सह्य निकट चलिआये॥
पश्चिम दिसि नृप जीतन काजा। चलत अवध नृपसहित समाजा॥
परसराम बस सिन्धु हटावा। लग्यो मनहुँ गिरितटफिरआवा॥
निरखि ताहि केरल पुर नारी। भूषन दये त्रासबस डारी ॥
बिकसत केस हेत तिन केरे। भयो चूर्ण रज दल के प्रेरे ॥
चलि मुरलासरि मारुत संगा। परि मुरि दलबीरन के अंगा ॥
रुचिर केतकी कुसुम परागा। पद महँ गन्ध चूर्ण सम लागा ॥
चलत तुरंग अंग पर छाजत। मधुर शब्द सन पाखर बाजत ॥
पवन चलत ताली बन माहीं। जो धुनि होत तुली सो नाहीं ॥
बँधे खजूर तरुन जहँ कुञ्जर। तिनके गन्ध समेत कुम्भ पर ॥
हिलत नागकेसर तहँ त्यागी। आये मधुप गन्ध अनुरागी ॥
माँगत लड़न हेत निज ठामा। महासिन्धु सन पायो रामा ॥
लह्यो भेंट पै अवध नरेसा। तेहि सन धरे देशनृप भेसा ॥
करि गज दसनछिद्र जयचीन्हा। निज जयखम्भ त्रिकूटहि कीन्हा॥
पुनि पारस जीतन थल राहा। चल्यो सेन सँग कोसलनाहा ॥
इन्द्रिय नाम शत्रु जीतन हित। तत्वज्ञानमग चलत योगिनित ॥

यवननारि मुख महँ मदरागा। कोसल नृपहिं न कछु भललागा॥
जिमि उठि शरद मेघ अभिरामा। सकत न सहि सरोजमुख घामा॥
पश्चिम दिसि सोइ यवनन संगा। चलत युद्ध महँ चढ़े तुरंगा॥
बिपुल धूरि सुनि धनु टंकारा। तासु घोर रन लोग बिचारा॥
तासु बीर तहँ मालन मारी। दाढ़ी लसत सीस महि डारी॥
लसत माँखि छातन नरराई। जनु रनभूमिहि दीन्ह छिपाई॥
बचे बीर निज सिरन उघारी। गये सरन निज हारि बिचारी॥
अभय कीन्ह रघु बड़न सुभाऊ। भये नम्र रिपु हनैं न काऊ॥
चहुँदिसि लसत दाख तरु जाके। चाम बिछाइ सूर रन बाँके॥
करत पान बारुनी सुबासा। कीन्हो बैठि समर श्रम नासा॥
किरनन जल जिमि लेत दिनेसा। तिमि निज सरन लेत रघुदेसा॥
तजि दच्छिन सोइ भानु समाना। दिसि कुबेर कहँ कीन्ह पयाना॥
मगचलि थकिहयलौटि सिन्धुतट। झाड़े कन्ध लसत केसर सट॥
तहँ संहारि हूनकुल बीरा। बल दिखाइ निज रघु रनधीरा॥
तासु महल सुकुमारि कपोलन। रँगवाये जनु पाटल रँग सन॥
रन कम्बोज देस नरपाला। सके न सहि रघु तेज बिशाला॥
कटत छाल परि गज आलाना। दबे भूप अखरोट समाना॥
ताकी रुचिर अश्व अधिकाई। सुबरन रासि भेंट महँ पाई॥
यदपि अवधनृप बार अनेका। भयो न तदपि गर्ब तेहि नेका॥
चलत धातु सन धूरि उड़ावत। डारि मनहुँ गिरिकूट उठावत॥
रवि कुलचन्द तुरँग असवारा। चढ्यो हिमालय नाम पहारा॥
सेना सरिस तुल्य बलधारी। सोवत हरि तहँ खोह मँझारी॥
सुनत कोलाहल सेनन केरा। निडर रहन हित जनु दृग प्रेरा॥
मरमरात भोजन पर आवत। जाहि पाय धुनि बाँस सुनावत॥
लगी गंगजल सीकर संगा। सोई बायु सेनन के अंगा॥
कस्तूरी मृग सेवत जोई। देत सुगन्ध सिलन पर सोई॥

बैठि नमेरु छाँह तेहि ठामा। रघुदल बीर लह्यो बिश्रामा ॥
जो जंजीरसन नृप दलबारन। बाँधे देवदारु तरु डारन ॥
जोति डारि तहँ औषधि नाना। भई तेल बिन दीप समाना ॥
जो तजि चलत भूप गज साधन। ताके गजन डील तहँ व्याधन ॥
ग्रैवदाग निज छाल दिखाई। देवदारु तरु दीन्ह जनाई ॥
चलत दुहूँ दिसि गोफन बाना। उड़त आगि महँ लगत पखाना ॥
घोर युद्ध गिरिबासिन साथा। यहि बिधि कीन्ह भानुकुलनाथा ॥
निज बानन उतसवसंकेतन। करि इमि मन्द भानुकुल केतन ॥
अरि जीतन निज बाहु प्रभावा। तहँ किन्नर सन भूप गवावा ॥
ताकर जब पुनि भेंट निहारा। जान्यो रघु गिरि गिरि रघुसारा ॥
जाको जर पौलस्त्य हिलाई। नृप सन जनु सोइ अचल डेराई ॥
निज जस अचल राज तहँ धारी। सोइ गिरि सन निज सेन उतारी ॥
लौहित्या उतरत चतुरंगा। कालागुरु सन बँधत मतंगा ॥
लखि मनुबंश भानु परतापा। प्रागज्योति कर नरपति काँपा ॥
जिन दुर्दिन बिन बृष्टि बनावा। जिन अकाल चढ़ि भानु छिपावा ॥
सह्यो न जो सोइ रथ मगधूरहि। सो किमि सहै सेन रनक्रूरहि ॥
जिन चढ़ि समर भूमि सँग ताके। रोके अपर शत्रु बल जाके ॥
गयो सरन दै तोषन काजा। सोइ गज कामरूप नरराजा ॥
हेमपीठ सुररघुपद छाया। पूज्यो मनिफूलन नरराया ॥
रथ बस उठी मार्ग की धूरी। छत्रहीन नृप मौलिन पूरी ॥
यहिबिधि करि निज बस बहुदेसा। फिस्यो गेह दिसि अवध नरेसा ॥
जहँ सर्वस्व दक्षिणा होई। कीन्ह बिश्वजितमख नृप सोई ॥
निज सम्पत्ति करन हित दाना। धरत सन्तनित मेघ समाना ॥

मख बीते निज सचिव सँग दै धन सबन अपार।
हरि कलेश मग चलन कर करि पूजा सतकार ॥

बढ़ी बिरह बस नृप तियन मिलन लालसा जानि ।
कह्यो जान घर अवधपति नृप बहुबिधि सनमानि ॥

सामन्तन कहँ मिलत सोइ नृप प्रसाद जब होइ ।
ध्वजा बज्र अरु छत्र जहँ सोइ नरेसपद दोइ ॥

चलत बार नरपति सकल तहँ निज सीस नवाइ ।
कीन्ह स्वेत सिरमालसन कुसुमपराग गिराइ ॥

पाँचवाँ सर्ग

अज का जन्म

सर्वस देत विश्वजित माहीं । भूप कोठार बच्यो कछु नाहीं ॥
तेहि अवसर पढ़ि शास्त्र अपारा । गुरु हित सम्पति माँगनहारा ॥
आयो कौत्स नाम मुनि चेरा । एक बरतन्तु मुनीश्वरकेरा ॥
लसत तेज सम जस तन जाके । रह्यो न हेमपात्र घर ताके ॥
लिये अर्घ्य माटी के बासन । पूज्यो ताहि छाड़ि सिंहासन ॥
करि पूजा सब बिधि अनुरूपा । मानिनप्रवर अवधपुरभूपा ॥
ताहि निकट आसन बैठाई । हाथ जोरि बोले सिर नाई ॥
"मत्री मार्ग दिखावन हारे । रहत कुसल मुनि गुरू तुम्हारे ॥
जिमि रविसन जग तेज सुहावा । जिन सन सकल ज्ञान तुम पावा॥
मन बच तन सन मुनि जेहि पावा । जिन सुरपति धीरजहि छुड़ावा ॥
सोइ तपत्रिबिधि कहियद्विजनाहू । कै अब नस्यो बिघ्न बस काहू ? ॥
करि करि यत्न बाँधि मुनि थाला । सुत समान जिन रूखन पाला ॥
जो नित जन मग श्रमहि मिटावत । बायु शत्रु कै तिनहिं सतावत ? ॥

जो कुस यज्ञकाज नित लावहिं । नहिंजेहिसोउकुसचरतदुरावहिं ॥
जिन हित करत साँप सन संका । धरत राति दस मुनि निज अंका॥
ऋषि अँग चुवत नाभि की नाला । अहैं कुशल सन सोइ मृगबाला॥
जहँ नित स्नान बिधिहिनिपटावत । जहँ सन तरपन हित जललावत॥
ऊँछढेर सोहत जहँ तीरा । है अविघ्न सोइ तीरथ नीरा ? ॥
आश्रम अतिथि समय पर आवत । जेहि महँ भाग विप्र नित पावत॥
मुनि सरीर कर राखनहारा । छुवत नगरपसु सोइ नीवारा ?॥
भलीभाँति तोहि ज्ञान सिखाई । कै घर जान कह्यो मुनिराई ॥
करनयोग जग कर उपकारा । यह गृहस्थबय अहै तुम्हारा ॥
यद्पि तृप्त मैं आवत तोरे । अज्ञा-लहन-लालसा मोरे ॥
कै आपहि लहि गुरु अनुसासन । आदर देन चले मोहि तजिबन ?"
अर्घपात्र लखि नृपघन जानी । सुनि यहिबिधि उदार रघुबानी ॥
तजि निज काज सिद्धि अभिलाखा । मुनिवर शिष्य बचन तब भाखा॥
"नित ममकुसल जानु केहिकाजा । प्रजा सहै दुख जब तुम राजा ?॥
चमकत कबहुँ भानु तिमिरारी । सकै अँधेर कि दृष्टि निवारी ॥
दिनकर वंश भूप की रीती । सदा पूज्यसन मिलत सप्रीती ॥
निज कुलधर्म निबाहत सोऊ । तुम समान रघु भयो न कोऊ ॥
मैं कुसमय आयों तव पाहीं । यह लखि होत खेद मन माहीं ॥
दै सुपात्र निज सम्पति सारी । सोहहु देहमात्र निज धारी ॥
बनबासिन दै निज फल दाना । देहशेष नीवार समाना ॥
भल सोहहु जगनाह कहाई । मखबस निज दारिद्र्य देखाई ॥
बुध मानत पूजा के योगा । चन्द्रहि पियत जबहिं सुरलोगा ॥
निज गुरुहित धन लेन उपाई । करिहैां और ठौर अब जाई ॥
नहिन और कछु काज हमारा । होइ भूप कल्यान तुम्हारा ॥
रीता सरदमेघ अनुमानी । चातक भूप न माँगत पानी" ॥
कहि अस बचन चलन द्विजचाहा । कह्यो रोकि तेहि कोसलनाहा ॥

"केतनि कौन वस्तु तुम चहहू। गुरुहि देन हित द्विज सोइ कहहू॥
गर्बलेस जेहि नेकु न लागा। बिधि अनुरूप कीन्ह जिनयागा॥
चारि वर्ण आश्रम स्वामिहि निज। कह्यो मनोरथ तब प्रवीन द्विज॥
"गुरुसन-सीखि सकल श्रुति शाखा। गुरु दक्षिणा लेन मैं भाखा॥
लखि मो हठ करि क्रोध अपारा। मो दारिद् नहिं नेकु विचारा॥
विद्या अङ्क जानि बोले अस। 'देहु मोहि धन कोटि चारिदस॥
निरखि अर्घ्य भाजन तव हाथा। नामशेष तोहि लखि जगनाथा॥
पुनि श्रुति मोल अधिक अति देखी। रह्यो न कहन उछाह विसेखी"॥
धरे चन्द्र सम तेज प्रकासू। हटे पाप सब तन मन जासू॥
सुनि यहिविधि बरनी के बैना। बोल्यो सार्वभौम गुनऐना॥
"पढ़े वेद अरु शास्त्र अनेका। गुरुहितधन चाहत द्विजएका॥
रघु ढिग सन सोइ फिरयो निरासा। गयो और दाता के पासा॥
यह ममहित द्विज पहिलेहिबारा। जनि होवहि निन्दा अवतारा॥
चौथी अग्नि मनहुँ तनधारी। अब रहि बिप्र दिवस दुइचारी॥
करिय बास मम अग्नि निकेता। जब लगि करौं जतन धनहेता"॥
सुनि अमोघ कोसलपति बानी। "एवमस्तु" कहि द्विज तहँमानी॥
निरधन धरनि जानि नरनाहा। धन धनपति सन खैंचन चाहा॥
परत बसिष्ठमंत्रयुत नीरा। मेघ सरिस सँग पाइ समीरा॥
परबत सिन्धु अकासहु माहीं। रुकी तासु रथकी गति नाहीं॥
जनु धनपतिहि मानि कोउ राजा। निजबल सन तेहि जीतन काजा॥
भये साँझ रथमहँ रनधीरा। सोयो अस्त्र शस्त्र भरि बीरा॥
"नभसन निसिमहँ जनु जलधारा। गिरयो सुवर्ण नाथभंडारा" *॥
करत पयान भये परभाता। यह तेहि कहो सेवकन बाता॥

* यह स्थान अयोध्या में अब तक सुनखर के नाम से प्रसिद्ध है।

चढ़त धनद ऊपर जो पाई । सोइ सुबरनढेरिहि भरराई ॥
रुचिर हेमगिरिखण्ड समाना । चाह्यौ करन बिप्र कहँ दाना ॥
गुरुपूजा महँ जो धन लागत । तेहिसन अधिक न याचकमाँगत ॥
मुँह माँगेहु सन स्वर्ण विशेषा । देत याचकहिं अवधनरेशा ॥
तेहि सन सकल अवधपुर लोगा । जान्यो दुहुन सराहनजोगा ॥
अगनित ऊँट तुरङ्ग भार धन । लैघर कहँ सोइचलत मुदित मन ॥
परसि नवत भूपाल उदारा । ऋषयशिष्य यह वचन उचारा ॥
"लखिनृप धर्मशील गुण भामा । करै तोहि मंहि पूरनकामा ॥
सो अचरज कछु नहिं नरराऊ । नभहु देत अस तोर प्रभाऊ ॥
नहिन और मंगल जग कोई । जो नरेश तोहि सिद्धि न होई ॥
निज पितु के निजसम अवभूपा । लहिय पुत्र निजगुन अनुरूपा ॥
दै यहि विधि रघुनृपहि असीसा । गुरुआश्रम दिशि गयो मुनीसा ॥
जिमि रविसन जगतेज सुहावा । कुज दिन गये नृपहु सुत पावा ॥
ब्राह्म महूरत महँ रघुरानी । सुत कुमारसम जन्यो सयानी ॥
यह विचारि नरपति गुनधामा । धस्यो पुत्र निज कर अज नामा ॥
सोइ बल सोइ अँग सुन्दरताई । सोइ विक्रम सोइ सहज बड़ाई ॥
लिसे दीप सन दीप समाना । तिन महँ कछु न भेद कोउ जाना ॥
तेहि गुरु जब नृपनीति सिखाई । यौवन बस जब छबि सोइ पाई ॥
धीर सुता सम श्री अनुरागी । मिलन हेतु पितु अज्ञा माँगी ॥
भोज विदर्भनाथ तेहि अवसर । करन हेत निज बहिनि स्वयंवर ॥
अजहि बुलावन लालस माहीं । पठयो चतुर दूत रघु पाहीं ॥
व्याह जोग पुत्रहि अनुमानो । सोइ सम्बन्ध अनूपम जानी ॥
पठयो नृप विदर्भरजधानिहि । सेना सहित पुत्र गुन खानिहि ॥
लहत प्रजा सन सोइ उपहारा । सेज आदि सब विरचि सँवारा ॥
मग महँ ;तासु तंबु अस्थाना । भे उपवन महँ गेह समाना ॥

नक्तामल जहँ वायु कँपावत। रेवासरि सीकर जहँ लावत॥
रज सन धूसर जासु पताका। सोइमगचलि अज करदलथाका॥
काटी अधिक राह रघुवीरा। उतरन चह्यो नर्मदातीरा॥
जल प्रवेस निज प्रथम जनाई। ऊपर फिरत भ्रमर दिखराई॥
धोइ दान निर्मल कट सङ्गा। निसर्यो सरि सन प्रथम मतंगा॥
धोए यदपि धातुरँग सारे। नील उर्द्धरेखा तउँ धारे॥
गिरे कोर दोउ दसन दिखावत। ऋक्षवानतट भिरन जनावत॥
यहिबिधि चलत नदीतट ओरा। तोरत लहर शब्द करि घोरा॥
कबहुँक खैंचि अँग दिशि लावत। कबहुँक सोइ निज सूँड़ बढ़ावत॥
सोहत मनहुँ परत निज कंधन। तोरत मत्त नाग गजबंधन॥
पाछे धरि उर लसत सेवारा। आयो तट जनु चलत पहारा॥
जलप्रबाह जो नाग हिलावा। आगेहि नदीतीर सोइ आवा॥
चलत एक गजकट सन दाना। रुक्यो छिनक लहि जलअसनाना॥
पुनि सोइ नगरनाग कहँ देखी। भई तासु मदवृष्टि बिसेखी॥
सतपच्छदरस सरिस सुहाई। सूँघि असह्य तासु मद पाई॥
रत्तकजन न नेक हिय हेरी। भजे सेन कुँजर महँ फेरी॥
तोरि बंध सब चले तरंगा। परे धरनि रथ ह्वै धुर भंगा॥
घबराने सब योध समाजा। तियगन सकल बचावन काजा॥
यहिबिधि चहुँदिशि कुँजर डेरा। व्याकुल कीन्ह सकल अजकेरा॥
होत न बनकुँजर बध लायक। यह विचारि अज रघुदलनायक॥
तेहि फेरन हित आवत जानी। हन्यो तीर कट कछुधनु तानी॥
ज्यों अज तीर नाग सिर लागा। त्यों तिन निज सरीर तहँ त्यागा॥
प्रभा सहित तिन सुरतनुधारा। सो अचरज सब लोग निहारा॥
तुरतहि निज प्रभाव बस पाई। अज पर स्वर्गफूल बरसाई॥
कह्यो डारि प्रतिबिम्ब दसन के। बढ़वत मनहुँ हार मुक्तन के॥
" सुनिय कुमार गर्ब के कारन। लहि ऋषिसाप भयों मैं बारन॥

प्रियदर्शन गन्धर्वनाथ कर। नाम प्रियंवद पुत्र बीरबर॥
पुनि मोहिं देखि नवावत सीसा। सुनत बिनय मृदु भयो मुनीसा॥
अगिन तेजवस यद्पि गरम जल। पै सुभाव सन नित सोइ सीतल॥
तव कुम्भहि मनुबंसकुमारा। जब तोरै करि बान प्रहारा॥
"मिलै तोहि तब फिर सुरगाता'। यह मोंहि कही तपोनिधि बाता॥
वहु दिन तव मग जोहत रहऊँ। आजु दरस तव नृपसुत लहेऊँ॥
अब तुम निजबल तेज प्रतापा। मम अति घोर छोड़ायो सापा॥
करौं न जो तव प्रति उपकारा। वृथा रूप यह लहन हमारा॥
लौटत चलत मन्त्र बस जोई। सम्मोहन मम आयुध सोई॥
लेहु याहि अरिगन दिशि मारे। बिजय होत बिन रिपु संहारे॥
करु न लाज मम बधन बिचारी। रही हनत मोहि दया तुम्हारी"॥
"जो चाहहु" अस कहि अजबीरा। परसि पवित्र रेवसरिनीरा॥
ह्वै उत्तर मुख अस्त्र मंत्र कहँ। सीख्यो निज उपकृत जनसन तहँ॥
मिले दैवबस मग महँ आई। यहिबिधि तिनमहँ भई मिताई॥
गयो एक निज पितु आगारा। एक बिदर्भ ओर पगुधारा॥
नगर समीप जानि सोइ आवा। क्रथकैशिकपति अति सुखपावा॥
चल्यो मिलन जिमि लखि रजनीसा। उमड़त मिलन काज बारीसा॥
चलि आगे पुनि पुर महँ आना। यहिबिधि तासु कीन्ह सनमाना॥
तेहिछन जानि पस्यो सबकाहुन। अज गृहनाथ भोजनृप पाहुन॥

जासु द्वार बेदी धरे कलस अनेक सुहाय।
सो बिदर्भनृपसेवकन गृह तेहि हीन्ह बताय॥
रघु समान बल तेज धरि अज सोइ सुन्दर धाम।
कीन्ह बास जिमि बालपन परे दसा महँ काम॥
जानि स्वयम्बर हित जुरे देस देस के नाह।
सो कन्याकुल रत्न के धरि मन लहन उछाह॥

प्रिया सरिस रसभाव कछु मन समुझत जो नाहिं ।
आई तेहि बड़ि बेर महँ निद्रा आँखिन माहिँ ॥
जासु बिपुल कंधन परे श्रुति कुँडल के दाग ।
दबे सेज की रगर सों रहे फीक अँग राग ॥
भये प्रात तेहि सूतसुत समबय चतुर सुबानि ।
आय जगायो गीत सन अजगुन सुजस बखानि ॥

राग भैरव

जागिए कोसलराजदुलारे ।
छटी रैन लखि अरुन उवत अब भए मन्ददुति नभ महँ तारे ॥
गरु बिचारि बिधिजगतभार के खण्ड दोइ सुन्दर करि डारे ।
एक धरो सोइ तुम, दूजे के रघुनृपचन्द उठावन हारे ॥
तुमहिं नींद बस देखि चाह नहिं कछु निज दिशिश्रियरातिबिचारे ।
सेयो ससि सोऊ यहि अवसर रह्यो न कछु मुख सरिस तुम्हारे ॥
खोले होत फूल सम भौंरत भ्रमर लखत घूमत जब तारे ।
यहिछन विमल सरन महँ पङ्कज जनु तव दोउ नैनन सन हारे ॥
सरन कंज बिकसावत फूलन रूखन बास संग निज धारे ।
चाहत परगुन लहि तव मुखकी साँस बनन चलि वायु सकारे ॥
तरुपल्लव पर ओसबूँद परि देखि परत मोती जनु ढारे ।
छबि पावत मुसकान सरिस तब लाल ओंठ पर रद उजियारे ॥
जब लगि भानु उवै नहिं तब लगि छाँटै अरुन सकल अँधियारे ।
चलत बीर तुम अग्र कटत दल रिपु केहि तव गुरु नृप संहारे ?
खड़खड़ाइ जञ्जीर अङ्ग, अब, जगे नाग तब सब बलभारे ।
परत अरुन कर तासु दंत पर लखत गेरु तट मनहुँ बिदारे ॥

पारस तुरङ्ग बँधे तम्बुन महँ तिनहि प्रात तिनके रखवारे।
देत नोन तेहि खान हेत, छबि तासु साँस सन देत बिगारे॥
कुम्हलाने सब फूल सेज पर मन्द जोति भे दीपक सारे।
शुकहु भूप पिंजरे महँ बैठो बिनवत तोहि सुनि बचन हमारे॥
बंदिसुतन के बैन सुनि यहिबिधि लहि श्रवनसुख।
उठे कुँवर गुनऐन सुनत हंसधुनि नाग सम॥
करि पुनि सब नितकाम यथाउचित जस शास्त्र कह।
धारि बेष अभिराम गए स्वयंबर भूमि को॥

छठा सर्ग

इन्दुमती का स्वयंबर

धरे रूप लखि जनमन मोहत। सुन्दर जड़े सिंहासन सोहत॥
लख्यो नरेसन देव समाना। बैठे निज निजरुचिर विमाना॥
रति बिनती बस हरहि मनाई। निजअँग लहे काम छबि पाई॥
लखि तेहि भे निरास सब राजा। इन्दुमती कहँ पावन काजा॥
एक आसन तिन माँहँ सुहावा। तेहि विदर्भपुरनाह बतावा॥
सिंहपोत जिमि चढ़त पहारा। तिमि सीढ़िन तहँ गयो कुमारा॥
जहँ रचि रचि बहु रतन लगाये। रङ्ग रङ्ग जहँ वस्त्र बिछाये॥
तहाँ बैठि सोह्यो नृपबारा। मोर पीठ जिमि चढ़त कुमारा॥
जासु तेज नहिँ सकत निहारी। सोइ श्रियलहसअंस तहँ धारी॥
मेघन महँ बिजुरी की भाँती। फैली सकल भूप की पाँती॥
बैठे महामोल सिंहासन। सोहत चमकत वस्त्रधरे तन॥
तिन महँ तेज सहित अज कैसा। पारिजात सुरतरु महँ जैसा॥
प्रजा दृष्टि सब नृपगन त्यागी। एक भानुकुलपतिसुत लागी॥
जिमि कुसुमन बन मधुप बिहाई। बैठत नागकुम्भ पर आई॥

ता पाछे जब कुलजस जानत। रविससिकुलनृपसुजसबखानत ॥
अगरसुगन्ध एक दिशिछावत। बीच बीच नृप ध्वजा उड़ावत ॥
मङ्गल हेत शङ्खधुनि होई। पहुँचत दिसाअन्त लगि सोई ॥
सुनि सोइतेहि विचारि घनसोरा। नाचत नगर निकट बनमोरा ॥
तहँ चण्डोल चढ़ी तेहि काला। चहुँदिशि सखिनबीच नृपबाला ॥
चली विवाहबसन तन धारी। बरन हेत पति मंच मँझारी ॥
तेहि आवत लखि एकहि बारा। मिले धाइ तहँ नैन हजारा ॥
ता दिशि सबन दृष्टि निजफेरी। सृष्टि विशेष मनहुँ विधि केरी ॥
देह एक आसन पर त्यागी। भूपवृत्ति सब तामहँ लागी ॥
दूती सम निज प्रेम जनावत। निज अभिलाष ताहि दिखरावत ॥
रूखन महँ नवपत्र समाना। प्रगटे चित्तभाव विधि नाना ॥
दोउ कर कमलदण्ड एकधारी। पत्र हिलाय द्विरेफन मारी ॥
जोबिच बँध्यो पराग सुहावा। एक सोइ लीला कमल नचावा ॥
गिरत कन्ध सन माल उठाई। भुजबन्धन सन ताहि छुड़ाई ॥
कछु झुकाइ निज बदन अनूपा। यथा उचित पहिलो एक भूपा ॥
कछु देखाइ दृग छबि सोइ ओरा। निज अङ्गुरिन एक भूप बटोरा ॥
निजनखछबि चहुँदिशि फैलावत। हेमपीठ निज पदन खँचावत ॥
धरि आसन पर एक भुज बामा। कछुक उठाइ काँध अभिरामा ॥
लोटत हार पीठ पर राखा। एक तहँ कछुक मित्रसन भाषा ॥
सोहत श्रुति कुँडल सम जोई। लै केतकी पत्र कर सोई ॥
जे नख छुवन जोग प्रियअंगा। एक सोइनखन कीन्हतेहि भंगा ॥
ध्वजारेख युत कमल समाना। लाल करन सन एक जुवाना ॥
कर डारत तहँ रतन प्रकासा। एक निज करन उछालो पासा ॥
हीर जोति अङ्गुरिन एक धारी। मनहुँ टेढ़ कछु ताहि बिचारी ॥
सूधेहु मुकुट एक नरनाथा। मनकछुमानिधसो निज हाथा ॥
जानत नृपकुल कीरति सारी। बोलत पुरुष सरिस प्रतिहारी ॥

मगधनाथ ढिग कन्या आनी। बोली ताहि बखानत बानी॥
"जो जन सरनहेत यहि ध्यावत। बिन सन्देह सरन सोइ पावत॥
धरत अङ्ग यह तेज अपारा। मगधदेश कर रक्षनहारा॥
जाके गुन सुनाम अनुरूपा। धरत परन्तप नाम अनूपा॥
जग महँ यदपि अनेकन नरपति। यहिसन विदित भूमि राजन्वति॥
नभ महँ यदपि तार अधिकारी। ससि सन विदितरैन उजियारी॥
इन करि यज्ञ बेद अनुसारा। हरि बुलाय घर बारहि बारा॥
फूल हीन करि दीन्ह नरेसा। परत कपोल सची के केसा॥
बरहु कुँवरि जो यह महिपाला। तौ निज पुर महँ पैठन काला॥
बैठि झरोख कुसुमपुर नारी। ह्वैहैं प्रमुदित तुमहिं निहारी"॥
खसकत दूब माल सन जाकी। सुनिसखिवचन कछुकतेहिताकी॥
रस विहीन करि ताहि प्रनामा। तज्यो मगधनरपति बरबामा॥
पुनि लै गई तुरत प्रतिहारी। और भूपढिग राज कुमारी॥
हँसिहिजल जिमिचलत बतासा। फेरत और कंज के पासा॥
बोली, "अङ्गनाथ ए आहीं। जेहि लखि अमरनारि ललचाहीं॥
जाके गजसिखवत मुनि लोगा। यह भुइँ करत स्वर्गपद भोगा॥
इन रिपुतियउर हार दुराई। मुकुता सरिस आँसु गिरवाई॥
हार रुचिर सोइ सूत बिहीना। तरुनिन मनहूँ फेरि नृप दीना॥
यद्यपि बिलग प्रकृति सन अहहीं। श्री बानी इन महँ मिलि रहहीं॥
बोल मीठि धरि रूप सलोना। उचित तुमहिं सब तीसरि होना"॥
अङ्गनाथ सन निज दृग फेरी। सखी चलन कन्या तब प्रेरी॥
सो सुन्दर भल लख्यो कुमारी। तऊ होत नरकी रुचि न्यारी॥
इन्दुमतिहि मानहुँ नव चन्दा। दिखरायो तब चतुर सुनन्दा॥
सहि न सकत जेहिसबअरिभूपा। एक नरपति अति सुन्दर रूपा॥
"धरे बिपुल उर बाहु बिसाला। तनु कटि ए अवन्तिनरपाला॥
लागत सोइ दिननाथ समाना। चढ़त विश्वकर्मा के साना॥

जब यह चलत सेन के सङ्गा। उड़त मार्ग रज चलत तुरङ्गा ॥
उठि सामन्त किरीटन परहीं। तहँ मनिज्योति मन्द नित करहीं ॥
महाकाल जो बसत महेसा। यह रहि तासु समीप नरेसा ॥
पाख अँधेरेहु करत बिहारा। शुक्ल पक्ष सुख लहत अपारा ॥
तेहि उपवन यहि सङ्ग कुमारी। कै विहरन रुचि होत तुम्हारी ॥
सिप्रासरि ऊपर सन आवत। जो उपबन तरु वायु हिलावत ?"
जिन निज शत्रुकीच सुखरावा। जिन निज बन्धु कमल बिकसावा ॥
सह्यो कुमारि न नृपरवि सोई। निज मन कुमुदकलीसम होई ॥
कनक सरिस छवि धरत घनेरी। सृष्टि विशेष मनहुँ बिधिकेरी ॥
तेहि अनूप नृप सौंह सयानी। लाय कही दासी यह बानी ॥
"रह्यो सु कार्तवीर्य सुभ नामा। होत सहस भुज तेहि संग्रामा ॥
ब्रह्मज्ञानि निज बिधि अनुरूपा। गाड़े द्वीप अठारह यूपा ॥
सकल प्रजा निज पालि मनाई। एकराजपद्वी जिन पाई ॥
ज्यों अकाज चेत्यो जग कोई। प्रगट्यो सौंह धरे धनु सोई ॥
अन्तःकर्णहु माहिं प्रजा के। गयो न पाप राज महँ ताके ॥
जिन रावन जीते सचिनाथा। सो धनु महँ ह्वै निश्चल हाथा ॥
दसहु मुखन सन लेत उसासा। कीन्ह तासु बन्दीघर बासा ॥
श्रुतिपथ सेवन नाम प्रतीपा। हैं यह तासु वंश के दीपा ॥
इन मेट्यो चञ्चल श्रिय अपजस। मिलो जो तेहि आश्रयअवगुनबस॥
छत्रिय हेत कालकी रैनी। भृगुपति पर सुधार अति पैनी ॥
अग्नि सहाय युद्ध महँ पाई। दीन्ही कमलकोर कठिनाई ॥
सोहत माहिष्मतिनगरी की। कोटलसी जनु करधनि नीकी ॥
सो रेवा जौ लहन उछाहू। बरिय कुँवरि तो यह नर नाहू ॥
रह्यो यदपिनृप सुभग सुहावा। तऊँ न इन्दुमती मन भावा ॥
बिना मेघ पावत सुचि जोती। ससिसननहिंनलिनिहि रुचिहोती॥
शुद्ध मातु पितुवंस दीप अस। गावत आनहुँ लोक जासु जस ॥

आगे करि सोइ सूरसेन के। बोली सखि नरपति सुखेन के॥
"भयो नीपकुल यह नरराई। विधिवत करत यज्ञ यहि पाई॥
मुनि आश्रम महँ जन्तु समाना। सहज बिरोध तज्यो गुन नाना॥
जासु अनूप तेज अपने धर। ससि प्रकाससमलगतमनोहर॥
घास जमे रिपु मन्दिर माहीं। पुनि सोइ तेज सहे नहिं जाहीं॥
जाके जलबिहार सुन्दर तन। परत बारि महँ धोवत चन्दन॥
सोह जमुन जनु सहित तरङ्गा। मथुरहिमाहिं मिलत सोइ गङ्गा॥
यमुना बसत डेराइ सुपर्णहि। दयो कालि जोरतन सुवर्णहि॥
सोहत ताहि अङ्ग निज धारी। जिमि कौस्तुभ सँगहोत मुरारी॥
धनपतिबाग तुल्य वृन्दावन। तहँ रुचि रुचिरसेज मृदु फूलन॥
यह पति सङ्ग रहि सहित उछांहू। लेहु कुँवरि निज जोबन लाहू॥
महँकत धातु सहित जलधोई। बैठो सिलापट्ट तुम सोई॥
देखहु गोवर्द्धन गिरि कन्दर। नाचत मोर वृष्टि महँ सुन्दर"॥
भँवर समान नाभिवरवारी। सोउ नरपति तजि गई कुमारी॥
चलत तजत मग परे पहारा। सिन्धु मिलन हितजनुजलधारा॥
हेमाङ्गद कलिङ्ग नृप पासा। शत्रुन्वृदजिन सकल बिनासा॥
जासु बाँह सोहत भुजबन्दा। ससि बदनहि लै गई सुनन्दा॥
"धरतमहेन्द्र समान सत्व अति। यह महेन्द्रगिरिअरु सागर पति॥
जाके दान स्रवत गज भेसा। आगे चलत महेन्द्र नगेसा॥
धन्वीप्रवर धरत निज हाथा। दुइ धनुडोरि रेख नरनाथा॥
गिरत शत्रुश्रिय लोचन बारी। अंजन सँग सोई मनहु पनारी॥
महल झरोखन लहर लखाहीं। निकट हेतु तहँ सागर माहीं॥
पहर तुरुही सिन्धु चुपावत। निज धुनिसननितनृपहिंजगावत॥
जो बिहरहुयहि संग कुमारी। तो तालीबन चलत बयारी॥
लौंग फूल द्वीपन सन लाई। देहै तब अँग स्वेद सुखाई॥"
सखी ताहि यद्यपि समुझावा। तेहियहिबिधिअतिलोभदिखावा॥

फिरी भूपसन, ज्यों घर आई। भागि दोषवस श्रिय फिरि जाई ॥
जासु तेज सम बदन उजासा। लै सोइ नागपूर नृप पासा ॥
यहिदिशि देखु, चकोर सुआँखी। बोली प्रथम चेरि अस भाखी ॥
"कन्धन रुचिर हार लटकाये। हरि चन्दन निज अंग लगाये ॥
देखिय पाँड्यदेश नरपाला। सोहत धरे शरीर विशाला ॥
लाल परत रविकर बस सोसा। झिरनी सँगजिमि होत गिरीसा ॥
अश्वमेधमख दीक्षा माहीं। जब जब ए नरपाल नहाहीं ॥
जिन गाड़योमहि बिन्ध्य पहारा। पियउगिल्यो जिन सागर सारा ॥
तब तब सोइ अगस्त्य मुनिराई। कुशल छेम यहि पूँछत आई ॥
लहि आयुध मनाय वृषकेतू। चल्यो जु सुरपति जीतन हेतू ॥
तेहि छन लङ्कापति अभिमानी। जनस्थान संशय महँ जानी ॥
यहिसन सोइ खरराज बचावन। कीन्हसन्धि निशिचरपतिरावन ॥
जो कुमारि यह परम कुलीना। धरै तोर कर भूप प्रवीना ॥
मनिमय सिन्धु करधनी जाकी। होहु सौत सोइ दखिनदिसा की ॥
जहाँ पूग अहिवेल लपेटत। लौंगलता जहँ चन्दन भेटत ॥
सेज तमालपत्र सन सजि तहँ। करु बिहार सोइमलय भूमि महँ ॥
यह नृप नीलकमल सम श्यामा। गोरोचनसम तुम अभिरामा ॥
घन बिजुरी सम होइ तुम्हारा। सँग युगसुछवि बढ़ावनहारा" ॥
पै आयो नहिं सखी सिखावन। नेकु बिदर्भनरेसबहिनमन ॥
अथये रवि सरोजमुख भीतर। सकन न पैठि नछत्रनाथ कर ॥
दीपशिखा सम चलिनिशि काला। जेहि जेहि तजत चली नृपबाला ॥
नरपतिमार्गअटा सम होई। भयो तेजबिन नृप सोइ सोई ॥
तेहिलखिढिग अजमनहिं बिचारी। बरै न बरै कि मोहिं कुमारी ॥
व्याकुल भयो तदपि तेहि अवसर। दीन्हआसतेहि फरकिदछिनकर ॥
अंग अंग सुन्दर तेहि पाई। निपटी निजश्रम सन नृपजाई ॥
मधुकर पाँति और तरु पाहीं। बिकसितबौर पाइ नहिं जाहीं ॥

इन्दुमती तहँ इन्दु समाना। निरखत अजहि देखि धरिध्याना॥
बिस्तर सहित कह्यो प्रतिहारी। सकल दोष गुन जाननहारी॥
"रह्यो भानुकुल एक नरिन्दा। नाम ककुत्स्थ भूपगनचन्दा॥
तेहि सन उत्तरकोसलभूपा। लह्यो नाम काकुत्स्थ अनूपा॥
शम्भु सरिस युधि महँ एकबारा। ह्वै वृषरूप इन्द्र—असवारा॥
सोइ नरनाथ कीन्ह निज बानन। रंगबिहीन असुरतिय आनन॥
परत ढील मारत ऐरावत। हरिभुज बँध सननिजहिमिलावत॥
निज सरूप पावत हरि साथा। अर्धासन बैठो नरनाथा॥
भयो तासु कुल वंसप्रदीपा। कीरतिमान नरेस दिलीपा॥
एक घाटिहि सत मखसोराजा। कीन्हो हरहि मनावन काजा॥
ताके राज बिहार भवन के। सोवत राह बीच गनिकन के॥
बसन सक्यो नहिं वायु उड़ाई। लेन सकै को हाथ बढ़ाई?॥
ता सम भयो पुत्र गुनधामा। कीन्हो यज्ञ विश्वजित नामा॥
तहँ रन जीति देस चहुँ ओरा। जो धन नरपति सकल बटोरा॥
तेहि सबखरचि धस्यो कछु नाहीं। बची एक हाँड़ी घर माहीं॥
उतस्यो सकल सिन्धु के पारा। गयो नागगृह चढ़यो पहारा॥
व्याप्यो स्वर्ग यदपि जस सोई। इतना कहि गनिसकत न कोई॥
भयो मनहुँ नभपतिहि जयन्ता। ता सुत यह कुमार गुनवन्ता॥
पिता सरिस धारत महि भारा। यद्यपि अहै अलपवय बारा॥
कुल उत्तम नव बयसुचितन सों। बिनय आदि एक एक गुननसों॥
बरिय कुँवरि यह जनतव जोगा। कंचन सँग चोरत मनि लोगा"॥
रही मौन अस भाखि सुनन्दा। तेहि छिन कछुक लाजकरिमन्दा॥
विगल दृष्टि सन अजहि निहारी। ग्रहन कीन्ह तेहि राजकुमारी॥
यद्यपि तेहि महँ निज अभिलाषा। लाजहेतु मुख सन नहिं भाषा॥
खरे रोम मिस सन पै सोई। गयो बालअँग बाहर होई॥
लखि यहिविधि अनुराग प्रकासा। बोली सखी करत परिहासा॥

"चलियअनत"सुनि बचन कठोरा। लख्यो कुमारि रूसितेहि ओरा ॥
धायहाथ सन पुनि नृपबाला। लै अति स्वेत फूल की माला ॥
जनु निज प्रेम दृश्यतनुधारी। रघुनन्दन गर महँ सोइ डारी ॥
मङ्गल फूलन बिरचि बनाई। उत्तम माल अङ्ग पर पाई ॥
डारे गर भुज तरुनि समाना। तेहिअवसर रघुसुत तेहि माना ॥

"मेघ छुटे राकेस सन मिली कौमुदी आय।
गई गंग सरिनाथ पहँ निज समान तेहि पाय" ॥

है प्रसन्न अति निरखि तहँ निज निज सम गुन जोग।
यहै एक कटु नृपन कहँ बचन कह्यो पुरलोग ॥

एक ओर वर पक्ष के जन सब सहित हुलास।
एक ओर परिनाम लखि नृपगण सकल निरास ॥

मुंदत कुमुद निज नयन कहुँ कहुँ बिकसत जलजात।
भई सकल नृप मंडली सर सम भये प्रभात ॥

सातवाँ सर्ग

इन्दुमती का ब्याह

लिये संग बर निज अनुरूपा। सोइ भगिनिहिलै भोज अनूपा ॥
देवसेन सँग मनहुँ कुमारा। नगर ओर नरपति पगुधारा ॥
जानि व्यर्थ मनफल निज बेसा। निन्दित मन महँ सकल नरेसा ॥
निज निज डेरन ह्वै छबिमन्दा। गये प्रभात समय जिमि चन्दा ॥
रहत निकट सोइ रची प्रभावा। रह्यो विघ्न कर सकल अभावा ॥
यहिसन अजहिनिरखि तेहिकाला। रहे शान्त मनजरे नृपाला ॥
जहँ तोरन बहु रुचिर बनाए। जहँ सुन्दर नव फूल बिछाए ॥
परत न घाम चलत तरुछाहीं। आये सोइ नरपति पथ पाहीं ॥
तेहि अवसर विदर्भपुरनारी। वर देखन लालस हिय धारी ॥
आवत निरखि झरोखन पाँती। तजि घरकाज भईं यहि भाँती ॥
बिकसत केस सँभारत धाई। एक झपटि झरोख दिशि आई ॥
कर सों पकरि खरी वह बाला। नहिं बाँधब सूझो तेहि काला ॥
गीले चरन एक सुकुमारी। तुरत दासि आगे सन टारी ॥
निज अतिमन्द चाल तहँ त्यागी। रङ्गत महि झरोख दिशि भागी ॥
दछिन आँखि अंजन एक लाई। दौरी एक कर लिये सलाई ॥
खरी झरोख सहित एक भामिनि। खुली नीबि बाँधत नहिंकामिनि॥
भूषन सरिस नाभि कर डारी। खरी एक निज बस्त्र सँभारी ॥
लै करधनि कर आधि सँवारी। बर देखन दौरी एक नारी ॥
पद पद पर सुचिरतन गिरावत। सूत्र मात्र तेहि तरुनि बनावत ॥
तिनके बदन सरोजन सङ्गा। चंचल नयन लसत जनुभृङ्गा ॥
सोहे पुर झरोख तेहि अवसर। मानहुँ धरे सरोज मनोहर ॥
एकटक तहँ रघुसुतहिनिहारी। भूलीं सकल विषय पुरनारी ॥

जनु सब इन्द्रिन शक्ति बिहाई। एक सुन्दरि लोचन महँ आई॥
"माँगत निजहि भूप बहु जानी। इन भल कीन्ह स्वयंबर ठानी॥
कमला सकत पाइ भगवाना। निज अनुरूप कौन बिधि आना॥
जो सुन्दर एतन जलजाता। नहिं जोरत एक सङ्ग विधाता॥
तो यह जोरि अनूप बनाई। प्रगटावत निज बुद्धि खोटाई॥
रति मनोज निश्चय दोउ आहीं। जो नृप सहस मण्डली माहीं॥
बस्यो बाल निज रूप समानहिं। मन एक पूर्व जन्म सँग जानहिं"॥
यहिबिधि बचन विदर्भनारिमुख। पावत सुनत कुमार स्रवणसुख॥
रचित सुमङ्गल साज सोहाये। सोइ सम्बन्धिगेह चलि आये॥
धरि पुनि कामरूपनरपतिकर। उतरे अज कुञ्जर सन महि पर॥
तियमन सम नरपति आगारा। पैठे तहँ अवधेसकुमारा॥
रतन सहित मधुपर्क सुहाई। वर अमोल आसन बैठाई॥
दुइ दुकूल नरपति तेहि दीन्हा। सादर ग्रहण ताहि अज कीन्हा॥
तेहि पहिराइ दुकूल सोहाये। बधू पास सेवक लै आये॥
ज्यों नवससि कर सिन्धु बढ़ावत। सुचिबेला समीप नित लावत॥
भोज पुरोहित अग्नि समाना। डारि अग्नि महँ हवि बिधिनाना॥
करि बिवाह साखी पुनिसोई। जोरे तुरत बधू बर दोई॥
धरि निज हाथ बधूकर चारू। सो सोभा तहँ लही कुमारू॥
जिमि अशोकपल्लव अभिरामा। सोहत बाढ़ि धरे तरु आमा॥
भयो छुअत अज पुलकशरीरा। चले बधूअँग स्वेद सुनीरा॥
जुरत पानिपंकज तेहि अवसर। कामवृत्ति जनु बँटी बराबर॥
खुले कोर लगि दृग तिनकेरे। पुनि निजकाज सुफल करि फेरे॥
मिले खिंचे छिन रुकि सकुचाहीं। परे लाज बन्दीघर माहीं॥
भाँवर फिरत सोह यहि भाँती। मिलत मेरु तट जिमि दिनराती॥
डास्यो मत्तचकोरनयनि तहँ। गुरु आज्ञा सुनि खील आगिमहँ॥
शमी धानकर गन्ध सोहावा। धरे हरत धूत अग्नि उठावा॥

बार बार कपोल लगि घूमा । सोहत करनफूल सम धूमा ॥
गन्ध धूम पावत तेहि काला । चले बारि भरि नैन बिसाला ॥
पाटल भयो कपोल मनोहर । मुरझाने श्रुति महँ जब सुन्दर ॥
बैठे कनकसिंहासन चारू । दुलहिनि सँग अवधेसकुमारू ॥
बन्धु बिप्र पतिसुत युतनारी । नृपसँग अछतमूठि तहँ डारी ॥
वंशदीप बिदर्भपुरनाहा । करियहिबिधिनिजबहिनबिवाहा ॥
एक एक नृप आदर काजा । आज्ञा दीन्ह सेवकन राजा ॥
छिपे मगरयुत ताल समाना । रोके रोष चिन्ह सन नाना ॥
पूजा फेरि भेंट मिसि देई । गए नगर दिशि आयसु लेई ॥
करि पहिलेहि सम्मति सब भूपा । लेन हेत सोइ बस्तु अनूपा ॥
कारजसिद्धि समय जनुपाई । ठाढ़े भये राह महँ जाई ॥
पुनिकरि सब बिवाहउपचारहि । बधू सहित अवधेस कुमारहि ॥
देइ योग यौतुक नरनाथा । पठयो अवध चल्यो पुनिसाथा ॥
बिदित जासु कीरति जगमाहीं । सोइ अज संग भोज मगमाहीं ॥
पुरदिसि फिरयो तीनि बसिराती । बीते पर्ब चन्द्र की भाँती ॥
छीने धनलखि जिन करि क्रोधा । मान्यो रघुसन प्रथम बिरोधा ॥
तियमनि लहत तासु सुत देखी । भयो नृपन कहँ क्रोध बिसेखी ॥
लिये जात तहँ भोज कुमारी । रोकत नृपगन डगर मँझारी ॥
जिमि बलि दई श्रियहि प्रहलादा । रोक्यो लिये जात हरिपादा ॥
लै अनेक जोधन पितुसचिवहि । भोजसुतारक्षनहित अज कहि ॥
रोक्यो नृपदलसह सह चतुरङ्गा । सोनभद्र रोक्यो जिमि गङ्गा ॥
रथि सन रथि पैदल सन पैदल । भिरे तुरङ्ग तुरग सन द्वै दल ॥
भिरत गजस्थन गजअसवारा । तुल्य समान भई तहँ मारा ॥
तेहि छन मचत रङ्ग चहुँओरा । बाजत तूर्य्य होत धुनिघोरा ॥
समुझि न कछु भैरव संग्रामा । जोधन कह्यो न कुल अरुनामा ॥
मारि नामअंकित निज तीरा । जिन कुलनाम जनायो बीरा ॥

तुरगपदन तहँ धूरि उठाई । रथ चक्रन सन घनी बनाई ॥
मत्तनाग कानन फैलाई । रोक्यो रविहि वस्त्र सम छाई ॥
फटे बायुबस मुखसन सोइ रज । पियतमनहुँतहँ मकराकृतिध्वज ॥
सोहत सोइ बहु मीन समाना । करत कीचयुत जलजनुपाना ॥
सुनत चक्रधुनि जन रथजाना । घंटा सुनत गजन अनुमाना ॥
स्वामिनाम सन निज परबोधा । लह्यो धूरिमहँ तेहि छनजोधा ॥
नरगजहयतन लगत हथ्यारा । जो बहिचली रुधिर की धारा ॥
दृग पथ रोकत रज तममाहीं । प्रातभानु सम तहाँ लखाहीं ॥
रुधिरधार बस जर बिन होई । ऊपर हिलत बायु बस सोई ॥
भए अँगार खण्ड जनु आगी । पहिले उठे धूम सम लागी ॥
मूर्च्छित परत अस्त्र तनलागत । फिरकत सोइ सारथिहि जागत ॥
जो तेहि प्रथम अस्त्र गहिमारा । जानि केतु सन तिनहिं सँहारा ॥
भे पर-तीर लगत दुइ खण्डा । चतुर बीर के बान प्रचण्डा ॥
तऊँ अर्द्धसांमीयुत भागा । निज जब हेतु लक्ष्य महँ लागा ॥
भे गजयुद्ध सवारन केरे । परत सीस चक्रन के प्रेरे ॥
तदपि केशफँसि गिद्ध नखनमहँ । गिरे बेर महँ कटे सीस तहँ ॥
तुरग युद्ध महँ एकहिं बारा । निज सन्मुख तहँ बीरन मारा ॥
तुरग देह तेहि परो निहारी । लड़न हेत असमर्थ बिचारी ॥
चाह्यो फेरि जुरन के काजा । रिपुहिं उठन तहँ बीर समाजा ॥
पहिरे कवच गहे तरवारा । करत मत्तगजदन्त प्रहारा ॥
उठत आगि कुञ्जर भय खाई । निज सूँड़न जल डारि बुझाई ॥
गिरत सीस महि फल समहोई । चला रक्त मदिरा भइ सोई ॥
परे टोप तहँ चसक समाना । मानहुँ मृत्यु कीन्ह मदपाना ॥
खात बिहँग जासु दोउ छोरा । तिन सन स्यारि एक भुज छोरा ॥
यद्यपि रुचत माँस अति ताही । तउँ भुज भखत तासु मुखमाही ॥
चुभि भुजबन्द कोर दुखपाई । खीझि सियार तेहि देत बहाई ॥

रिपुअसि लगत कटत भटसीसा। होत तुरन्त विमानअधीसा ॥
सोहत बामअङ्ग सुरनारी। एक नाचत निज देह निहारी ॥
मरत सारथी कहुँ भट दोई। कीन्हो युद्ध सारथिहु होई ॥
लगत अस्त्र पुनि परे तुरङ्गा। भिरे गदनसन एक एक सङ्गा ॥
पुनि टूटत तहँ प्रबल हथ्यारा। भिरे बीर करि मुष्टिप्रहारा ॥
लगत अस्त्र तहँ निजनिज अङ्गा। तजे प्रान यद्यपि दोउ सङ्गा ॥
लेन हेत एकहि सुरबाला। कहुँ द्वै बीर लरे तेहि काला ॥
तहँ दोउ एकएक सन चतुरङ्गा। लह्यो अनिश्चित जय अरु भङ्गा ॥
चलत पवन पीछे अरु आगे। तब दोउ सिन्धुलहर सम लागे ॥
भएहु भग्नदल तेज अथोरा। गयो कुमार शत्रुदल ओरा ॥
धूमहि यद्पि समीर दुरावत। आगि सदैव काठढिग आवत ॥
धारे धनुष कवच कसि अङ्गा। चढ़ो सुरथ कटि बाँधि निषङ्गा ॥
रघुनन्दन तहँ रन अलबेला। रोक्यो रिपुदल सकल अकेला ॥
प्रलयकाल जिमि महाबराहा। रोक्यो उठत पयोधिप्रबाहा ॥
धारे दच्छिन हाथ तूनीरा। रन महँ लख्यो ताहि दलबीरा ॥
पुनि सोइ धरत धनुष निज बाना। बेग हेत नहिं काहु लखाना ॥
अजधनुडोरि कान लगि तानी। जनु रिपु मारन बान बियानी ॥
रन महँ करत रोस अरु कोहा। चाबत लाल ओंठ जहँ सोहा ॥
कटे कंठ लगि भाल प्रहारा। परत धरनि पर करि हुँकारा ॥
रेखा सहित भौंह जहँ बाँकी। सोइ रिपुसिरन समरमहि ढाँकी॥
गज आदिक दलअँग सब धाये। कवचभेदि सब अस्त्र चलाये ॥
सब जतनन सन एकएक राजा। तेहि छन रघुनृपसुत सनबाजा ॥
रिपु आयुधन तासु रथ ढाँका। लख्यो लोग तेहि निरखिपताका॥
जिमि प्रभात घन कूहर माहीं। रवि प्रताप बस कछुक लखाहीं ॥
जागरूक अवधेस कुमारू। धरे काम सम अँगछबि चारू ॥
तब गन्धर्वकुँवर सन पावा। नृपन ओर तहँ अस्त्र चलावा ॥

खैंचत धनुष हाथगति बाँधे। पगड़ी गिरत एक दिशि काँधे॥
ध्वज खम्भन सन तनहिं मिलाई। खरी सेन निद्रित की नाईं॥
जिन ओंठन तियमुखरस पावा। तहँ धरि शङ्ख कुमार बजावा॥
करत पान सोहत तहँ बीरा। जनु निजकर अर्जित जसनीरा॥
फिरे शङ्खधुनि जानि बीर तहँ। देख्यो तेहि निद्रित शत्रुन महँ॥
मूँदे नयन सरोजन माहीं। चन्द्रबिम्ब जिमि चलत लखाहीं॥
रुधिरलसतमुख सनबिसिखनके। लिख्यो केतु महँ अजमहिपनके॥
"लै तव जस अवधेस कुमारा। तज्यो दयाकरि प्रान तुम्हारा"॥
धारे धनुष कोटि एक हाथा। स्वेद बूँद चमकत निज माथा॥
टोप उतारि केश कछु खोले। आय प्रिया पहँ अज यह बोले॥
"इनके अस्त्र सकत हरि बालक। कहौं तोहि लखु ए नरपालक॥
यहिबिधि युद्ध करत तवद्रोही। मो सन चहत लेन ए तोही"॥
छूटत सकल कुमार त्रासदुख। बिकस्यो तुरत बिदर्भसुतामुख॥
जिमि उसास बसबिन्दु सुखावत। निज प्रकाश नित दर्पन पावत॥
यद्पि कुँवरि अति मन हरषानी। कही न कछुक लाज बस बानी॥
जल पावत महि मोर समाना। सखीतासु अज सुजस बखाना॥

पुनि राजन के सीस पर धारि चरन निज बाम।
चल्यो प्रिया सँग अवध दिशि रघुनृपसुत गुनधाम॥
परत उठत रथ तुरगरज सिर रूखी लट होइ।
तासु जीत लछिमी भई आप रूप तहँ सोइ॥
घर पहुँचत जाया सहित ख़बर आगेही पाय।
ह्वै प्रसन्न बिजयीसुतहि अति सराहि नरराय॥
सौंपि राज तेहि सकल रघु कीन्हो शान्तिउछाह।
लहे जोग सुत रविकुलन्हि रहत न घर की चाह॥

आठवाँ सर्ग

अज का विलाप

रहे धरे कंकन अज जबहीं। जानि सुअवसर मानहु तबहीं॥
इन्दुमती जनु दूजि अनूपा। सौंपी धरनि ताहि रघु भूपा॥
जो राजहि नित राजकुमारा। चहैं लहन सहि दुःख अपारा॥
ताहि न होय भोग अभिलाखी। ग्रहन कीन्ह पितु बचनहि राखी॥
गुरु बसिष्ठ कर सन लहि नीरा। नृपअभिषेक पाइ अज बीरा॥
अति उज्ज्वल निज बदन जनाई। धरनी चित्त प्रीति प्रगटाई॥
मंत्र तंत्र ज्ञानी गुरु साथा। करि सब यज्ञकर्म नरनाथा॥
रिपुहित भयो प्रबल नृप सोई। पवन समेत आग सम होई॥
प्रजा सकललखि सो नृप जाना। मानहुँ रघु फिरि भयो जुवाना॥
रह्यो न अज केवल श्रिय धारे। लहे सो रघुनृप के गुन सारे॥
द्वै द्वै गुन एक संग सुहाई। तेहि महँ लही शुद्धि अधिकाई॥
ऋद्ध राज पितुकर अज सङ्गा। बिनय सहित जोबन अज अङ्गा॥
जनि घबराय मोर बल देखी। अस बिचारि करि दया बिसेखी॥
अति सँभारि नवराजहि भोगा। नई बधू कहँ जिमि बुध लोगा॥
मोहि अतिशय मानत नरनाहू। अस मन जानि प्रजा सब काहू॥
मिलत सिन्धु कहँ जिमिसतधारा। सबकर समहिकरत सतकारा॥
अतिहिन खरा अतिहिं मृदु नाहीं। रहि सो नृप मध्यम क्रम माहीं॥
वायु सरिस नृपतरुन नवावा। यद्दपि न मूल उखारि नसावा॥
निजसमान निजसुतहि निहारी। प्रजा राज अरु चित अधिकारी॥
बिनसत विषय अकासहु केरा। यह लखि रघु सबसन मनफेरा॥
यह दिलीप के कुल कर धर्मा। गुनी सुतहि सौंपत नृपकर्मा॥
बसन उतारि छाल तन धरहीं। बाँधि इन्द्रियन संयम करहीं॥
पितहि जानि बन करत पयाना। मन महँ भूप बहुत दुख माना॥

मधुर बचन बोले पद लागी । "तात न उचित जान मोहि त्यागी" ॥
लखितब रघु निजसुतहि उदासा । मान्यो करन अवधपुरबासा ॥
पै न नागसम सो रघु लीन्हीं । जो केचुलसम श्रिय तजिदीन्हीं ॥
पुर बाहर एक कुटी बनाई । रहे नरेस गेह सन जाई ॥
सुतभोगी श्रिय सेवति कैसे । बूढ़े ससुर पुत्रबधु जैसे ॥
अथवत एक दिसि वृद्ध नरेसा । उदय होत नव नृप एक देसा ॥
भयो सो नृपकुलमनहुँ अकासा । ससि अथए जिमि भानुप्रकासा ॥
यतीचिन्ह पितु धरे शरीरा । राजचिन्ह संयुत अज बीरा ॥
मुक्ति उदय जनु यहि संसारा । लीन्हें प्रगट मनुजअवतारा ॥
नीति निपुन मंत्रिन संग राऊ । करत अजय पद लहन उपाऊ ॥
पावन हित पद परम अभंगा । यतन कीन्ह रघु योगिन संगा ॥
युवा भूप बैठो सिंहासन । पालत प्रजा दुष्ट करि शासन ॥
वृद्ध भूप महि दर्भ दसाए । चित साध्यो नित ध्यान लगाए ॥
निज अतिप्रबल शक्तिसन एका । कीन्हें निज बस भूप अनेका ॥
दूजो नित्य लगाइ समाधी । प्राण आदि वायुनगति बाँधी ॥
एक धरे तन तेज घनेरे । कीन्हे भस्म यत्न नृपकेरे ॥
दूजो निज मन ज्ञान प्रतापा । जारे निज भवकर्मकलापा ॥
सन्धि आदि गुनअवसर जानी । लाए फल हित अज गुन खानी ॥
जानि स्वर्ण मृत्तिका समाना । रघु जीते रजादि गुननाना ॥
फल पावन लगि नहिं नव राजा । छाँड़े करन सिद्धिहित काजा ॥
ब्रह्मदरस लगि नहिं नृप बूढ़ा । छाँड़्यो रहन योगआरूढ़ा ॥
यहिविधि रोकि शत्रु इन्द्रियगति । रहि चैतन्य सदा जागतमति ॥
उदय मुक्ति की सिद्धि सुहाई । निज निज इष्ट दुहुन तब पाई ॥
अजइच्छा सन रहि कछु काला । समदर्शी योगी नरपाला ॥
माया रहित पुरुष अविनासी । तेहि महँ मिल्यो भूप सन्यासी ॥
सुनत पिता कहँ तजे शरीरा । डारि शोक सन अज दृगनीरा ॥

पितुकर अग्नि रहित मृतकर्मा। कीन्ह भूप जस यतिकर धर्मा॥
श्राद्ध आदि सब विधि अनुरूपा। कीन्हें पिताभक्त सो भूपा॥
यद्यपि जो यहिविधि तनत्यागत। सुतके दिये पिण्डनहिं माँगत॥
वसुमति और विदर्भ कुमारी। लहि सो साथ तेज बलधारी॥
उपजाये एक मानिक हीरा। जन्यो एक सुत अतुलित बीरा॥
लहे भानु सम तेज प्रतापा। जासुबिमलजस दशदिशिव्यापा॥
भयो विदितजग दशरथ नामा। दशकंधररिपुपितु गुनधामा॥
देवऋषिन सन वेद पढ़ाई। देवन सन नित यज्ञ कराई॥
सुत उपजाइ उरिन पितरन सों। भयो मनहुँ दिननाथकरन सों॥
करन काज केवल उपकारा। अजकर रह्यो सकल बलसारा॥
ज्ञानबुधन कर मान करनकों। बल आरतभय सदा हरन कों॥
सुत कहँ कछुक काज नृपतेई। निडर न बहु परिजन संग लेई॥
बिहरे रानि संग उपबन महँ। हरिजिमि शचीसङ्ग नन्दन महँ॥
तेहि छन वीनावाद्य विशारद। जात अकासमार्ग सुनि नारद॥
सिन्धु तीर गोकर्णनिकेता। तोषन हित शिवउमा समेता॥
महँकत दिव्यकुसुम की माला। रही बीन पर धरी बिसाला॥
चाहत लेन तासु जनु बासा। हस्यो ताहि चलिबेगि बतासा॥
डारी माल बीन मुनिवर की। लसत गन्धहित पाँति भँवरकी॥
सोही जनु अपमान पवन के। डारे आँसु सहित अञ्जन के॥
सो अतिशय गिराय मकरन्दा। ऋतु के फूलबास करि मन्दा॥
नरपतिप्रियाउरज पर जाई। रुकी सुठाँव मनहुँ सो पाई॥
दिव्यमाल निजकुच पर देखी। भई विह्वल नृपरानि विसेखी॥
डूबत ससि कौमुदी समाना। नरपतिप्रिया तजे निज प्राना॥
गिरत तासु बिन जीव सरीरा। गिस्यो अचेत धरनि पति धीरा॥
दीपि जोति जबमहि पर आवत। तेल बुन्द निज संगहि लावत॥
तिनकी दशा देखि अति घोरा। परिजन दुखित कीन्हइमिसोरा॥

अज विलाप।　　　　पृष्ठ ५०

सुनि उपवन के सकल विहङ्गा। उठे रोय मानहुँ दै संगा॥
जगे अवधपति करत बयारी। पै नहिं उठी तासु प्रियनारी॥
रहे आयु सब लहै उपाऊ। पूरे दिन गुन करै न काऊ॥
परी रानि टूटी जनु बीना। लिए गोद तेहिपति अति दीना॥
धरे ताहि कौशलपति अङ्का। जीवहीन तियबदन मयङ्का॥
प्रातचन्द्र सम जन तेहि देखा। धारे अङ्क मन्द मृगलेखा॥
तजि धीरज नृप कीन्ह बिलापा। गद्गद बचन दुसह संतापा॥
लोहहु तपत सदा मृदु होई। देहीदशा कहै किमि कोई॥
"अहह फूलहूँ के तन लागत। ह्वै जो बिवसप्रान नर त्यागत॥
करन हेत तौ नरसंहारा। होय न काह जोग हथियारा॥
मृदुल वस्तु मारन के काजा। मृदुहि अस्त्र साधत यमराजा॥
नलिनी गह उपजीसर माहीं। ज्यों हिमसेकहिसन नसिजाहीं॥
मारनशक्ति हार जो तोरे। तोहि उर धरी प्रान हरु मोरे॥
अमिय विषहिविषसुधा बनावत। हरि इच्छा सबजगहिं नचावत॥
मो अभाग सन कै यह माला। बनी हाय बिजुरी यहि काला॥
जो इन रूख छुयो कछु नाहीं। छाँटो लसा लता तेहि माहीं॥
कियों यद्पि अपराध अनेका। कबहुँ न रोष कीन्ह तुम नेका॥
बिन अपराध काह अब मानहु। जो मोहि बोलनजोग न जानहु॥
होहुँ अवसि लठ प्रानपियारी। तुम झूठिहि मम प्रीति बिचारी॥
नत केहि हित पूँछहु बिन बाता। गई स्वर्ग तजि के सब नाता॥
गए जो प्रथम प्रियासँग लागे। फिर लौटे कों प्रान अभागे॥
फल कुचाल आपनि कर लहहू। छिन छिन मरन दुःख अब सहहू॥
भयो जो स्वेदसुरति महँ परसत। सो अजहूँ तव मुख पर दरसत॥
अथवत तोहि लग्यो नहिं बारा। धिकधिक यह असार संसारा॥
कियोंन नोक न जो तेहिलागत। तू केहि हेत प्रिया मोहिं त्यागत॥
नामहिंरह्यौ विदित धरनीपति। तोहि महँ रही सकल तनमनरति॥

गूँधि फूल सन रचै सँवारे। रुचिर केस भँवरन से कारे॥
डोलतलखि सोइचलत बतासा। होत मोहिं तब जागनआसा॥
अब उठि वेगि चितै मम ओरा। हरिय प्रिया दुख दारुन मोरा॥
राति समय ज्यों तेज प्रकासत। औषधि शैलगुहातम नासत॥
बिखरी लट कछु ऊपर डोलत। हाय न क्यों तब मुखकछु बोलत?
निसि महँ सोए कमल समाना। बन्द धरे एक भँवर चुपाना॥
निसा फेरि हिमकर पहँ आवत। चक चकई सँयोग फिरि पावत॥
ते सहि सकत बिरह की पीरा। मैं का समुझि धरौं जिय धीरा?
लेटत फूल सेज पर पीरा। होत जु तब सुकुमारसरीरा॥
भए अनर्थ घोर अब ऐसे। सहिहै चितासैन सो कैसे?
संगिनि यह करधनी तुम्हारी। बजति न तबगति रुके पियारी॥
तुम कहँ मनहुँ जीवबिन जानी। आपहु मरी दुःख मन मानी॥
कोइलकहँ निज बोल सुहावनि। हंसिन कहँ निजगति मनभावनि॥
हरिननकहँ निजचितवनि मोहनि। मञ्जु बिलास लतनकहँ सोहनि॥
चलत स्वर्ग मोहियगति जानी। मम बिनोद हित दीन्ह सयानी॥
पै डूबत दुखसागर माहीं। सकै उबारि मोहिं कोउ नाहीं॥
श्यामा निकट आम कहँ देखी। जोरी जोग आजु लगि लेखी॥
प्रानप्रिया यह उचित न होई। जाहु चली ब्याहे बिन दोई॥
ए असोक के फूल सुहाये। जे पदकमल परसि बिकसाए॥
तवलट सँगरचितेहिनिज हाथा। कैसे देब तिलाञ्जलि साथा?॥
तब पद कमलपरसजनुहियगुनि। कूजत हंस सरिस नूपुरधुनि॥
सो यह सोचि सोचि दुखपावत। फूलकली जनु आँसु गिरावत॥
महँकत तव उसास अनुहारा। मौलसिरिन सन जाहि सँवारा॥
सो करधनी अधबनी त्यागी। प्रानप्रिया क्यों सोवन लागी?॥
नेह भरी यह सखी तुम्हारी। नित सुख दुःख बटावनहारी॥
पुत्र दूजके चन्द्र समाना। मैं एकभाव सदा तेहि माना॥

यह तुमकहँ न जोग निठुराई। जाहु सबहिं एक संग बिहाई॥
गई अथै धीरज परतीती। रसबिन भई मोहिं सब गीती॥
रति बिहार कर भयो बिनासा। भे बिन सुख पावस मधुमासा॥
रह्यो न कछु भूपन कर काजू। सूनी सेज भई मम आजू॥
सचिव सखी घरनी गुनवारी। कला सिखन महँ चेरिपियारी॥
हाय मृत्यु भई परम कठोरा। तेहि हरि हस्योकाहिनहिं मोरा॥
पहिले मधुमद मोहि पियाई। तेहि बहु बार अमी सम पाई॥
कैसे अब परलोक प्रिया चलि। पीहौंआँसु मिली जलअञ्जलि ?॥
राजकाज यद्यपि सब सोई। तुम बिन रह्यो न सुख अब कोई॥
यहि जगमाहिं प्रिया एक तोरे। रहे अधीन सकल सुख मोरे"॥
सुमिरि प्रियाके गुनगन पाँती। विलपत अवधभूप यहि भाँती॥
रसबूँदन निज डार भिगोए। करुना करि जनु बनतरु रोए॥
स्वामिगोद सन बन्धु सनेही। दुख सन बिलपि उठायो तेही॥
चन्दन अगुरु तुरत मँगवाई। विधिसन रचिरचि चिता बनाई॥
सौंपि आगि कहँतेहि परिवारा। कीन्ह तासु अन्तिम संस्कारा॥
मस्यो सोच बसतिय के साथा। यह कलंक गनि कोशलनाथा॥
जस्यो न रानि संग नृप धीरा। लख्यो नसुख कोउधरत सरीरा॥
नामहि रह्यो जासु तेहिकेरी। किया सकल दे बस्तु घनेरी॥
कीन्हीं सकल शास्त्र अनुरूपा। नगर बाग महँ कोशलभूपा॥
लखत रैनबिनु जनु राकेसा। कीन्ह रानि बिन नगर प्रवेसा॥
पुरतिय आँसुनमाहिं बिलोका। मानहुँ उमड़ि चल्योनिज सोका॥
दीक्षा लए यज्ञ के काजा। तेहि अवसर वसिष्ठ मुनिराजा॥
जानि ध्यान सन शिष्य पठावा। तिन भूपहियहि बिधि समुझावा॥
"करत यज्ञ मुनिवर धरि ध्याना। तब दुख कर यह कारन जाना॥
आय न सकत आप यहिकारन। उपदेसन तब दुःख निबारन॥
मोहिं भूप सब मर्म बतावा। बोध हेत तब पास पठावा॥

वीर धीर ताकी सब बानी। धीरज धरहु सत्य मन मानी ॥
भयो, होत, ह्वैहै जो बाता। यहि जग महँ सब के मुनिज्ञाता॥
नहिं कोउ तासु ज्ञानगति रोकत। ज्ञान नयन सन सबहिं बिलोकत ॥
मुनि तृनबिन्दु नाम एकबारा। कीन्ह घोर तप यहि संसारा ॥
लखि संयम डेराय सुरराजा। पठई नेमबिगारन काजा ॥
हरिनि नाम सुरतिय मुनिपासा। रहा करत सोइरुचिर बिलासा ॥
भयो क्रोध तपविघ्न बिचारी। उठत सिन्धु ज्यौं चलत बयारी॥
'परु नर जोनि' सापमुनि दीन्हा। सुनि सोइसहमिबिनयबहुकीन्हा॥
दोउ कर जोरि नाय पद माथा। बोली 'पराधीन मैं नाथा ॥'
छमा करिय सब अवगुन मोरे। पाहि पाहि सरनागत तोरे' ॥
यहि विधि नवततहि तब देखी। बोले मुनि करि कृपा विसेखी ॥
'रहु महि पर मानुष तन धारे। छुटै साप सुरफूल निहारे ॥'
उपजी भोजराज के गेहा। भई आय रानी तब एहा ॥
आजु सो फूल स्वर्ग कर पावा। मुनिसरापबल बेगि मिटावा ॥
अब जनि करिय सोच नरराई। किन जगजनमि विपतिनहिं पाई॥
बसुमतिदिशि अबसहित उछाहू। लखियनिजहिगनितेहि कर नाहू॥
उदय माँह जेहि मद नहिं भयऊ। कबहुँ न भूप कुमारग गयऊ ॥
सोइ धीरता जनाइय राऊ। यहि अवसर यह उचित उपाऊ ॥
सरै न कछुक जन्म भरि रोये। मिलै प्रान नहिं जीवहु खोये ॥
जाके कर्म होत जग जैसे। मरे परत सोइ भवपथ तैसे ॥
करिय काज सोइअबतजि सोका। लहैं रानि सुख बसि परलोका ॥
सगे बंधु जो आँसु गिरावत। सो प्रेतहि, सब कहत, जरावत ॥
मरै सो अवसि धरी जिन देहा। जियन माहिं छन छन सन्देहा ॥
गनैं लाभ छन धारब प्राना। मरे सोच नहिं करैं सुजाना ॥
प्रियजननास मूढ़मति जाना। बेधो मनहुँ हृदय दुखबाना ॥
नहिं सयान तेहिमनकछुआनहिं। मरिबो द्वार मुक्तिकर जानहिं ॥

अपनेहि देहजीवकर प्रानी। योग वियोग सिद्ध नित जानी॥
बाहिर नातनकेर बियोगा। लहि किमि करैं सोच बुधलोगा॥
नहिं सुहात तुम कहँ नृपधीरा। परौ सबन सम सोच गँभीरा॥
कौन भेद गिरि तरु महँ होई। चले वायु डोलैं जो दोई"॥
सुनि मुनिबचन नाय पदमाथा। बिदा कीन्ह तेहि कोशलनाथा॥
लहि न दुखो हिय माहिं प्रबेसा। साथहि गयो लौटि उपदेसा॥
लखि निज सुतहि बाल नरराई। आठ बरिस कोउ भाँति बिताई॥
छनिक सँजोग सपन महँ पावत। प्रियाचित्र लखि चितबहलावत॥

दुसह कील से सोक बस नरपतिहिय बिलगान।
जामत पाकर पेड़ ज्यों पक्की छत्त समान॥

प्रान लेनही को लग्यो तेहि असाध्य तन रोग।
गन्यो लाह सोइ बेग लखि प्रानप्रियासंयोग॥

शस्त्र शास्त्र के ज्ञान जब लीन्हें सीखि कुमार।
दै बिधिवत तेहि जगत के पालनकर अधिकार॥

रोगलगेतनकर नृपति लख्यो न जोग निवास।
छूटन हित सब दुःख सन लागे करन उपास॥

सरजुहि सुरसरिनीर जेहि पावन तीरथ मिलत।
तहँ तजि मनुजसरीर जाइ नृपति सुरलोक कों॥

लहि निजप्रिया सँयोग पहिलेहु सन सोहन अधिक।
कीन्ह स्वर्गसुख भोग नन्दनबन के कुञ्ज में॥

नवाँ सर्ग

दशरथ के अहेर का वर्णन

संयम सन इन्द्रियगति बाँधी। नित बिधिवत दंडत अपराधी ॥
अवधराज पितु पाछे पाई। भोगी महि दशरथ नरराई ॥
पाइ नरेस मनहुँ सेनानी। भे पुर लोग सकल गुनखानी ॥
धरे देव सम तेज अनूपा। भयो जबहिं अजनन्दन भूपा ॥
सक्यो न आइ नगर महँ रोगा। केहि बिधि आइ सकैं रिपु लोगा॥
जिमि रघुनृप जीतत चहुँदेसा। रही जो सोइ अज होत नरेसा ॥
तिमि यह अतुल बीर नृप पाई। भइ नृपश्रिय सोभा अधिकाई ॥
बिना पच्छ सब जन सम मानी। देइ दण्ड दोषी नर जानी ॥
भयो वृष्टि सन करि धन दाना। यम कुबेर अरु बरुन समाना ॥
पुनि निज छबि सुन्दर सन सोई। अवधभूप दिनपति सम होई ॥
कै महि जहँ कौमुदिनिसि माहीं। रजनीपति प्रतिबिम्ब लखाहीं ॥
कै अहेर कै चौसर पासा। कै तियनववयअंगबिकासा ॥
चेतत सदा उदय के काजा। भयो काहुके बस नहिं राजा ॥
बोले झूठ न हाँसिहुँ जानी। कही कठोर न शत्रुहु बानी ॥
इन्द्रहु सन कबहुँक ह्वै दीना। बोले नृपति न रोसबिहीना ॥
जग महँ नृपन बिनास बढ़ावा। तेहिछन रघुकुलपति सनपावा ॥
मान्यो तासु सुशासन जोई। ताहित भयो मित्र सम सोई ॥
पुनि टोंकत तेहि जो महिपाला। भयो तासु हित दशरथकाला ॥
एक रथ सन तिन चाप चढ़ाई। जीती महि सागर लगि जाई ॥
सेना तासु तुरँग गजवारी। एक केवल जयकीर्ति पुकारी ॥
एक बरूथि रथ बैठि बिशाला। जीतत सकल धरनि महिपाला ॥
सागर भयो तासु चहुँओरा। जयदुन्दुभी नाद करि घोरा ॥

करि शत कोटिक बज्र प्रहारा । गिरिनपंख ज्यों इन्द्र सँहारा ॥
करि त्यों वृष्टि चाप सन सरको । काटी सेन सकल नृप परको ॥
मुकुतमनिनकी. जोति बढ़ावत । दशरथपदनख माथ नवावत ॥
नृप अनेक तेहि कीन्ह प्रनामा । रह्यो सो इन्द्रसरिस बलधामा ॥
अलकबिहीन शत्रु की नारी । लखि छाँड़ी सोइ दया बिचारी ॥
सचिव संग निज बालपठाई । भूपहि जब अँजुरी जुरवाई ॥
लौट्यो जोति सिन्धु के तीरा । अलका सम निज पुर सो बीरा ॥
बारह राज चक्र सोइ पाए । सेत छत्र एक आपु लगाए ॥
तदपिश्रियहि अति चंचलचीन्हा । कबहुँ न नेकहु आलस कीन्हा ॥
सोइ नरपति ककुत्स्थकुलभानू । अजअनादि पुनिहरि भगवानू ॥
कमला इन दोहुन कब त्यागी । अपरहि सकै सेइ अनुरागी ? ॥
मिलतसिंधु ज्यों सरिगिरिगन की । कैासल-केकय-मगध नृपन की ॥
सुता सती सोइ अरिकुलघालक । पायो पति दशरथनरपालक ॥
चतुर करत अरि हनन उपाऊ । सोह्यो रानिन सँग इमि राऊ ॥
आवत प्रजा-सुधारन-काजा । तीन शक्ति सन जिमि सुरराजा॥
सुरपति के सहाय नृप होई । अतुल बीर रन पर चढ़ि सोई ॥
निज बानन भय तासु मिटाई । सुरतिय सन निजकीर्ति गँवाई ॥
लै निज भुजबल संपति सारी । करत यज्ञ नित मुकुट उतारी ॥
गाड़ि हेममखखम्भ सुहाई । सरजु-तमस-तट सुछबि बढ़ाई ॥
नितप्रति भूप मौनव्रत साधे । कटि महँ मूँज करधनी बाँधे ॥
लिये दंड धारे मृग चर्मा । दीक्षा पाइ करत मखकर्मा ॥
ऐसी भूपदेह करि बासा । भूतनाथ तेहि अधिक प्रकासा ॥
सुरसमाज महँ बैठन लायक । निज इन्द्रिन जीते रघुनायक ॥
मख पाछे नहाय अवनीसा । एक हरि सौंह नवायो सीसा ॥
चलत इन्द आगे रघुनाथा । बार अनेक धरे धनु हाथा ॥
रन महँ असुर रुधिर महि डारी । चढ़त भानु दिसि रेनु निवारी ॥

राजराज यम इन्द बरुन सम। पूजनीय धारत भुजबिक्रम ॥
तेहि सेवन लै कुसुम अनंता। लौट्यो क्रम सन रुचिर बसंता ॥
निजरथ सोइ अतिबिमल प्रदेसा। फेर्‌यो जेहि दिसि बसत धनेसा ॥
प्रातिविमल करि काटि तुषारा। छाड़्यो दिनपति मलयपहारा ॥
प्रथम फूल नव पल्लव दूजा। पाछे कोकिल-मधुकर कूजा ॥
उतर्‌यो तहँ बसंत यहि भाँता। बन बन लहत रुचिर तरु पाँती ॥
नीति आदि गुन हेत बटोरी। ज्यों नृपसंपति पास अथोरी ॥
जानि करत सज्जन उपकारा। चलि आवत नित याचनहारा ॥
तिमि सरोज ढिग मधुरस पाए। मधुप हंस आदिक चलि आए ॥
रुचिर रंग बनश्रियमुख माहीं। जे नित चित्र समान लखाहीं ॥
कीन्ह शब्द सो मधुप बिसेखी। देत सुरस कुरबक कहँ देखी ॥
उपजत रमनिबदनमद पावत। कुसुमगुच्छ मदगन्ध जनावत ॥
मधु लालची मधुप तहँ आई। कीन्हो रूख बकुल सम छाई ॥
मधुश्रिय देह सोह अतिसुन्दर। कली परासन मञ्जु मनोहर ॥
हिम दिनेस नहिं सकल नसावा। आए मधुऋतु कछुक घटावा ॥
मलयपवन बस साखि हिलावत। मनहुँ हाथ सन भाव बतावत ॥
जिन बस कीन्ह बैर अरु कामा। कीन्ह मत्त तिनहूँ कहँ आमा ॥
कोइलप्रथम बानि कछु थोरी। बोलत मनहुँ बाल कोउ भोरी ॥
सुन्यो लोग बन भीतर जाई। जहँ सुगन्धयुत फूल सुहाई ॥
भ्रमरमुखन सन गीत सुनावत। कुसुमकलीसोइ दसनदिखावत ॥
जो पल्लव तहँ पवन हिलाये। सोइ लतन जनु भाव बताये ॥
मद बस बोलत बारिबिहंगा। भरीं पोखरी कंजन संगा ॥
एक हँसत मुखछबि अधिकाई। इक नूपुर जनु बजत सुहाई ॥
उवत चन्द पीयर मुखजोती। दिन दिन छीन देह सोइ होती ॥
सहत बियोग नारि की भाँती। भइ हेमन्तबिरह महँ राती ॥
बैठत आय कुमुददल माहीं। अंजन सम जहँ भँवर लखाहीं ॥

सोहत बनराजिन श्रीमाना । तरुनिन मुखमहँ तिलक समाना ॥
जेहिमधुश्रियछबि हित मुखलावत । ध्वजाबाँधि जेहि मदन उड़ावत ॥
उठे पवन बस उपवन माही । सोइ पराग पाछे अलि जाहीं ॥
कुसुमाकर अरु काम समाना । तरुनिन सँग ऋतु उत्सवनाना ॥
निरखि यथाबिधि कीन्ह उछाहा । करन अहेर अवधपुरनाहा ॥
भय अरु रोसचिन्ह दिखरावत । सर मारन महँ चतुर बनावत ॥
श्रमबिनसत पावत नित देहा । गुन अगनित तहँ बिन सन्देहा ॥
यहि सन लै मत मंत्रिन केरा । चल्यो अवधपति करन अहेरा ॥
मंजु बाहु चापहि लटकाये । चलन जोग बन वेष बनाये ॥
चलत तुरँगखुर रज सन ताना । जनुनभमहँ सोइ रुचिरबिताना ॥
वनमाला सन केस सँवारे । कवच ढाकरँग निजतन धारे ॥
कूदत हय डोलत श्रुति कुण्डल । रुरु जहँ रहतगयो सोइ जंगल ॥
जिन निज सुन्दर नीति दिखाई । उत्तरकोशल प्रजा रिझाई ॥
धारे मृदुल लताकर रूपा । किये भ्रमर दोउ नयनअनूपा ॥
मंजुनयन सोइ अवधभूप कहँ । देख्यो वनदेविन मारग महँ ॥
जहँचौरस महि तुरग चलनहित । गवयबिहँगमृगजहँ बिचरतनित ॥
लिये जाल मृगबाँधन जोगा । गे जहँ प्रथम श्वान लै लोगा ॥
बन पहुँच्यो जहँ आगि न चोरा । भरे नीर उज्ज्वल चहुँ ओरा ॥
इन्द्रधनुष सम सुबरन रंगा । रुचिर तड़ित डोरी के संगा ॥
करत सोर बनसिंह जगाई । लीन्ह चाप कर महँ नरनाई ॥
मग महँ छौन पियनहित धावत । बार बार हरिनिन ठहरावत ॥
आगे चलत जासु करसारा । सोइ मृगयूथ नरेस निहारा ॥
चढ़े तुरन निज चाप सुधारा । लाइ तीर नृप तेहि ललकारा ॥
टुटी पाँति भरि लोचन बारी । कीन्हीं श्याम बनस्थलिसारी ॥
परतटूटि जिमि नील कमलदल । चलत बयारि होत सरवर जल ॥
हरिनशरीर लक्ष्य महँ आवत । निजतनसनलखि मृगहिंबचचावत ॥

धन्वी चतुर अवधनरपाला। निरखिप्रेम तहँ होय दयाला॥
धरे तेज बल इन्द्र समाना। धनु सन तुरत उतास्यो बाना॥
डरबस चपल आँखि सोइ बाँकी। प्रियानयनसम चितवनि जाकी॥
सुमिर और मृग मारन काजा। तज्यो न शर तहँ कोशलराजा॥
निसरि तुरन्त कुण्डसन भागे। शूकर चले राह महँ आगे॥
जहँ मुखसननिज मोथ गिरावा। जेहि भोगेपदचिन्ह दिखावा॥
गे तहँ तुरँग बेग के कारन। झुके शरीर शूकरन मारन॥
खैंचत सर तेहि देखि बराहा। उलटि नरेसहि मारन चाहा॥
पै तरु महँ लागत नृपबाना। जड़ी टाँग निज मूढ़ न जाना॥
आवत तेहि संहारन हेतू। अरनहिं देखि भानुकुलकेतू॥
मास्यो खैंचि नयन महँ तीरा। सकल छेदि सोइ महिष शरीरा॥
बिनहिं रक्त गाँसी महँ लागे। गिस्यो गिराय महिष कहँ आगे॥
काटि सींग करि बान प्रहारा। तिन गैंड़न सिर भार उतारा॥
जो अभिमानिन सदा सुधारहिं। ते निज रिपुगनवृद्धि बिगारहिं॥
शत्रुवृद्धि इक सहैं न सोई। तासु आयु पै छुवत न कोई॥
उठ्यो खोहसन हरि मुखबाई। टूटी असनडार छबि पाई॥
छिन महँ डारि अनेकन तीरा। कीन्ह तासु मुख नृप तूनीरा॥
तड़िततड़पसम शब्द अपारा। करि बन महँ नृप धनु टंकारा॥
सोवत परे निकुंजन माहीं। भड़कायो नृप सिंहन काहीं॥
बिदित राज निज तेज प्रभाऊ। सोइ हरिजस जनु सह्यो न राऊ॥
नखन बीच मुक्ताफल धारी। गजकुलबैरिन भूप सँहारी॥
करत समर महँ काम जतनसों। जान्यो निजहि उरिन बाननसों॥
एत बार चमरन पर धाई। खैंचि कानलगि शर बरसाई॥
करि नृपसम सोइ चमर बिहीना। भयो शान्तमन भूप प्रबीना॥
बँधे विचित्र माल सन केसा। सुमिरि प्रियाकर निरखि नरेसा॥
हन्यो न उड़त तुरंग समीपा। सुन्दर मोर भानुकुलदीपा॥

लै सीतल जलबिन्दु बयारी। बनचर पल्लवदलन बिदारी ॥
अति श्रमबस नृपमुख पर छावा। स्वेतबूंद तहँ आइ सुखावा ॥
सब जगभार सचिवसिर डारे। यहिबिधि निजसबकाज बिसारे ॥
नित सेवा करि मन नृपकेरा। हरयो चतुर तिय सरिस अहेरा ॥
चमकत औषधि दीप बनाई। फूल पत्र सुचि सेज बिछाई ॥
बिन सेवक बिचरत यहि भाँती। रहि अकेल बितई बहु राती ॥
निज कानन करि शब्दसुहावा। भये प्रात तेहि गजन जगावा ॥
बन बिहँग तहँ बन्दि समाना। कीन्ह तासु हित मंगल गाना ॥
एक बार मृग पाछे धावत। चढ़े तुरँग मुखफेन गिरावत ॥
नृप अनुचरगन सकल बिहाये। तपसि धाम तमसातट आये ॥
भक भक करत भरत घटनीरा। ता महँ भयो शब्द गंभीरा ॥
तेहि गजगरजशब्द नृप जानी। मारयो शब्दबेध्र शर तानी ॥
सो महिपनहित बर्जित काजा। कीन्हो छाँड़ि धर्म तहँ राजा ॥
जानहिँ सकल शास्त्र श्रुतिभेऊ। परैं कुपथ नृप रज बस तेऊ ॥
"हाय तात" एक रोइ पुकारा। सुनि भा नृपहि बिषाद अपारा ॥
पुनि तेहि नृप खोजन हित धावा। बेतसलतन बीच तेहि पावा ॥
निरख्यो तहँ सर मुनिसुत अंगा। छेद्यो एक मांहि घट संगा ॥
निज अँग लगे बान सम लेखा। भयो नृपहि तब दुःख बिसेखा ॥
घट पर तनहि धरे तेहि काला। उतरि बंस पूंछ्यो नरपाला ॥
कण्ठहि शब्द पीर बस रहेऊ। निजहि करनतपसीसुत कहेऊ ॥
बिनु काढ़े पुनि नृप सोइ बाना। अन्ध मातुपितु पहँ तेहि आना ॥
तिनकेइकसुत सँग निजकरनी। पुनि अज्ञान हेत तहँ बरनी ॥
सुनि दम्पति बिलपे बहु भाँती। सौंहहि छुवत पुत्र की छाती ॥
कह्यो निसारन सुतउरबाना। तजे तुरत बालक तहँ प्राना ॥
आँसु नीर निज कर पर डारी। बृद्ध नृपहिं यह साप उचारी ॥
"भये बृद्ध नप मोहिं समाना। पुत्र सोच छूटैं तब प्राना" ॥

डारत विष भुजंग सम जानो। बोले तेहि कोसलपति बानी॥
"मैं अबलों नहिं सुतमुख देखा। यह तव साप अनुग्रह लेखा॥
जो कृसानु नित खेत जरावत। बीज उगावन जोग बनावत॥
मैं तव हाथ बधन के लायक। करों काह"? बोले रघुनायक॥
सुत सँग देन हेत तहँ आगी। काठ समेत दुहुन तब माँगी॥

तेहि अवसर सेवक सकल आइ गये नृप पास।
वृद्ध कह्यो सोइ कान्ह सब नृप मन माहिँ उदास॥
छोड़ि धीर्य निज नास हित धरे साप मन घोर।
बड़वानल सँग सिन्धु सम लौटे पुर की ओर॥

दसवाँ सर्ग

श्रीरामचन्दजी का अवतार

धरे इन्द्र सम तेज बिशाला। सकलऋद्धि पूरन महिपाला॥
करत राज जस धर्म सुनीती। गए सहस दस संवत बीती॥
पै नहिँ लही जोति सुचि सोई। तुरत सोकतम नासत जोई॥
पुत्र नाम जो लहि जगमाहीं। पितरन के ऋनसकल नसाहीं॥
मनि निसरनिलगि सिन्धु समाना। समय निहारत भूप सुजाना॥
ऋष्यशृङ्ग आदिक द्विजराजा। लगे करन मख संतति काजा॥
रावन बस देवन दुख पाई। तेहि छन गये जहाँ हरिराई॥
प्रबलघामगत जिमि दुखपावत। सीतल छाँह पथिक चलिआवत॥
ज्यों सुरगन तहँ पहुँचन लागे। त्यों हरि जोगनींद सन जागे॥
जेहि कारज बिलम्ब नहिँ होई। होत अवश्य सिद्ध जग सोई॥

परत अंग मनिजोति अपारा । सेसअंक सुर प्रभुहि निहारा ॥
बैठीं कमलासन जगमाता । कर धारे प्रभुपद जलजाता ॥
तरुन अरुन सम तेज बिशाला । कमलनयन इमि सोह कृपाला ॥
मानहुँ सुभग सरदऋतु माहीं । प्रात समय नितदिवसलखाहीं ॥
श्रीविलासदर्पन अभिरामा । सलिल सारधरि कौस्तुभनामा ॥
लहत जासुसुचि किरन अपारा । लच्छन होत जोतिमय सारा ॥
बाँहन दिव्य आभरन धारी । पारिजात सम लगत मुरारी ॥
जिन रनगति अमोघ दिखराई । निशिचर तिय मुख जोति उड़ाई ॥
धरे मूर्त्ति सोइ अस्त्रसुहावनि । करत निकट जयधुनिमनभावनि ॥
प्रभु सन्मुख फनि बैर बिहाई । बजूघात हाथन दिखराई ॥
अति बिनीत जोरे जुगहाथा । ठाढ़े प्रभु ढिग नभचरनाथा ॥
सुख सोवन पूछन तेहि अवसर । आए भृगु आदिक तहँ मुनिवर ॥
तिन पर बिमल बिलोचन डारी । करत अनुग्रह राम खरारी ॥
रिपुनासकहि सुरनसिर नाई । तेहि तोषन हित अस्तुतिगाई ॥
"नमो नाथ, जिन रचि संसारा । पालत पुनि तेहि करत संहारा ॥
ब्रह्मा बिष्णु भूतपति नामा । लहे तीन मूरति अभिरामा ॥
ज्यों पावसजल धरि रस एका । लहत धरनि सन सुरसअनेका ॥
त्यों लहि सत्व आदि गुन चारू । तुमहिँ होत नहिँ नेकुविकारू ॥
एक तूही जगपार लगावत । पै कोऊ तव पार न पावत ॥
तू प्रभु सकल पुजावहु आशा । पै न होत तोहि कछु अभिलाषा ॥
तू दानवदल करत सँहारा । पै नहिं जग तव जीतनहारा ॥
रहहु हिए महँ त्रिभुवनस्वामी । तऊ अगम प्रभु अन्तरजामी ॥
दीनबन्धु प्रभु दीनदयाला । यदपि अनन्दरूप सब काला ॥
सब जानत तोहि जान न कोई । जगतईस तव ईस न होई ॥
यद्यपि अहहु नाथ तुम एका । धारत नित प्रति रूप अनेका ॥
सात साम प्रभु तोहि बिचारत । सात लोक प्रभुनिजमहँ धारत ॥

सात सिन्धुजल सेज बनावहु । सातअर्चिमुख सन बलिपावहु ॥
चारि वर्ग अर्थादिक ज्ञाना । चारि बरन जग जीव जहाना ॥
चारि काल पुनि जुगसोइचारी । चहुँमुख तुमसन भए खरारी ॥
जगत विषय सन मनहि दुराई । तोहिँ निज महँ खोजतयतिराई ॥
लेहु जन्म यद्यपि अज नामा । अरिनासक यद्यपि निष्कामा ॥
सोवत जागरूक तोहिँ गावत । कहु तव भेद कौन जग पावत ?
सकहु शब्द आदिक गुन भोगी । करहु घोर तप ह्वै नर योगी ॥
उदासीन रह यद्पि मुरारी । तउँ पालहु जग असुर सँहारी ॥
यदपि अनेक पंथ जग माहीं । सिद्धि हेत पै अस कोउ नाहीं ॥
सिन्धुहि गंगतरंग समाना । जो न तोहि पहुँचत भगवाना ॥
जिन जगरागसकल तजिदीन्हा । निजकर्मन तोहि अर्पित कीन्हा ॥
तिनतोहिमहँ निज चित्त लगावा । पाइ तोहि परमारथ पावा ॥
तव महिमा लखि यह संसारा । जिती प्रगट सोउ अगम अपारा ॥
आप्त बचन अनुमिति जो जनाई । सकै बरनि को तासु बड़ाई ॥
तोहि सुमिरत जग पाप नसाहीं । अघ मलग्रसित शुद्ध ह्वै जाहीं ॥
दरस परस कर फल भगवाना । यहि ते लोग करैं अनुमाना ॥
सिन्धुरेत रविकिरन समाना । तवगुन गननहिँ जातबखाना ॥
नहिँ अस वस्तु यदपि जग कोई । जो मुरारि तोहि सुलभ न होई ॥
पै एक तारन हित संसारा । लेहु नाथ जुग जुग अवतारा ॥
निज अशक्ति बस मानि गलानी । रुकत नाथ तोहिबरनत बानी" ॥
ज्ञानिन जासु पार नहिं पावा । तेहि देवन यहि भाँति मनावा ॥
कही यद्पिसुर अस्तुतिमानी । पै सोइ रही यथारथ बानी ॥
कुसलप्रश्न पूछत तेहि काला । देवन जानि प्रसन्न कृपाला ॥
बढ़े अकाल सिंधु की नाईं । निसिचरसन भयकथा सुनाई ॥
गूँजि शब्द तटगिरि के खोहन । तब बोले सुरमुनिमनमोहन ॥
निसरि आदिकविमुखसन बानी । तब निज मूर्त्तिकृतारथ जानी ॥

देवताओं का विष्णु के पास जाना।   पृष्ठ ६४

दसन जोति तहँ प्रभुमुखकेरी। तेहि छनसोइ छवि लहीघनेरी॥
प्रभुपदसन निसरत जिमि गङ्गा। बहत उर्द्धमुख सहित तरङ्गा॥
"सकल तेज अनुभाव तुम्हारा। हम जाना निसिचरगन मारा॥
मानुष महँ रज सत्व समाना। एक तामस बस सकल नसाना॥
संतचित्त कहँ पाप समाना। सो त्रिभुवन जारत हम जाना॥
एक बार शिव तोषन काजा। काट्यो निजसिर निसिचरराजा॥
उठत दशम सिर छेदनहेतू। धर्‍यो तासु कर पुंगवकेतू॥
ह्वै प्रसन्न पशुपति यह कीन्हा। पै तेहि चक्रअंस करि दीन्हा॥
सर्पवृद्धि श्रीखण्ड समाना। सहत जानि हम विधि बरदाना॥
करि तप घोर बिरंचि मनाई। देवनकर-अवध्यता पाई॥
जानि तुच्छ नर निसिचरनाथा। माँगी मृत्यु मर्त्य के हाथा॥
अब नरपति दसरथसुत होई। काटब तासु सीस हम सोई॥
तव भक्तन नित करि जप यागा। जो कछु दीन्ह सहित अनुरागा॥
जो निसिचर बस सको न पाई। सो तुम सब पैहो सुरराई॥
जे सुर चहुँदिशि बिचरन जाहीं। लखि रावन घन माहिं लुकाहीं॥
ह्वै निसंक चढ़ि चढ़ि रथ चारू। सब करिहैं अब वायुबिहारू॥
खुलिहैं देवनिकेस सुहावन। छुवत न जेहि सरापबस रावन"॥
रावनअनावृष्टि बस सूखेहि। देवखेत पानी के भूखेहि॥
बचन अमिय सन सींचि गुसाईं। अन्तरधान भए तेहि ठाईं॥
लखिअवसर तेहि छनसब सुरवर। अंशन सहित अवतरे महिपर॥
इहाँ नृपतिमख पूरनकाला। पुरुष एक धरि तेज बिसाला॥
यज्ञआगि सन उठ्यो सँभारी। खीरपात्र दोउ हाथन धारी॥
अचरज नाहिं हलुकनहिं सोई। त्रिभुवननाथअंश जहँ होई॥
पुनि सोइखीर नाइ पद माथा। सादर लीन्ह भानुकुलनाथा॥
मथत सिन्धु जिमि सागरदीन्हा। सुरगननाथ सुधारस लीन्हा॥
त्रिभुवनयोनि अयोनि गुसाईं। होन चहत सुत जागृह आई॥

सो नृपगुन किमि कहौं बखानी। इतनहि सन जानहिं नरज्ञानी॥
लै पुनि सोइ हरितेज अनूपा। रानिन दीन्ह अवधपुरभूपा॥
जेठ कौसिला प्रिय केकेई। तिन कहँ प्रथम अंश नृपदेई॥
तिन सन कह्यो सहित अनुरागा। देन सुमित्रहिं नृप चरुभागा॥
निज अंशन सन पतिमन जानो। दीन्ह सुमित्रहिं चतुर सयानी॥
जगतारन हित गर्भ समेता। भईं रानि अवधेशनिकेता॥
सोहीं गर्भ सहित तेहि अवसर। मनहुँ सालि धरि धान मनोहर॥
सारंग गदा चक्र असिधारी। करत पुरुष तिनको रखवारी॥
सुबरन पंख जोति फैलावत। मेघन खैंचि निकट लै आवत॥
यहिबिधि नभचरपति असवारा। सपनन महँ तिननिजहि निहारा॥
उर कौस्तुभमनि धरि जगमाता। बीजन करत गहे जलजाता॥
करि नभगंग स्नान तहँ आवत। खड़े सप्तऋषि हरिजस गावत॥
ए सब सपन सुनत तेहि काला। भये प्रसन्न अवधनरपाला॥
त्रिभुवनपतिसन नृप सोइ पाई। अति मानो निज भागबड़ाई॥
भिन्न कोष मे एक प्रभु कैसे। एक ससि बिलग नीर महँ जैसे॥
दिन पूरे कौसल्या रानी। लह्यो एक सुत जगगुनखानी॥
जिमि परदोसकाल नित आवत। औषधि रुचिर तेज निज पावन॥
प्रभु कर सुन्दर रूप निहारी। राम नाम गुरु धस्रो बिचारी॥
परत तासु गृह जोति घनेरी। मंद जोति भइ दीपनकेरी॥
सोहत मातु सेज सुत संगा। शरदसरोज सङ्ग जिमि गंगा॥
भरत नाम केकइ सुत जाई। विनय सहित सम्पति छबिपाई॥
सुत शत्रुघ्न लखन ता पाछे। जाए अपर रानि छबिआछे॥
ज्यों विद्या नर ध्यान लगावत। ज्ञान विनय संगहि उपजावत॥
दोषविहीन सकल संसारा। भयो स्वर्ग लेतहि अवतारा॥
चहुँदिसि सुन्दर बहत बयारी। भए सुखी सब देव दुखारी॥
राछसनिकर हाथ दुख पाई। अग्नि भानु निज जोति नसाई॥

विना धूम प्रसन्न है दोऊ। निज सुख प्रगट कान्ह जनुसोऊ॥
सीसमुकुट मनि मिसतेहिअवसर। गिरे दैत्यश्रिय आँसु धरनि पर॥
बाजनहार बुलावन आगे। सुर दुन्दुभी बजावन लागे॥
स्वर्गफूल बरसत घर माहीं। मङ्गल रचना सरिस लखाहीं॥
जाति कर्म आदिक सँसकारा। लहि बाढ़े धरि तेज अपारा॥
सहज विनय कृसान तिनकेरा। लहि सिखवनघृत भयो घनेरा॥
प्रेम परस्पर यदपि समाना। रहत राम सँग लखन सुजाना॥
रह शत्रुघ्न भरत के सङ्गा। धरत परस्पर प्रेम अभङ्गा॥
अग्निवायुससि जलधि समाना। नहिं तिन महँ कछु भेद लखाना॥
नित निज तेज बिनय दिखराई। प्रजाचित्त तिन्ह लीन्ह लुभाई॥
गये दिवस जिमि तपऋतुमाहीं। मेघ सहित नित साँझ लखाहीं॥
तहँ सोहत दशरथ सुत चारी। धर्म आदि जिमि मूरतिधारी॥
पितहिं करत गुनरत्न दिखाई। नित प्रसन्न सागर की नाई॥

जिन मोरी नित युद्ध महँ असुर खड्ग को धार।
सोइ दाँतन सुरनाग जिमि सोभा लहत अपार॥
सोहत त्रिभुवननाथ ज्यों धारे बाहु बिशाल।
विष्णुअंश निज सुतन सँग त्यों सोह्यो नरपाल॥

ग्यारहवाँ सर्ग

श्रीरामचन्द्रजी का ब्याह

एक समय कौशिक मुनि आयउ। ताहि भूप सादर बैठायउ॥
निज मखबिघ्नबिनासन काजा। माँग्यो रामहिं तब मुनिराजा॥
सुनि अचरज काहुहि जनि होई। तेजस्विनबय लखत न कोई॥
मिले यद्पि दुख सनदोउ बालक। रामलखन दीन्हो नरपालक॥
प्राननहूँ के माँगनहारे। फिरे कि कबहुँक रघुकुलद्वारे?॥
तिनके चलन हेत नरनाहा। जब लगि कहैं सँवारन राहा॥
पहिलेहि सन नभफूल सुहावा। प्रभु पथ पर देवन बरसावा॥
परत देखि पितुपद दोउ बीरा। गिरे नरेस बिलोचन नीरा॥
चलत सुतनऋषि संग बिचारी। शुभ आसीस नरेस उचारी॥
रक्षा हित सेना अधिकाई। रही अवधनृपवचन बड़ाई॥
माता चरन बंदि दोउ बीरा। चले समेत देव मुनि धीरा॥
तेहि अवसर सोहे दोउ कैसे। दिन कर सँग मधु माधव जैसे॥
अति चंचल दोउबाहु हिलावत। सहित तरंग नीर छबि पावत॥
पुरनरनारि दृष्टि सब डारे। प्रभुहित तोरन रुचिर सँवारे॥
फटिक अँगन बिचरे पद जोई। परे यद्पि तृन कुस पर सोई॥
ऋषिसिखए बलमंत्र प्रभावा। नहिं कलेस मग महँ कछुपावा॥
मारग चलत लखन रघुराई। कथा अनूप ऋषीश सुनाई॥
पहुँचे दोउ सोइवन दिशिप्राची। जहाँ बसत ताड़का पिशाची॥
कौतुक सन प्रभु धनुटंकारा। कीन्ह भयो तहँ शब्द अपारा॥
सुनिसोइधुनिनिसिचरि तहँ आई। घटासहित निसिछबिअधिकाई॥
गरजिगरजिसोइ पशुन डेरावत। बेग हेत बनतरुन हिलावत॥
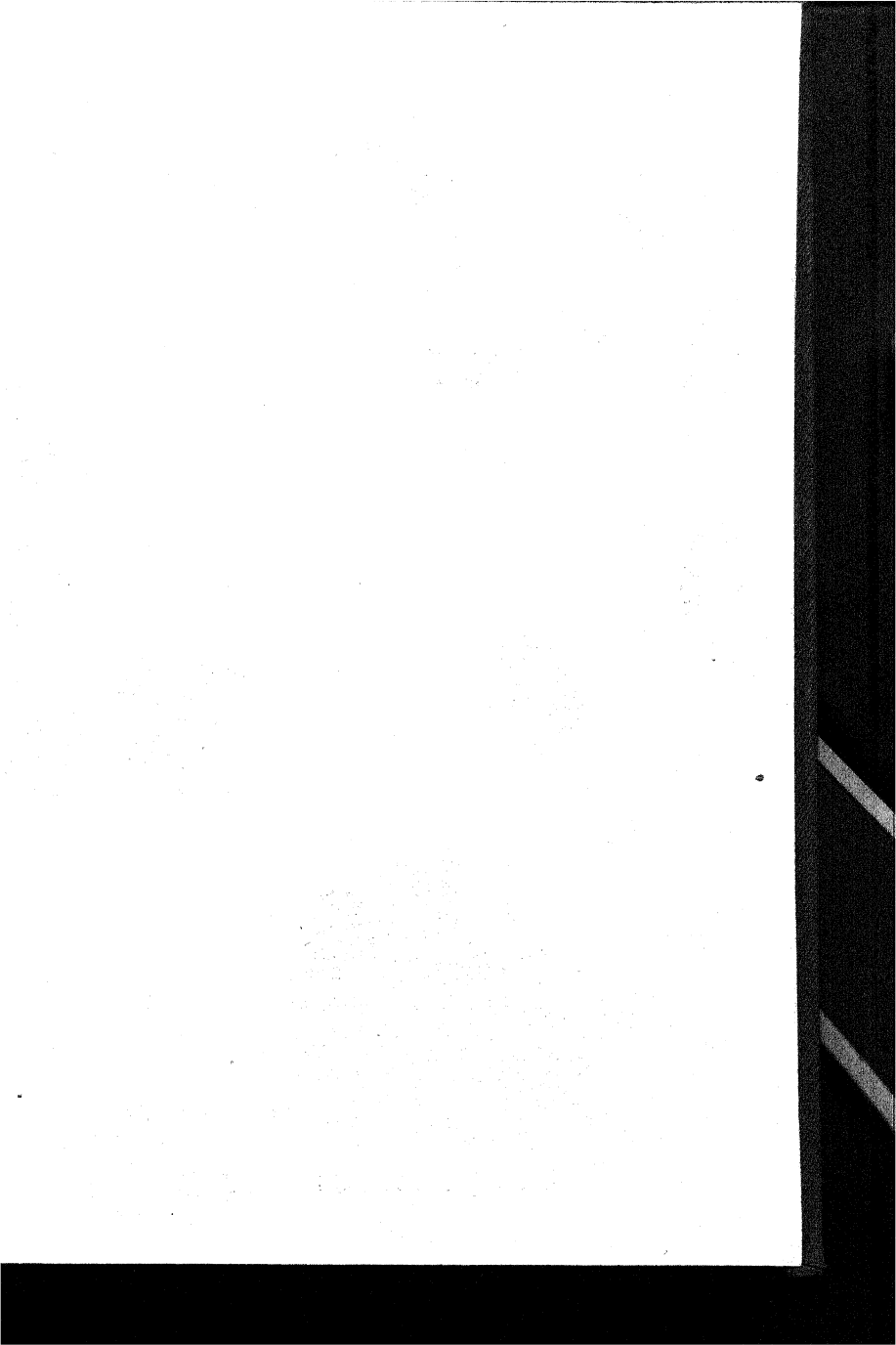
राम धनुर्विद्या शिक्षण।　　　पृष्ठ ६६

वायुगोल सम लसि चहुँओरा । घेरेसि राम नाद करि घोरा ॥
निरखि ताहि करि यष्टि उठाए । नरअँतड़ीकटि महँ लटकाए ॥
तियबधग्लानि तुरत रघुवीरा । छाँड्यो छाँड़िचाप सन तीरा ॥
लगत बान जो बिवर भयंकर । भयो सुकेतु सुताउर अन्तर ॥
निसिचर कुलगृह महँ रघुराई । यमदूतन हित संधि बनाई ॥
गिरत धरनि निसिचरी कराला । हिली न एक भूमि तेहि काला ॥
जोति त्रिलोक पाइ गरुआई । हिली मनहुँ रावन प्रभुताई ॥
तजत प्रान सर लगत कठोरा । सोही लसतरुधिर चहुँओरा ॥
ज्यों तिय घसि चदन तन माहीं । लगे मदनसर प्रियघर जाहीं ॥
लखि रघुपतिवल तेज प्रभाऊ । ह्वै प्रसन्न दीन्हों मुनिराऊ ॥
दानवबंस विनासन काजा । जृम्भक नाम अस्त्रकुल राजा ॥
रवि सन सूर्यकान्त जिमि पावत । प्रबल तेज जो काठ जरावत ॥
आगे चलत बहुरि दोउ आये । जहँ बामन हरिधाम सुहाये ॥
ता पाछे सँग अवधकुमारा । निज तपवन ऋषीस पगुधारा ॥
यज्ञकाज चेलन सुधि पाई । जहँ पहिले सब वस्तु जुहाई ॥
अंजलि सम तरु पत्र बनाए । दरस हेत मुख हरिन उठाए ॥
सकल विघ्न तहँ निसिचर प्रेरे । कीन्ह दूरि तिन मुनिमखकेरे ॥
चन्द्र सूर्य ज्यों महि पर आवत । तम सननितमहिलोक बचावत ॥
परे रक्त के बूँद विशाला । बंधुकफूल सरिस तेहि काला ॥
बेदहि दूषित द्विजन बिचारी । दीन्ह विकंकस्नुचा तहँ डारी ॥
सकल कर्म यजमानन त्यागा । कीन्ह अचर्ज न कीन्हो यागा ॥
तब देख्यो लछिमन बड़ भा । शर खैंचत कछु बदन उठाई ॥
लगत बयारि गिद्ध पंखन की । डोलत ध्वज सेन असुरन। की ॥
तहँनिसिचरस्वामिन तजि आना । मारयोराम तानि निज बाना ॥
गरुड़राज जो नागन मारत । कबहुँ सँपेलन पर कर डारत ? ॥
पुनि सारँग सोइ वायव नामा । धनु पर धस्यो तुरंतहि रामा ॥

महिपर पत्रसरिसगिरि समगुर । गिह्यो ताड़कासुत लागतउर ॥
पुनि सुबाहु तहँनिशिचर राया । जहँ जहँ गयोकरत सोइमाया ॥
तहँ तहँ मारि बान तेहि काटी । दीन्हो बनपंछिन महँ बाँटी ॥
तब मखविघ्न बिनासक केरा । द्विजन सराहि प्रभाव घनेरा ॥
धरे मौनव्रत कुलपति कर्म्मा । लागे करन यथाविधि धर्म्मा ॥
यज्ञस्नान पीछे रघुनाथा । मुनिहि अनुजसँग नायो माथा ॥
दुहुन अंग तहँ देइ असीसा । दर्भ छिदे कर छुयो मुनीसा ॥
तब तेहि मखहित देन बुलावा । मिथिलापति एक दूत पठावा ॥
धनुषयज्ञ सुनि सुनि बहु बारा । रह जिनके मन चाव अपारा ॥
पुर दिशि चलनसमय मुनि नाथा । लीन्हे सोइ कुमार निजसाथा ॥
मग महँ चलत साँझ जब आई । बसे धाम सुन्दर सोइ आई ॥
सुरपतिरमनि बनी जेहि ठामा । छिन एक गौतमनारि ललामा ॥
शिलारूप ह्वै मुनिवरनारी । चारु देह निज फिरि तहँ धारी ॥
रामचरन रज लगि भा सोई । यह संवाद कहत सब कोई ॥
रघुनन्दन संग मुनिवर आवा । सुनत विदेहराज सुख पावा ॥
धर्महि अर्थ काम सँग लाई । पूजन मिल्यो ताहि मग आई ॥
चलत भूमिपर जनु नभ त्यागे । पुनर्वसू सम तहँ दोउ लागे ॥
तिनहिं जनकपुर लोग निहारत । पलक निमेषहु विघ्न बिचारत ॥
भए यज्ञ पूरन मुनिज्ञानी । नृप सन कह्योसमय तबजानी ॥
"रामलखन मन परम उछाहू । देखैं शिवधनु मैथिलनाहू" ॥
सुनि ऋषि बचन जनकपुर भूपा । लखि दशरथ सुत सुन्दररूपा ॥
सुतामोल धनु कठिन बिचारी । तेहि छन भयोसोक तेहि भारी ॥
बोले "धरे भयानक अंगा । सके न करि जो काज मतंगा ॥
विफल जानि मुनिवर तेहिमाहीं । साहस चहौं बालकर नाहीं ॥
बार बार डोरी धनुकेरी । भइ खैंचत जहँ खाल करेरी ॥

सोइ निज भुजन भूप धिक्कारो। यहिसन फिरे अमित धनुधारी"॥
कहमुनि "सुनु इनकर बलराजा। वरु न कछुक आपनकर काजा॥
तब चापहि यह शक्तिदिखावहि। सोइबज्र जो गिरिहि गिरावहि"॥
सुनियहि बिधिमुनिवरकीबानी। रघुपति शक्ति जोग नृप मानी॥
चिनगारीजिमि जन पहिचानत। जारनशक्ति आगिकी मानत॥
तब लावन हित शम्भु शरासन। दीन्ह सेवकन नृप अनुशासन॥
नभ महँ धनुप्रगटावन काजा। कहत पयोदन जिमि सुरराजा॥
सोइ जनु सोवत नाग अनन्ता। दशरथ सुत तब लीन्ह तुरन्ता॥
मृगतन धरे मखहि एक बारा। जेहि सन भूतनाथ सर मारा॥
पर्वत सरिस जासु तन सारा। सोइ चापहि अवधेश कुमारा॥
मार चाप सम तुरत चढ़ावा। निरखत सभ्य अचर्ज बढ़ावा॥
तब बल सन खैंचत कोदण्डा। करि धुनि घोर होत दुइ खण्डा॥
क्षत्रिन फिर निजसीस उठावा। यह जनु भृगुकुलपतिहि जनावा॥
शिवधनु महँ रघुपतिबल जानी। सुता मोल बहु भाँति वखानी॥
लछिमी सरिस धरे जनुरूपा। अर्पों सुता राघवहिं भूपा॥
निजबच सत्यकरन तेहि काला। रघुनन्दनहिं दीन्ह नरपाला॥
मुनिवर निकट सुता तहँ लाई। जनु आगहि तहँ साखि बनाई॥
पुनि नृप रविसमतेज प्रकासा। पठयो द्विजहि अवधपति पासा॥
"सुता व्याहि अवधेस महाना। मानियमोहिं निजदास समाना"॥
सुत अनुकूल बधू नृप चहेऊ। सोइ तेहि आइ पुरोहित कहेऊ॥
जो कछु मन चाहत नर संता। कलप वृक्ष सम फलत तुरंता॥
द्विजहि भूप बहुबिधिसनमानी। सुनि पुनि सकल तासु मुखबानी॥
निजदल बस नभ धूरि उड़ावत। चल्यो इन्द्रसख रविहि छिपावत॥
सेना सँग बन तरुन हिलाई। घेरी सोइ नगरी तहँ जाई॥
इन्द्र बरुण समान दोउ राजा। करत सकल मिलि मङ्गलकाजा॥
कीन्हो निज महिमा अनुरूपा। निज लरिकन कर व्याह अनूपा॥

रामहिं प्रथम भानुकुलनाहा। अवनिसुता सीता सँग ब्याहा॥
सियलघुबहिनि उर्मिला काहीं। लछिमन संग जनक तब ब्याही॥
ब्याही भरत शत्रुहन साथा। कुसध्वजसुता जनकपुरनाथा॥
बधू समेत नरेश कुमारा। इमि तेहि छन छबिलही अपारा॥
दंड बिभेद साम अरु दाना। सिद्धि सहित नृपबिधिनसमाना॥
निज अनुरूप सकल बर पाई। भईं कृतारथ सब नृपजाई॥
रह्यो सो बर दुलहिन संयोगा। मनहुँ प्रकृति प्रत्ययकर जोगा॥
करि यहिबिधि तहँ सहितउछाहा। नृप निज पुत्रनकेर बिवाहा॥
फेरि जनक तीसरे पड़ाऊ। लौटे पुर दिसि कोसलराऊ॥
एक बार सौंहहि सन आवत। ध्वजासरिस वनतरुन हिलावत॥
बन महँ नदी वेग की नाई। पवन आइ नृपसेन सताई॥
अतिहिं भयंकर मंडल घेरा। भयो रूप इमि दिनपतिकेरा॥
गरुड़ हने अहि कुण्डल माहीं। परे बीच जिमि रतन लखाहीं॥
जेहि दिसि गयोभानु सोइ ओरा। रोवत स्यार शब्द करि घोरा॥
क्षत्रियवंश रक्त महि डारी। निज निजपितुमृतक्रिया सँवारी॥
क्षत्रियवंशवृद्धि के कारन। जनु सो रामकर तेजउभारन॥
सोइ असगुन सब दशरथ देखी। भे निज मन महँ दुखी बिसेखी॥
तासु शाँति हित गुरु पहँ जाई। पूँछी नृप तब उचित उपाई॥
"ह्वैहै शुभ" असकहि मुनिधीरा। शान्त कीन्ह नृपमन की पीरा॥
पाछे एक तेज की रासी। सेन सौंह तहँ आइ प्रकासी॥
मीचिंनियन जेहि दोउ दल बीरा। लख्यो धरे एक मनुज शरीरा॥
गर पितुचीन्ह जनेऊ डारे। माताचीन्ह धनुष कर धारे॥
सोहत जनु ससि सँग मर्तण्डा। लपटत सर्प मनहुँ श्रीखण्डा॥
मर्यादहि यद्यपि तिन तोरा। रह्यो क्रोध बस यदपि कठोरा॥
करि आज्ञा ऐसहु पितु केरी। काँपत मातुकंठ असि फेरी॥
जीते दया धर्म जिन आगे। पीछे महि जीतन महँ लागे॥

सोहत दच्छिन कान लटकाए। अच्छबीज की माल बनाए ॥
मानहुँ छत्रिय मारि असंख्या। पहिरो चलनवार की संख्या ॥
कोशलपति निज सुतन निहारी। दुखी भयो निज दसा बिचारी ॥
तेहि अवसर सोइभूपहि रामा। द्वै निज रिपु अरुसुत कर नामा ॥
हार साँप महँ मनिकी नाईं। भयो ताहि प्रिय अरु दुखदाईं ॥
"लाउ अर्घ्य" बोले लखिराऊ। पै मुनीस तहँ लख्यो न काऊ ॥
छत्रिय बंस बिनासन लागी। जो भड़की मुनिवर तन आगी ॥
ताकी ज्वाल सरिस जहँ तारा। सोइ दृगसन रघुपतिहि निहारा ॥
धरे धनुष मूठी सोइ बाँधे। अँगुरिन बीच बान तहँ साधे ॥
निडर नरेसपुत्र ढिग आवा। "चहत युद्ध" असबचन सुनावा ॥
"सुनशिशुकरिछत्रिय की जाती। मम अपकार, भए आराती ॥
ताहि सँहारत अगिनित बारा। रह्यो शान्त यह तेज हमारा ॥
सुत साँप सम लागत दंडा। तब बल सुनि अबभयो प्रचंडा ॥
सके नवाय न सब नृप जेही। तोस्यो भूपचाप तुम तेही ॥
टूटत निजबल सींग समाना। मैं तेहि तवबस मन अनुमाना ॥
अब लगि लोग सकल संसारा। एक मोहि कहि राम पुकारा ॥
तब उपजत कहिहैं अब तोहीं। यह लखि लाज होति बड़िमोहीं ॥
धरे अस्त्र नग काटन हारे। दुइरिपु यहि जगमाहिं बिचारे ॥
एक सहसभुज बच्छहि छोरो। मो जस हरत शक्ति पुनि तोरी ॥
मो बल भूप मारि जग माहीं। बिन जीते तोहि भावत नाहीं ॥
जानु आगि महिमा नित सोई। जरै काठ सम जल महँ जोई ॥
यह धनुसार हस्यो हरिराई। यहि सन तुम यहिसक्यो चढ़ाई ॥
नदीवेग जब मूल नसावत। मृदुहु पवन तब तरुहि गिरावत ॥
मो आयुध पर धरिममतोरा। तजि संग्राम खैंचु अब बीरा ॥
इतनेहि सनतोहितुल्य बिचारी। मैं मानिहौं भूतसुत हारी ॥
जो मम परशुधार की जोती। लखत त्रास तोरे मन होती ॥

बृथा कठिन खैंचत धनुडोरी । अभय माँगुसोइ अँगुरिनजोरी ॥"
जब यहि बिधिभृगुकुलपतिबोले । रामओंठ हाँसी बस डोले ॥
धनुहि लेन रघुबंस कुमारा । तेहि छन उत्तर उचित बिचारा ॥
पूर्वजन्म कर धनु धरि हाथा । बहु सोहे तहँ रघुकुल नाथा ॥
रहि आपहि सुन्दर घनश्यामा । होत इन्द्रधनु सँग अभिरामा ॥
एक कोटि तब महि पर धारी । खैंच्यौ तहँ मुनिचाप खरारी ॥
बुझी आगि धूआँ की भाँती । भयो तेज बिन नृप आराती ॥
ठाढ़े एक एक के आगे । बढ़त घटत छबि इमिदोउ लागे ॥
चमकत एक होत एक मन्दा । पूनों साँझ मनहुँ रवि चन्दा ॥
निज आयुधशर धनु पर देखत । मिटी शक्तिनिज मनमहँ लेखत ॥
सोइ मुनिसन बोले तेहि काला । षटमुख सम रघुनाथ कृपाला ॥
"यद्यपि कही बहुत कटुबानी । सकौं न मारि विप्रतोहिं जानी ॥
के यह शरतबजगगति रोकहि । कै नासै द्विज तवपरलोकहि ?" ॥
सुनि मुनिवर तब उत्तर दीन्हा । "प्रथमहि तोहि नाथ मैं चीन्हा ॥
देखनहित प्रभु तोर प्रभावा । मैं यहि बिधि तोहि कोपदिवावा ॥
मैं कीन्हें निज रिपु सब छारा । दीन्हों दान सकल संसारा ॥
तउं तोसन अब पाइ मुरारी । अहै धन्य यह हार हमारी ॥
ह्वै दयाल प्रभु गरुड़ागामी । जनि रोकहु अब मोगति स्वामी ॥
करहि न मोहिबिनभोगउछाहहि । दुःख जो रोकु स्वर्गकी राहहि" ॥
"एवमस्तु" तब कहिरघुनायक । छाँड़यो इन्द्रदिसा कहँ सायक ॥
सुकृतिहु भृगुपतिहेत कपाटा । भयो सो रोकि स्वर्ग की बाटा ॥
"छमा करहु अपराध मुनीसा" । कह्यो नाय मुनिपद प्रभु सीसा ॥
जीति प्रथम रिपु तेज दिखाई । नम्र होई जन लहत बड़ाई ॥
"जो यह मातु अंश मैं त्यागा । पायों सत्व पिताकर भागा ॥
सो फल यदपिदण्डप्रभु दीन्हा । मो पर नाथ अनुग्रह कीन्हा ॥
मैं अब जाहुँ, होइ कल्याना । करिये देवकारज भगवाना ॥"

लखन सहित रामहिं मुनि अस कहि । गे जमदग्निपुत्रनिज धामहि ॥
गए ऋषय अतिनेहवस बार बार अँग लाय ।
फेर जन्म पायो सुतहि तहँ मान्यो नरराय ॥
मारग महँ डेरा करत तम्बुन रचि बहु भाँति ।
चले नगर की ओर सोइ नृपविताय कछुराति ॥
आए सोइ पुर सीय छबि लखन लालसाधारि ।
कंज सरिस दृगकी जहाँ खरीं झरोखन नारि ॥

बारहवाँ सर्ग

रावण का बध

भोगत सकल विषय अरु रागा । भए वृद्ध नरपति अस लागा ॥
भए प्रभात बुझन के काला । जिमि ह्वै जात दीपकी ज्वाला ॥
तब जनु केकयसुता डेराई । स्वेत केसमिस श्रुतिढिगआई ॥
"राम देहु श्रिय अतुल प्रतापा" । अस दशरथ सन कह्यो बुढ़ापा ॥
"रामकुमार सुजन सुखदाता । "पावत राज" सुनत यह बाता ॥
नीर पाय जिमि तरु हरषाहीं । भे पुरलोग मुदित मन माहीं ॥
होत सकल अभिषेक तयारी । कुटिल कठोर भरत महतारी ॥
गिरवाये नृपदृग आसारा । दूषित करन विघ्न सम डारा ॥
पति पूछत पुनि पुनि लखिसोई । माँगे प्रथम कहे बर दोई ॥
सुरपतिसनजिमिजलसेकन लहि । उगिलतबिलमुख सनअहिद्वैमहि ॥
कहेसि "प्रथमवर हमयह चहहीं । चौदह बरस रामबन रहहीं" ॥
दूजे सन निज निज सुतकाजा । माँगेसि तहँ नरपति सन राजा ॥
यद्पि तासुफलनित मन जाना । विधवापन तजि रह्यो न आना ॥
जेहि विधि प्रथम पितासन पाई । लई धरनि सकुचत रघुराई ॥
तैसहि ह्वै प्रसन्न रघुनन्दन । अहन कीन्हसोइ पितु अनुशासन ॥

ज्यों धरि रुचिर सुमंगल बासा। रह्यो राममुखकंज-उजासा॥
त्यों तरुछाल धरे निज अङ्गा। लख्यो चकितसब प्रभु मुखरङ्गा॥
पितुबच सत्य करन रघुनाथा। चलत जानकी लछिमन साथा॥
तोषि संत पितु भक्ति दिखाई। रहे राम दण्डकवन जाई॥
सहत नरेस बिरह सन्तापा। सुमिरत तापस अन्धसरापा॥
शुद्धि उपाय जोग यह जाना। पुत्र वियोग तजब निज प्राना॥
गए कुँवर बन, मरे नरेसा। शत्रुभोग भा कोसल देसा॥
ह्वै अनाथ मंत्रिन तब धावन। नानिहार सन भरत बुलावन॥
पठयो बरजि कहन हित सोई। भयो अनर्थ अवध महँ जोई॥
अवध आय पितुस्वर्ग पधारन। सुनतहिं भरत मातु के कारन॥
एक न मातु सन तिनमुख मोरा। लख्यो न भरत राजकी ओरा॥
राममिलन पुनि भक्ति निकेता। चले भरत बन सेन समेता॥
जहँ जहँ तेहि बनवासि बतावत। बसे राम तहँ आँसु गिरावत॥
चित्रकूट बँन रामहिं पाई। पिता मरन की कथासुनाई॥
पुनिभोगन कहँ सहित समाजू। कह्यो अनूठ अवधपुरराजू॥
करत भरत सोइ अङ्गीकारा। परिवेता सम निजहि बिचारा॥
तहँ नृपश्रियहि तरुनिकी नाईं। भरत न देखि लेत बड़भाई॥
स्वर्ग बसत पितु बचन न टारत। रामहिं केकयपुत्र बिचारत॥
स्वामी सम मानत हित सोई। माँगी चरनपादुका दोई॥
सोइ लहि भरत लौटिनिजदेसा। कीन्ह न निजपुरमाहिं प्रवेसा॥
बसि पुनि नंदिग्राम अस्थाना। पाल्यो राजहि थाति समाना॥
यहि बिधि निज मनभक्ति जनाए। राजभोग उत्साह बिहाए॥
करिबो मनहुँ उचित हिय हेरा। प्रायश्चित्त मातु अघकेरा॥
खात मूल पहिरे मुनि चीरा। सीता लखन संग रघुबीरा॥
कीन्ह वृद्धपन जेहि कुलभूपा। यौवन सोइ ब्रत करत अनूपा॥
निज महिमा बस एकतरुछाया। एक बार करि थिर रघुराया॥

करन हेत इक छन बिश्रामा। सोए सीयअङ्क अभिरामा ॥
तेहि छन आय दुष्ट एक कागा। वैदेही उर नोचन लागा ॥
सीय जगावत उठि रघुबीरा। मास्यो ताहि कासकर तीरा ॥
निरखि काग आवत प्रभुबाना। राखे प्रान आँखि करि दाना ॥
"रहत समीप मोहि अनुमानी। आवहि फेरि भरत" अस जानी ॥
जहँ बहु बसत हरिन अनुरागी। सोइ प्रभु चित्रकूटमहि त्यागी ॥
सादर लहत अतिथि सतकारा। बसत मुनिनगृह अवधकुमारा ॥
गए दच्छिन, बसि रासिनमाहीं। वर्षाऋतु दिनपति जिमि जाहीं ॥
पाछे चलत बिदेहकुमारी। सोइ शोभा तेहि अवसर धारीं ॥
लखिश्रियजिमि रघुपतिगुनपाँती। मध्यमातु रोकिहु संग जाती ॥
मग महँ अत्रिनारि सन पावा। गंध रंग सिय अङ्ग लगावा ॥
कानन के सब फूल बिहाए। मधुप गंध बस सिय दिशिधाये ॥
रंग रंग जिमि साँझ पयोधर। एक तहँ रह्यो बिराध निशाचर ॥
रोकन हित रघुनायक राहा। राहु सरिस चन्द्रहि सोइ चाहा ॥
तहाँ चलत दोउ बीर मँझारी। हरी आइ मिथिलेशकुमारी ॥
ताहि मारि छिनमहँ गुनखानी। गाड़्यो धरनि ताहि यह जानी ॥
निसरत गंध निसाचर तनकी। दूषित करै भूमि जनि बनकी ॥
पुनि घटयोनि बचन अनुसारा। पञ्चबटी महँ करुनागारा ॥
यौवन बिंध्यअचलकी नाईं। कछु दिन जाय रहे रघुराई ॥
निज मनब्यथा मिटावन आसा। आई तहँ रघुनायक पासा ॥
सूपनखा रावन की बहिनी। जिमिचन्दनहिं घामबस अहिनी ॥
प्रथम बरनि निजकुल कहि नामा। सियसन्मुखहि बस्यो तिरनामा ॥
बढ़त काम तरुनी मन माहीं। समय कुसमय निहारत नाहीं ॥
सुनि बोले रघुनायक बानी। "मैं कलत्र सँग रहहुँ सयानी ॥
मो लघु भाइ लहन पहँ जाहू"। सुनि तहँ गई पतिबरन उछाहू ॥
बरत जेठभ्रातहिं तेहि देखी। नहिं निजजोगलखन तिय लेखी ॥

कीन्ह ताहि नहिं अङ्गीकारा। गई सो तहँ जहँ राम उदारा॥
इत उत चलत सोह सोइ कैसी। दुइ तट बीच चलत सरिजैसी॥
तेहि अवसर सीता मुसकाई। ताकी छिपी आगि भड़काई॥
जलनिधि ज्यों रहिथिर बिनुबाता। लखत चंद उमड़त अकुलाता॥
"हँसुजनि अबहिं देखु ममओरा। यहिकर फल तोहिं देहु अथोरा॥
सिंही समनहिं मोहि तुम चीन्हा। मम अपमान मृगी सम कीन्हा"॥
भागत डर बस रघुपति अङ्का। सियहिभाखियहिबिधिसोलंका॥
तहँ निज विकटनाम अनुसारा। रूप भयङ्कर निशिचरि धारा॥
प्रथम तासु कोकिल सम बैना। सुनि रघुनाथ अनुज गुनऐना॥
स्यारि सरिस ताकी पुनि बानी। सुनत नारि मायाविनि जानी॥
पर्नकुटी भीतर सोइ धाये। खैंचि तुरंग खड्ग लै आये॥
कीन्हीं दुगुन कुरूप निशाचरि। तुरत तासु तहँ कानननाक हरि॥
टेढ़े नखन बाँस सम पोरा। धरि अंकुससम अँगुरि कठोरा॥
सूर्पनखा चढ़ि तुरत अकासा। दोउ बीरन दिखरायो त्रासा॥
पुनि सोइ जनस्थान कहँ धाई। खर आदिक निशिचर पहँ आई॥
प्रथमहि मनुजजाति सन पावा। तेहि राछसअपमान सुनावा॥
कटीनाक तेहि करि सब आगे। रामचन्द्रदिशि धावन लागे॥
चले चढ़न रघुपति पर जोई। तिन हित भयो अमंगल सोई॥
लखि रघुपति तहँ गर्व जनावत। लिये अस्त्र राछसदल आवत॥
राखी सीय लखन के पासा। सौंपो धनुहि जीत की आसा॥
निशिचरगन तहँ सहस अनेका। रहे यदपि रघुनायक एका॥
जब तेहि काल भयो संग्रामा। लख्यो निशाचर उतनहिं रामा॥
कर धरि धनुषकसे कटिभाथा। तेहि छन करत युद्ध रघुनाथा॥
निज दूषन सम दुष्ट लगावा। आगे दूषन सह्यो न आवा॥
तेहि अरु खरत्रिसिरहि रघुनायक। मारे अति कराल बहु सायक॥
छाँड़त क्रम सन यदपि निषंगा। चले बान मानहुँ सब संगा॥

सीता—रावण।　　पृष्ठ ७६

निसरत बिमलअङ्ग सन बाना। कीन्हो तासु आयु जनु पाना॥
निसरत तहँ मानहुँ जलधारा। पंछिन पियो सो रुधिर अपारा॥
प्रभुसर लगत कटत तहँ मुंडा। उठो रह्यो नहिं कछु तजि रुंडा॥
नीरधार सम सर बरसावत। रनमहँ रघुकुलपतिहि खेलावत॥
फिरिन जगन हित सेना सोई। धनी गिद्धछाया महँ सोई॥
जेहि जेहि रामअस्त्र तहँ लागा। तिन तिन तुरत प्रान तहँ त्यागा॥
रावन सन सोइ कहन हवाला। बचो तासु एक बाहिनि कराला॥
सुनि रावन निज बंधु बिनासा। भगनिहि देखि बिनाश्रुति-नासा॥
निजसिर पर दससीस बिचारा। कीन्ह राम जनु चरन प्रहारा॥
पुनि मारीचहि हरिन बनाई। धोखा बस दोउ बीर लुभाई॥
बिघ्न करत जटायु संहारी। हरी दशानन जनककुमारी॥
चलत बीर दोउ खोजत सीता। निरख्यो ताहि पंखभुजरीता॥
निजहि सुप्रान कंठ महँलाए। दशरथनृप सन उरनि बनाए॥
"सीता हरी धनद लघुभ्राता"। यह बताय दोउ बीरन बाता॥
धावन दिखरावत निज कामा। नभचरराज गयो हरिधामा॥
जब बीरन तेहि मरत बिलोका। पायो पिता-मरत सम सोका॥
पुनि कीन्हीं तहँ पिता समाना। क्रिया तासु सब कृपानिधाना॥
मरत साप सन छूटि कबंधा। कह्यो करन कपि सँग सम्बन्धा॥
यहि सन सरिस बिपतिकपिसंगा। भइ रघुकुलपति प्रीति अभंगा॥
जो पद इन बहु दिन सनचाहा। सोइ कपिपतिपद पर रघुनाहा॥
बालि मारि कीन्हों तेहि रामा। जिमि आदेश धातुके ठामा॥
खबरि लेन तब जनकसुता की। बानर धरे शक्ति अति बाँकी॥
चारहु दिशि सुग्रीव पठाए। राममनोरथ सम बहु धाए॥
आगे चलि संपाति बताई। रघुपतिप्रिया खोज सबपाई॥
सागर पार गए हनुमाना। तरत लोगजिमि भवतजिमाना॥
लंकापुर चहुँदिसि कपि हेरी। देखी तहँ निसिचरि सन घेरी॥

परी बीच इमि जनककुमारी । संजीवनि विषलतन मँझारी ॥
तेहि तहँतासु प्रानपति चीन्हा । प्रभुअँगुरीयक कपिवर दीन्हा ॥
अति अनन्दबस आँसु गिराई । सोइ मुँदरी सीता उर लाई ॥
दै सिय सुख पियबात सुनाई । अक्ष मारि कछु गर्व जनाई ॥
तन पीड़ा अरिबस कछु सहेऊ । पुनि समस्त लङ्कापुर दहेऊ ॥
लै चूड़ामनि सिय पहिचाना । आये राम पास हनुमाना ॥
धरे रूप सियहिय समझावा । तेहि उरसन रघुनाथ लगावा ॥
उर परसत तेहि रघुकुलचन्दा । प्रियामिलन सम लह्यो अनन्दा ॥
पुनि सँदेस सब सुनि रघुनाहा । जनकसुता के मिलन उछाहा ॥
घेरे लंकहि खाइ समाना । सोइ सागरहि तुच्छ करिमाना ॥
नहिं एक महि आकासहु माहीं । कर तभीर संकट सन जाहीं ॥
सोइ दल सँग अरि नासन हेतू । लङ्का चले भानुकुलकेतू ॥
सिन्धुतीर पहुँचत रघुराई । मिल्यो बिभीषन प्रभुसन आई ॥
मानहु श्रियनिसिचरकुल केरी । गुन अनुराग देखि बुधि फेरी ॥
तेहि अतिजोग कृपानिधि चीन्हा । बचन ताहि रघुनायक दीन्हा ॥
मनफल अवसि नीति सोइ देही । करै जो नृप अवसर लखितेही ॥
कपिबलसन तहँ रविकुलकेतू । बाँध्यो महासिन्धु पर सेतू ॥
जाय सिंधु के पार निसंका । घेरयो सोइ बलसन पुर लङ्का ॥
तहँ सोइ छबि पिंगल कपिपाई । हेमभीति जनु दूजि बनाई ॥
चहुँदिसि दोउ दल सोर मचावत । "जयरावन" "जयराम" मनावत ॥
राछस कपिन बीच तेहि ठामा । तेहि छन भयो घोर संग्रामा ॥
सिल लागत गजमस्तक फूटत । तरुप्रहार आयुध बहु टूटत ॥
लागत नख मानहुँ असिधारा । टूटत गदा तहँ शैलप्रहारा ॥
तबहिँ रामसिर कटा निहारी । मूर्छित भई बिदेहकुमारी ॥
पुनि माया बस ताहि बताई । त्रिजटासखि तहँ सीय जगाई ॥
"धरैं प्रान मो पति" अस जानी । यदपितज्यो सब सोच सयानी ॥

भइ लज्जित सोइ, जो लखि आगे। सत्य जानि तेहि प्रान न त्यागे॥
नागफाँस पुनि निजहि बँधावत। परतसिथिलसोइखगपतिआवत॥
जो दुख मेघनाद बस पावा। स्वप्नसरिस तेहि प्रभु बिसरावा॥
कासुअस्त्र रावन तब मारा। रामअनुजउर तुरत बिदारा॥
बिन आयुध लागेहि रघुबीरा। सही सोचबस सोइ तनपीरा॥
संजीवनी लाय हनुमन्ता। हरी लखनतनपीर तुरन्ता॥
उठि चलाय सोइ बानकलापा। सिखिरायो निशिचरनि बिलापा॥
सुरपतिधनु समान कोदण्डा। मेघनाद कर गरज प्रचण्डा॥
घन सन शरदकाल की नाईं। दोउ लीन्हों हरि कोसलराई॥
बहिनदसा कपिपतिसन पाई। कुंभकरन रावनलघुभाई॥
टाँकी लगत मेरु सम काटा। रोक्यो गिरिसम प्रभु की बाटा॥
"रावन वृथा जगायो तोही। कुसमय," असमानहु कहिवोही॥
हनि प्रचण्ड रघुनायक बाना। फेरि सुवाय लये हरि प्राना॥
गिरत कपिन महँ राछस कैसे। रुधिरनदी महँ रनरज जैसे॥
तब फिरियुद्ध करन के काजा। चल्यो गेहसन निशिचरराजा॥
"होय राम बिनकै बिन रावन। जगतआज" असकरि निश्चयमन॥
चढ़ि रथ रावन अस्त्र चलावत। निरखि राम कहँ पैदल धावत॥
पठयो प्रभु पहँ तुरत पुरन्दर। जोति तुरँग निजरथ अतिसुन्दर॥
मन्दाकिनि जल ऊपर आवत। जासुध्वजा नित पवन हिलावत॥
पकरि देवसारथिकर हाथा। सोइ रथ चढ़े भानुकुलनाथा॥
पुनि सोइ सुरगननाथपठावा। रामहिं रुचिर कवच पहिरावा॥
जहँ लागत निशिचरहथियारा। भए कमलदल सम बिनसारा॥
निज बिक्रम अवसर तब लेखो। बहुदिन पर समानरिपु देखी॥
रावन एकदिशि एकदिशिरामा। मानहुँ भयो सुफल संग्रामा॥
धारे देह चरन भुज बीसा। रहत अकेल यदपि दससीसा॥
प्रथम दलहिं यद्यपि तिन त्यागा। तउँ राछस सेना सँग लागा॥

निज हाथन निजसीस उतारी । अमितबार पूज्यो त्रिपुरारी ॥
निज कैलासपहार उठावा । महिपालन बहुबार हरावा ॥
सोइ रिपुकर तहँ कृपानिधाना । जोग जानि कोन्हो बहु माना ॥
सीयसँजोग जनावत जोई । फरकत रघुपति भुजमहँ सोई ॥
तेहि अवसर करि क्रोध अपारा । कीन्हो दससिर बान प्रहारा ॥
रघुपतिबान प्रचण्ड बहोरी । दससिर हृदय भीति तहँ फोरी ॥
धस्योधरनि तजि निशिचर गाता । उरगन कहत मनहुँ प्रियबाता ॥
आयुध सन आयुध दोउ छाँटत । बचनबचन सनतहँ दोउ काटत ॥
भिरत बीर दोउ एकएक संगा । जुरत तुलत दोउ तेज अभंगा ॥
लड़त गजन बीचहि जनुभीती । भई समान दुहुन महँ जोती ॥
एक मारत एक काटत शस्त्रहि । उठि पुनि एक चलावत अस्त्रहि ॥
निज निज पक्ष सुरासुर देखी । तेहिछन लहत अनन्द बिसेखी ॥
पै जो फूल दुहुन पर डारत । तेहि बीचहिं दोउ बीर निवारत ॥
लोहकील सम जड़ी सँवारी । सोइ शतघ्नि रावन तब डारी ॥
मानहुँ यमहि जीति सोइ पाई । कूटशालमली गदा चलाई ॥
सोइ समस्त निशिचर कुलआसा । पहुँचतही रघुपतिरथ पासा ॥
मारि चन्द्रमुख बान प्रचण्डा । कदली सरिस कीन्ह सतखण्डा ॥
बान अमोघ ब्रह्मसर नामा । धनु पर धस्यो तुरत श्रीरामा ॥
फैलत नभ महँ तेज अपारा । अति चमकत मुखलत सोइधारा ॥
भयो मनहुँ फनसहित कराला । उरगराज की देह बिशाला ॥
छूटत मंत्र सहित सोइ तीरा । लगत बिनहि कीन्हे कछुपीरा ॥
निशिचरनाह सीस तहँ सारे । अर्धनिमेष काटि महि डारे ॥
परत धरनि निशिचर मुखपाँती । तेहि अवसर सोहत यहिभाँती ॥
बिलगबिलग जिमि लहरनमाहीं । परत भानु प्रतिबिंब लखाहीं ॥
परे शत्रुसिर धरनि नहारी । फेरि जुरन शंका मनधारी ॥
कीन्ह न रिपु बिनास विश्वासा । फिरत देवगन चढ़े अकासा ॥

स्रवत दानमद दिग्गजन कुम्भ तुरन्तहि त्यागि।
रुचिर गंधबस मधुप की पाँति जासु सँग लागि॥

सोइ नन्दनबन फूल की वृष्टि छोड़ि सुरहाथ।
परी आय दशकण्ठ रिपु सीतापति के माथ॥

पुनि निज मित्र विभीषणहि राज शत्रु कर देइ।
भई आगि महँ शुद्ध सिय रघुपतिहू सँग लेइ॥

चढ़ि पीछे निज बाहुबल जीते रुचिर विमान।
लै सुग्रीव बिभीषणहि पुर दिशि कीन्ह पयान॥

तेरहवाँ सर्ग

श्रीरामचन्दजी का लङ्का से लौटना

तब बिमानसन गुन सब जानत। निज हरिपद अकास कहँ छानत॥
चलत मार्ग महँ सिन्धु निहारी। कह्यो सीय सन राम मुरारी॥
"देखहु सीय, सेत बस काटा। फेनिल सिंधु मलय लगि बाँटा॥
जिमि अकास सुचि तारन संगा। शरद माँहि काटत नभगंगा॥
जब सुरपति मखतुरँग चोराई। बाँध्यो कपिल पास लै जाई॥
खोदत महि हय खोजत बारा। मों पुरखन यहि कीन्ह अपारा॥
यहि सन भानुकिरन जलपावत। यह दै मणि महिधनहिं बढ़ावत॥
जो सुख देत सुधा बरसाई। यह सोइ चन्द्रजोति उपजाई॥
जो पानिहि इन्धन सम जारत। सो बाड़व निज महँ यह धारत॥
महासिन्धु हरिरूप समाना। इतना कहि नहिं जात बखाना॥
नित नित दशा अनेकन पावत। निजमहिमाबसदसदिशि छावत॥

निज हाथन निजसीस उतारी । अमितबार पूज्यो त्रिपुरारी ॥
निज कैलासपहार उठावा । महिपालन बहुबार हरावा ॥
सोइ रिपुकर तहँ कृपानिधाना । जोग जानि कीन्हो बहु माना ॥
सीयसँजोग जनावत जोई । फरकत रघुपति भुजमहँ सोई ॥
तेहि अवसर करि क्रोध अपारा । कीन्हो दससिर बान प्रहारा ॥
रघुपतिबान प्रचण्ड बहोरी । दससिर हृदय भीति तहँ फोरी ॥
धस्योधरनि तजि निशिचर गाता । उरगन कहत मनहुँ प्रियबाता ॥
आयुध सन आयुध दोउ छाँटत । बचनबचन सनतहँ दोउ काटत ॥
भिरत बीर दोउ एकएक संगा । जुरत तुलत दोउ तेज अभंगा ॥
लड़त गजन बीचहि जनुभीती । भई समान दुहुन महँ जीती ॥
एक मारत एक काटत शस्त्रहि । उठि पुनि एक चलावत अस्त्रहि ॥
निज निज पत्त सुरासुर देखी । तेहिछन लहत अनन्द बिसेखी ॥
पै जो फूल दुहुन पर डारत । तेहि बीचहिं दोउ बीर निवारत ॥
लोहकील सम जड़ी सँवारी । सोइ शतघ्नि रावन तब डारी ॥
मानहुँ यमहि जीति सोइ पाई । कूटशालमली गदा चलाई ॥
सोइ समस्त निशिचर कुलआसा । पहुँचतही रघुपतिरथ पासा ॥
मारि चन्द्रमुख बान प्रचण्डा । कदली सरिस कीन्ह सतखण्डा॥
वान अमोघ ब्रह्मसर नामा । धनु पर धस्यो तुरत श्रीरामा ॥
फैलत नभ महँ तेज अपारा । अति चमकत मुखलत सोइधारा ॥
भयो मनहुँ फनसहित कराला । उरगराज की देह बिशाला ॥
छूटत मंत्र सहित सोइ तीरा । लगत बिनहि कीन्हे कछुपीरा ॥
निशिचरनाह सीस तहँ सारे । अर्धनिमेष काटि महि डारे ॥
परत धरनि निशिचर मुखपाँती । तेहि अवसर सोहत यहिभाँती ॥
बिलगबिलग जिमि लहरनमाहीं । परत भानु प्रतिबिंब लखाहीं ॥
परे शत्रुसिर धरनि नहारी । फेरि जुरन शंका मनधारी ॥
कीन्ह न रिपु बिनास विश्वासा । फिरत देवगन चढ़े अकासा ॥

स्रवत दानमद दिग्गजन कुम्भ तुरन्तहि त्यागि ।
रुचिर गंधबस मधुप की पाँति जासु सँग लागि ॥

सोइ नन्दनबन फूल की वृष्टि छोड़ि सुरहाथ ।
परी आय दशकण्ठ रिपु सीतापति के माथ ॥

पुनि निज मित्र विभीषणहि राज शत्रु कर देइ ।
भई आगि महँ शुद्ध सिय रघुपतिहू सँग लेइ ॥

चढ़ि पोछे निज बाहुबल जीते रुचिर विमान ।
लै सुग्रीव बिभीषणहि पुर दिशि कीन्ह पयान ॥

तेरहवाँ सर्ग

श्रीरामचन्दजी का लङ्का से लौटना

तब बिमानसन गुन सब जानत । निज हरिपद अकास कहँ छानत ॥
चलत मार्ग महँ सिन्धु निहारी । कह्यो सीय सन राम मुरारी ॥
''देखहु सीय, सेत बस काटा । फेनिल सिंधु मलय लगि बाँटा ॥
जिमि अकास सुचि तारन संगा । शरद माँहि काटत नभगंगा ॥
जब सुरपति मखतुरँग चोराई । बाँध्यो कपिल पास लै जाई ॥
खोदत महि हय खोजत बारा । मीं पुरखन यहि कीन्ह अपारा ॥
यहि सन भानुकिरन जलपावत । यह दै मणि महिधनहिं बढ़ावत ॥
जो सुख देत सुधा बरसाई । यह सोइ चन्द्रजोति उपजाई ॥
जो पानिहि इन्धन सम जारत । सो बाड़व निज महँ यह धारत ॥
महासिन्धु हरिरूप समाना । इतना कहि नहिं जात बखाना ॥
नित नित दशा अनेकन पावत । निजमहिमाबसदसदिशि छावत ॥

बैठे नाभिमूल जलजाता। गावहिं नित जस जासुबिधाता॥
सोइ युग अन्त लोक संहारी। सोवत यहि महँ आइ मुरारी॥
काटत पंख इन्द्र सन भागी। यहि सन सरन गिरिनबहुमाँगी॥
धर्मिक मध्य भूप ढिग आवत। ज्योंरिपुसन नृप निजहि बचावत॥
जब पताल सन सूकर रूपा। लाये महि जनु बधू अनूपा॥
प्रलय हेत यह नीर बढ़ावा। महि घूँघुट सम भयो सुहावा॥
लखु जहँ सिंधुकरत संगम सरि। सोइजलमगरअमितनिजमुखभरि॥
पाछे सोइ फेरत जलधारा। निज मुखछेदन मनहुँ फुहारा॥
बल करि उठत बेगि मुख मारत। जहँ सुचि फेन मगर बहु फारत॥
दुहुन कपोल लागि सोइ झागा। एक छन श्रुतिचामर सम लागा॥
सोहत जनु बहु उठत तरंगा। वायु तीर पर लेन भुजंगा॥
परत भानुकर तेज बढ़ाई। प्रगट होत फन मनिन जनाई॥
तव ओंठन उपमा जो धारे। मूँगन पर तरङ्ग सन डारे॥
उठत छेदि अङ्कुर सन जोई। शंख हटत बिलम्ब सन सोई॥
निहुरत पियन हेत जल झूमत। भँवरबेग सन नीरद घूमत॥
इमिपावत छबि सिंधु अपारा। मथत फेरि यहि मनहुँ पहारा॥
तीर तमाल ताल तरुपाँती। दूर हेत सोहत यहि भाँती॥
मनहुँ कलंक लकीर सुहाई। लोहचक्र पर बिरचि बनाई॥
जहाँ पवन कुञ्जन सन आवत। तव मुख केतकरेनु लगावत॥
यानबेग बस सोइ तट पाहीं। आए एक मुहूरति माहीं॥
परे मोति इत उत जहँ दरसत। फल बस झुके पूग महि परसत॥
तजी भूमि जो डगर मँझारी। लखु पाछे सोइ जनककुमारी॥
छिन छिन परत दूर सागर सन। निसरत मनहुँ धरनिकानन बन॥
कबहुँ देव मारग महँ धावत। कबहुँ मेघमग बीचहिं आवत॥
जेहि जेहि मग मोमन रुचिहोही। चलत बिमान निरखु मग वोही॥
सुरगज दानगन्ध सँग लाई। ह्वै सीतल गङ्गा जल पाई॥

नभ बयारि तवमुख ढिग आवत । गरम स्वेद के बूँद सुखावत ॥
जेहि झरोख सन हाथ पसारी । छुयो खेल सन राजकुमारी ॥
सो बिजुरीभुजबन्ध मनोहर । फेंकि तोहि जनु देत पयोधर ॥
बहु दिन तजे आश्रमन आई । नई नई तहँ कुटी बनाई ॥
जनस्थान बिनविघ्न बिचारी । बसे फेरि तहँ वल्कलधारी ॥
इहाँ तोहि खोजत चहुँ ओरा । पायों महि नूपर एक तोरा ॥
तव चरनारबिन्द बिछुड़न दुख । रह्यो मौन साधे बाँधे मुख ॥
तोहि लै गयो दैत्य मग जेही । मोहि ए लता बतायो तेही ॥
यदपि सकीं नहिं सुन्दरि बोली । सोइ दिशितासुसाख इहँ डोली ॥
छाँड़ि घास अंकुर की चाहा । हरिनिन मोहिं बतावत राहा ॥
ऊँचे पलक बरौनि घनेरी । निजनिजआँखिदछिन दिशिफेरी ॥
यह गिरि माल्यवान तव आगे । जाके शृङ्ग अकासहि लागे ॥
बिरह आँसु नवनीर सुहावा । मैं अरु घन इहँ सँग बरसावा ॥
जहाँ मधुर मोरन अलापा । तव बिन मोहिं दीन्ह संतापा ॥
परत नीर तरुगन्ध सुहावन । जहँ कदम्ब केसर मन भावन ॥
जहँ सुन्दरि तव संग बिहारा । सुमिरि सुमिरियहिरुचिरपहारा ॥
परत गुहन प्रतिधुनि करि भारी । सोइ घनधुनि कोउभाँतिनिवारी॥
निसरत भाप नीर महि बरसत । नवविकसित कदलिनजहँपरसत॥
ब्याह होन बिधि धूमहि पाई । जो लाली तव दृगन जनाई ॥
सोइ उपमा फूलन तहँ धारी । सुधि दिवायमोहिं कीन्ह दुखारी ॥
उगे जासु तट बहु बानीरा । सोइ पम्पासर निर्मल नीरा ॥
लखत दूर सन सारस चंचल । पियतखेदसन दृगजनु सोइ जल ॥
इक इक देत कमल रजधूरी । तिनहिं सीय रहि तोसन दूरी ॥
धरि मन माहिं उछाह अपारा । बार बार मैं इहाँ निहारा ॥
चक चकई सोइ लहि संजोगा । करत परस्पर प्रियसुख भोगा ॥
यान बँधे कंचन किंकिनधुनि । मधुर मधुर बाजत लखु जहँसुनि॥

सारसगन यह चढ़त अकासा। जनु सुन्दरि आवत तव पासा॥
जेहि सींचे निजकर भरि भरि घट। लागे आमरूख कछु यहि तट॥
निरखत मृगआदिक पशुनाना। मुख उठाइ नभचलत बिमाना॥
पञ्चवटी बहु दिन पर देखी। देत तोहि आनन्द बिसेखी॥
यहि सरितट अहेर निपटाई। लगत वायु तन खेद मिटाई॥
रहि एकान्त विदेहकुमारी। तेरे अंक सीस निजधारी॥
नरसलकुटी माहिं तेहि ठामा। पायों सोइ अमित विश्रामा॥
जोमुनिकछु निजभृकुटि सिकोरी। नहुषइन्द्र पदवी सब छोरी॥
जाके उदय होत जग माहीं। सकल नीर निर्मल ह्वै जाहीं॥
सोइ अगस्त्य मुनिवर कर एहा। लखु वैदेहि धरनि पर गेहा॥
निन्दा जोग न कीरति जाकी। तीनि प्रकार आगिसन ताकी॥
उठत धूम लै हव्य सुबासा। चलतयान मगचढ़त अकासा॥
सो सूँघत छूटत रजगुन सन। लघिमागुन पावत जनुममन॥
आगे यह मुनि शातकर्णिकर। नाम पञ्चअप्सर क्रीड़ासर॥
कछु लखात बन महँ इमिसोई। मेघन बीच चन्द्र जिमि होई॥
फिरत ऋषीस मृगन के संगा। दाभ खाइ पोषत निज अंगा॥
लखि सोइ तप सुरनाथ डेराई। पाँच देवतिय तुरत पठाई॥
ताहि, सकल संयमतिन तोरी। बाँध्यो काम फंद की डोरी॥
जल भीतर सोइमहल बिराजत। तहँ संगीत ढोल बहु बाजत॥
मधुर शब्द सोइनभदिशि आवत। सकल यान लखुगूँजि उठावत॥
चहुँदिशि आगि काठ सन बारत। भानुतेज ललाट निज जारत॥
नाम सुतीछन चरित सुहावन। करहिं घोरतपयहि दिशि पावन॥
लखि सोइ यदपि सुरेस डेराई। बार अमित अप्सरा पठाई॥
पै तरुनिन कर सकल बिलासा। चितवनि नयन तरेरि सहासा॥
अतिहि सवाँरि गुप्त करि बाँधी। सोइ मेखली दिखावत आधी॥
तऊँ न तिन व्रत करत कठोरा। ऋषिवर का दृग संयम तोरा॥

जेहि सन हरिनअंग खजुआवा। तोरि दर्भ अंकुर घर लावा॥
पहिरे जहाँ अक्षकी माला। सोइ निजदच्छिनभुजा बिशाला॥
फेरत ऊर्द्धबाहु मुनिनाहू। यह मोहिं आदर करन उछाहू॥
रहत मौन कछु सीस हिलाई। लीन्हों मम प्रनाम मुनिराई॥
छूटत यान बीच महँ आवत। फिरिरविसबनिजदृष्टिमिलावत॥
रहे मंजु यहि पावन धामा। एक शरभङ्ग मुनीसर नामा॥
निज करि काठहौन बहु बारा। पाछे मंत्र सहित तन जारा॥
ऋषि सम तासु तपोबन रूखा। दै फल अमित हरत नितभूखा॥
इनकी घनी छाँहँ जे आवहिं। तासु मार्गश्रम तुरत मिटावहिं॥
अतिथिनकेर सपूत समाना। ऋषिसम करतउचित सनमाना॥
कीच सरिस घन सींगन धारत। गुहामुखन गिरिसरिन डकारत॥
मो दृग चित्रकूट गिरिराई। खैंचत मत्त वृषभ की नाईं॥
लखत दूर बस छीन सरीरा। बहत मन्द धरि निर्मल नीरा॥
गिरि तट पर मन्दाकिनिधारा। सोहत मनहुँ भूमि कर हारा॥
यह तमाल सोइ भूधर पासा। जेहि कर पल्लव लेइ सुबासा॥
जवअंकुर के रङ्ग सुहावा। तब कपोल हित फूल बनावा॥
इहाँ बिनय पशु करत प्रकासा। यदपि न इनहिं दण्डकर त्रासा॥
यदपि न फूलचिन्ह दरसाहीं। लसे इहाँ फल रूखन माहीं॥
यहि बिधिप्रगट प्रभाव निहारी। जानु तपोवन जनककुमारी॥
तोरहिं जासु सप्तऋषि कंजन। करन हेत तपसिन के मंजन॥
माला भूतनाथसिरकेरी। अनुसूया यहि दिशि कहँ फेरी॥
जहाँ बैठिऋषि लावहिं ध्याना। बेदिन जमें रूख तहँ नाना॥
बिना वायु सोइ छबि यह पाए। खड़े एक पदध्यान लगाए॥
देखहु यह आगे बट श्यामा। माँग्यो बर जेहिकरि परनामा॥
फल सन भइसोइ छबि यहिकेरी। चुन्नी सँग जिमि पन्ननढेरी॥
गुँथी नीलकन चमक विशाला। कहुँ मानहुँ मुकुता की माला॥

कहुँ सोहत जनु नीरज हारा। बीच बीच इन्दीवर डारा॥
कहुँ मानससर हंसन माहीं। बैठे जनु कादम्ब लखाहीं॥
चन्दन लेप धरनि के अङ्गा। कहुँ मानहुँ कालागुरु सङ्गा॥
कहुँ सोइछबिसुन्दरलखुहोती। जिमि घनछाँहबीच ससि जोती॥
कतहुँ सरदघनकी उपमा के। दरसत बीच बीच नभ जाके॥
रज पर लसत भुजंगम कारे। कहुँ पशुपतितन की छबिधारे॥
लखु सुन्दरि लहि यमुनतरंगा। सोहत इमि संगम महँ गंगा॥
यह प्रभाव बरनत सब लोगा। यहि द्वय सिंधु नारि संजोगा॥
जो नहाय सोइ निर्मल नीरा। बिनहु ज्ञान जब तजत सरीरा॥
पाय मुक्ति सोइ बिन संदेहा। फिर पावत नहिं नश्वर देहा॥
आगे यह निषादपति ग्रामा। 'कैकेई तुम पूरन कामा'॥
कहि अस जटा बनावत देखी। कीन्ह बिलाप सुमंत बिसेखी॥
मंजुलि धूरि जासु कमलन की। लावत उर नित तिय यत्तनकी॥
जिमि अव्यक्त बुद्धि कर जानत। मानस यह सरिमूल बखानत॥
लावत धरे तीर बहु यूपा। अवध निकट सोइ नदीअनूपा॥
करि हयमख बहु कीन्ह नहाई। जेहि पावन रविकुल नरराई॥
तट समान निज गोद खिलावत। नित पियाय पय मधुर बढ़ावत॥
उत्तरकोशल मातु समाना। सरयुहि सीय करहुँ अनुमाना॥
मान्य नरेस बिरह दुख पाई। यह सरि मम माता की नाईं॥
ध्वजा समान बढ़ाइ तरंगा। परदेशी मोहिं लावत अंगा॥
महिसन धूरि गगन उड़ि छावत। संध्या मनहुँ अकाल बनावत॥
जानहु सुनि हनुमत सनबाता। आवत सेन सहित लघु भ्राता॥
राखि पितापन लौटत जानी। देहै राज शुद्ध गुनखानी॥
आवत हनि खर आदिक द्रोही। सौंप्यो तोहिं लखन जिमिमोही॥
पाछे दल आगे गुरु कीन्हें। पैदल चलत अर्घ्य कर लीन्हें॥
वृद्ध मंत्रि सँग कृसित शरीरा। आवत भरत धरे तन चीरा॥

पिता दियो तरुनी सम राजा। कीन्ह भोगनहिं जिन ममकाजा॥
इतने दिन ताके रहि संगा। असिधारव्रत कीन्ह अभंगा" ॥
ज्यों रघुपति बोले यह बानी। त्यों पुष्पक प्रभु इच्छा जानी॥
बिस्मित करत भरत सँग लोगन। उतरयो तुरत बिमान गगनसन॥
प्रभुहि मार्ग दिखरावन काजा। आगे चले निशाचर राजा॥
उतरे सुचि सीढ़ी के द्वारा। धरि कपिपति कर करुणागारा॥
करि पहिले कुलगुरुहिं प्रनामा। अर्घ लेन पाछे श्रीरामा॥
प्रेम आँसु प्रभु धरनि गिराई। भेंट्यो अनुज सहित लघुभाई॥
जनु लखि तजे राजअभिषेका। सोध्यो सोइ सिर बार अनेका॥
होइ प्रसन्न दृष्टि प्रभु डारी। मधुर मधुर प्रभु बचन उचारी॥
मुख बिरूप तहँ बार रखाये। बट समान जनु जटा बढ़ाये॥
नवत वृद्ध मंत्रिन सुरत्राता। आदर दीन्ह पूँछि कुसलाता॥
"यह सुग्रीव भालु कपिनाथा। बिपति माहिं दीन्हों इन साथा॥
वह पौलस्त्य लरत की बारा। इन कीन्हों रन प्रथम प्रहारा" ॥
आदर सहित भरत गुरुअयना। सुनि यहिबिधि रघुनन्दन बयना॥
जानि तिनहि प्रभुपद अनुरागी। मिले भरत लखनहुँ कहँ त्यागी॥
परत चरन तब लखन उठावा। अति सप्रेम निज अङ्ग लगावा॥
लगे इन्द्रजित आयुधघोरा। भयो जासु उर बिपुल कठोरा॥
छुइ निज कर सोइ लखनसरीरा। जनु निज देह सही सोइ पीरा॥
कपिनायक लहि प्रभु अनुसासन। चढ़े गजन पर धरि मानुषतन॥
गिरत धार सन दान सुहावा। तहँ रहिं सैल चढ़न सुख पावा॥
सारथि सँग प्रभु आयसु पाई। रथ पर चढ़े निशाचरराई॥
माया रचे निशाचरयाना। रहे न छबि महँ जासु समाना॥
प्रभु इच्छा बस रहत जासु गति। ध्वजालसत रथ पर तब रघुपति॥

ध्वजा रुचिर चहुँदिश लसत अगम न जेहि कोउ पाथ।
सोइ बिमान पर अनुजसँग चढ़े भानुकुलनाथ॥

विजुरी लसत पयोद पर वुद्ध बृहसपति माँझ ।
चढ़ि सोहत नक्षत्रपति मानहुँ आवत साँझ ॥

उद्धार्‍यो जिमि प्रलय सन धरनिहि आदिवराह ।
शरद माहिं जिमि चन्द्रिकहि घन सन कौमुदिनाह ॥

तिमि दशकन्धरबन्दि सन जाहि उबार्‍यो राम ।
सो सीता के पदकमल परे भरत गुनधाम ॥

रावनविनती भंग करि राख्यो निज व्रत जोइ ।
पद सरोज जगपूज्य सोइ जनकसुता के दोइ ॥

जटाबँधी प्रभुभक्ति महँ भरत अनूपम माथ ।
एक एकहि पावन कियो तिन्ह दोहुन मिलि साथ ॥

चलि विमान पुर लोग के पाछे पुनि अति मन्द ।
आध कोस पुर के दखिन पहुँचि भानुकुलचन्द ॥

अवधपुरी के बाग महँ कीन्ह बास श्रीराम ।
आगेहि सन शत्रुघ्न जहँ रचे पटन के धाम ॥

चौदहवाँ सर्ग

श्रीसीताजी का परित्याग

सहि निज पतिबिनास दुखदाई। सोचन जोग दसा जिन पाई ॥
कटे रूख दुइ लता समाना। निज पुत्रन दोउ रानिन जाना ॥
तब दोउ बीर काल बैरिनके। क्रमसन परे चरन जननिनके ॥
सकीं न देखि आँसु बस रानीं। जान्यो पुत्र परस पहिचानी ॥
रोके गरम आँसु दुखप्रेरे। तहँ सुख बस दृगजल तिनकेरे ॥
जरत घामबस जिमि सरयूजल। हिमगिरिसरितकरैंमिलिसीतल ॥
छुवत अंग महँ निज पुत्रन के। ताजे चीन्ह दैत्य अस्त्रन के ॥
रहीं यदपि छत्रियकुल नारी। चह्यो न होन बीरमहतारी ॥
"कुलच्छनी पति सुख विपरीता"। कहि अस "अहह मातु मैं सीता"॥
परी स्वर्ग महँ बसत ससुर की। रानिनचरन बधू रघुबर की ॥
"उठिय पुत्रि, तुम्हरिहि पुन्याई। दुखसन घोर छुटे दोउ भाई" ॥
मधुर बचन जोगहि प्रियबानी। कही साँचि तेहिछन दोउ रानी ॥
डारत नयननीर सुख चीन्हा। जासु अरंभ मातु दोउ कीन्हा ॥
सोइ रघुवंशचन्द्रअसनाना। तुरत मँगाय तीर्थजल नाना ॥
भरि भरि कंचन कलस सुहावा। सकल राजमंत्रिन निपटावा ॥
जाय सिंधु सर गंगादिक सरि। कपि राछस लाये जेहि भरिभरि॥
परे सो जल रघुनाथसरीरा। विन्ध्यसीस जिमि नीरदनीरा ॥
जासु धरत तपसी कर रूपा। सोभा लही सरीर अनूपा ॥
भूपबसन निज अङ्गसँवारी। सोभा द्विगुन देह सोइधारी ॥
पुनि रघुनाथ सहित चतुरङ्गा। राछस कपि मंत्रिन के सङ्गा ॥
धानवृष्टि खिरकिनसन पावत। तुरुहिन प्रजाअनन्द बढ़ावत ॥

जहँ तोरन वहु बिरचि बनाये। सोइ कुलरजधानी महँ आये ॥
चलत चढ़े रथ प्रभु तहँ कैसे। एक सँग साम आदि गुन जैसे ॥
करत कँवर लछिमन दोउ भ्राता। ठाढ़े भरत धरे नृपछाता ॥
छुटत बायु बस जन तहँ देखा। गृह पर अगरधूम की रेखा ॥
फिर बन सन जनु मुक्तिनिसेनी। खोली अवधपुरी की बेनी ॥
सासु-हाथ-सन-अँग-सँवारी । चढ़ी चंडोल रामप्रियनारी ॥
खिरकिन बैठि अवधपुरबामा। दृगकर जोरि कीन्ह परनामा ॥
अनसूयाकर चमकत रङ्गा। सोहत तहँ लगाइ निज अंगा ॥
लसत ज्वाल अति शुद्ध जनावत। जनु फिरतेहिपतिनिजपुरलावत॥
तब मित्रन कहँ कृपानिधाना। दै उपकरन माहिं असथाना ॥
बच्यो न जासु चिन्ह जग कोई। बसे स्वर्ग निज पितु के सोई ॥
पूजागृह डारत आसारा। दिनकरबंश चन्द पगु धारा ॥
"डिगे न निज प्रनसन जो ताता। सो सब तव सुकर्मबस माता" ॥
कहि अस हाथ जोरि रघुराजा। हरी भरतजननी-मन-लाजा ॥
कपिपति निशचरपतिसतकारा। कीन्ह देइ इमि बस्तु अपारा ॥
निज मायाबस निज मनभाई। यद्यपि सकत बस्तु सब पाई ॥
नरबिरची तहँ बस्तु बिलोकी। निज अचर्ज सोइ सके न रोकी ॥
आये तब सुनि प्रभु अभिषेका। आदर करन मुनीस अनेका ॥
तिन कहँ निज आगे बैठाई। निज रिपुकथा सुनी रघुराई ॥
जासु प्रताप चरित्र सुहावा। प्रभु प्रभाव गौरवहि जनावा ॥
जब मुनि गये लौटि निजधामा। निसिचर कपिस्वामिन श्रीरामा ॥
जिन जान्यो सुख लहत अपारा। गयो बीति नहिं एक पखवारा ॥
देइ भेंट प्रभु जो जेहि लायक। कह्यो जान घर रघुकुलनायक ॥
सुमिरत सुलभ रह्यो जो तेही। हर्यो प्रान सँग रिपुसन जेही ॥
चढ़न हेत पुनि धनपति पासा। पठयो प्रभु पुष्पकहिं अकासा ॥
बसि बन मानि तात अनुसासन। बैठि बहोरि रामसिंहासन ॥

धर्म अर्थ अरु काम समाना। एक भाव सन भाइन माना॥
प्रेम दिखाय देवनरत्राता। जानी एक सरिस सब माता॥
षटमुख पय तिनकर करि पाना। जिमि कृत्तिकन षड़ानन जाना॥
लोभ बिहीन पाय सोइ राजा। भए धनी पुरवासिसमाजा॥
काटत सकल बिघ्न अरु रोका। क्रियावान भा चहुँदिसि लोका॥
चलत सबन तहँ नीति चलावा। जग महँ ताहि पिता सम पावा॥
हरि सब सोक देइ आनन्दा। रह्यो पुत्र सम रघुकुलचन्दा॥
करि निज राजकाल एक बारा। जनकसुता सँग कीन्ह बिहारा॥
धरे भोग हित सुन्दर अङ्गा। मानहुँ प्रभु लछिमी के सङ्गा॥
महल भीति निज चरित लिखाई। शब्द गंध आदिक तहँ पाई॥
जो बन माहिँ सहे दुखनाना। तिन कहँसुख समान दोउ जाना॥
अधिक मंजु दोउ नयन दिखाई। सर सम पीयर बदन जनाई॥
सीता गर्भधरन के चीन्हा। प्रगट करत स्वामिहिं सुख दीन्हा॥
पलटत कछुक पयोधररंगा। दबत लाज बस दूबर अंगा॥
तेहि बैठारि निकट श्रीरामा। पूँछ्यो तब सिय सन मनकामा॥
गंगातट जहँ तपसिसुतासन। जोसो बहिन नात सोइ तपवन॥
जहँ बनपसु निवार कछुचाखा। तहँ सिय जान कीन्ह अभिलाषा॥
तासु बचन करि अंगीकारा। लै अनुचर रघुवीर उदारा॥
देखन हित निज पुरी सँवारी। चढ़े तुरंत नभछुवत अटारी॥
देख्यो राजमार्ग दोउ ओरा। चारु हाट धन धरत अथोरा॥
चलत कछुक ठाढ़े कछु तीरा। नाव अनेकमथत सरि नीरा॥
उपबन रुचिर नगर के पासा। जहँ विलासिजन करत निवासा॥
शेष समान जासु उर बाहू। शुद्धचरित सोइ कोसलनाहू॥
पूछ्यो चर सन पौर समाजा। कहु केहि बिधि मानत ममराजा॥
पूँछत लखि सोइ बारहि बारा। भद्रनाम चर बचन उचारा॥
"प्रभु तव चरित सराहन जोगा। मानत सकल अवधपुर लोगा॥

रानी बसीं निशाचर गेहा। फिर तेहि लीन्ह दोष एकपहा" ॥
जसनाशक तहँ निज प्रिय तियकी। सुनत घोर निन्दा प्रभु सियकी ॥
परत लोह के घन जिमि लोहा। फाट्यो हृदय, भयो तेहि मोहा ॥
"कै निज अजसकथा सुनि लेहू। कै निरदोष तियहि तजि देहू" ॥
यहि बिधि सोइसोचत दोउ ओरा। चढ़्यो तासु मन मनहुँ हिँडोरा ॥
अजस छुटन हित कोसलराऊ। नहिं जान्यो कछु और उपाऊ ॥
पतिनिहि त्यागि अवधपुरनाहा। सोइ अपवाद मिटावन चाहा ॥
जे जसधनहि बटोरन लागे। ते निज बिमल कीर्त्ति के आगे ॥
निज सरीर जोरत कछु नाहीं। तेहि इन्द्रिय केहि लेखे माहीं ॥
पुनि भाइन कहँ राम बुलाई। जिन प्रभुरुख देख्यौ अकुलाई ॥
प्रथम सुनाय लोक अपवादा। फिर यहि भाँति कीन्ह संबादा ॥
"दिनपतिराजबंस पर टीका। चलत विशुद्ध आचरन लीका ॥
मो सन लखहु लगत यह कैसा। चलत वायु दरपन पर जैसा ॥
फैलत पुरजन महँ सब ठाईं। जल पर तेल बिन्दु की नाईं ॥
खंभहि मत्त नाग सम होई। सकौं न सहि अपजस मैं सोई ॥
धरत पेट रघुसंतति रानी। तऊँ ताहि अति लघु करि जानी ॥
बेगि मिटावन हित अघ तेही। चाहौं तजन तुरत वैदेही ॥
पितु अनुसासन बस जिमि आगे। राज गेह दुनहूँ मैं त्यागे ॥
यद्यपि दोषहीन तेहि जानत। तउँ अपवाद प्रबल मैं मानत ॥
ग्रहन लगत मछिमाँह सँयोगा। शशिकलंक तेहि मानत लोगा ॥
बैर लेन हित रह्यो हमारा। राछसबध महँ जतन अपारा ॥
भड़कत परत चरन नरअङ्गा। रुधिर हेत नहिं डसत भुजङ्गा ॥
जो चाहहु सहि अपजस बाना। मैं कछु दिन राखहुँ निज प्राना ॥
तो यह मम निश्चय अब भाई। जनि रोकहु करुना मन लाई" ॥
सुनि यहि भाँति स्वामि की बानी। सियदिशि अतिकठोरचितजानी ॥
बरजन करन हेत तहँ सोई। भाइन महँ कछु कह्यो न कोई ॥

नहिँ असत्य जाके मुख आवत । त्रिभुवन जासु सुकीरति गावत ॥
सोइ लछिमन कहँ सौंह निहारी । जानि तिनहिँ प्रभु आज्ञाकारी ॥
अलग बुलाइ बोलि अतिमन्दा । आज्ञा दीन्ह भानुकुलचन्दा ॥
"सुनहु सौम्य, भाभी तव भाषा । तपबन फिरन केर अभिलाषा ॥
लै सोइ मिस तेहि रथ बैठारी । छाँड़ु आदिकविधाम मँझारी" ॥
पितु आज्ञा सुनि भृगुपति माना । बधन मातु जिमि शत्रुसमाना ॥
प्रभुअज्ञा रघुवंशकुमारा । कीन्हो तिमि तब अंगीकारा ॥
नहिं जो कछु भाषत गुरुलोगा । कबहुँक होत बिचारनजोगा ॥
चित अनुकूल बात सुनि सीतहि । अति प्रसन्न मन होत प्रतीतहि ॥
अनभड़कत घोड़नरथ जोरी । धरे सुमंत्र रास की डोरी ॥
सोइ सुन्दर रथ तरत चढ़ाई । कीन्ह पयान रामलघु भाई ॥
मग महँ तहँ मिथिलेशकुमारी । मंजुल बन बाटिक निहारी ॥
"करहिं नाथ जो मो मन भावा" । अस बिचारि सीता सुख पावा ॥
मे असिदल सुरतरु रघुराँई । यह न बात ताके मन आई ॥
बहु दिन लगि प्रियदरसन खोई । होनहार दुख सीतहि सोई ॥
फरकि दहिन दृग ताहि बनावा । जो लछिमन मग माँहि छिपावा ॥
कुसगुन तुरन ताहि पहिचाना । भयो तासु मुखकमल मलाना ॥
"अवधनरेस सहित सब भ्राता । राखैं कुसल समेत बिधाता" ॥
मन सन तब मनाय जगदीसा । सीता यहिबिधि दीन्ह असीसा ॥
दोषहीन तिय त्यागन लागे । बन महँ लखन देखि तहँ आगे ॥
बाँह समान उठाय तरंगा । कीन्ह निषेध मनहुँ तेहि गंगा ॥
रोकि बाह रथ सन तब बीरा । भौजिहि लखन उतास्यो तीरा ॥
प्रभुरुख लखि एक सुन्दर नावा । तहँ तुरन्त केवट लै आवा ॥
तहँ चढ़ाय सिय बाँह पकरि के । गए कुमार पार सुरसरि के ॥
पाथर वृष्टि मेघ जिमि डारत । जेहुँ तेहुँ तहँ निज बचनसँभारत ॥
रोकि आँसु घट घुटत उसासा । नरपति शासन लखन निकासा ॥

परिभवरूप लूह की मारी। फूल सरिस भूषनन सँवारी॥
सुनतहि मृदुललता की नाई। गिरी मातु पर तहँ महिजाई॥
'रविकुलभूप धर्म अनुरागी। सकत न तोहि बिनकारनत्यागी'॥
अस संदेह करत मन माहीं। दीन्हो जनु प्रबेस महि नाहीं॥
रहि बेसुध नहि कछु दुखपावा। जागत दूख तेहि बेगि जरावा॥
लखनजतन सन जब सुधिआई। दुसह विपत्ति सीय तहँ पाई॥
तजत दोष बिन यद्यपि रहेऊ। तउँ न कुबचन पतिहिसियकहेऊ॥
देत निरंतर दुःख अपारा। निन्दे कर्म सीय बहु बारा॥
सियहि लखन बहुबिधि समुझाई। बालमीकि घर राह दिखाई॥
"पराधीन मैं मातु अभागी। छमा करहु" बोले पद लागी॥
तेहि उठाइ बोली सिय बाता। "तुम सन अति प्रसन्न मैं ताता॥
सुरपति बसतुम विष्णु समाता। सदा रहहु महिपति परवाना॥
सब सासुन सन लै मम नामा। क्रम सग कह्यो मोर परनामा॥
मोहि महँ अँश पुत्रकर जोई। ताकी कुसल मनावैं सोई॥
राजा सन बिनती यह मोरी। कह्यो तात कर जोरि बहोरी॥
पैठि अग्नि महँ तनहि जराई। जिन निज शुद्धि प्रगट दिखराई॥
तजत ताहि सुनि जन अपवादा। कै यह तब कुलकी मरजादा॥
नहिं यह त्याग बुद्धिगुनखानी। मैं कहि सकत बात मनमानी॥

पूर्वजन्म पापनकर एहा। प्रबल उदय मम नहिं सन्देहा॥
तजि श्रिय जब आई तव पासा। तुम मो सँग बन कीन्ह निवासा॥
तब घर आदर सहित बिसेखी। रहत मोहिं सोइ सकी न देखी॥
तव प्रसाद मुनि तियन बचावा। जिनके पति निसिचरन सतावा॥
तुम आछत अब केहि बिधिनाथा। माँगब सरन और के हाथा॥
अवधिहीन तव दुसह बियोगा। व्यर्थ प्रान नहिं राखन जोगा॥
रक्षनीय जो अंश तुम्हारा। होत न मो हित बिघ्न अपारा॥
अब यहि सन निवृत्ति प्रभु पाई। करिहौं तप रवि दृष्टि लगाई॥

दूजे जन्म होइ फल सोई। तुम पति मिलहु वियोग न होई ॥
वर्णाश्रमपालन कर कर्मा। मनु गावत नरपति कर धर्मा ॥
तव घर सन प्रभु यदपि दुराई। जान्यो मोहिं तपसिनि की नाईं" ॥
'अच्छा' कहि कोउ विधितजिताही। भे दृगओट लखन बन माहीं ॥
खोलि कंठ कुररी जिमि भीता। अति दुख सन रोई तहँ सीता ॥
तज्यो मोर निज नाच सुहावा। तेहि बन रूखन कुसुम गिरावा ॥
खान हेत मुख धास उपारी। दीन्ही हरिन धरनि पर डारी ॥
निरखि सोयकर दुख परितापा। मनहुँ सकल बन कीन्ह बिलापा ॥
तेहि छिन कुस अरुइंधन काजा। बिचरत बालमीक कविराजा ॥
पंछिनबधन लखि जेहिकर सोका। क्रोध समेत बन्यो असलोका ॥
सुनि बन महँ विलाप सोइ घोरा। पहुँचेलिय ढिग चलि सोइ ओरा ॥
आँसु पोंछि तहँ ऋषिहि निहारी। बन्यो तेहि मिथिलेशकुमारी ॥
गर्भ सहित लखि ताहि मुनीसा। "होहु बीरसू" दीन्ह असीसा ॥
बोले "सुता, सकल धरि ध्याना। मैं सब हाल प्रगट करि जाना ॥
सुनत लोक निन्दा तब झूठी। छाँड्यो तोहि तोर पति रूठी ॥
अब जनि करहु सोच कछु भारी। आई निज पितुगेह कुमारी ॥
तीनि लोक कर भार उतारा। कीन्हो सकल जगत उपकारा ॥
निज बच सदा सत्यकरि राखी। भयो न कछु श्लाघाअभिलाषी ॥
तउँ लखि तोहि बिन कारनत्यागत। क्रोध मोहिँ रघुपति पर लागत ॥
जगप्रसिद्ध जस ससुर तुम्हारा। रह्यो मित्र बड़ सुता, हमारा ॥
तू पतिव्रतप्रधान, तव ताता। भवभय सन पंडित नरत्राता ॥
कहु न कौन असगुन तोहिमाहीं। जेहि सन दयाजोग तैं नाहीं ॥
संगतिबस इहँ नित मुनिगन के। रहत सुशान्त जन्तु सब बन के ॥
अब बैदेहि छाँड़ि सब त्रासा। सोइ तपवनमहँ करिय निवासा ॥
इहँ तव शुद्ध सुतन संस्कारा। ह्वै हैं सकल वेद अनुसारा ॥
तपसी बसे जासु सुचि तीरा। न्हाय पुण्य तमसा के नीरा ॥

बैठि रेत पर करि पूजा तहँ। ह्वै हौ अतिप्रसन्न निजमन महँ ॥
उगे जतन बिन बीजन लाई। लै ऋतु के फल फूल सुहाई ॥
मधुर वचन कहि तपसिनिवारी। भुलवैहैं यह बिपति तुम्हारी ॥
बल अनुरूप घटन भरि पानी। सींचत तपबन तरुन सयानी ॥
लहिहौ भूलि सकल दुखदंदा। वरस पियावनकेर अनन्दा ॥
सुनि तेहि सीय अनुग्रहमाना। लै संग तेहि मुनि कृपानिधाना ॥
रहत शान्त जहँ पशु बनकेरे। मृग बेदिहि चहुँदिशि जहँ घेरे ॥
सोइ निज आश्रम माँहि सुहाई। साँझ समय सीता पहुँचाई ॥
जनकसुता तहँ आवत जानी। सकल तपस्विनारि हरषानीं ॥
बीते दर्श चन्द्र को नाई। सौंपी तिनहि सीय मुनिराई ॥
इङ्गुदितेलदीप तिन बारी। एक मृगचर्म बिछाय सँवारी ॥
बलि पोछे तेहि सायंकाला। दई बताइ पर्न को शाला ॥
पाल्यो पतिसंतति राखन हित। निज शरीर सियकरि मंजननित ॥
पूजत अतिथि शास्त्रअनुरूपा। धरे छाल सोइ सती अनूपा ॥
इहाँलखन, प्रभु अजहुँ कि नाहीं। सुनिसियदुःखसमुझिपछिताहीं ॥
सीयविलाप सहित संदेसहि। यह जानन हित कह्यो नरेसहि ॥
सुनत कथा सोइ दीनदयाला। चले बारि भरि नयन विशाला ॥
पूसचन्द जिमि स्रवत तुसारा। चली रामदृग सन जलधारा ॥
लोकवाद बस यदपि निसारी। रही तासु हिय जनककुमारी ॥
पुनि रघुनायक निज मन शोका। निज धीरज सन आपहि रोका ॥
बहुबिधि करत प्रजाकर काजा। बिन रजगुन बिकार रघुराजा ॥
भाइन सहित राज करि भोगा। पाल्यो करि प्रसन्न सब लोगा ॥
सतिहुनारि निजअजस डेराई। त्यागी यहिबिधि कोसलराई ॥
रहि अकेलि सोही श्रिय कैसी। सुख सन सौतरहित तियजैसी ॥

तजि सीता नहिँ और तिय व्याहि भानुकुलनाथ ॥
बिधिवत कीन्हो यज्ञ प्रभु ताकी प्रतिमा साथ ॥

करि तपबन महँ बास सोइ सुनि सुनि सकल हवाल।
लहि कछु सुख धरि धीर सिय सहो बिपत्ति बिशाल ॥

पन्द्रहवाँ सर्ग

श्रीरामचन्द्रजी का बैकुण्ठ जाना

भोगी करि सीताकर त्यागा। महि एकभूप सहित अनुरागा ॥
तेहि अवसर एक लवन सुरारी। यमुनातट मुनिक्रिया बिगारी ॥
सरन हेतु सो ऋषि अति त्रासा। आए श्रीरघुनायक पासा ॥
देखि राम सोइ रक्तनहारा। शापबान नहिँ कीन्ह प्रहारा ॥
देइ शाप तप जबहिँ घटावत। जब न और रक्तक मुनि पावत ॥
सुनि सब, बिघ्न मिटावन काजा। कीन्हो प्रण तब कोशलराजा ॥
राखन हेत धर्म संसारा। नित भगवान लेत अवतारा ॥
पुनि निशिचरबधकेरि उपाई। मुनिन प्रभुहि यहिभाँति बताई ॥
दुर्जय शूलधरे प्रभु सोई। हतिय ताहि जब शूल न होई ॥
शत्रुघ्नहि मखरक्तन हेतू। पठयो तुरत भानुकुलकेतू ॥
रिपु हनि करन काज श्रीरामा। मनहुँ यथारथ तेहि कर नामा ॥
नहिँ अस कोउ रघुवंशिन माँहीं। रिपुमारन महँ समरथ नाहीं ॥
राम असीस पाय रनबंका। रथ चढ़ि नृपसुत चल्योनिशंका ॥
देखत मग बनराजि सुहावन। सूंघत फूलगंध मन भावन ॥
प्रभु आयसु लहि सेन अथोरा। पाछे गइ तासु सोइ ओरा ॥
सुनि रथधुनि निजकण्ठ उठाए। जहँ अनेक वनमृग चकराए ॥
कीन्ह बास मग चलत कुमारा। वालमीकिआश्रम एक बारा।
तपबल उत्तम बस्तु मँगाई। आदर कीन्ह तासु मुनिराई ॥
दुइ सुत सिय जाए सोइ राती। कोष दण्ड सम महिकी भाँती ॥
सुनि सुख मानि प्रातचढ़ि याना। ऋषहिं बन्दि तिन कीन्हपयाना ॥

मधूपघ्न पुर पहुँच्यो जाई । मिल्यो दैत्य तेहि बन सन आई ॥
मानहुँ भेंट देन हित लावत । जन्तु अमित निज संग हँकावत ॥
माँस अहारि लिए बहु संगा । धूम सरिस अति धूमिल रंगा ॥
चर्बी सम दुर्गंध अपारा । ज्वाला सरिस लसत सिरबारा ॥
भई भयंकर आकृति ताकी । धरे रूप जिमि आगि चिताकी ॥
शूलहीन तहँ ताहि बिलोकी । तुरत राह रिपुसूदन रोकी ॥
छिद्र देखि रिपु मारत जोई । सन्मुख अवसि तासु जय होई ॥
"रही आजु मोहिं भूख अपारा । मिल्यो न तउँ भरिपेट अहारा ॥
लखि सोइयह तवकोमल गाता । पठयो मनहुँ डेराइ बिधाता" ॥
यहि बिधि त्रास देखायसुरारी । बिन प्रयास एक रूख उपारी ॥
मारयो, पै बीचहि सतखण्डा । कीन्ह मारि तेहि बान प्रचण्डा ॥
बीचहि गिरयो रूख सर संगा । परी कुसुमरज नृप सुत अंगा ॥
तब सोइ यममूठी की नाई । कोपि शिला एक तुरत चलाई ॥
इन्द्रअस्त्र तेहि मारि कुमारा । एक छन महँ रज रज करिडारा ॥
पुनि उठाय निज दाहिन बाहू । धायो तहँ सोइ निशिचरनाहू ॥
मानहुँ धरे तार तरु एका । गिरिकोउप्रबलपवन बस फेंका ॥
फाटयो हृदय लागत हरितीरा । गिरत जीव बिन दैत्य सरीरा ॥
प्रबल भार बस धरनि कँपायो । तपसिन कर मनकंप नसायो ॥
दिब्य फूल रिपुसूदन माथा । रिपु पर बिहँग गिरे एक साथा ॥
ताहि मारि मान्यो मुनित्राता । निजहि इन्द्रजितघातक भ्राता ॥
मुनिगन निजहि कृतारथमानो । तब ताकी सुचि कीर्ति बखानो ॥
उठे तेज बस सिरहि नवाई । अति सोह्यो लछिमनलघुभाई ॥
पुनि सोइ कालिन्दी के तीरा । मथुरा नगर बसायो बीरा ॥
तहँ सुराज पुरवासिन पाई । इमि सोभा पुरकेरि बढ़ाई ॥
मनहुँ सो बसननगरमहँ आए । जे न अमरपुर माँहि समाए ॥
यमुनहि खिरकिन बैठि कुमारा । चक्रवाक बहु लसत निहारा ॥

जनु बाँधे हुनबेनीपाना। रुचिर धरनि की बेनि समाना॥
दशरथ जनक दुहुन कर प्रेमी। दोउ सियसुतनकेर सोइ नेमी॥
कीन्ह सकल तब बिधि अनुरूपा। छत्रियकुल संस्कार अनूपा॥
कुस अरु गाय पूँछ के बारन। तिनकी पीर मिटन के कारन॥
कहहिँ लोग मुनि संयमधामा। धरो सुतन कर कुसलवनामा॥
बिते बालपन बेद पढ़ाई। तिन सन पहिलेहि बार गवाई॥
निज कविता रघुपतिगुनश्रेनी। जग कविजनहित प्रथम नसेनी॥
मातुसौंह सोइ प्रभुजस गावत। बिरह पीर कछु तासु मिटावत॥
यज्ञ अग्नि सम तेज अपारा। और तीनि रघुवंशकुमारा॥
निजपतिनिनिसंयोग तेहिअवसर। दुई दुई पुत्र लहे अति सुन्दर॥
मथुरा सौंपि बहुश्रुति काहीं। करि सुबाहु बिदिशापुर माहीं॥
यहि बिधि सुतन बाँटिनिज राजा। चल्यो रामपदसेवन काजा॥
जहँ सुनि सीय सुतन कर गाना। रहत पंछि मृग चित्र समाना॥
मुनि तप विघ्न बचावन सोई। गयो न फिरि तपवन महँ होई॥
हाट बाट जहँ फूल सँवारा। सोई अवधमाँहिँ पगु धारा॥
पुरजन आदर करत बिसेखा। लवनबधन हित आवत देखा॥
बैठे सभा सभासद साथा। लख्यो शत्रुसूदन रघुनाथा॥
एकहु धर्मरानि सोइ त्यागे। महि अपूर्वपति सम प्रभुलागे॥
लखि अनुजहिततहँकरतप्रनामा। सुजस सराहि उठायो रामा॥
कालनेमिबध हित सुरनाहा। जिमि उपेन्द्रकहँमिलत सराहा॥
पूँछत देखि लखनलघु भाई। तजि सन्तति सब कथा सुनाई॥
आप कहन हित अवसर पाई। राखन गुप्त कह्यो कविराई॥
मृत बालक धरि नरपति द्वारा। बिप्र एक तब रोइ पुकारा॥
"अहह धरनि फूटे तब करमा। ऐसो स्वामिपाय बिन धरमा॥
प्रथमपाय दशरथ सम नाथा। अब तू परी राम के साथा॥"
सुनि सब तासुसोच कर कारन। भे लज्जित प्रभु अधमउधारन॥

नृप इक्ष्वाकुबंसपद माहीं। मृत्यु अकाल लही कोउ नाहीं॥
तब दुःखितविप्रहि करि धीरा। "क्षमा करहु" बोले रघुबीरा॥
यम जीतन हित कृपा निधाना। सुमिरयो तुरत कुबेरबिमाना॥
शस्त्र बाँधि कर धनु शरधारी। चढ़िपुष्पक तहँ चले खरारी॥
आगे चलत भई नभ बानी। "नहिं यमदोष भूपगुन खानी॥
अधरम करत राज महँ कोई। होहु कृतारथ हनि प्रभु सोई॥"
सुनत बचन प्रभु रघुकुलकेतू। किए ध्वजाथिर रथगति हेतू॥
जानन प्रजादुःख कर कारन। दश दिशिगे प्रभुताहि निवारन॥
नयन लाल दोउ ताम्रसमाना। कीन्हे, करत धूमु नित पाना॥
सिर नीचे लटकत तरुडारा। एक तपसिहि रघुनाथ निहारा॥
पूँछत निजहि शूद्र सोइ भाषा। सेवत स्वर्गलहन अभिलाषा॥
तपअधिकार शूद्र नहिँ होई। भयो प्रजादुख कारन सोई॥
तासु सीस काटन रघुनाथा। लियो तुरन्त खड्ग निज हाथा॥
धूआँ पियत परत चिनगारी। जिन दाढ़ी निज मुँहपर जारी॥
कमल सरिस हिमहेत, मलाना। काट्यो सिर सोइ मारिकृपाना॥
शूद्र दंड प्रभुकर सन पाई। लहो तुरत गति परम सुहाई॥
जेहि पावन हित सोइतप घोरा। रह्यो छुद्र जन हित अतिथोरा॥
करि यहि भाँति प्रजा के काजा। मिले अगस्त्यहि कोशलराजा॥
एक बार करि क्रोध अपारा। पियोऋषीस जो सागर सारा॥
छूटन हेत बंदि सन सोई। भूषन दयो मुनिहि जल जोई॥
दिव्य बाँह सोइ सोहन लायक। दयो प्रभुहि भूषन मुनिनायक॥
सीताकंठ तजे निज बाहू। धरिभूषन सोइ कोसलनाहू॥
लौटे पुर दिशि भूप महाना। द्विजसुत प्रथमलहे निज प्राना॥
यमसन लड़िपालत निजलोगा। नृपहि जानि लहिसुत संजोगा॥
निन्दा प्रथम समुझि सकुचाई। प्रभु अस्तुति बाम्हन तहँ गाई॥
पुनि जब अश्वमेधमख हेतू। तज्यो तुरंग भानुकुलकेतू॥

राछस कपि नरपति जगकेरे । तहँ लाये उपहार घनेरे ॥
चहुँदिशिसन ऋषिराज बुलाए । तजि निज धाम अवधपुर आए ॥
बैठे देवऋषय चहुँद्वारा । निज मुख सन निजवेद उचारा ॥
सोही अवधपुरी तेहि काला । जनु बिरँचि की देह बिशाला ॥
बैठे यज्ञगेह रघुनाथा । सुवरन सीयमूर्ति धरि साथा ॥
तेहि अवसर सीता कर त्यागा । प्रभु कहँ अतिप्रशस्य तहँ लागा ॥
नित नरयज्ञबिगारनहारे । जेहि मख महँ राछस रखवारे ॥
विधिवत सकल वेद अनुरूपा । बाढ्यो तहँ सोइ यज्ञ अनूपा ॥
पुनि कुस लव गुरु आयसु पाई । बालमीकि कविनाथ बनाई ॥
रघुकुलतिलककथा अति सुन्दर । गाई जाय यज्ञमहि भीतर ॥
भए न तृप्त सकल श्रोता सुनि । किन्नर सरिस कुमार गानधुनि ॥
लखन राम शिशुसुन्दर रूपा । लख्यो सुन्यो पुनिगान अनूपा ॥
सभा सकल एक चित सुनिसोई । डारत आँसु अनन्दित होई ॥
सोही बन सम भए प्रभाता । डारत ओस रहत बिन बाता ॥
राम सरिस पुनितिनहिं बिलोकी । निज अचर्ज जन सके न रोकी ॥
निरखि तासुगुन जनमन माहीं । भा अचर्ज इतना कछु नाहीं ॥
यद्यपि चह्यो देन नरराई । पै नहिँ तिन कछु चाह जनाई ॥
जिमि यह चरित बारबहु देखी । पुरजन बिस्मित भये बिसेखी ॥
"किनतुम कहँ यहगानसिखावा । किन बोलहु यह ग्रंथ बनावा ?"
यह तिन सन पूँछत नरपालक । "बालमीकि" बोलततब बालक ॥
भाइन सकल सहित रघुराई । बालमीकि मुनिबर पहँ जाई ॥
मुनिबर ग्रहन करन अभिलाषा । कोसलराज समर्पन भाषा ॥
बोले मुनिनायक सुनि सोई । "सीतासुत बालक ए दोई ॥
अब रघुपति यहउचित बिचारो । ग्रहनकरिय मिथिलेसकुमारी ॥
"यह मम सौंह आगिमहँ जाई । निज अतिशुद्धि प्रगट दिखराई ॥
पै रावनहिं पापजन जानत । नहिं सोबातप्रजा मम मानत ॥

करत सीय निज शुद्धि प्रकासा। जो लखि प्रजा करै बिश्वासा॥
तौ सीतहि पुत्रन के साथा। करब अवश्य ग्रहन हम नाथा"॥
सुनि रघुनाथबचन मुनिराई। तुरत कुटी सन शिष्य बुलाई॥
नियमन सन तपसिद्धि समाना। सीतहि राम सौंह मुनि आना॥
दिन दूजे तब करुनागारा। करि एकत्र नगर जन सारा॥
निज मन काम करन के काजा। कह्यो आदिकवि सन रघुराजा॥
पुत्रन सँग तब सीय समेता। आए प्रभु पहँ सिद्धि निकेता॥
पहिरे रँगी गेरु सन सारी। चलत चरन दिशि लोचनडारी॥
तहँ दिखराय शाँत निज देहा। लखत शुद्ध सिय बिन संदेहा॥
लखि आकृति सोइ सीताकेरी। पुरजन सकल, दृष्टि निज फेरी॥
फली सालि सम मानि गलानी। ठाढ़े सकल दोष निज जानी॥
बोले मुनि, "यहि सभा मँझारी। दिखराइय निज शुद्धि कुमारी॥"॥
सिय कविनाथशिष्य कर डारा। जल अचमन करि बचन उचारा॥
"जो सदैव निज मन बच कर्मा। मैं राख्यों निज पतिव्रतधर्मा॥
दोषबिहीन जानि मम करनी। तौ निज अङ्क लेहु मोहि धरनी"॥
ज्यों मिथिलेस सुता यह बोली। तहाँ तुरन्त सभामहि डोली॥
फटी भूमि एक तेज अपारा। उठ्यो भूमितल मनहुँ फुहारा॥
बैठि मंच मनि जटित सुहाये। चहुँदिशि फन पर नाग उठाए॥
चारि सिन्धु करधनी बनाइ। धरनी देवि आप तहँ आइ॥
लखत नाथपद जनककुमारी। सोइ अति बेगि गोद बैठारी॥
हाँ! हाँ! करत रामतेहि काला। गई तुरंत धरनि पाताला॥
सियसंयोग चहत रघुनायक। लीन्ह कोप करिप्रभु धनुसायक॥
तेहि अवसर,निजबल दिखरावन। कीन्ह शांततेहि विधिकमलासन॥
बीते मख मित्रन सतकारी। बिदा कीन्ह दै भेंट खरारी॥
सीयप्रेम सन कृपानिधाना। ताके दोउ पुत्रन तब माना॥
पुनि भरतहि दीन्हो रघुराई। सिन्धुदेस मामा सन पाइ॥
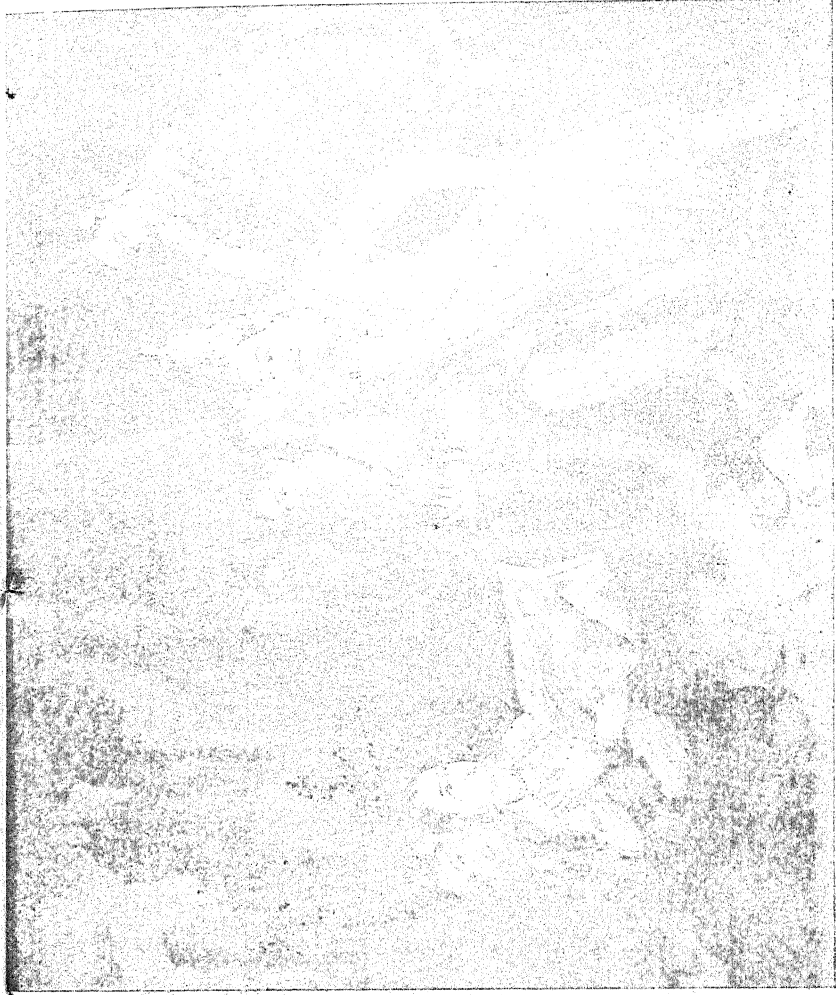
सम्पूर्ण सभा के सन्मुख धरनी देवी सीता को गोद में बैठाय कर पाताल में ले जाती हैं। पृष्ठ १०४
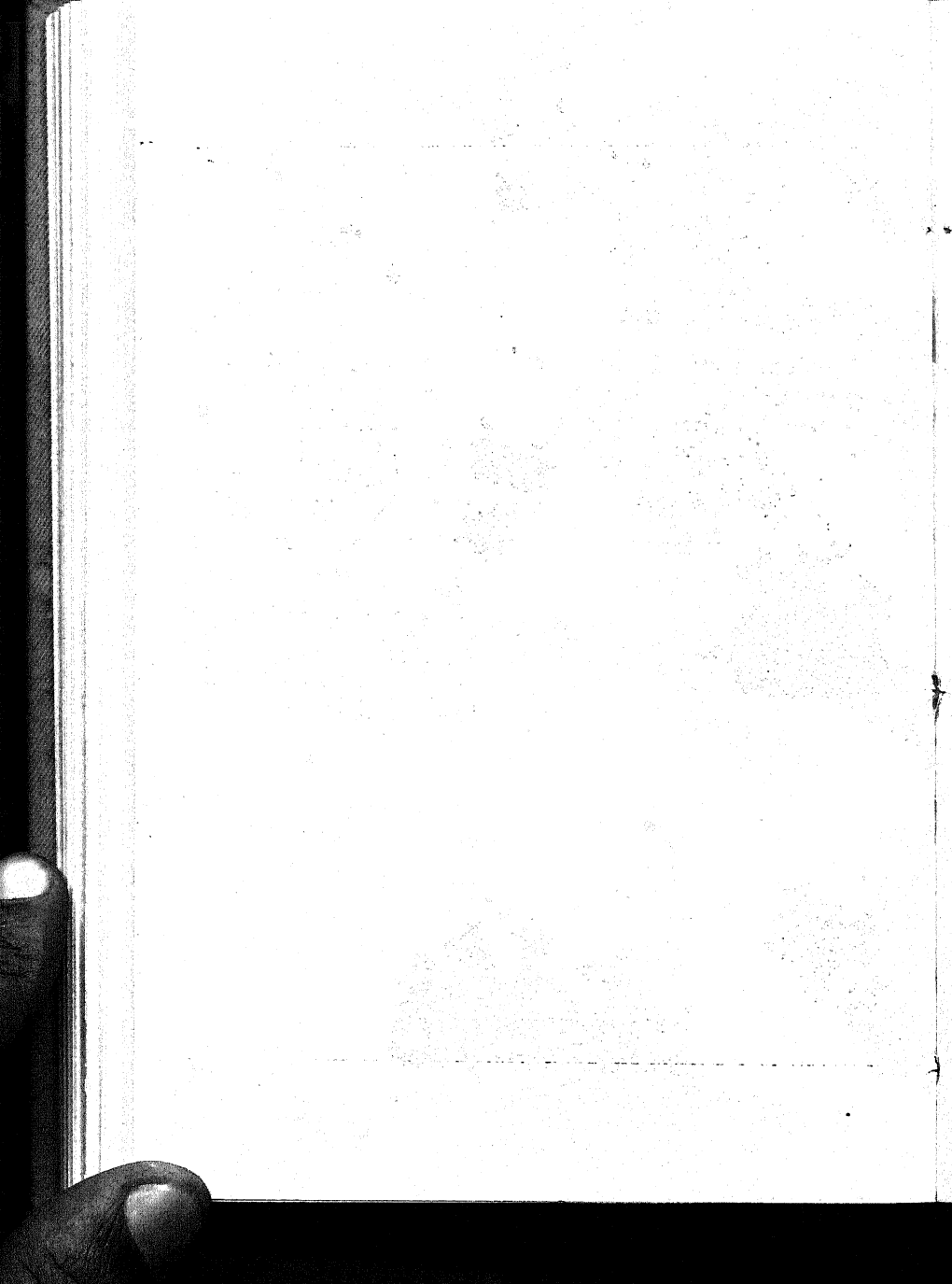
गन्धर्वेन सोइ जीति प्रवीना। छोरि हथ्यार धरायो बीना ॥
करि नृप तहँ पुनि सुत निजदोई। आए राम पास चलि सोई ॥
चन्द्रकेतु अरु अङ्गद नामा। लछिमन पुत्र रहे गुनधामा ॥
तिन कहँ प्रभु अनुसासन पाई। दीन्ह लखन कारापथ जाई ॥
पुत्रन राज देइ यहि भाँती। अनुज सहित दसकंठअराती ॥
क्रम सन कीन्ह यथाबिधि धर्मा। स्वर्गबसीं जननी-मृतकर्मा ॥
ता पाछे मुनि भेस बनाये। काल भानुकुलपति पहँ आये ॥
कह्यो "तजिय रघुपति नरलोई। मैं सम्बाद सुनै जो कोई" ॥
"एवमस्तु" बोले नरपाला। बिधि संदेस कह्यो तब काला ॥
"निपट्यो देवकाज सब स्वामी। बसिय स्वर्ग प्रभु गरुड़ागामी" ॥
बैठे राजगेह के द्वारे। तेहि छन रहे लखन रखवारे ॥
तेहि अवसर आये दुरवासा। कह्यो जानतिन रघुपति पासा ॥
रोकत लखन ऋषीस निहारी। शापन चह्यो क्रोधकरि भारी ॥
सोइ डरबस चलि प्रभु की ओरा। अनुसासन सोइ लछिमन तोरा ॥
पुनि प्रतिज्ञ रघुनायक केरी। साँची करन उचित हिय हेरी ॥
जाय तुरत सरयू के तीरा। तज्यो योगसन लखन सरीरा ॥
चौथ अंस निज कोसलनाहा। आगे लेत स्वर्ग की राहा ॥
तीनि पाँव पर धर्म समाना। रहे सिथिल लखि कृपानिधाना ॥
रिपुगजहित अंकुस कुसकाहीं। पुनि बैठाय कुसावति माहीं ॥
निज निज सुन्दर बोल सुनाइ। सकल संत मन लीन लुभाई ॥
देय सो लवहि शरावति राजू। आगिअग्र करि सहित समाजू ॥
सकल दिखावत प्रेम अभङ्गा। चलत अवधबासी सब सङ्गा ॥
घर तजि सकल नगर के साथा। गये नगर बाहर रघुनाथा ॥
कदमकली सम नयन असारा। जेहि मग पर पुरलोगन डारा ॥
सोई प्रभुमग राछस अरु बानर। प्रभुरुख देखि गये तेहि अवसर ॥
आयो नभ सन तुरत बिमाना। ताहि देखि तहँ कृपानिधाना ॥

सरयुहि भक्तबछल रघुराई। स्वर्गचलनहित सीढ़ि बनाई॥
करत सकल पुरजन असनाना। भयो जो सोइ गोप्रतर समाना॥
यहि कारन सोइ ठाम सुहावन। भयो प्रसिद्ध गोप्रतर पावन॥
जो प्रभु सँग तेहि अवसर आवा। तिन निज देव अंश तहँ पावा॥
जाय स्वर्ग दिशि प्रभु सब साथा। दूजो स्वर्ग रच्यो रघुनाथा॥

यहि भाँति श्री रघुबंश मनि सुरकाज सब निपटाय कै।
निज ब्रह्म तेज बिलीन भए पुरलोग के सँग जाय कै॥
हनुमतहि उत्तर देस लंकापतिहि दछिन जमाय कै।
दोउ ओर महि पर भूपप्रभु जयखंभ मनहु बनाय कै॥

सोलहवाँ सर्ग

कुमुद्वती का ब्याह

जब सच्चिदानन्द रघुबीरा। भए लीन निज ब्रह्म शरीरा॥
और सात रघुवंश कुमारा। जेठ कुशहि लखि सुगुनअगारा॥
कीन्हों प्रथम मुकुट अधिकारी। ताहि जोग सब भाँति बिचारी॥
लहे बिपुल धन गज हय स्यन्दन। यद्यपि रहे सकल नृपनन्दन॥
सिंधु समान धर्म अनुरागी। राजसीमबेला नहिं त्यागी॥
दान स्रवत नितप्रति सब सोई। पालकाव्यमुनिकुल सम होई॥
फैल्यो विष्णु अंशकुल कैसे। आठ बरन सुरगजकुल जैसे॥
बीते अर्धराति एक बारा। बुझे प्रदीप भूपआगारा॥
सोवत सकल लोग तेहि काला। लखी चौंकि जगि कुशमहिपाला॥

नारि एक कीन्हे सोइ बेसा। मानहुँ चली करन परदेसा॥
सो मनशुद्ध सन्त नृप केरे। धरे इन्द्र सम तेज घनेरे॥
कहिं जयशब्द नाय पद माथा। ठाढ़ी भई जोरि युग हाथा॥
रहे गेह दृढ़ बंद कपाटा। परै न लखि आई केहि बाटा॥
घुसत दर्पनी महँ जिमि छाया। लख्यो तासु आगम नरराया॥
बैठि सेज पर अचरज मानी। बोले दशमुखरिपुसुत बानी॥
"आई यदपि बन्द घर मोरे। योगप्रभाव लखौं नहिं तोरे॥
दुःखचीन्ह सन तवमुख दरसत। ज्यों सरोज पाला मुख परसत॥
काकी नारि कौन तुम अहहू। मोसन आय काह तुम चहहू॥
कहैा सदा मन महँ यह राखी। नहिं राघव परतिय अभिलाखी"॥
बोली "जो पुर लोग समेता। तव पितु रघुपति कृपानिकेता॥
चलत स्वधाम लीन्ह निजसाथा। जानु मोहिं सोइ पुरी अनाथा॥
मैं सुराज सम्पदा जनाई। मानो लघु कैलास बड़ाई॥
तुम आकृत अब लखिय बिचारी। सोचजोग भइ दसा हमारी॥
गिरत बिशाल गेह चहुँओरा। लहत भीति सँगसोइ छबिघोरा॥
मेघ बीच छिटके चहुँ देसा। जिमि डूबत लखि परत दिनेसा॥
निसि महँ बजत भूषनन धारी। चली जहाँ पिय खोजन नारी॥
सोइ राहन चिघरत डरवावत। ढूँढ़त मांस स्यारि अब धावत॥
लागत तरुनिहाथ जहँ नीरा। बज्यो मृदङ्ग समान गँभीरा॥
सोइ पुखरनजल रोइ पुकारत। भैंस नहात सींग सन मारत॥
टूटत अड्डु बैठे तरु जाई। तजी नाच मृदु शब्द न पाई॥
भे जरि पख बन प्रबल कृशाना। नगरमोर बनमोर समाना॥
जिन सीढ़िन पर सिन्धुरगामिनि। डारत रंगि चरन बरभामिनि॥
हरिन मारि नख रुधिर लगाई। तहँहि बाघ बैठत अब आई॥
बने चित्र महँ नाग बिशाला। लहत प्रियालन मृदुलमृनाला॥
तिनहिं सजीव जानि हरि मारत। नख अंकुस सन कुम्भ बिदारत॥

खंभन माहिं चित्र तरुनिनके। धूमिल भए रंग अब तिनके॥
तिन पर केचुल छोड़ि भुजंगा। जनु जाली सन ढाँकत अंगा॥
उज्जल महल भये सब कारे। ढके घास सन चहुँदिशिसारे॥
तहँ अति विमल चन्द की जोती। परत भीति पर व्यर्थहि होती॥
जाकी डार झुकाय सँभारी। तोरत फूल रहीं सुकुमारी॥
सोई उपबन अब किये निवासा। करत लँगूर तरुनकर नासा॥
दीपतेज निसि महँ जहँ नाहीं। तियमुख ससि दिनमहँ न लखाहीं॥
सूने गेह धूम बिन होई। ढकि झरोख. झाला सन सोई॥
बेदविहीन होइ सरितीरा। बिन सुगन्ध चूरन सुचिनीरा॥
सरयूतट दीमकघर देखी। होत मोहिं नृप दुःख बिसेखी॥
अब यहि त्यागि उचित मन जानो। चलु मो पहँ निजकुलरजधानी॥
जिमि तजि मनुजदेह तवताता। गे वैकुंठ देवनरत्राता"॥
पुरीबिनय सुनि कुश नरनाहा। "एवमस्तु" कह सहित उछाहा॥
अति प्रसन्न सोइ पूरनकामा। अन्तरधान भई तेहि ठामा॥
सभा जाय पुनि भए प्रभाता। कही महीप द्विजन सब बाता॥
ते सोइ रजधानी के साथा। होनैं कह्यो यथारथ नाथा॥
पुनि कुशावतिहि विप्रन देई। सब रनिवास संग निज लेई॥
सुभदिन घन सँग वायु समाना। अवधपुरी दिशि कीन्ह पयाना॥
मग ध्वजयूथ बाग सम लागा। भे बिहारगिरि सम दलनागा॥
रथ घर सम अरु सेननिवासी। भइ जनु चलतपुरी सोइखासी॥
धरे छत्र मण्डलछबि पावत। सेनहि अवध ओर लै आवत॥
सिन्धुनीर निज संग लगाये। सोइ महीप हिमकरछबि पाये॥
चलत असंख्य भूपदलबीरा। सको न सहि धरनी तन पीरा॥
रजछल सन अधार निज त्यागी। मानहुँ भूमि अकासहि लागी॥
चलत कुशावति कछुक बिहाई। ठहरत कछुक राह महँ जाई॥
चलत कछुक मग, जहँ जहँ देखा। तहँहिं ताहि पूरन सब लेखा॥

लहत मत्तगज सन मद धारा । लगत तुरगखुर-प्रबल प्रहारा ॥
मग महँ रेनु कीच सम भयऊ । कीचर रेनु सरिस बनि गयऊ ॥
फैली विन्ध्यभूमि चहुँ ओरा । चलत गूँजि खोहन करिसोरा ॥
तेहि अवसर नरेसकटकाई । रेवाप्रबलधार छबि पाइ ॥
चलत धातु पीसत बहुतेरे । रंगत लाल चक्र रथकेरे ॥
लहि किरातसन नृप उपहारा । आये भूप विन्ध्य के पारा ॥
बाँधत सेतु जोरि मातंगा । पच्छिम ओर बही जनु गंगा ॥
उतरत हिलत पंख बिधि नाना । भए हंस नृप चँवर समाना ॥
सोइ कुलपुरुषन मुक्तिदुआरा । लहि मुनिशाप भए जब छारा ॥
बन्द्यो जानि भानुकुल वीरा । हिलत नाव डोलत सरिनीरा ॥
पुनि यहिबिधि कछु दिवस बिताई । पहुँच्यो सरयुतीर नरराइ ॥
लखे बेदियुत अगनित यूपा । जो गाड़े रघुकुल के भूपा ॥
कछुक हिलाय कुसुमयुत साखी । सीतल नीरबिन्दु सँग राखी ॥
तेनि मारग महँ म्लान बिचारी । मिली अवधसन रुचिर बयारी ॥
ग्रामअन्त सरितीर सुहाए । तहाँ भूप निज लोग टिकाए ॥
चतुर शिल्पि प्रभु आयसु पाई । बिरंचि पुरी अति रुचिर बनाई ॥
बीते तपजिमि जल बरसावत । जरी भूमि घन नई बनावत ॥
पुनि कीन्ही नरपाल महाना । दइ अमित पशुआदिक दाना ॥
पूजा यथाविधान नगरकी । घर थापित-सुरमूरतिबरकी ॥
पिय सम तियहित कीन्ह प्रवेसा । तासु राजगृह बीर नरेसा ॥
यथाउचित दै भवन सुहाए । और प्रजा सब भूप बसाए ॥
बँधे खम्भ सन अमित मतंगा । घुड़सालन महँ बहुत तुरंगा ॥
हाट बिचित्र वस्तु बहु धारी । भई धरे भूषन जनु नारी ॥
लहि सोभा निज सकल पुरानी । बसि सोइ पुरी भूप गुनखानी ॥
गिन्यो न नेकु सैल कैलासा । कै जहँ सुरपति करत निवासा ॥
पहिरे बस्त्र भूप अति पातर । धारे मोतिन माल मनोहर ॥

मानहुँ तिय सिंगारकर कर्मा। आयो ताहि सिखावन धर्मा॥
दिनकर दिशि अगस्त्य तब त्यागी। क्रमसनरह्यो उदीचिहि लागी॥
हिम सँग सीतल वृष्टि गिराई। दिशि दक्खिन निजव्यथा जनाई॥
ज्यों ज्यों प्रबल भई रबि जोती। त्यों त्यों निशा छीन अति होती॥
तेहि अवसर लागे दोउ कैसे। प्रेमाकुल जायापति जैसे॥
दिनदिन लसत दिखाय सिवारा। सीढ़िन तज्यो नीर की धारा॥
खरे पद्म पुखरन के भीतर। भयो घटत नारिन के कटि भर॥
वन महँ चहुँदिशि गन्धजनावत। जब मल्लिका कलिन पर धावत॥
प्रति प्रसून सोइ निज पदधारी। मधुकर गिनी कली जनुसारी॥
नखछतयुत कपोल शुचि माहीं। केसर स्वेद सहित फँसि जाहीं॥
गिरत कान सन सिरिस सुहावा। तउँ फँसि तहँ नीचे नहिं आवा॥
चन्दनरस सन अट्ट पोताई। यंत्रन नीरधार नित पाई॥
सोइ ठंढग्रह दिवस बितावत। प्रबल ताप तहँ धनिक नसावत॥
बिते बसन्त यदपि भा छीना। तेऊ तेहि अवसर काम प्रवीना॥
युवतिन गन्धित केस दिखावत। कामिनचित्त उछाह बढ़ावत॥
रज दिखाय कामिन मनमोहत। यहिविधि अर्जुनमंजरि सोहत॥
जास्यो यदपि ताहि भगवाना। मकरकेतु धनुडोरि समाना॥
आम मृदुलपल्लव तेहि काला। रुचिरगन्ध मञ्जरी बिशाला॥
अति वासित पुनि सीधु पुराना। लहि कामिन मन ताप नसाना॥
तेहि अवसर समस्त संसारा। द्वयजन छबि शुचि लही अपारा॥
ताप नसाय देइ आनन्दा। उदय होत नरपति अरु चन्दा॥
लागे अमित जासु शुचि कूला। गन्ध समेत लता अरु फूला॥
जेहि जल खेलत अगनित हंसा। विहरन चह्यो भूपअवतंसा॥
डारि जाल जल जन्तु निसारी। तट पर गेह बनाय सँवारी॥
तियन संग करि नीर प्रवेसा। लग्यो नहान महान नरेसा॥
उतरत तरुनि सकल सरितीरा। रगरत घूँघुर बजत गँभीरा॥

सुनि सोइ धुनिजलमहँ भयखाई। इतउत भजत हँस अकुलाई॥
एक एक कहँ तिय नहवावत। देखत भूप अमित सुख पावत॥
निरखि चँवरकर निकट किराती। बोले अवधभूप यहिभाँती॥
"लखु यह छबि नहात रनिवासा। क्रीड़ा करत समेत हुलासा॥
धोवत सकल मुदित नित अंगा। मिलत नीर महँ अगनितरंगा॥
इत उत तेहि तरङ्ग फैलावत। सन्ध्या समय मेघ छबि पावत॥
जो काजल तिय धोइ छुटावत। तेहि तरंग फिर नयन लगावत॥
शुचि नितंब अरु कुचकर भारा। तियनअंग नहिं जात सँभारा॥
कछु दुखसन जलमहँ फिरिपरहीं। हाथमारि फिरिफिरि तहँ तरहीं॥
सिरिसफूल श्रुति सन गिरिजाहीं। क्रीड़ा करत तरुनि जलमाहीं॥
परत नीर महँ ताहि निहारी। धावत मीन सेवार बिचारी॥
करत खेल तिय नीर उछारत। एकएक पर करसन जलडारत॥
परत उरज जल बूँद विशाला। लख्यो न टुटत मोति की माला॥
तेहि अवसर तिय जलमहँ जाई। सकल अंग उपमा तहँ पाई॥
नाभि भँवर सम भृकुटि तरंगा। कुच दोउ जनु चकोर युगसंगा॥
पंख उड़ाय करत तट सोरा। अति प्रसन्न यहि छन बहुमोरा॥
तिय नहात जल महँ एक संगा। होत शब्द जनु बजत मृदंगा॥
चिपकत भीजि अंग पर धोती। एहिछन इमि किंकिन छबिहोती॥
ज्यों पूरनससिकी द्युति माहीं। मंदजोति नक्षत्र लखाहीं॥
तियनितम्ब पर किंकिनि छाजत। भरे नीरबस नहिं सो बाजत॥
एक तिय कर सन नीर उछारत। खेलत सखी बदन पर मारत॥
सोंधी लटके रंग मिलावत। लाल नीर तरुनी बरसावत॥
बिखरे मोती माल दिखावत। घबराहट मुख सन प्रगटावत॥
बिथुरे केस छुटे अँगरागा। तउँ तियवेष मनोहर लागा॥
उतरि नाव सन हीलत हारा। कुस तरुनिनसँग कीन्ह बिहारा॥
करिनिन संग मनहुँ गजराजा। जासु कंध एक पद्म बिराजा॥

तेजवन्त नरपति सँग पाई। भई तरुनिसोभा अधिकाई॥
सहजहि होत मनोहर मोती। नीलम संग अनूपम जोती॥
रँग रँग नीर तियन तेहि मारा। सो अति शुचिछबि लहत अपारा॥
टपकत नीर अङ्ग सन कैसे। धातुरंग हिमगिरि सन जैसे॥
यहिविधि तरुनि संग सो बीरा। मज्जत अति पवित्र सरिनीरा॥
सोह्यो मनहुँ अप्सरन साथा। मन्दाकिनि नहात सुरनाथा॥
जो अंगद अगस्त्य सन पाई। दियो सुतहि पद सँग रघुराई॥
जयलक्षण कुलभूषन सोई। कब जल गिर्‍यो न जानतकोई॥
रानिनसँग इमि करि असनाना। पैठे तीर तम्बु असथाना॥
अंगदहीन लख्यो निज बाहू। बिना वस्त्र बदले नरराहू॥
जयश्रियवसीकरन सो रहेऊ। सो आभरन पिता सन लहेऊ॥
अस बिचारि नृप शुभगुनखानी। सके न सहि अंगद की हानी॥
एक सम फूल आभरन जेही। कबहुँ लोभ किमि उपजै तेही॥
पुनि केवट बहु भूप हँकारी। ढूँढ़न कह्यो जाल जल डारी॥
मथि मथि नीर बिफलश्रम होई। बोले सुखो बदन है सोई॥
"नाथ कीन्ह हम यत्न अपारा। लह्यो न भूषन तऊ तुम्हारा॥
जलमहँ बसत नाग प्रभु जोई। लियो अवसि भूषन यहसोई"॥
भए लालदृग सुनि नरनाथा। लीन्हों तुरत धनुष निजहाथा॥
नागनास निज मन महँ ठाना। साध्यो तुरत गरुत्मत बाना॥
धरतहि नीर कुण्ड सोइ डोला। करि सम किये लहर अतिलोला॥
तटसन भिरि चिघरो अकुलाता। बनके नाग परत जिमि खाता॥
भड़कत मगर कुण्ड सन तुरतहि। कन्यासँग निसरो प्रधानअहि*॥

---

* अयोध्या में यह प्रसिद्ध है कि नाग के साथ शिवजी आए थे। मेल मिलाप करा देने के पीछे कुश के कहने से अयोध्या में रह गये। अब वह नागेश्वरनाथ के नाम से प्रसिद्ध हैं।

आभूषन सोइ प्रतिउपहारा। जब तेहि लए नरेस निहारा॥
धनु सन तुरत उतास्यो तीरा। क्रोध न करत नम्र पर बीरा॥
त्रिभुवनपति सुत नृपहि अहीसा। कह्यो नाय सादर निज सीसा॥
"अंकुस सम रिपुगज बस कीन्हें। अभयदान सब लोकन दीन्हें॥
जानौं नाथ प्रताप तुम्हारा। तुम सुत नाम विष्णुअवतारा॥
पूजनीय तुम नाथ हमारे। मैं करि सकत न अप्रिय तुम्हारे॥
ऊपर देखत गेंद उछारी। कौतुक सन यह लख्यो कुमारी॥
गिरत कुण्ड महँ तेज विशाला। तारा सरिस लीन्ह यह बाला॥
पहिरै याहि बाँह पुनि तोरी। जहँ फुंकरत समरमहि डोरी॥
रच्छत महि अर्गल सम होई। पहुँचत जानु अंत लगि जोई॥
मो भगिनिहि पुनि भूप उदारा। करो कृपा करि प्रभु स्वीकारा॥
प्रभुपद्कमल सेइ कछुकाला। निज अपराध मिटाइहि बाला"॥

लै भूषन अहिनाथ सन बोले कुस मुसकात।
"भए हमारे बन्धु तुम अहो धन्य हो तात॥"

कन्या निजकुलरत्न पुनि निज बन्धुन के साथ।
दीन्हीं सादर कुसनृपहिं विधिवत तब अहिनाथ॥

मंगल कंगन सो बँधा अहितनयाकर लीन्ह।
जब कुस पावकसौंहही तेहि पटबन्धनि कीन्ह॥

दिव्य दुन्दुभी तूर्यधुनि रही भुवन महँ छाय।
बरसाए घन फूल तब जन आचर्ज बढ़ाय॥

यहिभाँति त्रिभुवनाथसुत कहँ नाग बन्धु बनायऊ।
अवधेश पुनि सम्बन्ध तत्तक-पुत्र संग लगायऊ॥
शंका तजी एक चित्त में निज तातमारनहार की।
एकको प्रजा कहँ त्रास रही न नेकु सर्पबयार की॥

सत्तरहवाँ सर्ग

अतिथि का राज्य

कुशसँयोग सन नागकुमारी। अतिथि जन्यो सुत सोइ छबिधारी॥
ज्यों पिछले निसि याम समेता। चितप्रसाद बुधि लहत सचेता॥
सोह्यो पितामातुकुल कैसे। उतर दखिनमग रविसन जैसे॥
तेहि सब गुन सिखाय नरनाहा। नृप कन्यन के साथ बियाहा॥
सूर कुलीन आप सम पाई। निजहि न एक जान्यो नरराई॥
हरि सहाय ह्वै करि कुल रीती। रनकुश मर्‌यो दैत्यगन जीती॥
चन्द्र संग जिमि जोन्ह नसाई। सोचत ताहि मरी अहिजाई॥
बैठ्यो पति हरि सँग एक आसन। शचिसँग रही रानि नन्दनबन॥
समर चलत अज्ञा नृपकेरी। सो अनुसरब उचित हिय हेरी॥
कीन्ह तासु सुत कहुँ अधिकारी। बृद्ध मंत्रि अति जोग बिचारी॥
नृपअभिषेक काज तेहि काला। रचवायो एक गेह विशाला॥
भद्रपीठ पर तेहि बैठाई। भए प्रवृत्त मंत्रि समुदाई॥
हेमघड़न महँ तीर्थनीर भरि। यथाउचित निजकर सबधरिधरि॥
बाजत ढोल तूर्य एक ओरा। करत बैठि नर मंगलसोरा॥
कुसुम कली जवअंकुर डारी। बूढ़िन नृपआरती उतारी॥
सहित पुरोहित विप्र अनेका। करत मंत्र सह तब अभिषेका॥
सोहत परत नीर नृपमाथा। मनहुँ गंग सिर धरि पशुनाथा॥
तेहि छन बन्दीजन जस गावत। कूजत मोर मेघछबि पावत॥
बढ़ी नहात भूप छबि कैसे। बरसत मेघ बिज्जु छबि जैसे॥
पुनि विप्रन कहँ धन नृप दीन्हा। जेहिसन तिन बिधिवत मखकीन्हा
जो नृप कहँ तिनदीन्ह असीसा। कर्मन तुच्छ सो कीन्ह महीसा॥
कीन्ह अबध्य भूप बधजोगन। छोड़े सकल बन्दि के लोगन॥

जोते बरद साँड़ करि डारे। गो अनेक के दुहन निवारे॥
शुक आदिक पंछिन तेहि काला। कीन्ह स्वतन्त्र अतिथि नरपाला॥
दुसरे चौकबस्त्र सुचि धरि तन। बैठे नागदन्तसिंहासन॥
धूपधूमसन केस सुखाई। गन्ध आदि सब सेवक लाई॥
पुष्पमाल अरु मोतिन हारा। गुहि मानिक नृपकेस सँवारा॥
मृगमद सँग चन्दन अँग लाए। गोरोचन सन चित्र बनाए॥
धरि सेहरा सिर भूषन सारे। हंस चिन्ह दुकूल तनु धारे॥
सोहे तेहि छन अतिथि महाना। राजलच्छिबर रुचिर समाना॥
खरे हेम दर्पन के आगे। तेहि छन अतिथिभूप इमि लागे॥
सूरज उदय मेरु तट पाहीं। ज्यौंसुरतरु प्रतिबिम्ब लखाहीं॥
कछुक हाथ सन चँवर हिलावत। राजचिन्ह औरहु कछु लावत॥
"जय जय" करत प्रजा के साथा। गए सभा ककुत्स्थकुलनाथा॥
तहँ वितानयुत पितुसिंहासन। धरत सीसमनि जहँनित नृपगन॥
सोह बैठि श्रीवत्सनाम घर। ज्यों कौस्तुभमणि विष्णुअंगपर॥
सोह अलपबय होइ नरिन्दा। रेखा सन ज्यों पूरनचन्दा॥
नित प्रसन्न निज बदन जनाई। बोलत मधुर बचन मुसुकाई॥
सेवक गन तेहि लख्यो प्रकासा। मानहुँ मूर्तिमान विश्वासा॥
इन्द्र सरिस श्रिय धरि सो भूपा। स्वर्ग सरिस निजपुरी अनूपा॥
धरे कलपतरु सम ध्वज जोई। गे सुरगज सम गज चढ़ि सोई॥
विमल छत्र नूतन नृपकेरा। प्रगटावत नित तेज घनेरा॥
हर्‍यो निमिष महँ सोक कलापा। पूर्ब-नरेस-बिरह परितापा॥
उगे भानु नित किरन लखाहीं। धूप जनाय दिवस प्रगटाहीं॥
निज गुन सन सो तेज अपारा। रहे समान ताप बलसारा॥
ध्रुव सम तेहि सप्रीति पुरनारी। शरदरैन सम रहीं निहारी॥
पूजा बिबिध देव सब पावत। नृप पर नित्य प्रसाद जनावत॥
ज्ञानबेदि सूखन नहिं पाई। पहुँच्यो तेज सिंधु लगि जाई॥

गुरु के तंत्र भूप के बाना । साधे अर्थ काम बिधि नाना ॥
सभा बैठि नित सभ्यन साथा । जगव्यवहार लखे नरनाथा ॥
सेवक विनय सुन्यो तब राजा । दिए तिनहिं मनबाँछित काजा ॥
ह्वै कुश सावन सरिस सुहावा । नदी सरिस निज लोक बढ़ावा ॥
यह नृप भाद्रमास सम रहेऊ । यहि सनअधिक बढ़नजन लहेऊ ॥
दयो सो लीन्ह न नृपगुनखानी । बोले सदा सत्यही बानी ॥
मदभंजनव्रत नित हिय धारी । रोपे रिपुतरु प्रथम उखारी ॥
बंस रूप प्रभुता महँ कोई । एकहु रहे, गर्व नित होई ॥
लहे तीनि गुन रह्यो नरेसा । रह्यो न ताहि गर्व कर लेसा ॥
हरे प्रजा चित सो दिन राती । भा दृढ़मूल रूख की भाँती ॥
भूप शत्रु की नित यह रीती । कबहुँ बिरोध कबहुँ कर प्रीती ॥
यह लखि कोह आदिरिपुगनको । जीते प्रथम सोधि निज मनको ॥
चपलहुश्रिय तेहिसँग थिर कैसी । हेमरेख रावटि पर जैसी ॥
कायर काम शौर्य बिन रीती । नीति हीन बल जन्तुन रीती ॥
अस बिचारि नृप शीलनिकेता । कारज महँ दोउ धरे समेता ॥
धरे किरन समान बहु चारा । लहि नृप रवि सम तेज अपारा ॥
विमल सूर्य्य मंडल महँ ताके । गयो न कछु नृप के बिन ताके ॥
निसि दिन नीतिनियमअनुसारा । कीन्हे सकल भूप व्यापारा ॥
मंत्रि सङ्ग नित मंत्र बिचारी । कीन्हें काम गुप्त तेहि धारी ॥
वैरिन सँग सोइ चार लगाई । सोवतहू जाग्यो नरराई ॥
यदपि न ताहि शत्रु कर त्रासा । कीन्ह दुर्ग सोइ सेननिवासा ॥
सोवत सिंह गुहा के भीतर । तौ न ताहि कछु त्रास गजनकर ॥
नृप कल्यान हेत सब कर्मा । पके गुप्त ह्वै धानसधर्मा ॥
लही वृद्धि यहि विधि जगमाहीं । तऊ सो चल्यो कुमारग माहीं ॥
ज्यों बढ़ि सिंधुनदी मुख त्यागी । चलत न कबहुँ और मगलागी ॥
यद्यपि रही शक्ति असि ताकी । सकत दबाय विरक्ति प्रजा की ॥

तउँ मन उचित जानि सो राजा । कीन्ह न प्रजा बिगारन काजा ॥
लख्यो जो कारज बल अनुरूपा । तेही महँ लाग्यो सोइ भूपा ॥
धारत यद्पि सहाय समीरा । नहिं दवागि कहुँ ढूँढ़त नीरा ॥
नृप त्रिवर्ग कहँ समहिं बिचारा । अर्थ धर्म नहिं काम बिगारा ॥
भा न अर्थ अरु धर्म विरोधा । सबकहँसरिसलख्यो सोयोधा ॥
मित्र हीन उपकार न करहीं । बढ़े मित्र जन सदा विगरहीं ॥
अस जिय जानि मध्यबल वारे । राखे मित्र भूप निज सारे ॥
निज अरु रिपुबल बहुविधि देखी । जौ निज बल नृप लखा बिसेखी ॥
तौ रिपु पर नृप कीन्ह चढ़ाई । नतर रहे नृप नीति जनाई ॥
मानत नृप धन देखि अथोरा । अस विचारिनृप धनहिं बटोरा ॥
सोइ बादर कहँ चातक मानत । जब तेहि नीर भरा घन जानत ॥
नित सचेत निज काज सँभारत । रिपुगन के नृप काज बिगारत ॥
छिद्र बिलोकि शत्रुनृप मारे । अवगुन लखि निजछिद्र सुधारे ॥
पितुपोखे नृपदल के बोरा । धारे अस्त्रज्ञान युधि धीरा ॥
राख्यो ता हित मरन बिचारा । देत प्रान नहिं लावत बारा ॥
तासु शक्ति अहिरत्न समाना । लेइ शत्रु अस को बलवाना ? ॥
शत्रुशक्ति खींचत सो कैसा । खींचत चुम्बक लोहहिं जैसा ॥
गिरिकी नदी बापिका जानी । उपवन सरिस गहन बन मानी ॥
निज घर सम गिरिखोह मँझारी । बिचरे तबहिं पथिक ब्यौपारी ॥
तपहित भूपति विघ्न दुरावा । चोर हाथ सन धनहिं बचावा ॥
करत वर्ण आश्रम रखवारी । भए सो छठे अंस अधिकारी ॥
धान खेत सन रत्न खान सन । बन सेन उपजावत बहु बारन ॥
महि सन निज रक्षा अनुरूपा । लह्यो जोग बेतन सो भूपा ॥
बल अरु गुनन काज अनुसारा । सो जानत साधन व्यवहारा ॥
यहि विधि सो नृपनीति चलावत । सिद्धि अविघ्न मंत्र सन पावत ॥
जानत कपट युद्ध नरपाला । धर्म युद्ध कीन्हों सब काला ॥

तासु निकट आवतनित जयश्रिय । ज्यों प्रीतम ढिगजात चपलतिय ॥
यदपि न सुलभ समर नृपसंगा । निरखि प्रताप होत रिपु भंगा ॥
मत्तनाग मदगन्धहिं पाई । ज्यों भागत गज और डेराई ॥
बाढ़ै घटै सदा बारीसा । पै सो एक सम रह्यो महीसा ॥
तासु निकट विद्वान प्रवीना । रहे जात यद्यपि अति छीना ॥
भए धनी जिमि बारिधि पाहीं । बादर सदा जात भरि जाहीं ॥
नृप लजात गुन बरनत देखी । बढ़त तासु जस तदपि बिसेखी ॥
दरसन सन जन पाप दुरावत । धर्म अर्थ सन तमहिं नसावत ॥
ससिकर नहिं कमलन महँ जाहीं । कुमुद माहिं रविकर गति नाहीं ॥
पै नरेस गुनग्राम सुहावा । बैरिनहूँ चित अन्तर पावा ॥
कीन्हें यदपि न्याय विपरीते । हय मख करन हेत नृप जीते ॥
तऊ सो रह्यो धर्म अनुकूला । धर्महि रह्यो काज कर मूला ॥
यहि बिधि चलत शास्त्र मगराऊ । प्रगटावत निज प्रबल प्रभाऊ ॥
देवन हित सुरेस की नाईं । रह्यो भूप राजनकर साईं ॥
बुधजन तासु धर्म सम देखा । पंचम लोकपाल तेहि लेखा ॥
भूतन माहिं छठा तेहि माना । अचलन महँ तेहि अष्टम जाना ॥
नृपअज्ञा सिर छत्र हटाई । धरी सीस पर जग नरराई ॥
मखमहँइमि धनविप्रन दीन्हा । निज अरु धनदनाम इक कीन्हा ॥

जलवृष्टि कीन्ही इन्द्र यम नित रोकरोगप्रसार को ।
जलराह राखत कुसल वरुण बढ़ाय नित व्यापार को ॥
धन वृद्धि नित धननाथ कीन्ही सुमिरि गुन रघुराम के ।
आये सरन सब लोक पालहु अतिथिनृप गुनधाम के ॥

अठारहवाँ सर्ग

बंसावली

अतिथिसँयोग तासु प्रियरानी। निषधराज तनया गुनखानी ॥
निषधपहार सरिस बलवाना। जन्यो निषधसुत तेज महाना ॥
रच्छत पालत प्रजा समाजा। करत पुत्र कहँ नृप युवराजा ॥
भयो मुदित सोइ ज्यों नरलोका। भरी शालिलहि होत बिशोका ॥
शब्दादिक सुख लहि बहुकाला। राज देइ तेहि सो नरपाला ॥
कर्मन पाय तासु अधिकारा। अतिथि भूप सुरलोक सिधारा ॥
सागर सरिस धीर चित धारी। ह्वै महि एकछत्र अधिकारी ॥
पुर अर्गल सम दीरघ बाहू। भोगी धरनि निषध नरनाहू ॥
तेज अनल सम पूरन कामा। ता सुत ता पाछे नल नामा ॥
भा नृप तिन रिपुदल इमिमर्दा। रौंदत जिमि बनगज मनगर्दा ॥
नभ सम श्याम पुत्र सो पावा। नभ महँ देव जासु जस गावा ॥
नभो मास सम प्रजा पियारा। रह्यो तासु नभ नाम उदारा ॥
जानि समर्थ ताहि नरराऊ। दीन्ह राज तेहि देखि प्रभाऊ ॥
करन हेत भवबन्धन भंगा। लीन्हो जाय मृगनकर संगा ॥
जायो पुण्डरीक सुत सोई। गजकुलपुण्डरीक सम जोई ॥
पितु पीछे जेहि श्रिय अनुरागी। त्रिभुवनपति समान अँग लागी ॥
तासुत क्षेमधन्व पुनि भयऊ। प्रजाछेम करि जिन जस लयऊ ॥
ह्वै नृप बृद्ध राज तेहि दीन्हा। वन महँ जाय घोर तप कीन्हा ॥
देवअनीक पुत्र सो लहेऊ। स्वर्गहु विदित जासु जस रहेऊ ॥
सुर सँग असुर लरन जब लागे। तब सो भूप चल्यो सुर आगे ॥
सुत सन लहि नित आदरपूजा। निजसमान पितु लख्यो न दूजा ॥
पितु सनेह निज पर सुत देखी। मान्योनिजहिं सो धन्य बिसेखी ॥

बहु दिन लगि महिभार सँभारी । निज समाननिज सुतहिं निहारी ॥
सुत पर डारि सो करि मखनाना । स्वर्गलोक दिशि कीन्ह पयाना ॥
ता सुत मीठी बोल सुनाई । बैरिनहूँ चित लीन्ह लुभाई ॥
भड़के मृगहु मिठास दिखावत । ज्यों फिरिमनुजपासचलिआवत ॥
नाम अहीनगु बुधिबल पूरा । भोगी धरनि निकट अरु दूरा ॥
युवहु न व्यसन चित्त जो लावा । हीन साथ नहिं तेहि कछु भावा ॥
मानहुँ आदि पुरुष अवतारा । पितु पाछे रविवंशकुमारा ॥
नृप गुन साम आदि के साथा । भयो सो चारि दिसाकर नाथा ॥
क्रम सन तिन सब रिपु संहारे । पुनि जब नृप परलोक सिधारे ॥
गिरि सम ऊँच जासु रह सीसा । भयो सो पारिपात्र अवनीसा ॥
शिला सरिस उर धरतविशाला । शिला नाम बैरिन कर काला ॥
शीलवान जो लाज जनावत । जब जन सौंह तासु गुनगावत ॥
करि बुधिमान सुतहि युवराजा । सुख कछु लह्यो प्रजा के काजा ॥
भयो सो तृप्त करत नित भोगा । तउँ तेहि जानि भोग के योगा ॥
झूठो लालच मानि बुढ़ापा । धस्यो आयु नृप अतुल प्रतापा ॥
जनप्रसिद्ध उन्नाभ शिलासुत । सुन्दर रह्यो सो नीतिवानियुत ॥
भयो सो भूपतिचक्र प्रधाना । कमलनाभ सम तेज महाना ॥
वज्रनाभ पुनि मनहुँ सुरेसा । पितु पाछे भा अवधनरेसा ॥
मनि अमोल उपजावत जोई । भोगी धरनि वीर नृप सोई ॥
जब नरेस निज पुण्य प्रभावा । स्वर्गलोक उत्तम पद पावा ॥
दै खानन सन रत्न सुबरना । सेयो महि शंखण के चरना ॥
ता पाछे अश्विनि सम रूपा । भा हरिदश्व तासु सुत भूपा ॥
तिन करि शंभुचरन सेवकाई । निज मूरति निज सुत महँ पाई ॥
नाम विश्वसह निजकुलनायक । त्रिभुवन भार सँभारन लायक ॥
विष्णु अंशयुत रह सुत ताके । नाम हिरण्य अतुल बल जाके ॥
वृत्त समान शत्रु निज सारे । निज कृसानु सम ह्वै सब जारे ॥

ह्वै पितरन सन उरिन महीपति । चहत अनन्त अनन्दसहितगति ॥
करि पिछले पन सुत नरपाला । पहिरो भूप वृत्त की छाला ॥
विधिवत करत यज्ञ बहुतेरे । सो रविकुल भूषन नृप केरे ॥
रह्यो पुत्र कौसल्य सुनामा । रजनीपति समान अभिरामा ॥
ब्रह्म सभा लगि जस परकासी । लही सो जगकीरति अविनासी ॥
सुत ब्रह्मिष्ठहि भूप प्रवीना । करि नृप भयो ब्रह्म महँ लीना ॥
जब लगि रह्यो तासु अधिकारा । प्रजा सकल सुख लह्यो अपारा ॥
गुरु सेवन महँ प्रीति जनाए । गरुड़ध्वज समान छवि पाए ॥
पुत्र नाम सुत बारिजलोचन । नरपति लह्यो प्रजा दुख मोचन ॥
वंशप्रतिष्ठा नृप तेहि सन करि । इन्द्रसाथ की मन इच्छा धरि ॥
जीतत इन्द्रिय पुष्कर न्हाई । भूप देव पदवी सोइ पाई ॥
पौषीतिथि कहँ सुतगुनखानी । जायो पुष्य पुत्र की रानी ॥
बैठत पुष्य पिता सिंहासन । पुष्य उवत सम भए पुष्ट जन ॥
सो निज राज पुत्र कहँ देई । मुक्तिज्ञान जैमिनि सन लेई ॥
डरि भवसन करिकरि अभ्यासा । लह्यो मुक्तिपद परम हुलासा ॥
ता पीछे ध्रुव की उपमाके । भे ध्रुवसन्धि भूप सुत ताके ॥
निश्चय रही सन्धि रिपु संगा । जाके बचन प्रभाव अभंगा ॥
मृगलोचन सो करत अहेरा । नाहर हत्यो जीव तेहि केरा ॥
यद्पि तासु सुदर्शन छोटा । नव ससि सरिसरह्यो अतिछोटा ॥
सकल अमात्य एक मत होई । जानि बंस अवलम्बन सोई ॥
निरखि अनाथ अवध कर देसा । तेहि ताही बय कीन्ह नरेसा ॥
नव ससि सहितमनहुँ नभ मंडल । बाल मृगेन्द्र सहित ज्यों जंगल ॥
कमलकली सह मनहुँ तड़ागा । रघुकुल बाल भूप सह लागा ॥
सोह्यो पहिरत मुकुट कुमारू । पिता सरिस पावत अधिकारू ॥
सकल दिसा गजपाठ बराबर । चलत वायु ज्यों घेरत बादर ॥
चलत राजमारग चढ़ि हाथी । ताके बस्त्र सँभारत साथी ॥

पितु सम आदर करत बिसेखा । सो छ वर्ष नृप कहँ जन देखा ॥
यदपि बाल वयबस नृपकर तन । पूरि न सक्यो पिताकर आसन ॥
तपत स्वर्ण सम तासु प्रतापा । देह बढ़ाय सिंहासन ब्यापा ॥
कछु नीचे लटकत आसन के । छुइ नहिं सकत पीठ सुबरन के ॥
रंगि तासु पद सीस झुकाई । बन्द्यो जगप्रसिद्ध नरराई ॥
छोटहु रहत रत्न सुचि स्यामा । पावत महानील कर नामा ॥
त्यों बालकपन महँ तब वोही । महाराज पदवी अति सोही ॥
डोलत चँवर होत नित लोला । काक पक्ष दोऊ लगत कपोला ॥
तऊ नरेस जो बचन उचारा । सागर लगि सो गयो न टारा ॥
स्वर्ग सरिस चमकत निजमाथा । तिलक लगाय बाल नरनाथा ॥
करि रिपुतिय मुखतिलक बिहीना । नित बैरिनकर धन वल छीना ॥
सिरिस फूल सम मृदुल सरीरा । यदपि लहत भूषन सन पीरा ॥
धरनिधुरी सो तउँ अति भारी । लघु सम निज सामर्थ्य सँभारी ॥
जब लगि सो अक्षर की पाँती । सीखो बाल भूप भलि भाँती ॥
तब लगि पण्डित गन संजोगा । तिन सन दण्डनीतिफल भोगा ॥
सकी न उर पर पाय निवासा । करि नृप हृदय बढ़न की आसा ॥
छत्रछाँवछल अति लजाय श्रिय । भेंट्योजिमिशिशुपतिहिप्रौढ़तिय॥
लही यदपि युव उपमा नाहीं । नहिं धनुकेर चिन्ह तेहि माहीं ॥
छुए न रहे यदपि असि सोई । महिरक्षा कीन्ही भुज दोई ॥
लहे राजपद बीतत काला । भइ न एक नृपदेह बिशाला ॥
शौर्य आदि गुन कुल अनुसारा । क्रमसन लहे महीपति बारा ॥
बिनहिं दिये कछु गुरुन कलेसा । सीखी सब अति सहज नरेसा ॥
विद्या तीनि खानि की सारी । तीनवर्ग की साधन हारी ॥
मानहुँ पूर्व जन्म की जानी । फेरि नरेस चित्त महँ आनी ॥
देह खैंचि कछु सीस उठाए । तने शरीर पाँव फैलाए ॥
खैंचत कान लागि धनु डोरी । रही बालनप छबि नहिं थोरी ॥

करत पान जेहि चाव सन तरुनी लोचनभृङ्ग ।
कामवृत्तकर फूल जहँ जो व्यापत सब अङ्ग ॥
पल्लव जहँ अनुरागकर बँध्यो सो माल समान ।
सकल आभरनमूलबय जोबन लह्यो सुजान ॥
नृपशुद्ध सन्तति चाहत सेवक दूति अमित पठाय कै ।
चहुँओर की अति सुन्दरी नृपसुताचित्र मँगाय कै ॥
तिन बीच लखि कछु रूप गुनयुत भूपसँग ब्याही गईं ।
श्रिय धरनि पहिलेहि सन रहत सो सवति अब तिनकी भईं ॥

उन्नीसवाँ सर्ग

अग्निवर्ण

निज सुत अग्निवर्ण कहँ राजा । सौंपि प्रजापालनकर काजा ॥
भए वृद्ध लहि ज्ञान प्रकासा । कीन्ह जाय नैमिष महँ बासा ॥
लहि तीरथजल कूप बिसारा । कुसलहि फिरिनतल्प चितधारा ॥
महलन भूलि कुटी बसि राऊ । कीन्ह मुक्तिफल लहन उपाऊ ॥
तासुत कहँ शासत निज देसा । भयो न तेहिछन नेक कलेसा ॥
भुजबल मारि सकल रिपु लोगा । कीन्हो धरनि भोग के जोगा ॥
दई तासु पितु जिमि कोउ बारी । भोगन के हित रची सँवारी ॥
सो दिन कछुक बंसकर धर्मा । कीन्हें आप राज के कर्मा ॥
पुनि सबकाज सचिव सिर डारी । रह्यो महल महँ नीति बिसारी ॥
रहा नित्य युवतिन के संगा । बजत तासु घर सदा मृदंगा ॥

भए नित्यप्रति उत्सव नाना। बढ़ी ऋद्धि नृप के अस्थाना॥
करत विहार भूप निसि बासर। भयो न कबहुँ प्रजादृगगोचर॥
करन हेत मंत्रिनकर माना। दरसन देव उचित जब जाना॥
तौ खिरकी सन चरन बढ़ाई। दीन्हो निज दरसन नरराई॥
परत किरन जिमि भए प्रभाता। ज्यों सोहत बिकसत जलजाता॥
त्यों नख रंगरँगेपद कहँ तब। कीन्ह प्रनाम तासु सेवक सब॥
ताल अनेक भूप बनवाये। तिन महँ बिचबिच भवन सजाये॥
जोबन बस उभरे उरवारी। जाके कंज हिलावत नारी॥
तिन महँ नितप्रति कोसलस्वामी। करत विहार तियन सँग कामी॥
धोए तासु करत तहँ मंजन। ओंठनरंग दृगन सन अंजन॥
सहजहिं सुन्दर बदन दिखावत। तेहि औरहु तिय सकल लुभावत॥
पान भूमि बैठो नरनाहा। पियत तियनसँग सहित उछाहा॥
खिले कमलबन महँ ज्यों नागा। सो बैठत करिनिन सँगलागा॥
बकुल समान धरे अभिलाखा। तियमुख जूँठ नरेसहु चाखा॥
बैठन उचित मनुज अँग जासू। तजै न भूप अंक सो तासू॥
बीन मुखन सन नित मोहतहिय। बोलत मधुर मधुर सुन्दर तिय॥
नाचत गनिकन चूक बतावत। चतुर आपही ढोल बजावत॥
चाहत नित नव भोग बिलासा। तेहि तिय सकलप्रछन्नप्रकासा॥
यद्यपि भोग नित्य प्रति दीन्हा। तऊ न नृपहिं तृप्त तिन कीन्हा॥
भृकुटिकुटिलकरि आँखिदिखावत। अँगुरी सन भूपहि डरवावत॥
करधनि सन बाँधत तेहि नारी। तेहि छल करि कहुँ जातबिचारी॥
"हरु दुखमोर भूप कहँ आनी"। यहि बिधि कहत दूति सन बानी॥
पीछे बैठि दूति के जानत। सुनितियमुखसननृपसुखमानत॥
रानिन सँग नित करत बिहारा। भा न तृप्त रघुबंसकुमारा॥
चह्यो करन गनिकन सँग भोगा। सुलभ न सो रानिनसंजोगा॥
नित निज घर महँ उत्सव ठानी। बिहरीं तासु संग बहु रानी॥

अधिक प्रेम सौतिन संग देखो। रहत तासु मन वैर विसेखो ॥
जात खंडितन पास सबेरे। किय प्रसन्न छल करि बहुतेरे ॥
सौति संग तेहि सपन निहारो। झिरक्यो तेहि बोले बिन नारी ॥
करि नित भूषनहीन सरीरा। सेज भिगोइ डारि दृगनीरा ॥
रानिन के डर काँपत भूपा। रचि उपवन महँ गेह अनूपा ॥
जाय जाय तहँ दूतिन साथा। दासिन संग रम्यो नरनाथा ॥
"पाय भूपप्रियकर हम नामा। भई यदपि सब पूरनकामा ॥
तऊँ अकार तासु मन चाहहि"। अस नित कह्यो अवधपुरनाहहिं ॥
निज कर तियपद रंगलगावत। परम अनन्द भूप नित पावत ॥
मित्रकाज मिस करि जब बाला। रोकि न सको चलत नरपाला ॥
"हम जानत सठ भागन कारन"। अस कहि धस्यो ताहिसिरबारन ॥
निसिमहँ गुप्त फिरत नित जानी। दूतिनमुख नरपति की रानी ॥
"कहाँ जात भजि के तजि नेहा"। अस कहि गई लेइ निजगेहा ॥
तरुनिपरस ससिकर सम लागत। सारी रैन भूप सो जागत ॥
करि दिनभरि सो सैन नरेसा। रह्यो स्वभाव मनहुँ राकेसा ॥
नखछत उर धरि बीन बजावत। कटे ओंठ तउ वेनु सुनावत ॥
कुटिल नयन सन भूपहिं देखी। गनकिन चाह्यो नृपहिं विसेखी ॥
दर्पन माहिं इन्द्र सम रूपा। लखि तिमि भयो सुखीनहिंभूपा ॥
ज्यों लखि भोग चिन्ह निज देहा। अग्निवर्ण सुख लह्यो अछेहा ॥
गनिकननाच मित्रके साथा। देख्यो बहु बिधि कोसलनाथा ॥
नाट्यगुरुन के सँग बहुबारा। कीन्ही नाट्यज्ञान तकरारा ॥
अर्जुन कुटुजमाल अँग धारे। मले कदमरज अंग सँवारे ॥
पावस महँ नाचत जब मोरा। फिरत विहारगिरिन की ओरा ॥
सोवत दिए पीठ करि माना। ताहि मनावन जोग न जाना ॥
सुनि घन धुनि आपहिं घबराई। बधू भूपभुज भीतर आई ॥
विमल अटन रचि रुचिर बिताना। कातिक रैन नरेस सुजाना ॥

छूटत मेघ जोति सुचि पावत । लहिसोजोन्ह निजश्रमहिंमिटावत॥
बालु नितंब सरिस उठि राजत । नदत हंस ज्यों किंकिन बाजत ॥
प्रिया सरिस धारे जनु भेखा । सरजुहि नृप खिरकिन सन देखा ॥
बासे अगुरु धूप सन चीरा । सरसरात निज धरे सरीरा ॥
झलकत हुन करधनी दिखावत । सिसिररैन तेहि तरुनि लुभावत ॥
मानहुँ वन्द अटान सुहाये । दीपनयन सँग टकी लगाये ॥
साखी सम तिय संग बिहारा । सिसिररैन जनुनित्य निहारा ॥
दक्खिन दिशि सन चलत बयारी । खिलत आम के बौर निहारी ॥
दुसह बिरह बस ह्वै व्याकुल मन । लगी आप तेहि तरुनि मनावन ॥
झूलत नृप के संग हिंडोरे । दै आपहि सोइ ताहिं झकोरे ॥
करसन डोर तरुनि तहँ त्यागत । डरके मिस नृपके गर लागत ॥
उर पर चन्दन गन्ध लगाई । मनि करिधनि कटितट लटकाई ॥
मोतिन सन सब अंग सँवारी । ग्रीष्मऋतु तेहि सेवत नारी ॥
पाटल बौर लसत नरनाहू । पियो जो मद सोइसहित उछाहू ॥
गए बसन्त छीन जो लागा । सो मनोज नृपके तन जागा ॥
यहिबिधि सो बिसारि सबकाजा । करत भोग इन्द्रिय सुखराजा ॥
निज अँग चिन्हन भेद जनावत । परो काम बस ऋतुन बितावत ॥
रह्यो मत्त यद्यपि नृप सोई । सक्यो न चढ़ि तेहि पर रिपुकोई ॥
छईरोग डूबत रतिरागा । दत्तसाप सम चन्द्रहि लागा ॥
यद्यपि रोग ऊपजत जानत । तऊँ वैद्यकी बात न मानत ॥
बूड़त मन जब बिषयन माहीं । ताहि उबारि सकै कोउनाहीं ॥
पीयर बदन धीम अति बोलत । पकरिं दासकर नरपति डोलत ॥
भूषन कछुक धरे कृश अंगा । तुले सो कामिदसाके संगा ॥
गलन लग्यो छय बस जब राऊ । बिधि औषध सन सरो नकाऊ ॥
भा रघुकुल दीपककी भाँती । बुझत बरत धीमहि जब बाती ॥
कीच सहित ज्यों ताल झुराना । चन्द्रकला सह गगन समाना ॥

"पुत्र जन्मके हित नरपाला। साधत व्रत कठोर यहि काला" ॥
लखि नृप छबि जबत्रासजनावत। यहकहि सवन मंत्रि समुझावत ॥
रहत अनेक तियन के साथा। तऊँ न लखि सन्तति नरनाथा ॥
चलत वायु दीपक सम होई। बचे न कठिन रोग सन सोई ॥
चतुर पुरोहित तुरत बुलाई। महलबाग मन्त्रिन तेहि लाई ॥
रोग शान्ति मिस गूढ़हि ताकी। कीन्ही बिधिसब मृतकक्रियाकी ॥
दिन दूजे सब प्रजा हँकारी। नाथहीन निज देस बिचारी ॥
तेहि मह गर्भ सुलच्छन चीन्ही। सबन राजश्रियरानिहिं दीन्हीं ॥

स्वामि मरनके सोक बस गिरे जो दृग सन नीर।
पहिले कोमल गर्भ कर भयो जो गरम सरीर ॥
कीन्हो सीतल ताहि जन हेम घटन सन डारि।
कुल पवित्र अभिषेक हित पावन तीरथबारि ॥
ज्यों लगत सावन मास धारत धरनि गूढ़हि धानकों।
सुभ गर्भ धारत पेट सोइ निज लोग के कल्यान कों ॥
सुबरन सिंहासन बैठि बूढ़े मंत्रि संग नय अनुसरी।
पतिराज पालत रानि कों नहिं लोक में अज्ञा टरी ॥

इति श्री अवधवासी भूपउपनाम सीतारामकृत
रघुवंशभाषा काव्य समाप्त हुआ।

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.

छूटत मेघ जोति सुचि पावत। लहिसोजोन्ह निजश्रमहिंमिटावत॥
बालु नितंब सरिस उठि राजत। नदत हंस ज्यों किंकिन बाजत॥
प्रिया सरिस धारे जनु भेखा। सरजुहि नृप खिरकिन सन देखा॥
बासे अगुरु धूप सन चीरा। सरसरात निज धरे सरीरा॥
झलकत डुन करधनी दिखावत। सिसिररैन तेहि तरुनि लुभावत॥
मानहुं वन्द अटान सुहाये। दीपनयन सँग टकी लगाये॥
साखी सम तिय संग बिहारा। सिसिररैन जनुनित्य निहारा॥
दक्खिन दिशि सन चलत बयारी। खिलत आम के बौर निहारी॥
दुसह बिरह बस ह्वै व्याकुल मन। लगी आप तेहि तरुनि मनावन॥
झूलत नृप के संग हिंडोरे। दै आपहि सोइ ताहिं झकोरे॥
करसन डोर तरुनि तहँ त्यागत। डरके मिस नृपके गर लागत॥
उर पर चन्दन गन्ध लगाई। मनि करिधनि कटितट लटकाई॥
मोतिन सन सब अंग सँवारी। ग्रीष्मऋतु तेहि सेवत नारी॥
पाटल बौर लसत नरनाहू। पियो जो मद सोइसहित उछाहू॥
गए बसन्त छीन जो लागा। सो मनोज नृपके तन जागा॥
यहिबिधि सो बिसारि सबकाजा। करत भोग इन्द्रिय सुखराजा॥
निज अँग चिन्हन भेद जनावत। परो काम बस ऋतुन बितावत॥
रह्यो मत्त यद्यपि नृप सोई। सक्यो न चढ़ि तेहि पर रिपुकोई॥
छईरोग डूबत रतिरागा। दत्तसाप सम चन्द्रहि लागा॥
यद्यपि रोग ऊपजत जानत। तऊँ वैद्यकी बात न मानत॥
बूड़त मन जब विषयन माहीं। ताहि उबारि सकै कोउनाहीं॥
पीयर बदन धीम अति बोलत। पकरि दासकर नरपति डोलत॥
भूषन कछुक धरे कृश अंगा। तुले सो कामिदसाके संगा॥
गलन लग्यो छय बस जब राऊ। बिधि औषध सन सलो नकाऊ॥
भा रघुकुल दीपककी भाँती। बुझत बरत धीमहि जब बाती॥
कीच सहित ज्यों ताल झुराना। चन्द्रकला सह गगन समाना॥

"पुत्र जन्मके हित नरपाला। साधत व्रत कठोर यहि काला" ॥
लखि नृप छबि जबत्रासजनावत। यहकहि सवन मंत्रि समुझावत ॥
रहत अनेक तियन के साथा। तऊँ न लखि सन्तति नरनाथा ॥
चलत वायु दीपक सम होई। बचे न कठिन रोग सन सोई ॥
चतुर पुरोहित तुरत बुलाई। महलबाग मन्त्रिन तेहि लाई ॥
रोग शान्ति मिस गूढ़हि ताकी। कीन्ही बिधिसब मृतकक्रियाकी ॥
दिन दूजे सब प्रजा हँकारी। नाथहीन निज देस बिचारी ॥
तेहि मह गर्भ सुलच्छन चीन्ही। सवन राजश्रियरानिहिं दीन्हीं ॥

स्वामि मरनके सोक वस गिरे जो दृग सन नीर।
पहिले कोमल गर्भ कर भयो जो गरम सरीर ॥
कीन्हो सीतल ताहि जन हेम घटन सन डारि।
कुल पवित्र अभिषेक हित पावन तीरथवारि ॥
ज्यों लगत सावन मास धारत धरनि गूढ़हि धानकों।
सुभ गर्भ धारत पेट सोइ निज लोग के कल्यान कों ॥
सुबरन सिंहासन वैठि बूढ़े मंत्रि संग नय अनुसरी।
पतिराज पालत रानि कों नहिं लोक में अज्ञा टरी ॥

इति श्री अवधवासी भूपउपनाम सीतारामकृत
रघुवंशभाषा काव्य समाप्त हुआ।

Printed by Ramzan Ali Shah at the National Press, Allahabad.
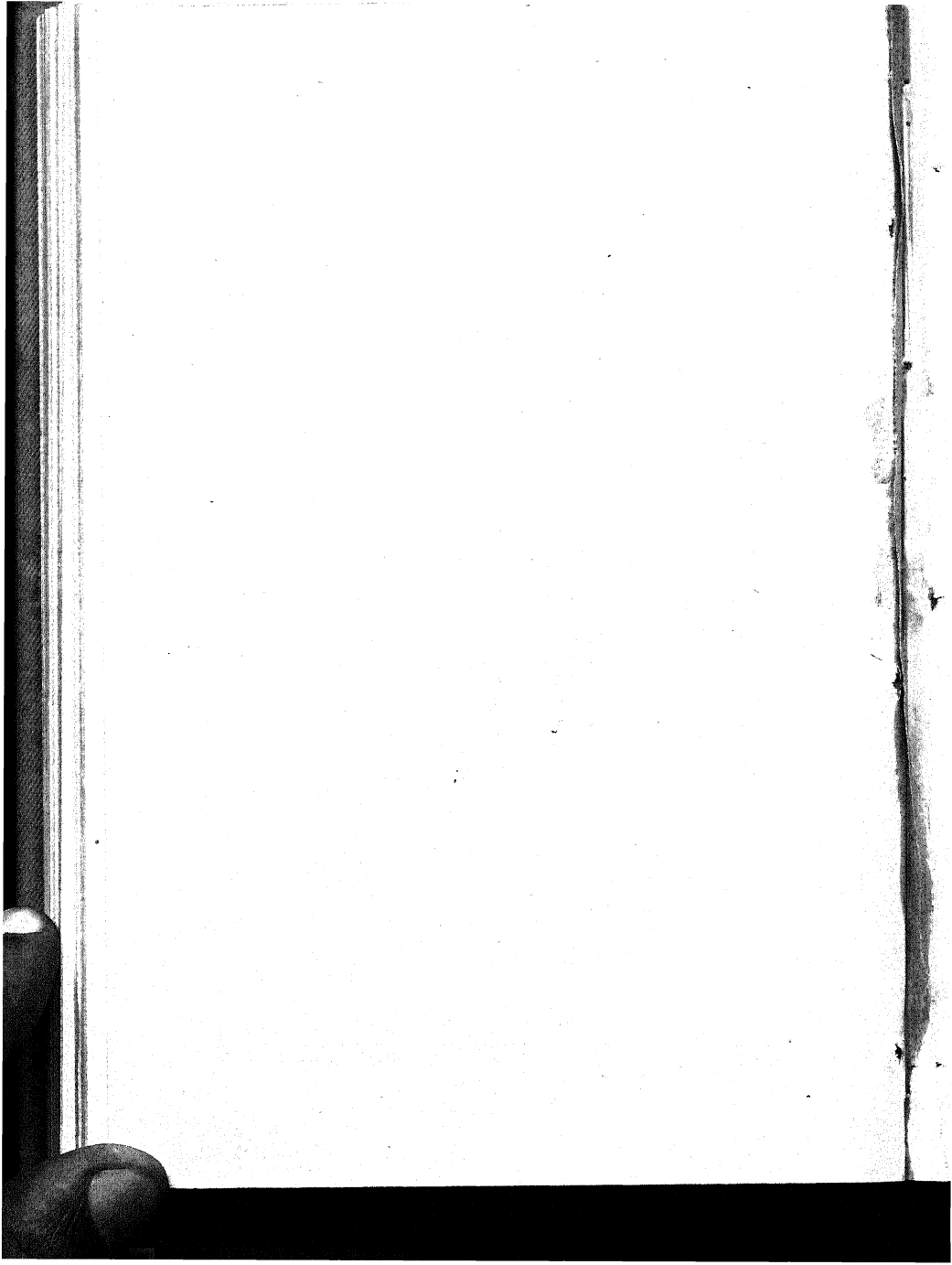
Sitaram's Hindi Kalidasa Meghaduta.

मेघदूत भाषा

महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध ग्रन्थ का
भाषा छन्दों में अनुवाद

श्रीअवधवासीभूपउपनाम

लाला सीताराम, बी. ए.

रचित

प्रकाशक

नेशनल प्रेस, प्रयाग

सन् १९२३ ई०

मूल्य ≡)

First Edition 1883
Second Edition 1892
Third Edition 1914
Fourth Edition 1917
Fifth Edition 1923

तीसरी आवृत्ति की भूमिका

अवधपुरी सुखमाअवधि, तामधि स्वर्गद्वारि ।
जगपावनि सरजू जहाँ, बहत सुहावन वारि ॥
तहाँ रह्यो कायस्थ एक, श्रीशिवरत्न उदार ।
श्रीरघुपतिपदकमल महँ, ताकी भक्ति अपार ॥
सियरघुबरयुगचरनरत, तासुत सीताराम ।
राशिनाम कवितासुगम, धरत भूप उपनाम ॥
वाणी सम नरतन धरे, कालिदास कविराय ।
रह्यो आनहूँ देस में, जासु बिमल जस छाय ॥
लखे जाहि रवि सम गनिय, जगके कबि खद्योत ।
जाकी रचनाजोन्ह ढिग, जगकबिता तम होत ॥
ताके नाटक काव्यकर, सियवरचरन प्रसाद ।
भाषाछन्दन महँ रचे, यथाशक्ति अनुवाद ॥
मेघदूत इक काव्य है, तिन महँ रत्न समान ।
अवधि करी तहँ प्रेम की, बरनो तहँ विज्ञान ॥
शोधि तीसरी बार तेहि, कछु टिप्पणी समेत ।
करत प्रकास प्रयाग बसि, रसिकन के मुदहेत ॥

प्रयाग
कार्त्तिक सुदी १५
सम्बत् १९७१

सीताराम

work which "will bear advantageous comparison with the best specimens of uniform verse in the poetry of any language living or dead" has in its rendering a different metre. To make the work popular, I have selected the Kabitta* metre and tried to express the sense of the author as simply as possible.

Should these attempts awaken an interest in the study of our ancient literature, I shall deem my labours amply rewarded.

FYZABAD HIGH SCHOOL:
18th December, 1892.

---

* Technically called *Ghanakshari*.

॥ श्री सीतारामाभ्यान्नमः ॥

मेघदूत भाषा

कैलाशनाथ श्रीकुबेर ने अपने सेवक एक यक्ष को काम में भूल करने के लिये बरस दिनका बनवास दिया। वह मध्यदेश के वन में रहता है। यहाँ वह बरसात लगते एक बादल को देखता है और उसे अपनी प्रिया के पास सन्देसा बताकर भेजता है। पहले राह बताता है, पीछे नगर और घर का पता देता है, फिर अपनी प्रिया का रूप, और उसकी दशा जनाता है और सन्देसा सुना कर बिदा करता है ॥

पूर्वमेघ

श्रीकुबेर वर्षबनबास साप दीन्ह एक
यत्तहि बिलोकि तासु भूल अधिकार में।
जोति समरथहीन होय डूब यत्त सोइ
भामिनिबियोग दुःखसागर अपार में।
सीत साखिछाँह माँझ पुण्य घाटतीर, भूप
सीताजी महारानी नहानी जासु धार में।
बास कीन्ह आय पर्नमन्दिर बनाइ सोइ
यत्त रामगिरिनाम पावन पहार में ॥ १ ॥
बिरह बिकल कछु मास को बितायो तहँ
करत निवास सोइ शुभ्र गिरिवर में।
सोच बस तासु अति दूबर सरीर भयो
जातरूपकंकन रुको है नाहि कर में।

देख्यो एक सौंहही असाढ़ के प्रथम दिन
साँवरबरन मेघ लसत शिखर में।
करत प्रहार जनु मत्त गजराज कोउ
दाँत सन, भूप, पुरिभीति के कगर में ॥ २ ॥
ठाढ़ होय देखत पयोद सौंह एक टक
होत अभिलाष ताहि मेघहि निहारि कै।
श्रीकुबेरकिङ्कर बिचार कीन्ह काल कछु
धीरज समेत आँखि बीच आँसु धारि कै।
अचरज नाहिं यह छोभ होत तासु मन
बैठ जो अनंद सन कंठ बाँहँ डारि कै।
प्रिया से वियुक्त बिरहाकुल न, भूप, कहुँ
बैठत बिलोकि मेघ चित्तहि सँभारि कै ॥ ३ ॥
सावन सुहावन समीप जब मेघ उठि
कछु बेर रुक्यो है अकाश बीच आय कै।
प्रियाधीरधारनउपाय चेत कीन्ह, मेघ-
हाथ निज कुसलसँदेसहि पठाय कै।
चित्त में प्रसन्न होय मेघसतकार हेत
भेंट दीन्ह ताहि फूल कुटुज उठाय कै।
आदर करत तासु, भूप, प्रिय बन्धु सम
पूँछत कुसलछेम ताहि माथ नाय कै ॥ ४ ॥
पाय रवितेज जलभाप उठि वायु पर
सीत होय श्यामरंग बादर बनत है।
चेतनाविहीन जलवस्तु कहु मेघ कब
बंधु सन प्रानिन सँदेसहि कहत है।
बिनय करत ताहि यत्त सो सुजोग जानि,
भूप, हिय जासु विरहानल बरत है।

चेतन अचेतनहि छेड़िकै सदैव दीन
होय निज पोरहि बटावन चहत है ॥ ५ ॥

"आवरत और पुषकर* कुल जन्म पाय
बंस में त्रिलोक बीच, नीरद, प्रधान हो ।
करत विशेष देव इन्द्र मान तोर, नित्य
धारहु प्रयास बिन बन्धु रूप आन हो ।
कर्म के प्रभाव मेघ प्रिया से वियुक्त, दीन
जाचक बिचारि मोहि नेक दयावान हो ।
मान वा न मान, भूप, उत्तम की नाहिँ भली
काजसिद्धि नाहिन जु नीच को प्रमान हो ॥ ६ ॥

"छूटत अनेक ताप आपके प्रताप जब
आवत दुखित जन रावरी सरन में ।
धनपतिक्रोध बस जरहुँ वियोग आगि,
जाहु मम प्रिया पै सँदेस जोहि मन में ।
रहै मम नारि जहँ बसत धनेस, भूप,
पुर अलका है सिरताज नगरन में ।
होत घर घर जहँ चन्द को प्रकास
जब शंभु बिचरत चहुँ ओर उपवन में ॥ ७ ॥

"तोहि नभ बीच मेघ वायु सँग जात देखि
आनन उठाय लट हाथन पकरि कै ।
देखत तरुनि जासु पीतम बिदेस बसैं
संगम समीप जानि ऊर्द्धसाँस भरि कै ।
पावसके बीच मेघ कौन सो रसिक घर
आवत न जैान निज तियहि सुमिरि कै ? ।

---

* मेघों की दो जातियाँ ।

होय मन्दभाग्य यदि मो सम न भूप, जाहि
बैर करि बाँधत निठुर दैव धरिकै ॥ ८ ॥
"पंथ अनुकूल चलि सुन्दर पवन, मेघ,
तोहि नभ बीच मन्द मन्द ही बहाय है।
बैठि एक ओर तब चातक सगर्व गाय
मधुर मधुर निज बानिन सुनाय है।
मीतउपकारहेतु जात तोहि जानि तहँ,
भूप, पद पद पर सगुन लखाय है।
कामकेलि समय बिचारि बकयूथ मिलि
मंडल बनाय, मेघ तेरे सँग जाय है ॥ ९ ॥
"देखिहै। अवश्य मम नारि निज भाभि तहँ,
मेघ, सोइ पतिव्रतपथ बिचरत है।
गिनत अवधिदिन सुमिरि सुमिरि पिय-
मिलनभरोस करि प्रानहि धरत है।
कुसुम समान हिय, भूप, तरुनिनकर
नेकहू कलेस जोपैं पाय विदरत है।
होयकै कठोर पर आसहीके खंभ धरि
पीतमवियोग माँहि, मेघ, ठहरत है ॥ १० ॥
"भूमिफोरअंकुर अनेक महि माँझ होत
तउँ वृष्टि बीच गर्ज सुनत लखायहैं।
राजहंस, भूप, सोइ नीरद मधुर धुनि
सुनत मुदितमन मानस* को धाय हैं।
भोजन निमत्त तहँ मारग के बीच नव-
कोमल कमल तोरि अंकुर जुहायहैं।

---

* मानसरोवर ताल।

बसत पिनाकि जहँ सोइ गिरिराज* पर
मगन गगन बीच तेरे सँग जाय हैं ॥ ११ ॥
"भेंटहु, पयोद ताहि पूछहु कुसल सोइ
जगतविदित चित्रकूट को पहार है।
शिखर अकास लाग तासु मध्यभाग महँ
रामपदचिन्ह जाहि पूजत सँसार है।
देखहुँ, पयोद, तुम दोउन के प्रेम, जब
ग्रीषम बितत होत संगम तुम्हार है।
लाय लाय अँक निज नेहहि दिखाय तहँ
रोवहु बहत गर्म आँसुनकी धार है ॥ १२ ॥
"करत पयान प्रतिवर्ष वोहि राह तउँ
नगरडगर सुनु जेहि मग जाय कै।
करु मम काम, मेघ कहहु सँदेस जाहि
मारग के अन्त सुनु, मित्र, मन लाय कै।
पुर अति दूर बिसराम हेत, मेघ मित्र,
चलु गिरि पर बार बार सुसताय कै।
छीन जब होहु अति लागत पियास किमि
होहु थिर मधुर सरित जल पाय कै ॥ १३ ॥
"चकित चितौति अतिभोरि सिद्धनारि तोहि
सुन्दर सरूप तव, मेघ, जो लखात है
देखत उठाय दोउ लोचन कहत 'आलि,
देखु चित्रकूट को पहार उड़ो जात है।'
बार न लगाउ, मेघ, उत्तर दिशहि जाउ
छोड़ु याहि जौ पै इहाँ निचुल रसात है।

---

* कैलास।

श्यामरंग विपुल शरीर तव देखि, मग-
बीच, भूप, दिग्गजनगर्व टूटिजात है ॥ १४ ॥
"रतननजोतिसमुदाय सम एक ओर
इन्द्रधनु, मेघ, नभ बीच दसरत हैं।
देखहु पयोद निज सौंह सब लोग जाहि
जानत बिमौटबिल सन निसरत है।
ताहि पाय, भूप, सोइ सुन्दर अनूप छबि
मित्र, तव साँवरे सरीरहि मिलत है।
रुचिर मयूरपूँछपंख जब सीस पर
जनु गोपरूप चक्रपानि पहिनत है ॥ १५ ॥
"देखत डगर तोर जेठंही से खेतकाज
जासु धन धान एक वृष्टि के अधार है।
होयहैं अनन्दित बिलोकि मोरि गाँवनारि
जासु मन जानत न भृकुटिविकार है।
जाहु, मेघ, माल पर खेत कृषिहेत जहँ
खोदि खोदि सींचत सुगन्धित बयार है।
आगे बढ़ि, मेघ, चलु उत्तर दिशाहि तहँ
नेक फेर खाय, भूप, मारग तुम्हार है ॥ १६ ॥
"ग्रीषम व्यतीत होत आय आय अभ्रकूट* पर,
मेघ, तू बुझावत दवागि जलकन सों।
जानि उपकारक बिठायहहि सीस पर
समुझि श्रमित ताहि मारग चलन सों।
नीचहु सों नीच कृतकृत्य होय एक बार
आदर करत तासु तन मन धन सों।

---

* अमरकंटक पहाड़।

गोबध समान जासु नर्कहूँ ठिकान नाँहिँ
कृतघनपाप कब होइ सो बड़न सों ? ॥ १७ ॥

" पीतरङ्ग सुन्द रसाल* तहँ सैल पर
पाकि पाकि, मेघ, चहुँ ओर टपकत हैं ।
रुचिर शिखर पर नारिके चिकुर सम,
भूप, जब स्याम रङ्ग नीरद लसत हैं ।
देविन समेत विचरत नभ बीच तहँ,
मेघ मित्र, तासु छबि अमर लखत हैं ।
नीलरङ्ग गुम्बज अनूपम सहित चित्र-
कूटशृङ्ग भूकुच समान दरसत हैं ॥ १८ ॥

" नीर बरसाय निज भारहि उतारि अम्र-
कूट सों पधारि आउ वेग छिन एक महँ ।
बैठु कछु काल यहि कुञ्ज पर, मेघ, बन-
मानुसकुमारि आय लूटत अनन्द जहँ ।
विन्ध्यके पहार पाँव लागि बार बार, भूप,
देखहु चलत पथरन बीच रेवा† कहँ ।
रङ्ग रङ्ग चित्र जिमि मत्तगजअङ्ग पर
ऐसही अनूपम पहार छबि देत तहँ ॥ १९ ॥

मत्तगजकुम्भसन टपकि टपकि मद
नर्मदबिमलजल गन्धित करत है ।
बार बार रुकत, पयोद, तासु धार जब
जामुनकुञ्जन बीच बेग सों बहत है ।
भारको उतारि तासु नीर पाय पुष्ट होत
तोर गति रोकि कछु वायु न सकत है ।

---

* आम । † नर्मदा ।

हलुक सदैव बलहीन होत, भूप, बल-
वान कब मेघ निज ठाँव सों हिलत है ? ॥ २० ॥
"हरित कपिश रंग कदम बिलोकु, मेघ,
जासु मध्य भाग महँ केसर लसत है ।
नव जल बूँद पाय पातिनकी पाँति माँहि
कदलिनअँकुर रुचिर निसरत है ।
खाय ताहि सूँघि पुनि सुन्दर सुगन्ध जोइ
भूमि से उठत जब नीर परसत है ।
जानिहहिं सारँग अनेक बन बीच इन्ह
चीन्ह सन मेघ जेहि मारग चलत है ॥ २१ ॥
"मम प्रिय कारज करन हेत वायु सम
वेग धरि यद्यपि चलत, प्रिय जलधर ।
होयहै अवश्य मग बीच अति बेर, मीत,
रुकिहहु कुटुज* सुगन्धित पहार पर ।
जोर जोर बानिन सुनाय अगनित तहँ
स्वागत करहिं तव सुन्दर शिखण्डिवर ।
रोकन चहहिं तोहि नीर भरि नैन महँ
तदपि अवश्य ताहि छोड़न जतन कर ॥ २२ ॥
"उपवनछोर चहुँओर पीतरङ्ग होत
केतकीमुकुल सूचि फोरि जो फुलाय हैं ।
वृष्टिऋतुसमय बिचारि जूँठखानहार
काक तरुडार डार घोंसला बनाय हैं ।
भूप, तोहि निकट बिलोकि बनछोर तहँ
जामुन पकत श्यामरङ्ग छवि पाय हैं ।

---

* कुरैया ।

नीरद, दसारन निवास करि थोर दिन
राजहंस मानस समीप चलि जाय हैं ॥ २३ ॥
"जायहु दसारन* समीप तेहि पुर जाहि
लोक चहुँ ओर, भूप, बिदिस कहत है।
देशराजधानि तोहि जातहि जरूर जहँ
युवतिविहारफल पूरन मिलत हैं।
भृकुटिविलासछवि पावत बदन तासु
बेतवालहर जब वायुसों उठत हैं।
लेहु जल मधुर अधररस सम जब
तीर पर मेघ मन्द मन्द गरजत है ॥ २४ ॥
"करु विसराम छिन एक तहँ बैठि मेघ,
नीच नाम गिरि तब राहहीं परत है।
विकसित कदम दिखाय, भूप सैल तोहि
छुअत अनंद सन पुलकि उठत है।
तासु कन्दरन महँ गनिकनअंग सन
भीनि भीनि सुन्दर सुगन्ध निकसत है।
छिपि बिहरत नवयौवनके मत्त जहँ
लोक डर मानि तासु भेद प्रगटत है ॥ २५ ॥
"करु बिसाराम छिन एक तहँ, नीरधर,
बैठि सोइ सुन्दर पहार पर जाय कै।
सींचु उपवन महँ मागधीकुसुमकलि
सरित समीप जलकन बरसाय कै।
कुसुम चुनत सुकुमारि करु, भूप, तिन्हें
सीतल स्वछाँह सन सूरज छिपाय कै।

---

* मालवा के उत्तर का देश।

† भिलसा।

कमलकरनफूल जासु कुम्हिलात जब
　　पोंछत कपोलस्वेद आँचर उठाय कै ॥ २६ ॥
"उत्तर चलनहार पच्छिम फिरत तोहि
　　परहि अवश्य जोपै दूरी एक राह की।
मोरेहु न मुख, भूप, देखेहु जरूर राज-
　　धानि उज्जयनि विकरम नरनाह की।
दमकत दामिनि समान जहँ एक एक
　　सुन्दरिनयन कामिजीवनके गाहको।
होहु न प्रसन्न यदि, वञ्चित निजहि भानु
　　पावत सुयोग वस्तु लोचन के लाह की ॥ २७ ॥
"उठत तुरङ्ग देखि बोलत उमङ्ग महँ
　　हंसन की पाँति करधनि बनि जाय है।
बेग सों हटाय ताहि, भूप, निरविन्ध* तहँ
　　भँवर समान निज नाभिहि दिखाय है।
लेत रस तासु, मेघ, सरित समीप जाय
　　सङ्गममनोहर अनन्द तहँ पाय है।
कामके उमङ्ग महँ चतुर युवति इमि
　　सैनहि बुझाय निज चाहहि जनायहै ॥ २८ ॥
"सोइ सरि, मेघ, तव दुःसह वियोग परी
　　लट सम छीन निज धारहि बनाय कै।
अङ्गछबि पीयर परत तासु, भूप, जब
　　पात तीररूख सन गिरत झुराय कै।
करु सोइ जतन बिचारि जेहि भाँति तहँ
　　जानि तासु दुःख तव प्रीतिहि दिखाय कै।

---

* उज्जयिनी के पास एक नदी।

छूटत कलेस तासु फूलत अनन्द सन
दूबर शरीर तासु, मेघ, सुख पाय कै ॥ २६ ॥
"प्रथम अवन्ति जाय, मेघ, जहँ वृद्ध जन
जानहिं अनूप इतिहास उदयन को।
जायहु विशालपुर पावन नगर, जासु
पार न मिलत, भूप, अगनित धन को।
मेघ, स्वर्गवासि जब सुरपतिपुर बीच
पावत न फल निज पुण्य चरितन को।
लौटि आये भूमि ओर पुण्य के प्रताप निज
लेत दिव्य भाग जिमि सत्व स्वरगन को* ॥ ३० ॥
"जहि पाय सारस मिथुन तासु तीर, मेघ,
जोर जोर बानिन सुनावत अनङ्ग बस।
प्रातकाल चलि विकसित कमलन पर
होत सुरभित, भूप, पावत पराग रस।
चलि शिप्रा† ऊपर बयारि तहँ नीरधर,
तरुनिन भेंटि उपजावत अनन्द अस।
आलस उतारत, बढ़ावत उछाह, प्रिय-
प्यार सम लागत छुड़ाय असमंजस ॥ ३१ ॥
"निकसि झरोखन मिलत तोहि चूर्णगन्ध,
मेघ, जाहि सुन्दरि लगावत लटन में।
होयहु प्रसन्न जब देखि तोहि मोर तहँ
प्रीति सन नाच दिखराय है भवन में।
मारग चलन थकि होहु परिपुष्ट तहँ
रुकि कछु काल पुर ऊपर गगन में।

---

* क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।—भगवद्गीता।

† एक नदी जिसके तट पर उज्जयिनी बसी है।

भामिनिचरनरंगचिन्ह जहँ भूमि पर
लछमिहि देखु सोइ बासित घरन में ॥ ३२ ॥
आदर समेत गण देखिहैं अवश्य तोहि
नाथकंठजोति जानि श्यामरंग घन को।
जाहु जहँ मुक्तिफल मिलत दरस सन
त्रिभुवनपतिचंडिनाथके भवन को*
करत सुगंधित युवति गन्धवतिनीर
धोय जहँ चन्दनलसत निज तन को।
भूप, सरि ऊपर बयार चलि कंजरज
सहित हिलावत समीप उपवन को ॥ ३३ ॥
"महाकाल नाम तासु, नीरधर, सोइ धाम
साँझ छोडि और कोउ काल यदि जायहै।
जब लगि सूरज नयन ओटहोत, भूप,
मंदिर समीप रुकि यामहि बितायहै।
आरती को बेर तहँ त्रिभुवननाथ पास
गरजि गरजि, मेघ, दुन्दुभी बजाय है।
धन्य निज नादहि बखानु ईश पूजि जासु
मन्द मन्द गर्जितअखंडफल पाय है ॥ ३४ ॥
"पशुपतिसौंह सुकुमारि गनिकनयूथ
नाचत, पयोद, कटिघूँघुर बजाय कै।
दूखन लगत करकंज तिनकेर तहँ
रतनजटितदण्ड चौंरन हिलाय कै ॥
सीतल करहु सुकुमार तिनकेर पाँय
नव जलबूँदन, सुमेघ, बरसाय कै।

* उज्जयिनी में महाकाल का मन्दिर।

मधुकरपाँति सम दृष्टि सन, मित्र, तोहि
देखि हैं जरूर दोउ लोचन उठाय कै ॥ ३५ ॥
"महाकालनाथ तहँ नाचत उमंग महँ
साँझ कहँ नित्य गजचर्म अँग धारि कै।
पाय बनवृक्ष चहुँ ओर धारु बाहुछबि
गुड़हल छाँह सन कोरन सँवारि कै।
रूप धरु तासु, मेघ, देखि तोहि नाथ तहँ
धारि हैं जरूर नागचामहि बिसारि कै।
देखिहैं अनन्द सन भक्ति तोरि पारवती,
रूपभय छाँड़ि दोउ लोचन उघारि कै ॥ ३६ ॥
कामपीर आतुर अनेक पुरनारि तहँ
राति होत प्यारन के गेहन को जाय हैं।
काजल समान गाढ़ पावस को अन्धकार
प्रीतिके उमंग परी नेक न डेराय हैं।
दामिनि सुवर्ण सम मंजु चमकाय, मेघ,
मारग देखाउ देखु वेग ही सो धाय हैं।
गरज सुनाउ जनि नीर बरसाउ तहँ,
नारि सुकुमारि अति, भूप अकुलाय हैं ॥ ३७ ॥
"रैनहि बिताउ तहँ सोवत कपोत जहँ
बैठि, प्रिय घन, कोउ गुँबज भवन के।
देहु सुख, मेघ, प्रिय दामिनिहि नेक थकी
जानि श्रम सन बार बार बिलसन के।
काटु शेष मारग पधारि पुनि देखतहि
करन अनूप अन्धकारके दमन के* ।

* सूर्य ।

सज्जन पुरुष कोउ थकत न, भूप, जब
चलत करन प्रिय काज सुहृदन के ॥ ३८ ॥

"रैनहि बितावत निठुरपियसोच महँ
सुन्दरि अनेक तहँ आँसुन नहाय कै।
प्रातकाल पोंछत सजन ताहि आय
यहि हेतु चलु मित्र भानुमारग बराय कै।
आँसुन निबारत नलिनिमुखकंज सन
ओरही, पयोद भूप, सूरजहू आय कै।
होयहै अमित क्रोध ताहि, प्रिय मेघ, यदि
रोकेहु करन तासु राह बीच जाय कै ॥ ३९ ॥

"बहत गंभीर नाम सुन्दर सरित तहँ,
मेघ तासु नीर के समीप जब जाय हैं।
सुन्दर स्वभाव सन छाँहँ के समान अंग
तदपि अवश्य तोहि भूप कंठ लायहैं।
कुमुद सरिस अति उज्जल कटाक्ष जब
चंचल शफर सम तोहि दिखराय है।
रोकत यदपि करि चित्तहि कठोर, मेघ,
तदपि बिलोकि तोर धीर छूटि जाय है ॥ ४० ॥

"तट सम सुन्दर नितम्ब सन, मेघ तासु
नील रंग उदकबसन खसकत है।
ताहि तोर बेततरुडारन बनाय हाथ
सहित सकोच बार बार पकरत हैं।
सम्भव न जानु निज बेगहि पयान ताहि
छाँड़ि जोपैं नीरद पधारन चहत है।
जघन दिखाय रस देत जब नारि, भूप,
कौन मुख मोरि ताहि त्यागि कै चलत है? ॥ ४१ ॥

"निकसत छुवत, पयोद तोहि भूमि सन
रुचिर सुगन्ध सोइ वायु संग लाय है।
होत धुनि मधुर सुहावनि सुरुकि जब
मत्त गजराज ताहि बार बार पाय है।
उपजत खोह महँ गूलर अनेक, भूप,
तासु फल सोइ वायु, मेघ पकुसाय है।
देवगिरि* पास तोहि जानि जानहार अति
सीत होय, मोत, मन्दमन्द हो बहाय है॥ ४२॥
"तारकअसुर मारि देवनविपत्ति टारि
करत निवास श्रीकुमार तहँ आय कै।
पुष्पमय होय नहवावहु पयोद ताहि
बोरि दिव्यगंगनीर फूल बरसाय कै।
सृष्टि कीन्ह ताहि छोड़ि अग्निमुख, भूप,
कोटि सूरज समान निज तेजहि उठाय कै।
इन्द्रसेन हेत शिवशंकर कृपाल होय
देवन पुकार जब कीन्ह ढिग जायकै॥ ४३॥
रंग रंग जोतिसमुदाय सम जासु पंख
निर्तनकरन काल पूँछ सों गिरत हैं।
कुवलयदलहि उतारि जगदम्ब जाहि
पुत्रप्रीति मानि निज कान पहिनत है।
उज्वल नयनकोर जसु शंभुसीसमनि-
चंदजोति पावत विशेष चमकत है।
गरज सुनाय गिरिखोह गूंजि, भूप,
सोइ मोरहि नचाउ जोइ बाहन रहत है॥ ४४॥

---

* देवगढ़।

" शरबन जन्म जासु पूजि श्रीकुमार सोइ
चलु आन राह निज मारग बिहाय कै।
तोहि लखि रुकत पुरुष नारि सिद्ध जब
गावत बजाय बीन देव पास जायकै।
चम्बल*नदीहि सतकार करु, मेघ, तहँ
ताहि पूजनीय जानि मन्द चाल पायकै।
रायरन्तिदेवगायमेधपुण्यकीर्ति जल-
रूप सोइ बहत धरनि पर आयकै॥ ४५।

" देखत लकीर सम सिद्ध तेहि सिन्धु कहँ
दूरके प्रभाव हेत घूमत गगन में।
जानि हैं जरूर तोहि चोर श्रीगोपालअङ्ग-
जोति को विलोकि, मेघ, श्यामरंग घन में।
भूमि ओर दृष्टि डारि तासु नीरपान काज
देखिहहिं झुकत, पयोद, तोहि बन में।
भूप, नीरबुंद चहुँ ओर लसि देत छबि,
मेघ, जनु नीलम जटित मोतियन में॥ ४६॥

" ताहि बेगि उतरि पयोद दसपुर जाहु
सुन्दरिभृकुटि जहँ बेलसी हलत हैं।
अति अभिलाषसन लोचन उठाय जब
तोह, प्रिय मेघ, बार बार चितवत हैं।
खुलत बरौनि अति श्याम रंग जासु तब
पुतरि अनूप इत उत बिचरत हैं।

---

* चम्बल का शुद्ध संस्कृत नाम चर्मण्वती है। पौराणिक कथा है कि राजा रन्तिदेव ने गोमेध यज्ञ किया था उसीमें गायों के रक्त से यह नदी निकली।

देत छबि झूमत चँबेलिकुसुमन पर,
भूप, रस हेत जनु भँवर लसत हैं ॥ ४७ ॥
"जायहु बिठूरदेस लाँघत यमुनसरि
छावत अनेक देस अँगहि पसारिकै।
देखु कुरुक्षेत्र जहँ कोटि चन्द्रबंसबीर
भारत में नास भए राज लागि रारि कै।
युद्ध काल लोटत अनेक राजसीस तहँ
काटे जोइ अर्जुन प्रचण्डबान मारिकै।
ऐसही, पयोद, करु आज जाय, भूप, बुंद
सायक समान डारि कंजन सँहारिकै ॥ ४८ ॥
रेवती नयनरतनारप्रतिबिम्ब जहँ
मधुरसवाद सोइ आसव बिहाय कै।
कलह बिलोकि बन्धु बीच दुःख पाय रन
छाँड़ि किय बास बलभद्र तहँ आयकै।
ब्रह्मबधपापसन श्याम होय साप बस
शुद्ध भए भूप जो सरस्वती नहाय कै।
यद्यपि स्वभाव सन साँवर, स्वरूप, तव
चित्त शुद्धि होयहि जरूर तहँ जायकै ॥ ४९ ॥
"जाहु कनखल पर कौन अस खल जन
पावत न मुक्तिफल मज्जन करत जहँ।
घोर नर्क डूबे जेइ तारे हे सगरसुत
सोइ गिरिराज सन उतरत गङ्ग तहँ
फेन दिखराय मुसुकात सोइ जन्हुसुता
बार बार देखि जगदम्बके रिसान कहँ।
ईससीसमनिचन्द्रजोति सम हाथ सन
करत किलोल गंग भूतनाथकेश महँ ॥ ५० ॥

"दिग्गज समान जलपान हेतु ठाढ़ होहु
धारि निज अर्ध अङ्ग, नीरद, गगन में।
मञ्जुल बिलूर सम स्वच्छ जल लेहु तासु,
मेघ, झुकि झुकि अति सुन्दर तटन में।
परत पयोद्प्रतिबिम्ब जल धार पर
उठत उदक एक ओर लहरन में।
भूप, छबि देत जनु करत सँयोग आय
गंगहि यमुनसरि तीरथरतन* में ॥ ५१ ॥
बैठत अनन्द सन सैल सुरभित करि
मृग जासु नाभि कसतूरि महँकत है।
गलत तुषार तहँ, भूप, नीर पाय जासु
भूमि पर स्वच्छ जल गङ्ग प्रगटत है।
आलस मिटाय जल पाय बैठि शृङ्ग पर
स्वेत हिम माँझ इमि मित्र दरसत है।
मेघ, जनु शुभ्र बलमत्त त्रिपुरारिवृष
सींगनप्रहार करि कीच मरदत है ॥ ५२ ॥
"निसरत आगि, मित्र, चलत प्रचण्ड वायु
दाव महँ देवदारुडार रगरन सों।
भसम करत बन फैलि चहुँ ओर जब
हौंकत अनेक मृग ताहि चमरन सों।
नीर बरसाय, मेघ, ठंढ करु ताहि, गिरि
पावत कलेस अति अङ्ग झरसन सों।
सम्पति सुफल करि, भूप, दुखियनकर
उत्तम निवारहिं कलेस निज धन सों ॥ ५३ ॥

---

* प्रयाग।

"हिमगिरि बीच करि कोप अति बेग सन
अष्टपद शरभ* अनेक उछरत हैं।
छाँड़ि मग तासु, जोपैं, नीरद चलत तऊँ
अङ्गभङ्ग हेत तव मारग परत हैं।
पाथर गिराय घहराय तिन्हें मारु, मेघ,
देखु केहि भाँति तासु सीस बिद्रत हैं।
आनके अकाज काज, भूप, व्यर्थ काज सब
आपुहि उलटि नित्य लज्जित करत हैं ॥ ५४ ॥
"देखिहहु शङ्करचरनकंजचिन्ह तहँ,
मेघ, एक हिमगिरिशिखर विशाल पर।
पूजत सदैव बलि देत सिद्धलोग ताहि
करहु प्रदच्छिणा झुकाय सीस नीरधर।
जासु दरसन पाय नास होत, मेघ. पाप
छूटतहि नस्वर सरीर कोटि जन्मकर।
आनँद करत सुख पाय शिवलोक महँ
होत गण जात यदि करि बिसुवास नर ॥ ५५ ॥
"चलत प्रचण्ड वायु होइहैं मधुर सुर
एक एक बाँस जनु बाँसुरी बजाय है।
सखिन समेत बैठि किन्नरीतरुनि तहँ
चाव सन त्रिपुरविजयपद गाय है।
होय धुनि सुन्दर पयोद गरजत, सुनि
मन्द ही मृदङ्गबोलत बापुरी सुनाय है।
ईसजसगान हेतु, नीरद, पहार पर
पूरन सँयोग एक ठाँव होइ जाय है ॥ ५६ ॥

---

* एक जन्तु।

" जाहु गिरिराजतट होत, प्रिय मेघ, तहँ
छोड़त विलोकत बिचित्र छबि बनकी।
भृगुपतिजसध्वज देखु क्रौंच* दर सोइ
मानस चलत राह स्वेतगरुतनकी †।
सिकुरि सिकुरि तेहि पैठि निसरत जब
बाढ़त, पयोद, इमि जोति तव तनकी।
धरत बिसाल रूप, भूप बलिकाज जिमि
नापत धरनि छबि श्रीपतिपदनकी ॥ ५७ ॥

" हिमवत लाँघि जाहु एक एक शृङ्ग जासु
जानत अमित बल दशमुखकरको।
देवनारि देखत स्वरूप जासु अंग, बनु
अतिथि, पयोद, सोइ स्वच्छ गिरिवरको ‡।
कुमुद समान अति उज्ज्वल शिखर जासु
लपकि लपकि जनु चूँमत अँबर को।
लखत मनहुँ एक ठाँव दिन दिन होत
मोतिन लरिस शुद्ध अट्टहास हरको ॥ ५८ ॥

" तुरत कटत गजदन्त सम स्वच्छ अति
एक एक चोटि तासु मेघ चमकत है।
स्यामरंग अंजन समान जब नीरधर
जाय गिरिराजतट ऊपर लसत है।
निरखन जोग दोऊ लोचन कछुक मींचि
अति शुचि मृदु छबि सैलहि मिलत है।
नीलपट ओढ़ि कछु काँध पारि, भूप, जनु,
रेवतीरमनमंजुअंग दरसत है ॥ ५९ ॥

---

* क्रौंचदरी परशुराम ने पहाड़ फोड़ कर बनाई थी।

† हंस। ‡ कैलास।

"मन्द मन्द चलत हिमालयकुमारि यदि
मन्दरपहार चहुँ ओर बिहरन को।
त्रिभुवननाथ तासु थाँमि करकंज निज
हाथ सों उतारि, प्रिय मेघ, भुजगन को।
आगेई पहुँचि तहँ रचु निज अङ्ग बनि
गाढ़ एक ठाँव करि उदकफनन को।
नीलमनिसुन्दरसुपान बनु अंग तोरि,
भूप, जगदम्ब भूतनाथ के चढ़न को ॥ ६० ॥

"घसि चमकाय तहँ दामिनि समान बज्र*
तोसन अनेक बार मेह बरसायहैं।
सुन्दर अमरनारि नीर छिरकन हेतु,
मेघ, तोहि खेलजलसीकर बनायहैं।
जरत प्रचण्ड रबितेज सन तोहि यदि
नेक बिसराम काज, मेघ, ठहरायहैं।
गरज सुनाउ जनि बेर करु, मेघ, तहँ
सुन्दरि डेरायकै तुरन्त भागि जायहैं ॥ ६१ ॥

"उपजत कनककमल जेहि माँझ सोइ
मानस सरोवर पुनीत जल पाइयो।
सुरपतिबाहन चरत तहँ प्रीति सन
तासु मुख नीरपानबेर ही छिपाइयो।
रुचिर दुकूल सम कलपतरुपल्लवन
मारुत चलत मन्द मन्द ही हिलाइयो।
कौतुक अनेक करि भोगत अमित सुख
बंधुघर पास गिरिराज पर जाइयो ॥ ६२ ॥

---

* प्रसिद्ध है बिजुली (बज्र) चमकने से पानी बरसता है।

"जानु सोइ नगरी अनूप श्रीकुवेरकेरि
कामिनि समान गिरिगोद में निहारिकै।
एक ओर बहत पुनीत गङ्गधार जनु
भूमि पै पसारी निज सारी सो उतारिकै।
पावस में चढ़त कँगूरन पयोद तहँ,
भूप, जलबूँद सन कोरन सँवारिकै।
देत छबि सुन्दर लखात श्याम केश जिमि
मोतिनगुँधाई लट बीच कोउ नारिकै" ॥ ६३ ॥

उत्तर मेघ

"सुन्दरि अनेक तहँ दामिनी दमकत
चित्र रंग देखि इन्द्रचापहु लजायहै।
दुन्दुभी मृदङ्गनके सुन्दर सुरन सुनि
तालहीन मेघशब्द मन्दही सुनाय है।
मोती सम नीर मनिजटित तड़ाग महँ
मंडपउ छाई पेखि तुहू सकुचायहै।
भूप, एक महल अनूप छबि देखि तासु,
मेघ मित्र, तेरो अभिमान टूटि जायहै ॥ १ ॥
"भामिनी चतुर नित्य गूँथत लटन संग
कुंदकलिभूप, नित्य होत जो हेवन्त में।
जेठके सिरीसहि बनावत करनफूल,
वृष्टिके कदम्ब सदा धारत सीमन्त में।
पीयर करत मुख लोधरज मलि
चोटि सेवती धरत सोइ फूलत बसन्त में।
कमल धरत करकंज महँ नित्य
यहि हेत सब होत ऋतु पुर ऋद्धिमन्त में ॥ २ ॥

"कुसुमरचनछबि पावत अङ्गन तहँ
परत नछत्रछाँह रतन रतनके रंग में।
बैठत अनन्द सन यक्ष तेहि काल तहँ
रतिअवतार सम तरुनिनसंग में।
उठि गरजत घहरात एक ओर घन
होत धुनि जनु चोट लागत मृदङ्ग में।
कल्पतरुआसव पियावत पियत जेहि
हेतु भड़कत कामतेज, भूप, अङ्ग में ॥ ३ ॥
"अमर चहत जाहि, सखिन समेत यक्ष-
नन्दिनि अनेक दिव्य गंगतीर जाय कै।
मन्दमन्द डोलत सुहावनि बयार तहँ
सीत होइ मधुर सलिलकन पायकै।
अगनित झूमत मँदरतरु नीर सोइ
बैठत जुड़ात तासु छाँह गरमायकै।
खेलत, पयोद, तहँ हेम रंग रेत महँ
रतन अमोल, भूप, ढूँढ़त छिपायकै ॥ ४ ॥
"बिम्ब सम ओंठवारि नारि सुकुमारि सन,
मेघ जब आतुर सजन लपटत है।
छूटत दुकूल जब लाज औ उछाह सन
खैंचत पकरि नीविबंधन खुलत है।
सकत सँभारि नाहिं वस्त्र रत्न जोति महँ
सारिहि छुड़ाय पियपाछ दै फिरत है।
लाज बस मूढ़ मूठ मारत अबीर भरि,
रत्नदीप, भूप, कहूँ ऐसहू बुझत है ? ॥ ५ ॥
पावत न कल छिन एक अस वायु सँग
मेघ उड़ि जात सात मञ्जिल मँदिल पर।

ठंढ तल पाय जलकन बरसाय तहँ
भीतचित्ररंगलि बिगाड़ि देत नीरधर।
जानि अपराध भय मानि जिमि पैठि घर
पापकाज भेस धरि जात नर दण्डडर।
भागत डेराय घबड़ाय बनि धूम तिमि
हायकै झरोख बीच, भूप, मेघ जरजर ॥ ६ ॥
"मेघ हटि जात जब बीतत अरधराति
चन्द्रकान्तरत्न मिलि चन्द्रकिरनन सों।
खिड़किन जाल महँ लटकि लटकि, भूप,
चन्द्रजोति पियत विचित्र जड़ मन सों।
मन्दिर प्रकास करि कामिनिनअङ्ग परि
आलस दुरावत अमियजलकन सों।
ढील होत नस जब तरुनिन काम बस
अङ्ग सन पीतम दबावत भुजन सों ॥ ७ ॥
"भोगत अनेक सुख, मेघ, तहँ यक्ष सब
एक एक निधि तासु भवन सदैव बस।
लेत प्रतिदित संग बीन सम बोल जासु
किन्नर अनेक, भूप, गावत धनेसजस।
छेड़त बुलावत हँसावत चलत सोइ
देवगनिकन जासु छबि कोटि रति अस।
जाय जाय नगर समीप उपबन महँ
आनँद सहित नित्य लूटत रसिक रस ॥ ८ ॥
"सोरह सिंगार करि नारि सुकुमारि तहँ
पीतम मिलन काज राति को चलत हैं।
गिरत लटन सन सुन्दर मँदारफूल
कानके कमल झरि राह पै बिछत है।

टूटत अमोल हार कोमल कुचन पर
बूँद सम मोति इत उत ढुलकत हैं।
जात जेहि मारग, पयोद, सोइ प्रात, भूप,
लोकहि जनाय तासु भेद प्रगटत हैं ॥ ९ ॥
"करत निवास आपरूप तहँ भूतनाथ,
ताहि, प्रिय मेघ, श्रीकुबेरमित्र जानिकै।
भँवरनपाँति जासु ताँत सोइ चाप नहिं
साधत मनोज जोरि तीर, त्रास मानिकै।
चतुर तरुनि तहँ बिद्ध कारि तासु नेम
होत हैं सहाय ताहि हीनशक्ति ठानिकै।
बचत न एक, भूप, भृकुटी कुटिल करि
नारि जब मारत नयनबान तानिकै ॥ १० ॥
बीनत सुमञ्जुल दुकूल तासु तार सन
आसव करत मतुवार अँखियन कहँ।
रंग रंग कुसुम रुचिर बिकसित होय
कोंपल समेत होत भूषन अनेक तहँ।
उपजत लाख तासु माँझ जासु रंग सन
रँगत तरुनि निज चरनकमलनहँ।
एक कल्पवृक्ष बीच होत अबलनकर
पूरन सिंगार, भूप, नगर अनूप महँ ॥ ११ ॥
"राजराजमन्दिर अनूपम लखात तहँ
देखु ठाढ़ होय तासु उत्तर दुआर पर।
दूर सों दिखात इन्द्रचाप के समान जासु
तोरन विचित्र सोई जानु, मित्र, बन्धुवर।
द्वार सौंह एक ओर सुन्दर मँदारतरु
पहुँचि सकत जाहि हाथहू उठाय नर।

तनय समान ताहि जानत पियारे नारि
सींचत लगाय नित्य, भूप, ताहि निज कर ॥ १२ ॥

" मरकतमनिकर सुन्दर सुपान जासु
देखु एक बावली बिचित्र उपबन में।
पीतरंग कंज अतिरात छबि देत जनु
सोननकी पंखरी लगाई कमलन में।
राजहंस बसि तासु निर्मल सलिल महँ
सीतल रहत सुख पाय जलजन में।
मेघहू बिलोकि, भूप, छोड़त न ताहि नाहिं
मानस चलत जोपैं जायँ एक छन में॥ १३ ॥

" इन्द्रनीलनिकर शिखर अनूप जासु
सैल एक बावली समीपही लखात है।
जासु चहुँ पास पीतरंग जनु हेमकेरि
ध्वज सम कदली अनेक फहरात है।
दामिनि लसत जब स्याम रंग मेघ पर,
भूप, प्रिय सैल सम तू हू दरसात है।
बैठि तेहि काल जहँ नित्य सुख भोग किय
तासु सुधि होत आज चित्त बिलखात है ॥ १४ ॥

" केसर के पल्लव हिलत तहँ एक ओर
एक ओर ललित असोक बिकसत है।
लखहु इन्हहिं जहँ मंडप अनूप पर
सेवतीकी टट्टिन पै माधवी लसत है।
देखु इन दोउनके प्रेम फूल छल सन
केसर, पयोद, तासु जूठन चहत है।

फूलत असोक जब, भूप, मम नारि निज
चरनकमल सन ताहि परसत है* ॥ १५ ॥

"हेममय दंड एक फलक बिलूरकृत
बीच अति सुन्दर लखात तहँ शैल पर।
रुचिर नवीन बाँसकोंपर समान, भूप,
मंजु मरकत सन बद्ध दृढ़ तासु जर।
बैठत अनन्द सन जाय जहँ नित्य मोर
दिवस बितीत होत मित्र तोर, नीरधर।
कङ्कन औ नूपुर अनूप धुनि होत तहँ
नारि जब मोरहि नचावत बजाय कर ॥ १६ ॥

"पायहौ जरूर मम मन्दिर विचित्र यदि
देखिहै।, पयोद, तासु चिन्ह राखि मन में।
संख और पदुम बिलोकु तहँ चित्र माँझ
रचि रचि लिखित दुआरके पखन में।
लखत उजाड़ सम छूट जेहि काल सन
मानहु न नेक जाेति रहत भवन में।
ऐसही दिखात स्वामिहीन घर, भूप, कहूँ
सूरजविहीन जाेति होत कमलन में ? ॥ १७ ॥

"वेगही प्रवेश काज बाग़ बीच, मेघ, तहँ
हस्तिपोत सरिस रुचिर लघु रूप धरु।
बैठु सोइ शैल बीच सुन्दर शिखर पर
जासु चहुँ पास मित्र झूमत अनेक तरु।

---

* इसको दोहद कहते कहते हैं। केशर के पेड़ पर सुन्दर स्त्रियाँ कुल्ला करैं और अशोक को लात मारैं तब फूलते हैं।

मध्यम किरन, सन, नीरधर मन्द मन्द
निज प्रियसखिसेज मञ्जुल मन्दिर परु।
जुगुनसमूह सम बिद्युतनयन खोलि,
भूप, चहुँ ओर देखु मेघ तासु खोज करु ॥ १८ ॥

"कोमल शरीर और जोबनउमङ्ग भरी,
नोंकदार दाँतन सुलच्छनी जनाई है।
बिम्ब सम ओंठ, नीची नाभि,* कटि सिंहकी सी,
भोली सी चितौति जनु मृगी चकराई है।
तूल सों नितंबभार मन्द गजचाल दिये,
कुसुम समान कुच कटि सचकाई है।
मङ्गल सरूप अङ्ग अङ्ग हैं अनूप, बिधि
नारिन में, भूप, नारि आदिही बनाई हैं ॥ १६ ॥

"सोइ मितभाषिणीहि जानु, प्रिय नीरधर,
पद्मिनि, अनूप मम प्रानके समान है।
पीतमबियोग महँ सोचत अकेलि जनु
चकई सों तासु चकवाक बिलगान है।
एक एक कल्प सम बीतत बिरहदिन
अवधि बिचारि कंठ लागत परान है।
दूबर सरीर जोतिहीन मुख, भूप, जिमि
कठिन तुषार सों कमल कुम्हिलान है ॥ २० ॥

"होत फूलि फूलि बिम्बफल सम आँखि तासु
रैन दिन आँसु मघामेघ सम बरसत।
दुःसह वियोगआगि हृदय जरत, भूप,
धूम सम साँस तासु ओंठ दोउ झरसत ॥

---

* यह सब पद्मिनी के लक्षण है।

बैठि मुख हाथ धरि लटकि लटकि लट
बार बार कोमल कपोल तासु परसत।
मेघ, मुख कंज तासु साँवन अँधेरी बीच
मेघ बस छीनजोति चन्द सम दरसत ॥ २१ ॥
"तोहि देखि पीतमसंयोगसुख चेत करि
गिरिहहि सुन्दरि अचेत होय भूमि पर।
बल्लभमिलनकाज देत बलि आगि कहँ
बिरह समुझि अकुलात पुनि, मित्रवर।
चित्र में लिखित मम देह कुस जानि कीधौं
मैनहि बिलोकि कह 'किमि, प्रिय, नभचर,।
'तूहु मम सरिस बियोगसिन्धु डूबि, भूप,
पीतम सुरति करि कहु किमि धीर धर' ॥ २२ ॥
दुसह वियोग महँ बसन मलीन किये
मेघ उमड़त देखि बीन लै बजायहै।
पीतमबनाये रसपद अति चाव सन
जोर जोर गाय निज प्रीतिहि जनाय है।
प्रेम औ बियोग के उमङ्ग बस आँसुनके
धारन सों बीनहू को ठाँठ भीजि जाय है।
मूर्छना निसारत जु आपही सुरन बीच,
ताहि बार बार घबराय बिसराय है ॥ २३ ॥
"सोचि सोचि बिरहअवधिदिन डारि देत
द्वार पर रुचिर कुसुम छितराय कै।
बार बार गिनत उठाय ताहि, नीरधर,
चेतकरि कछुक कछुक बिसराय कै ॥
थोर दिन औधि जानि आनंद मगन होत
प्रियतम मिलन चहत जनु आय कै।

रमनबियोग महँ दिवस बिताय देत
　　नारि एहि भाँति, भूप, चित बहिलाय कै ॥ २४ ॥
"पावत न दुःख बहु, नीरद दिवस महँ
　　दिनहिं बिताय देत कारज अनेक करि
चित्तबहिलावन उपाय न रहत एक,
　　बीतत न रैन बैठि सोचत अकेलि परि ।
देखु अधराति कहँ लोटत धरनि पर
　　व्याकुल बिकल नहिं नींद आव रैन भरि ।
ताहि सुख देन हेत बोलेहु सँदेस भूप,
　　मंदिरझरोखपथसौंह, मेघ, जाय करि ॥ २५ ॥
" निर्बल शरीर अति सोच बस, मेघ, तासु
　　सोवत धरनि पर पल्लव बिछायके ।
लखत उदास जिमि मास शेष* होत चन्द
　　छीन होत पूरब समीप पहँ जायकै ।
निमिख समान मम साथ गत कीन्ह जाहि
　　भोग औ बिलास महँ चित्त हुलसाय कै ।
भूप, आज कर्म बस लागत पहार सम
　　सोई रैन आँसुन बितावत नहाय कै ॥ २६ ॥
" खिरकिन बीच सन अमृत समान चन्द-
　　सीतलकिरन तासु पास पहुँचत है ।
सुन्दर सँयोग काल प्रीति हेत, मेघ ताहि
　　लोचन उठाय दोउ सुन्दरि मिलत है ।
तुरत समुझि दुख फेरत बदन, भूप,
　　मूँदत नयन जब नीर उमड़त है ।

---

* किसी किसी के मत से अमावस्या को महीना बन्द होता है ।

बारिद, कुदिन महँ लोचन बिसाल तासु
पंकज समान तहँ विकसि मुँदत है ॥ २७ ॥
मञ्जुल सुगन्ध आदि छाँड़ि प्रिय मेघ सोइ
अङ्ग शुद्धि काज जल मज्जन करत है।
नागिन सरिस लट सुन्दर कपोल पर
अरुझि अरुझि बलखाय लटकत है।
निसरि उसास होय हृदयजरनधूम
लटहि निवारि दोउ ओंठ झरसत है।
सपनेहुँ पावत सँयोगसुख, भूप, किमि
आँसुके प्रवाह हेत नींद न परत है ॥ २८ ॥
"प्रथम वियोग माँह एक महँ बाँध जाहि
रचत सँयोग काल मोतिन गुँथायकै।
आनंद समेत जाहि साप अन्त, मेघ प्रिय,
प्रेम सन खोलब अवश्य हम जायकै।
तेल आदि सेवन बिहीन सोइ केश आज
देत दुख अरुझि अरुझि लस खाय कै।
बार बार सुन्दरि हटावत कपोल सन,
भूप, ताहि कंजकरनखन उठाय कै ॥ २६ ॥
"दूबर शरीर पर भार सँभरत नाहिं
फेंकि दीन्ह एक एक भूषन उतारि कै।
नेकहू डोलावत पिरात अङ्ग अङ्ग, मेघ,
बार बार सेज पर लेटत सँभारि कै।
नवनीरकनमय आँसुन की धार मेघ
तूहू बरसायहै अवश्यही निहारि कै।
कोमल सलिल सम जासु हिय होत, भूप,
गाढ़ दुःख देखि न सकत मष्ट मारि कै ॥ ३० ॥

" सोइ अनुराग मोहि माँहि तासु आज आहि
जैसही पयोद ताहि प्रान सों चहतहौं।
मो कहँ सरूपमदमत्त जनि जानु, रूप–
लोभित न ताहि गनि, भूप, जलपतहौं।
प्रथम वियोग महँ समुझि कठोर दुःख
ऐसही विपत्ति तासु निश्चय करतहौं।
देखि हौ अवश्य निज आँखिन प्रत्यत्त, मेघ,
थोर ही दिवस महँ जो कुछ कहतहौं ॥ ३१ ॥
" आँजनरहित तासु लोचन बिसाल नाहिं
बार बस कोर जासु पूर उघरत है।
अमृत समान मधुपानत्याग हेत, मेघ,
भृकुटि स्वभाव भूलि नाहिं बिलसत है।
पीतमसँदेसकर सगुन बिचारि तासु
बाम ओर ऊपर पलक फरकत है।
आँखि तासु देत छबि, मित्र जनु ताल महँ
पङ्कज हिलत जब मीन अकुलत है ॥ ३२ ॥
" बिरह अरम्भ सन त्यागि दीन ताहि नहि
मोतिनको हार तासु ऊपर चमकि है।
जहँ सुकुमार हेत होत नँहदाग, जेहि
बिरह बितत यही हाथ छुइ सकि है।
सुन्दर सँयोग जेहि दाबत करन, भूप,
सुन्दरि बिलास करि, मेघ, यदि थकि है।
रसभरी कदलि समान अति गोर तासु
सगुन जनाय बाम जघन फरकि है ॥ ३३ ॥
" नींद तेहि काल यदि आवत प्रियाहि जनि
छेड़ेहु, सुनीरद, सँदेसहि सुनायकै।

गरजि गरजि जनि सुन्दरि जगाउ, मेघ,
बैठु एक याम मम धामपाछ जायकै।
देखत सपन महँ पीतम सँयोग, भूप,
मिलत उछाह भरि बाँहन उठायकै।
रोकु गर्ज, मेघबर, दुगुन कलेस ताहि
होयहि खुलत आँखि सेज सून पायकै ॥ ३४ ॥
"प्यारिहि उठाउ मेघ मन्द मन्द लागि अङ्ग
नवजलबुंदयुत सीतल पवन सों।
देखु ताहि आलस मिटावत, पयोद, तहँ
मालतीके सुन्दर नवीन कुसुमन सों।
अचरज करि जब देखत झरोख सौंह
तोहि तब रोकु बिजुलीहि चमकन सों।
धीर होय बिनय समेत, प्रिय बन्धु, कहु,
भूप, बात मधुर मधुर बचनन सों ॥ ३५ ॥
''सुन्दरि सुहागिनि* समुझ मोहि नीरधर
परम सुहृद तव पीतम सजनको।
आवहुँ समीप तव छानत अनेक देस
बल्लभसँदेस, तिय, तो सन कहन को।
धावन न जानु मोहि केवल विचारु पर
उत्तम हितू हों बिरहित तरुनिनको।
गरज सुनाय घर लावत निमिख महँ
देखि मग बीच अलसात पथिकन को' ॥ ३६ ॥
"सुनतहि बात तोरि मेघ अति चाव सन
देखि तोहि आदर कराहि जिमि जानकी।

---

* जिससे सूचित हो कि पति जीता है, मरा नहीं।

लंक मध्य कोशलाधिराजके बियोग महँ
देखत सुनत प्रिय बात हनुमान की।
सुनति उछाह सन होय सावधान तब
जो कछु कहब, मेघ, छाँड़ि सुधि आनकी।
संगम समान सुख होत तरुनिन, भूप,
मित्रन कही जो बात पीतम सुजान की ॥ ३७ ॥
"मोहि कृतकृत्य करु, नीरद, सँदेस कहि
धन्य जीव सोई उपकार जो करत है।
नारि सन बोलु 'तव कुसल समेत नाथ
रामगिरि नाम पुण्य आश्रम बसत है।
पूँछत कुसल छेम, सुन्दरि, बियोग परि
मिलनभरोस करि आज लौं जियत है।
चाहिय प्रथम यही पूँछत अवश्य जब
प्रानिन प्रयास बिन बिपति मिलत है ॥ ३८ ॥
"जरत हृदय निय तोर जेहि आगि सोइ
तासु अङ्ग अङ्ग आज भसम करत है।
दूबर शरीर तव सुमिरि झुरात तासु,
रोवन समुझि आँसु धार सो चलत है।
गाढ़ दुख जानि कंठ लागत परान तासु
गरम उसास दिन रैन निकसत है।
भूप, जोपैं रोकत सँयोग बिधि वैर करि
दुगुन कलेस तव पीतम सहत है ॥ ३६ ॥
"सुन्दर सँजोगकाल सोइ पिय तोर तोहि
सखिन समाज बीच देखि ढिग आयकै।
आनन छुवन काज जोरहूकहनजोग
लाज छोड़ि बोलत श्रवन मुख लायकै।

काननविषय दूर आँखिहु दिखात नाँहि
आज सोइ पोतमा वियोगदुख पायकै ।
मोहि जानि आवत पठायो तोहि पास तिय
जोरि कै सँदेश, भूप, पद्य में बतायकै ॥ ४० ॥
"चेतहुँ नयन मृगलोचन बिलोकि तव,
नाल सम अङ्गसों प्रियङ्गु में लखात हैं ।
मुख छवि देखहुँ सुमुखि पूर्णचन्द्र महँ
केश मोरपूछ सम, भूप, दरसात हैं ।
चलत लहर नदियन महँ तोड़ि मोड़ि
भृकुटि समान सोइ, नारि अठिलात हैं ।
तुलत न एक छबि पावत ना तोरि, तिय,
कोटि रतिलज्जक अनूप तव गात हैं ॥ ४१ ॥
"पाथर के पट्ट पर धातुन के रङ्ग सन
ज्योंहीं पिय तोर तोहि चित्र में लिखत है ।
तोहि लखि कोप किये प्रनयकलह काज,
छमा हेतु ज्योंही पद लागिबो करत है ।
त्योंही प्रानप्यारी के वियोग सुधि करि भूप,
नैनन सों नीर जलधार ज्यों चलत है ।
होत दुःख दारुन उठत चित्र छाड़ि, हाय,
क्रूर दैव चित्रहूँ सँयोग न सहत है ॥ ४२ ॥
"आवत न नींद दिन रैन प्रानप्यारी मोहि
झपकत आँखि तोहि देखहुँ सपन महँ ।
भुजन उठाय नभ बीच बार बार तब,
सुन्दरि, लगावत चहहुँ निज तन महँ ।
सपन समुझि मोहिं व्याकुल उठत देखि
द्रवत सकल वनदेव यहि बन महँ ।

सहि न सकत दुःख दारुन गिरत, भूप
मोतिन समान आँसुबूँद पतियन महँ ॥ ४३ ॥
चलत सुहावनि बयारि हिमगिर सन
देवदारु कोंपरकलिन बिकसाय कै ।
दक्खिन दिसहि, सोइ, धावत सुगंध भरि
सुरभित तरुरस दूध सम पायकै ।
यहि बन माँझ सोइ बायु सुकुमारि प्रिया,
बार बार भेंटत अवश्य मोहिं धाय कै ।
जात मम पास यहि ठाँवँ सन, भूप, यदि
कुसुम समान तन तोर अँग लायकै ॥ ४४ ॥
"बीति जाय निमिख समान कोउ भाँति रैन
एक एक याम जासु कल्प सों चलत है ।
दिवस जुड़ाय किमि कोउ ऋतु माँझ भूप,
भानु तेज मम अंग भसम करत है ।
यहि बिधि बिफल मनोरथ सकल पाय
दुःख पिय तोर, मृगलोचनि, सहत है ।
चित्त असरन होत दुसह बियोग महँ
एकहु करोट नाहिं अनंद मिलत है ॥ ४५ ॥
राखत सँयोग आस प्रान सों पियारि आज
करहुँ मनोरथ अनेक जिय धीर धरि ।
आपन सुहाग मम जीवनअधार जानि,
होहु न निरास कछु चित्तहि उदास करि ।
यहि जग कौन सुख भोगत सदैव भूप
काहि पुनि दुःख एक रहत जनम भरि ।

ऊपर उठावत गिरावत धरनि पर
चक्रनेमि* सरिस नचावत सबहि हरि ॥ ४६ ॥
छूटिहै सराप भगवान शेष सेज सन
उठतहि विरह दिवस बीति जाय है।
धीर धरि सुन्दरि बिताउ चारिमास कोउ
भाँति तब सुन्दर सँयोग दिन आय है।
करत अनेक अभिलाष आज दूरि परि
एक एक भोगत अमित सुख पाय है।
उत्तम सरद महँ चाँदनी समेत रैन
निमिष समान, भूप, बिहरि बिताय है ॥ ४७ ॥
"चेत करु सुन्दरि पियारि, जब एक बार
सेज पर बाँह गर डारि कंठ लागि कै।
सोवत उठिहु घबराय कछु रोय तहँ
सुसुकि सुसुकि सुखनींद सन जागि कै।
बार बार पूँछत बिचार मोंहि, भूप, हँसि
बोलत बचन तब प्रेम रस पागि कै।
"देखहुँ सपन महँ भोगत पराइ नारि
तोहि, पिय चंचल सुजान, मोहि त्यागिकै' ॥ ४८ ॥
"जानु मोहि कुसल समेत बात सत्य मानु
सुनत पयोद मुख गूढ़ अपरन सों।
छाड़ि बिसुवासु जनि होयहु निरास, मृग-
लोचनि, सुनत, अपवाद दुरजन सों।
व्यर्थ जलपत सब लोग नहिं नेक, भूप,
घटत सनेह प्रियजन बिछुड़न सों।

* पहिये की पुट्टी।

दुगुन बढ़त प्रीति दुसह बियोग होत
चेतन सँयोग प्रियचिन्ह निरखन सों ॥ ४९ ॥
"प्रथमबियोग महँ गाढ़ दुःख जानि ताहि
ढारस दिवाय बहु भाँति समुझाइयो।
फोरत शिखर जासु बलमदमत्त शम्भु-
बाहन पहार सोइ होत फिरि, आइयो।
कुसल सनेस, भूप, चीन्ह संग लेत तासु
अभ्रकूट आय, मित्र, बातन सुनाइयो।
प्रात काल कुन्द फूल अंकुर समान मम
जीव कुम्हिलात यह, नीरद, जिआइयो ॥ ५० ॥
"करिहहु अवसि, पयोद, यह बन्धुकाज
होत मोहि निश्चय कुबेरपुर जाय कै।
करहुँ कदापि अनुमान नहिकार नाहिं
मैान साधि देखि तोहि उत्तर न पायकै।
सज्जन सुभाव मेघ, चातक बचन सुनि
पोखत तुरन्त ताहि नीर बरसाय कै।
सन्तन की रीति यही, भूप, करि देत काज
करत बिलम्ब नाहिं बातन बढ़ायकै ॥ ५१ ॥
"यदि कहेहु अनुचित बात घन, मोहि बिरहदुखी विचारि कै।
करि दया मित्रहिं मानि वा सब करेहु काज सँवारि कै।
जहँ जाहु तहँ बरसाय जल धन धान चहुँ दिशि बोइयो।
छिन एक तोहिं हरि कृपा सन दामिनिबियोग न होइयो ॥ ५२ ॥

इति श्री अवधवासी भूप उपनाम सीताराम कृत
मेघदूत भाषा काव्य समाप्त हुआ ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.

SITA RAM'S HINDI KALIDASA—KUMARA SAMBHAVA

कुमारसम्भवभाषा

श्रीपार्वतीजी का जन्म, तपस्या और विवाह।

महाकवि श्रीकालिदास के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ
का
भाषा छन्दों में अनुवाद

श्रीअवधवासीभूपउपनाम
लाला सीताराम बी० ए०
का रचा हुआ

Seventh Edition

इलाहाबाद :
गनेश प्रसाद के प्रबन्ध से राजपाली प्रेस में छपा
और
किशोर ब्रादर्स ने २०३ मुट्ठीगंज इलाहाबाद से प्रकाशित किया

संवत् १९८०।

सातवीं बार] [दाम ॥)॥

चौथी आवृत्ति की भूमिका।

अवधपुरी सुखमाअवधि ता मधि स्वर्गद्वारि।
जगपावनि सरयू जहां बहत सुहावनि वारि॥
तहां रह्यो कायस्थ एक श्रीशिवरत्न उदार।
श्रीरघुबरपदकमल महँ ताकी भक्ति अपार॥
सियरघुपतियुगचरणरत ता सुत सीताराम।
राशिनाम कवितासुगम धरत भूप उपनाम॥
कालिदास भवभूति जे भारत के कविराय।
रह्यो आनहूं देश में जासु विमल जस छाय॥
लखे जिन्हिं रवि सम गनिय जग के कवि खद्योत।
जिनकी रचनाजोन्ह ढिग जग कविता तम होत॥
तिनके नाटक काव्यकर सियवरचरनप्रसाद।
भाषा छन्दन महँ रचे यथाशक्ति अनुवाद॥
ऋतुनभवसुशशि शाक महँ वारानसि करि वास।
रचि शिवउमाविवाह की भाषा करी प्रकास॥
वार दूसरी शोधि पुनि बदलि तासु सुभनाम।
ताहि प्रकास्या सुजन हित बसि कोसलपुर धाम॥
वसि भृगुआश्रम मांहि पुनि शोधि तीसरी बार।
सहित हुलास प्रकासि तेहि कीन्ह लोकउपहार॥
सोधी चौथी बार सोइ निवसत तीरथराज।
मेरे दोस बिसारि तेहि पढ़िहैं सुजन समाज॥

प्रयाग
रामनवमी
१९६८

सीताराम

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ।

श्रीकुमारसम्भवभाषा ।

पहिला सर्ग

श्रीपार्वतीजी का जन्म ।

उत्तर दिशि एक शैल विराजा । हिमवत नाम जगत गिरिराजा ॥
पैठत दोउ दिशि सिंधुनहाना । महि नापनहित दण्ड समाना ॥
तेहिकरि बच्छ गिरिनएकबारा । दुहनहार है हेमपहारा ॥
विधिअनुरूप दुहत महिगाई । अगनित रत्न सुऔषधि पाई ॥
रतन अनेक शैल उपजावत । नहिं छबि तासु तुषार घटावत ॥
थोरे दोष कोटि गुन माहीं । शशिमहं अंक सरिस दवि जाहीं ॥
धातुविचित्र शिखर सोइधारत । जो लहि तन अप्सरा सँवारत ॥
परत जासु मेघन महँ जोती । साँझ अकाल मनहुं नित होती ॥
बीचहि लसत मेघ तेहि माहीं । विहरत सिद्ध तासु घन छाहीं ॥
बरसत नीर दुःख पुनि पाई । ऊँचे शिखरन बैठत जाई ॥
जो नाहर तहँ कुंजर मारा । मिटत तासु पद गलत तुषारा ॥
नख सन गिरे मोति पहिचानत । चतुरव्याध तेहिकर मगजानत ॥
कुंजरअंग चित्र की भांती । धातुरंग सन लिखि जहँ पाती ॥
करत भोजछालहि सुरनारी । निज मनव्यथा जनावनहारी ॥
नितनिसारि दरमुखन बतासा । भरिभरि बेनुसरिस सोइ बांसा ॥
जनु गन्धर्वगान अनुरूपा । चहत देन सोइ नाल अनूपा ॥
गज अनेक कनपटी खुजावत । सरलतरुन की छाल गिरावत ॥
तहां निसरि सुन्दर रसधारा । करत सुगंधित सकल पहारा ॥
जहँ पाथर सम होत तुषारा । दूखत परत चरन सुकुमारा ॥
तउं निजमन्द चाल सुकुमारी । नहिं छांड़त तहँ किन्नरनारी ॥

जो अँधेर रविडरबस आवत। तेहि खोहन महँ शैल छिपावत॥
सरनागत नीचनहुं सुजाना। अपनावत नर सन्त समाना॥
सुन्दर शशिकिरनन की नाईं। चहुं दिशि तहँनिज पूंछहिलाईं॥
भूधरराज तासु उपनामा। करत यथारथ चँवरिललामा॥
लहि मन्दाकिनिनिर्मल नीरा। ह्वै सीतल जहँ बहत समीरा॥
मृग खोजत किरात जेहि पाईं। सुखी होत निज श्रमहि नसाईं॥
बचे जु टूटत सप्तऋषिकर से। खिले सो कमल भानुके परसे॥
नीचहिजबहि छितिजपर आवत। नित ऊपरमुखकिरनचलावत॥
तासु अंश धरि जंगमरूपा। तहँहिं रहत एक देव अनूपा॥
लखि बल सहनजोग महिभारा। जानि सोम उपजावनहारा॥
गिरिनराज मखअंश समेता। दीन्ह ताहि विधिकृपा निकेता॥
सोई मानसी सुता पितरन की। सेवा जोग देव मुनिगन की॥
मेनहिं बंस चलावन काजा। ब्याही बिधिवत भूधरराजा॥
सुख भोगत कछु दिन जब गयऊ। गर्भ शैलरानिहि तब भयऊ॥
दिन पर सोई मेनाकहि जाई। जिन सागर सन कीन्ह मिताई॥
नागबंसकन्या जिन ब्याही। जासु कीर्त्ति फैली जग माहीं॥
पर्वतपंखन काटत बारा। सह्यो न निज हरिबज्र प्रहारा॥
ता पाछे हरप्रथमभवानी। पितु अपमानग्लानिबड़िमानी॥
यज्ञअग्नि निज तनहि जराई। गिरिवरबधूगर्भ महँ आई॥
तेहि अवसर सोही सोइ कैसी। रुचिर नीति संग संपति जैसी॥
जनमत उमा चराचर जेते। भए सुखी जग महं सब तेते॥
रजबिनु चली बयारि सुहावनि। निर्मल भई दिशा मन भावनि॥
बाढ़त मुखमण्डल उजराई। सुता मातु संग सोइ छबि पाई॥
ज्यों गिरितटी बृष्टिऋतु आवत। रत्नशलाक उगत छबि पावत॥
दिन दिन चन्द्ररेख की नाईं। तहँ सोइ बढ़ी उदय तब पाई॥
सोहत चन्द्रकलासम धारी। मंजुल अंगन शैलकुमारी॥
बंसनाम सन गिरिपरिवारा। "पारवती" कहि ताहि पुकारा॥

तपसनबरजि "उमा" कहिमाता। तेहिसनभई "उमा" विख्याता॥
पुत्रवान यद्यपि हिमवाना। तृप्त न दृगन सुता सन माना॥
मधु के जदपि कुसुम बहुतेरे। रहै मधुप मंजरि दिस प्रेरे॥
रुचिर शिखासंग दीप समाना। वानो शुद्ध समेत सुजाना॥
जिमि गंगा संग स्वर्ग सुहावन। तिमिसोइभयो सुता जहिपावन॥
सखिन संगा गंगातट जाई। नित खेलत तहं गेंद चलाई॥
रचि गुड़वन कहँ पुत्र बनावत। बालपनहिं जोबनरस पावत॥
शरद हंस गंगा जिमि आवहिं। औषधि रातितेजजिमि पावहिं॥
त्यों उपदेश काल गिरवारी। पूर्वजन्मविद्या लहि सारी॥
मनहुं चित्र लहि मंजुल रंगा। जिमिसरोज रविकिरनन संगा॥
शैलसुता अंग नखशिख सुन्दर। झलक्यो जोबन पाय मनोहर॥
परत उठे अँगूठनखजोती। चलत धरनि रंजित जनु होती॥
ताके पदसरोज के आगे। थलपंकज बिन छबिके लागे॥
कछु निहुराय शरीर सुशीला। मन्द मन्द डोलत करि लीला॥
नूपुर धुनि चाहत जनु पावा। तेहिहंसन सोइ आप सिखावा॥
तासु जांघ गोपुच्छ समाना। दै सब सुन्दरता भगवाना॥
और अंग हित जनु करतारा। कीन्ह रचत छबि यतन अपारा॥
रहि कठोर गजपतिकर होई। नित प्रति सीत रहत पुनि सोई॥
सोई कदली यद्यपि अति सुन्दर। भयो तासु उपमा के बाहर॥
बढ़ि नीवीसन रोमन पांती। तासु नाभि पैठी यह भांती॥
मनिगुम्फित जनु करधनिकेरी। मध्य नीलमनि जोति घनेरी॥
कमला चलत चन्द्र के पासा। लहि न सकी अरविंदविकासा॥
जब फिरि गई सरोजन पाहीं। शशिशोभा पाई सोई नाहीं॥
पै गिरजा मुखचन्दहि आई। दोउ शोभासंपति तिन पाई॥
कुसुमकली पल्लव सँग होती। मूंगन बीच होत कै मोती॥
तासु अधरछबियुत मुसुकाना। तौ जग महं पावत उपमाना॥
बोलत मधुर बचन जब बाला। अमृतधार जनु चलतविशाला॥

टूटी तांत की बीन समाना। बोलत पिक दूखत जनु काना॥
चपल कमलसम चलत बयारी। नादृग लखि मोहि संशयभारी॥
कैनिज दृष्टि मृगिन तेहि दीन्ही। कैहरिनिन सोई तासन लीन्ही॥
अंजन सन जनु विरचि बनाई। करत बिलास सहित चतुराई॥
लखि सोइ भृकुटि अनूप अनंगा। भयो धनुषशोभा मदभंगा॥
तासु केश लखि मैं यह जानी। जो जन्तुन महँ होत गलानी॥
तौ लखि शैलसुता के बारा। तजति चँवरिनिज पूंछदुलारा॥
कहँ लगि कहौं उमा कर रूपा। करि सुन्दर अँग अंग अनूपा॥
विधि सब जग शोभा एक ठाई। देखन हित जनु उमा बनाईं॥
एक बार बिचरत जगमाहीं। नारद सुता देखि पितु पाहीं॥
"बोले ह्वै है सुता तुम्हारी। "अर्ध अंग लै शिव प्रियनारी"॥
हिमगिरि नारद बचन प्रमानी। ब्याहन जोग यदपि सो जानी॥
करि न और बरकरअभिलाखा। ताहि गिरीश कँवारिहि राखा॥
मंत्रन सहित विहाय कृशाना। आहुति लहत तेज नहि आना॥
बिना आप मांगे त्रिपुरारिहि। सक्यो देइ नहिं शैल कुमारिहि॥
नहिकारब डरि साधु समाजा। रहत मौन मनचाहेहुं काजा॥
प्रथम जनम महँ शैलकुमारी। जब सन देह अग्नि महँ जारी॥
तबसनासब जगविषय विसारी। रहे अकेनहि प्रभु त्रिपुरारी॥
जहँ महँकत कस्तूरि मनोहर। मधुर मधुर जहं गावत किन्नर॥
जहँ धोवत तरु गंगप्रबाहा। धरत चर्म तहँ त्रिभुवनाहा॥
तप हित इंद्रिन बांधि गुसांईं। रहे हिमालय तट सोइ जाईं॥
रुचिर कुसुम के कुंडल धारे। धातु रंग सन अंग सँवारे॥
पहिरे मृदुल भोज की छाला। बैठे शिलन प्रथम तेहि काला॥
जमे हिमहिनिजखुरन बिदारत। जो डेराय बनगवय निहारत॥
उठत सुनत गरजत मृगनाहा। करत नाद मदभरि शिववाहा॥
तहाँ अग्नि पशुनाथ जराई। जनु निज अपर रूप प्रगटाई॥
जदपि आप प्रभु तप फलदानी। कीन्होंतप कछु मन अनुमानी॥

सुरनरबंद्यहि अर्घ समेता। अर्चै यथाविधि शीलनिकेता॥
सखिन संग तेहि पूजन काजा। पठई सुता तहां गिरिराजा॥
हैं समाधिबाधक जगनारी। तउ आज्ञा तेहिदीन्हि पुरारी॥
अछत विघ्न नहिं डोलत जोई। जानिय सत्यधीर जग सोई॥
वलि काज तोरत कुसुम वेदिहि करत स्वच्छ बटोरि कै।
नित कर्म हित जल खैंचि लावत रुचिर फूलन तोरि कै॥
यहि भांति सेवा करत नित पशुनाथ पहँ सोइ जाय कै।
निज श्रम नसावन शैलजा शिवशीशशशिकर पाय कै॥

दूसरा सर्ग

देवताओं का ब्रह्मा के पास जाना।

तारक असुर हाथ तेहि काला। देवन लही विपत्ति विशाला॥
आगे करि सुरेस भगवाना। गए जहां विधि कृपानिधाना॥
लख्यो सुरन छबिछीन विधाता। ज्यों कमलन देखत रविप्राता॥
दरसन पाय सुरन सिर नावा। करिअस्तुतिनिजविनयसुनावा॥
नमो, नाथ, त्रयमूरति धारी। जिन यह सकलसृष्टि विस्तारी॥
सृष्टि आदि प्रभु जो रहि एका। गुनविभाग हित भयो अनेका॥
बोइ अमोघ बीज जल माहीं। सृज्यौ अंड जहं विश्वसमाहीं॥
तीन रूप धरि निजहि जनावत। रचिपालतपुनि जगहिनसावत॥
नारि पुरुष दुइ भाग तुम्हारे। जो यह रचे चराचर सारे॥
जो निजकाल विभाग बनावत। सृष्टिप्रलय सोइ नरन कहावत॥
जग सिरजततोहि सृज्योनकोई। जगदन्तक तव अन्त न होई॥
तू जगआदि आदि तव नाहीं। तू प्रभु, प्रभु न तोर जग माहीं॥
आपुहि जानत निज गुन गाथा। सृजत आप आपुहि जगनाथा॥
धरत देह प्रभु जग हित लागी। लीन होत निज महँसोइत्यागी॥
प्रगटावत हित निज करतूती। धारत, प्रभु नित विमलबिभूती॥

कोमल कठिन हलुक गुरु अहहू । प्रगट गुप्त जहं जस प्रभु चहहू ॥
जासु आदि बोलत उंकारा । पुनि जेहि तीनि स्वरन उच्चारा ॥
यज्ञ होम जहँ कर्म विसेखा । जासु नियतफल स्वर्गहि देखा ॥
सोइ बेद के मूल कहावत । जो वल ऋषिहु परमपदपावत ॥
पुरुषहेत तोहि प्रकृति बतावहिं । उदासीन चेतन तोहि गावहिं ॥
देवन देव, पिता पितरन के । सिरजनहार प्रजापतिगन के ॥
पर सों परे रहहु जगत्राता । घृत यजमानहु एक बिधाता ॥
भोजन खानहार तुम एका । ज्ञानवान पुनि ज्ञान अनेका ॥
तेहि नरनाग सुरासुर ध्यावत । तू प्रभु आपुहि ध्यान लगावत ॥
सुनत देव अस्तुति यहि भांती । भये प्रसन्न असुरआराती ॥
चहुंमुखकहि जुआदिकबिवानी । तब निज मूर्त्ति कृतारथ जानी॥
स्वागत भयो सकल सुरबोरा । लहिअप पदजुधरौ मतिधीरा॥
हिम बस मलिन नछत्र समाना । क्यों तवमुख अब भये मलाना ॥
बिनसि जोति नहिं तेज जनाई । इन्द्रबज्र क्यों मन्द लखाई ? ॥
यम निज दंडन भूमि खचावत । अस्त्र अमोघ सलाक बनावत ॥
आदित्यन कर तेज नसाना । लखन जोग भे चित्रसमाना ॥
जवबिन व्याकुल मरुत लखाहीं । जिमि गिरिपरे नदी ह्वै जाहीं ॥
झुके सीस लटकत ससि कोटी । बिन हुंकार रुद्रन छबि छोटी ॥
यहि छन कौन बली अस भयऊ । तवपद लै जिन यह दुखदयऊ ॥
बोलहु काह चहत इहँ आये । काह करहुं तुम्हरे मन भाये ॥
मैं एक प्रजासृष्टिअधिकारी । रक्षा तिन पर सकल तुम्हारी ॥
सुनि बिरंचि के बचन अनूपा । चितयो गुरुहि देवगनभूपा ॥
सोहत सहस नयन प्रभु फेरे । ज्यों कमलाकर मारुत प्रेरे ॥
तब आगे सुरपतिगुरु जाई । हाथ जोरि बोले सिर नाई ॥
है सोई जो कुछ भाष्यो स्वामी । जानत सब प्रभु अन्तरजामी ॥
हमरे पद सब बैरिन लीन्हा । सुरनरमुनि सबकहँ दुखदीन्हा॥
बर अनुकूल नाथ सन पाई । तारक असुर भयो जग जाई ॥

सो सब लोक बिनासनहेतू। उदय भयो जिमि बाढ़त केतू॥
रबि तापुर सोइ तेज दिखावत। जेहिसनसरसरोजबिकसावत॥
शशि सेवत तेहि कला समेता। तजि जु धरत हर कृपानिकेता॥
कुसुमचुरावन दण्ड विचारी। मन्द मन्द तहँ चलत बयारी॥
क्रमसन निज आगमऋतुत्यागी। माली बने फूल हिनलागी॥
रतन उपायन योग अपारा। धरत बारि महँ सागर सारा॥
धरिमनिजोतिशिथिलसिरमाही। राति भुजंगम सेवत ताही॥
दूतनहाथ अनुग्रह काजा। स्वर्ग कुसुम पठवत सुरराजा॥
यद्यपि सब पूजन, बिधि, वोही। तउँ दुख देत सबहि सुरद्रोही॥
खल मानत नहिं पर उपकारा। दण्ड एक तेहि साधनहारा॥
जापल्लव तोरत करि दाया। भूषन हेत सकल सुरजाया॥
सोनन्दन बन वृक्ष सुहाये। दुष्ट दैत्य अब काटि गिराये॥
सोवत तेहि सुरगन बन्दीजन। बिलखत करत मंद तहँबीजन॥
जहँ चहुँओर भानुरथ धावत। हरित हयनपदवी जो पावत॥
सोइ गिरि आज उखारि मँगाए। घर विहार के शैल बनाए॥
जो दिग्गज मदगन्ध जनावत। जो सुवरनसरोज उपजावत॥
सोइ मन्दाकिनिनीर अनूपा। भरे तासु उपवन के कूपा॥
ता आगमभय नहिं सुरबृन्दा। भुवन भुवन चलि लहत अनंदा॥
जो बलि यज्ञ हेत यजमाना। धरत, ताहि माया करि नाना॥
परत अग्निमुख लेत छिनाई। हम देखत कछु नाहिं बसाई॥
तिन हरिबाहन हरि हरिलीन्हा। जस मिटाय सेवकसमकीन्हा॥
यद्यपि किये उपाय अपारा। व्यर्थ मयो सब यत्न हमारा॥
सन्निपात महँ अगद समाना। निष्फल तासु नासबिधिनाना॥
तेहि बज्रयोग चक्र अनुमानी। छांड्यो तामुख सारंगपानी॥
लगत कण्ठ निसरत चिनगारी। भयो व्यर्थ सुरआसा जारी॥
ऐरावत समान बलसारा। करत तासु गज मेघ प्रहारा॥
तासु नास हित आस हमारी। सृजहु एक सेनापति भारी॥

सुरसेनाधिप जाहि बनाई । लै आवै जय इन्द्र छुड़ाई ॥
सुनि यह भई पितामहबानी । गरजअन्त ज्यों बरिसत पानी ॥
सकल पूजि है आस तुम्हारी । करौ बिलंब धीर हिय धारी ॥
नहिं सिरजबहम तब उद्धारक । सुरन सङ्ग जो मारै तारक ॥
हम सन दानव यह पद पावा । नहि चाहत निज हाथ नसावा ॥
विषवृक्षहु एक बार बढ़ाई । उचित न तेहि काटब सुरराई ॥
तारक अति दारुन तप कीन्हा । हम प्रसन्न ह्वै तेहि बर दीन्हा ॥
दै बर कीन्ह शान्त तप ताके । जारि सकत त्रिभुवन बल जाके ॥
शंकरअंश छांडि को जाना । सन्मुख सहै असुर बलवाना ॥
तमगुन युक्त जोतिमय देवा । हरि हम जान न शिवबल भेवा ॥
अब सबमिलिसोइ करहु उपाई । उमारूप गिज करहु सहाई ॥
जेहि विधि चुंबकखींचतलोहहि । उमारूप शंकरमन मोहहि ॥
जलमूरति ज्यों शंकर केरी । सहत प्रभावशक्ति मम प्रेरी ॥
तिमि जौ ता संग शंकर भोगू । सोइ शिवतेज सँभारन जोगू ॥
गिरिजा भूतनाथ सुत सोई । सुरसेना सेनापति होई ॥
करि है तेज जनाय अपारा । सुरबन्दी बेनिन संहारा ॥
अस कहि भे प्रभु अन्तरधाना । सुरन स्वर्गदिशि कीन्हिपयाना ॥
तब सुरेश निज काज बिचारी । सुमिरयो तुरत कुसुमशरधारी ॥

तब रुचिर नारीभृकुटि सन, निज चापकोटि सँवारिकै ।
रतिहाथकंकन चिन्ह जहँ, सोइ कंठलगि धनुधारिकै ॥
नवफूल विशिष कराल धरि, निज मित्र माधव हाथ पै ।
अति बेग पहुंच्यो कुसुमसर, कर जोरि सुरगननाथ पै ॥

तीसरा सर्ग ।

काम का भस्म होना ।

तादिशि सुरन ओर सन फेरे । सुरपति नयनसहस निज प्रेरे ॥

समदरसिहु प्रभु कारज देखो। एक सेवक आदरत विसेखी॥
ता पर इन्द्र अनुग्रह कीन्हा। सिंहासन ढिग आसन दीन्हा॥
माथ नाय बैठ्यो रतिनाथा। बोल्यो बचन जोरि जुग हाथा॥
करु अज्ञा प्रभु, अन्तरजामी। काह काज यहि जग तव स्वामी॥
प्रभु सुमिरत जो आदर पावा। लहि आज्ञा सोइ चहौं वढ़ावा॥
कै कोउ करत, नाथ, तप घोरा। चहत लेन यह पद प्रभु तोरा॥
निज अमोघ सहायक संधानी। करौं तुरंत शिथिल अभिमानी॥
कै कोउ विन तव आयसु पाई। चहत मुक्ति पद भवहिं डेराई॥
सुन्दरि लोचनबान चलाई। तेहि राखौं निज बन्दि बनाई॥
तव बैरहि सुनु अमित प्रभावा। यदपि शुक्र नयशास्त्र पढ़ावा॥
सकौं धर्म अरु अर्थ नसाई। कूल प्रवाह समान गिराई॥
रहै शान्त प्रभु, बज्र तुम्हारा। मम सायक सब साधनहारा॥
कौन बाहुबल गर्व नसाई। तरुनिनकोप विलोकि डेराई॥
मधु सहाय, शर फूलहि मोरे। तऊ सुरेस अनुग्रह तोरे॥
सकौं शंभुकर संयम तोरा। करिहै को सरवरि कहु मोरी॥
सुनि उरुलन प्रभु चरन उतारो। धरयो पाट पर इन्द्र संभारी॥
सिद्धि जोग मनोजबल जानी। बोले देवनाथ मृदुबानी॥
नहि कछु अहै असाध्य तुम्हारे। काम वज्र दुइ अस्त्र हमारे॥
तपबल ओर वज्रगति नाहीं। तव सायकचहुँदिशिचलिजाहीं॥
मैं जानत तव तेज अपारा। तव बलविदित सकल संसारा॥
निज समान तव बुद्धि बिचारी। कहन चहत एक कारज भारी॥
हरजीतन निज शक्ति जनाई। कह्यो हमार मनोरथ भाई॥
प्रबल भए अब सुर आराती। पैहैं जीत देव यहि भांती॥
जो सुत भूतनाथ उपजावैं। तेहि सेनापति देव बनावैं॥
कहाविरंचिजिनयहजग सिरजा। शंकर जोग नारि एक गिरिजा॥
काम, करहु सोइ यत्न बिचारी। जेहि विधिउमहिलखैंत्रिपुरारी॥
धरि समाधि बैठे भगवाना। करहिसिद्धितउँ तवएकबाना॥

गिरिजा पितुअनुशासन पाई। सेवा करत शंभु पहँ जाई॥
यह मैं सुन्यों अप्सरन पाहीं। दूतसरिस चहुंदिशि जे जाहीं॥
जदपि उमा सेवत नित जाई। चहतसिद्धि अब तोर सहाई॥
बीज खेत महँ अगनित रहहीं। उगनकाज जलसींचन चहहीं॥
तव शर चलैं देवजयलागी। अहो धन्य तुमहीं बड़भागी!॥
जो न और नर साधन जोगू। सोकरिलहतअमित जस लोगू॥
यह लखु तीनलोक कर काजा। याचक जहँ तव देव समाजा॥
साधिसकत तेहि चाप तुम्हारा। अहो धन्य तव तेज अपारा॥
तव सहाय ह्वैहैं मधुमासा। बिनहि कहे रहिहैं तव पासा॥
ज्यों बिन बोलेहु धर्म बिचारी। सदा आगि सँग रहत बयारी॥
परम धर्म यह नाथ हमारा। असकहिउठ्योलागिपदमारा॥
उठत मनोजअंग सुरनाथ। छुयो उठाय सीस धरि हाथा॥
लेइ नारि कुसुमाकर संगा। डरत चल्यो गिरि ओर अनंगा॥
मिलै सिद्धि जो देहहु खोई। सोचत गयो हिमालय सोई॥
मुनितपसंयम-शत्रु बसंता। तेहि बन रचे प्रपंच अनंता॥
दिनकरनिजदक्षिण दिशि त्यागी। क्रम तजि रह्योउदीची लागी॥
गंधसहित कछु वायु चलाई। दिशिदक्षिण निजव्यथा जनाई॥
पदकंजन शुचि नूपुर धारी। मारत जबहिं ताहि बरनारी॥
उपजावत जो कुसुम सुहाए। सो असोक अब आप फुलाए॥
आमबौर पल्लव सँग सोहे। जो लखि विषयहीन मनमोहे॥
तहँ मधु मधुपपांति बैठाई। जनु मनोजकर नाम सुहाई॥
कर्णिकार भे गंधविहीना। रुचिररंगधरि जिन दुखदीना॥
सब गुन मिलैं एकही ठामा। चहत न यहकदापिविधिवामा॥
टेसूकलि नव कुन्द समाना।वनचहुंदिशिबिकसींविधिनाना॥
मधुलछिमी तहँ भौरनपांती। अंजन सरिस कियो बहुभांती॥
तिलक तिलक मुख बीच बनावा। नवपल्लव रँग ओंठ रँगावा॥
परि पियालरज आंखिन माहीं। मृग तहँ अंध सरिस ह्वै जाहीं॥

वायुविमुख मदभरि तहँ आवत। मरमरात पत्रन पर धावत॥
रक्तकंठ ह्वै बौरहि खाई। कोयल निज मृदु बोल सुनाई॥
तब तपसी शंकर बनवासी। लखिमधुसिरीअकालविकासी॥
रोकि यत्न करि चित्त विकारा। निजमनजंहुं तेहुं मुनिनसंभारा॥
तेहि प्रदेश मन्मथ जब आवा। थिर जँगम सबही रस पावा॥
एकहि फूल मधुप अनुरागी। चाख्योरसभ्रमरी संगलागी॥
करनीहू निज प्रेम दिखाई। दियो गजहि सुरभितजल लाई॥
खान हेतु मृनाल जो तोरा। काटि प्रिय ह सो देत चकोरा॥
सुनत अप्सरन गीत मनोहर। भए समाधिभंग नहिं शङ्कर॥
निजनिज चित्तवृति धरि साधी। सकै तोरि को तासु समाधी॥
हेमदंड निज पदहि जनाई। कुटीद्वार नन्दी तब आई॥
मुख तर्जनि धरि जनुअस बोले। "रहै शान्त जनिगनकोउ डोले॥
तुरत भए तरु कंपविहीना। भौंरनहू गूजन तजि दीना॥
पशु पंछी सब रहै चुपाई। वन सोई भयो चित्रकी नाई॥
जेहिविधि शुक्रहि लोग बचावत। त्यों मनोज हर दृष्टि विहावत॥
गयो काम डरपत तेहि ठामा। करत ध्यानजह शिवअभिरामा॥
लख्यो प्रभुहि बघचर्म दसाई। बैठे देवदारुतरु छाई॥
झुके कंध वीरासन मारी। कंज सरिस दोउ कर उरधारी॥
जटा भुजंगन बांधि बनाए। अक्षमाल कानन लटकाए॥
गर छबि जोति नील रंग डारत। कृष्णहरिन चर्महि प्रभुधारत॥
ध्यानहेत जहां निश्चल तारा। जिननिजभृकुटिविलासबिसारा॥
सिथिलबरौनि नयनसोइ धारत। नीचि दृष्टि सों नाक निहारत॥
बिन तरंग सागर की नांई। बिना बात दीपकछबि पाई॥
बृष्टिबिहीन पयोद समाना। प्राण चढ़ाइ रहे भगवाना॥
परत ललाटविलोचनजोती। हिमकरकला मन्दछबि होती॥
नव द्वारन महँ मनगति बांधी। धरितेहिहृदय लगायसमाधी॥
जो अनंत मुनि ज्ञानि बिचारत। निजमहँहरसोइ ब्रह्मनिहारत॥

दूरहिं लख्यो काम यहि भांती । यती सरूप त्रिपुरआराती ॥
प्रभुअनुभाव हेत धनु बाना । करसों खसत मार नहिं जाना ॥
तेहि अवसर बनदेबिन संगा । गिरिजहि आवतलख्यो अनंगा ॥
फूल अशोक रुचिर तन धारे । कर्णिकार सन अंग सँवारे ॥
निर्गुण्डी के कुसुम सुहाए । भूषन रुचिर अनूप बनाए ॥
पहिरे रुचिर लाल रंग सारी । जो लखितरुनअरुन छविहारी ॥
डोलत उमा सोह तहँ कैसी । फूलन लसी लता कोउ जैसी ॥
चलत उमा तहँ भूमि निहारत । करन कुसुमकरधनी संभारत॥
गंधकाज मुख लगि जो आवत । पंकज सन सोइ मधुपउड़ावत॥
तब मनोज सोइ अंग निहारी । जोलखिरतिहुं ग्लानि भइभारी॥
कीन्हों तहँ विचार यहि भांती । अब जीतिहों त्रिपुरआराती ॥
तब सोइ द्वार उमा चलि आई । जहं बैठे शिव ध्यान लगाई ॥
मन महं परम जोति हर देखी । लह्यो तबहिं आनन्द बिसेखी ॥
तेहि अवसर बाढ़त महि भारा । बलबड़करि फनिनाथ सँभारा॥
मंद मंद मोचत निज प्राना । बीरासन खोल्यो भगवाना ॥
कह्यो नन्दिकेसर शिर नाई । सेवा हित गिरजा, प्रभु, आई॥
पशुपति भृकुटिछेप कछु कीन्हा । करु प्रवेस यह आयसुदीन्हा ॥
उमा सखिन तब माथ नवाए । प्रभुपद मधुऋतुफूल चढ़ाए ॥
गिरिजा अलकबीच के फूलन । डारत महादेवपदमूलन ॥
गिरत कान पल्लव अभिरामा । सदाशंकरहि कीन्ह प्रनामा ॥
तेहिं लखि भूतनाथ जगदीशा । ह्वै प्रसन्न यह दीन्ह असीसा ॥
'लहु सोइ पति गिरिराजकुमारी । जिन नहिं लखी और जगनारी'॥
नहि जो कुछ भाषत भगवाना । कबहुंक होत सांचतजिआना ॥
दीपक सौंह पतँग सम मारा । निजसरअवसर तुरत विचारा॥
हरहि दीन्ह निजकर गिरिबाला । दिव्य कंजबीजन की माला ॥
भक्तप्रीति के हेत गुसांई । लियो ताहि निज हाथ बढ़ाई ॥
शर अमोघ सम्मोहन नामा । धनु पर धर्यो तुरंतहि कामा॥

चन्द्र उवत जलराशि समाना। भए अधीर कछुक भगवाना॥
गिरिजा सन्मुख देखि पिनाकी। एक छिन रहे तासु मुखताकी॥
उमाप्रेम प्रगट्यो तब बाढ़ी। अंग अंग रोमावलि ठाढ़ी॥
एकटक पशुपतिचरन निहारी। गदगद खड़ी गिरीशकुमारी॥
तब महेश निज चित्तविकारा। बस करि प्रभु निज मनहिं सँभारा॥
पुनि सोइ कारन जानत हेतू। चहुंदिशि लख्यो तहां वृषकेतू॥
तहँ सोइ दहिन कान लगिताने। लक्ष्य साधि धनु शर संधाने॥
कांध झुके खैंचे पद बामहि। देख्यौ भूतनाथ तहँ कामहि॥
भयो क्रोध तपभंग विचारी। भृकुटी कुटिल कीन्हत्रिपुरारी॥
निसरि ललाटनयन सन आगी। प्रबल तेज ह्वै कामहि लागी॥
"छमहु; छमहु यह क्रोध तुम्हारा। 'हा!हा!!करि ज्योंसुरनपुकारा॥
त्यों वह शंकरनैनकृशाना। कीन्ह मनोजहि छार समाना॥
लहि दुख वज्रपात की नाईं। रतिहि तुरंतहि मूर्च्छा आई॥
प्रियप तमरन ज्ञान हरि लीन्हा। जनु उपकार तासु सँगकीन्हा॥
निज तपविघ्नतरुहि यतिराई। तुरत बज्र सम काटि गिराई॥
नारिन छोड़न हित भगवाना। भए तहँहि प्रभु अन्तरधाना॥
व्यर्थहि पितामनोरथ जानी। पुनिनिजरूप विफल अनुमानी॥
सखिन सौंह ह्वै लज्जित भारी। गई भवन दिशि शैलकुमारी॥

लखि सुतहि मूंदत नयनयुग त्रिपुरारिकोप डेरायकै।
अनुकंपनीय विचारि तेहि हिमवान झपटि उठायकै॥
पथ छांड़ि अंग बढ़ाय तहँ अतिवेग बस निज गृहगयो।
कर धरत पद्मिनि दन्त लागि गजराजसम सोहत भयो॥

चौथासर्ग।

रति का विलाप।

तब उपकारक मूर्छा त्यागी। बिबस मनधूोजब तहँ जागी॥

विधवादुख तेहि चहत जनावा। मनहुं दैव तेहि, आप जगावा॥
गए मोह दोउ नैन उघारी। देखन लगी कामप्रियनारी॥
रति यद्यपि चहुंओर निहारा। पर्‌यो न लखिसोइप्रानपियारा॥
"धरहुप्रानकै, पतिसुख दाता"। असकहिउठी बिकलअकुलाता॥
लख्यो धरनि पर पुरुष अकारा। शंकरक्रोधअग्नि कर छारा॥
परी धरनि पति की गति देखी। भयो रतिहि तब दुःख बिसेखी॥
लटछिटकी तहँ कीन्हविलापा। सो सुनि भयो बनहुं सन्तापा॥
उपमा देत सकल संसारा। रह्यो रूप जो नाथ तुम्हारा॥
सो लखि भस्म न दरकत छाती। अहो कठोर नारि की जाती॥
तब अधीन प्रभु जीवन मोरा। तुम छिनमहँ सब बंधनतोरा॥
अहह गए कहँ, नाथ पराई। नलिनि भंजि धारा की नाई॥
अप्रिय न कीन्ह नाथ कछु मोरे। नहिं कछुकियो अप्रिय मैं तोरे॥
रतिकबसनपिय तोहिबुलावति। कहु, केहिहेत न दरसनपावति॥
परतिय नाम लेन अपराधा। एक बार तोहि नोविन बांधा॥
केस रज आंखिन महं डार्‌यो। बार बार कंजन तेहि मार्‌यो॥
कै सोइ दोष सुमिरि तजि नेहू। प्राननाथ, नहिं दरसन देहू?॥
तुम जु नाथ, परलोक सिधारे। आय सकत मैं पास तुम्हारे॥
पै, कहु, काह करै संसारा। जासु सकल सुख तवआधारा॥
निज प्रियबंधुनाश अब जानो। शशिनिज उदय व्यर्थ अनुमानो॥
पावत बीतहु पाख अँधेरे। तजत छीनता दुःख घनेरे॥
जाकी रुधिर अरुनरँगगासी। जोगति कोयल बैन प्रकासी॥
सोइ तुम बिना बौर के बानहि। मधुरि ऋतुपाय कौन संधानहि॥
जोलहि धनुषकस्यो बहु भांती। अब तुम बिन भौरन की पांती॥
अति करुना करि कूजत सोई। मो दुख साथ देत जनु रोई॥
लै बसन्त के कुसुम सुहाये। जो भूषन मो हेत बनाये॥
तिनहिधरतनिजनिरखिसरीरा। कहु केहिभांति धरौं जियधीरा॥
पतँग समान दाहि निज अंगा। मैं ऐहौं तव निकट अनंगा॥

सुरसुन्दरि निज रूप दिखाई । जो न नाथ, तोहि लेइं लुभाई ॥
बिछुरतनाथ न तन तजिदीन्हा । रहि छिनएक बिलंब इनकीन्हा ॥
मम अपवाद भयो जग माहीं । यद्दपि अजहुं आश्रौं तव पाहीं ॥
मृतकक्रिया किमिकरौं तुम्हारी । क्रूर शंभु तव देहहु जारी ॥
तोहि निजअंक बीच अनुधारत । हौं सुमिरत निजवान सुधारत ॥
वह चितवनिकरि दृगअनियारे । वह बसंत सँग कथन तुम्हारे ॥
कहँ अब परम मित्र मधु तोरा । जिन फूलन तव चापहिजोरा ॥
कै नहिं कोप तासु त्रिपुरारी । कीन्ह नाथ, जो दसा तुम्हारी ॥
रति के बचन बान सम लागे । सुनि वसंत प्रगट्यो तव आगे ॥
तेहि विलोकि पीटत निजछाती । कामनारि विलपो वहु भांती ॥
खुलत द्वारसम निज जन देखो । बढ़त दुःखसरिवेग विसेखो ॥
कामनारि बोली ह्वै दीना । लखु मित्रगति बसंत प्रवीना ॥
भयो शरीर छार की नाईं । रहन न देत वायु एक ठाईं ॥
बेगहि मिलहु काम, यहि आई । तव दरशनलालस ऋतुराई ॥
तजि निजनारि परहु नर चाहत । पै मित्रन संग प्रीति निबाहत ॥
इन्हतव सरन शक्ति असदीन्ही । सकल सृष्टि तुम्हरेबस कीन्ही ॥
बात बुझे दीपक की नाईं । गए न लौटि सकें ऋतुराई ॥
दुख बस धूमिल मोहिं निहारी । बाती सम अब देखु बिचारी ॥
काम मारि मोहि छांडि विधाता । हत्या लीन्ह, आधिही भ्रात ॥
अब उपकार करहु मधुमासा । मोहिं जारि पठवहु पतिपासा ॥
चन्द्र संग कौमुदी नसाहीं । मेघ जात बिजुरी नसि जाहीं ॥
पतिसंग चलब नारि कर धर्मा । जानत सकल जगत यह मर्मा ॥
अब यहि भस्महि अंग लगाई । बैठब आगिहि सेज बनाई ॥
तव सहाय मैं अगनित बारा । सेजहि रचि रचि फूलसँवारा ॥
मोबिनती सुनि बेगहि आवहु । अब बंसत, मम चिता बनावहु ॥
तव तुरत तहँ आगि लगाई । जारेहु दक्षिण वायु चलाई ॥
तुम जानत नहिं बिन ममसंगा । सुखी रहत छिन एक अनंगा ॥

इतना करि दीजेउ मतिधीरा। हम दोउन्ह अंजलि एक नीरा॥
तेहि परलोक बीच हम पाई। बिन बांटे पाइब, ऋतुराई॥
आम बौर दीजेहु दुइ चारी। तब मित्रहिं मंजरि अतिप्यारी॥
तेहि अवसर तहँ भइ नभबानी। बिकलमीनके हित जिमिपानी॥
धीरज धरहु कुसुमसरनारी। पतिहित करहु शोक जनिभारी॥
सुनु जेहि हेत पतंग समाना। जरयो काम शिवनैनकृशाना॥
अपनिहि सुता संग एक बारा। भयो बिधिहिअभिलाषअपारा॥
बस करि निजहि साप सोद यऊ। रतियहआजुतासु फल भयऊ॥
पारबती करिहैं तप भारी। तासंग करि विवाह त्रिपुरारी॥
लहि सुख तबहि भूतगननाथा। धरिहैं काम अँग के साथा॥
बिनती धर्म बहुत जब कीन्ही। तबयह सापअवधि करिदीन्ही॥
यहि ते कामनारि, धरि धीरा। पतिसंगम हित राखु सरीरा॥
भानुतेज बस सरित झुराई। फिर बाढ़त प्रबाह सँग पाई॥
यहि विधि गुप्तदेव समुझावा। तासु मरनव्यवसाय छुड़ावा॥
तासु बचनकर करि विश्वाता। ताकहँ कीन्ह शान्त मधुमासा॥

ह्वै छीन विपत्ति कठोर लहि तब कामनारि विचारिकै।
लागी निहारन अवधिदिन कोउ भांति धीरज धारिकै॥
जिमि प्रबल भानु प्रकाश महँ अति मलिन चंद्रकला रहै।
पै लहनहित निजस्वच्छ छबि परदोष को छुन छुन चहै॥

पांचवां सर्ग।

श्री पार्वतीजी की तपस्या और बरदान।

सौहहिं शंकर जारि अनंगा। कीन्हों उमामनोरथ भंगा॥
गिरिजा रूप तुच्छ करि जाना। जो नहिं सक्यो मोहि ईसाना॥
सुंदर छबि जानहिं तिय सोई। देखत प्रियहिं लुभावै जोई॥
निजछबि सफलकरनहित बारी। करन चहयो तप शैलकुमारी॥

तप बिन सकत कौन कहु पाई। प्रेमसहित पति शिव की नाई?
सुनत उमहि शिवपदअनुरागी। करत प्रयत्न घोर तप लागी॥
बोली ताहि गोद लै मैना। तप सन ताहि निवारत बैना॥
अगनित कुलदेवन आराधी। सकहुमनोरथ निज सबसाधी॥
कहँयह कुसुम सरिस अँगतोरा। कहं तपसिनकर ब्रत अतिघोरा॥
यहि विधिकह्यो यद्पि समुझाई। सको न तपसन उमहि हटाई॥
निश्चिल मन जलवेग समाना। रोकि सकै असको बलवाना॥
पठै सखिहि गिरजा पितुपासा। मांग्यो तपहित निजबनबासा॥
सुनानियम सुनि अतिसुख पाई। आज्ञा तुरत दीन्हि गिरिराई॥
गई उमा जो सुन्दर धामा। गौरीसिखर लह्यौ सोइ नामा॥
तहँ सोइ मोतिनहार उतारी। बल्कल धरयो गिरीशकुमारी॥
सोहत रह्यो केश सँग जैसा। तामुख भयो जटा लहि तैसा॥
जिमि सेवार अरु भँवरनपांती। सोहत कंज संग एक भांती॥
ब्रत हित मूंजकरधनी लीन्ही। तासु देह जिन पुलकित कीन्ही॥
प्रथम धरत तिन अतिदुखदयऊ। रक्त समान तासु अँग भयऊ॥
जिन अँगुरिन ओठन रग मेले। जिन हाथन नित कन्दुक खेले॥
ब्रतहित कुसन छेदि सोर बाला। लीन्ही तहां अक्ष की माला॥
धरत सेज सुकुमार सरीरा। फूलन भई जासु तन पीरा॥
सोइ निज बांह सीस तर धारी। सोई महिपर राजकुमारी॥
ब्रत महँ साथ जोग नहिं चीन्हा। यहि सम उमान्यासदुइकीन्हा॥
हरिनिनकहँ निजदृष्टि लुभावनि। लतनदीन्हनिजगतिमनभावनि॥
पाय बोज तेहि सन बहु बारा। करत हरिन विश्वास अपारा॥
रहत ठाढ़ गिरिजा ढिग आई। जब नापत सोइ नैन मिलाई॥
करत उमा तहँ जप अरु स्नाना। अग्निहि देत हव्य बिधिनाना॥
ता दरसनहित ऋषि तहँ आवत। देखि अचर्ज करत सुखपावत॥
धर्म मांहिं जिन लही बड़ाई। नहिं समुझत कोउ तासुछुटाई॥
तेहि बन पशुन शत्रुता त्यागी। पूज्यो अतिथि रूख अनुरागी॥

होत होम तहँ विधिअनुरूपा। जगपावन बन भयो अनूपा॥
यहि बिधि करि तपनेम भवानी। बांछित फल नहिं पावत जानी॥
समुझि नकछुनिजतनसुकुमारी। करनलगी गिरिजा तप भारी॥
कन्दुक लगत भई जेहि पीरा। तप्यो सो तप सुकुमारशरीरा॥
मनहुं सुबरन सरोजन जोरा। रह्यो तासु तन मृदुल कठोरा॥
शैलसुता ग्रीषम ऋतु पाई। बैठी चहुं दिशि अग्नि जराई॥
जीति नयन सन जोति अपारा। एक टक दिनकरओर निहारा॥
छिन छिन परत दिनेसप्रकासू। ता मुख लह्यो सरोजउजासू॥
पै सुकुमार हेत सँवराई। कछुक तासु दृगकोरन आई॥
लहि नभसन शशिकर अरुनीरा। तरुसम पोख्यो उमा शरीरा॥
यहि विधि पञ्चअग्नि तनजारी। भई धरनि सम शैलकुमारी॥
तपऋतु गए बारि जब पावा। धरनिसरिस बड़तेज जनावा॥
बैठी शिलापट्ट गिरिबारी। सहत निरन्तर वृष्टि बयारी॥
तड़ितनयन सन वर्षाराती। भई तासु साखी की भांती॥
चलत पवन जब बरसत पाला। सोइ पूसनिसि महँ वह बाला॥
चकवा चकइन्ह कृपा दिखाई। रही बैठि पानी महँ जाई॥
कांपत अधर दलन छबि पावत। ता मुख पद्मसुगन्ध जनावत॥
माघरैन जब परत तुषारा। कञ्ज विहीन भयो सर सारा॥
सोइ गिरिजामुखकञ्ज समेता। सर फिर भयो सरोजनिकेता॥
जो तप करन पात नित खाई। बरनि सकै को तासु बड़ाई॥
सोउ तजि लगी उमा तप करना। ताहि कहत यहि हेत अपरना॥
पद्मिनि सी कोमल तन धारत। यहिविधि व्रतनअंगनिजजारत॥
जो मुनि कठिनशरीरन कीन्हा। सोतप उमा तुच्छ करिदीन्हा॥
लिये परास धरे मृग चर्मा। जोतिरूप जनु वैदिकधर्मा॥
मानहु ब्रह्मचर्य्य अवतारा। एकतपसी तेहि बन पगधारा॥
ताहि उचित आसन बैठारी। आदर दीन्ह गिरीशकुमारी॥
सोइ सतकार बहुत बिधि पाई। रुकिएकछिननिजश्रमहिनसाई॥

रसबिनअँखियन उमहिंनिहारी । बोल्यो तपसी बचन बिचारी ॥
कै तोहि सुलभ स्नानहित पानी । यज्ञ हेत कुसधूप सयानी ॥
कै निजबल साधहु तप भारो । तन अधीन सब धर्म कुमारी ॥
कै तब हाथन नित जल पाई । यह निज शोभा लतन बढ़ाई ॥
कै नहि होत मृगन रिसि तोरे । जिनतब हाथनसों कुसछोरे ॥
जो निज चंचल नैन दिखावत । तव दृगउपमा मनहुं जनावत ॥
रूप पापकर हेत न होई । जो यह कहत सत्य सब सोई ॥
पै सुकुमार चरित तव पावन । तपसिनहूं जनु देत सिखावन ॥
जहँ ऋषि फूलन की बलिहारी । सोई मंदाकिनिजलसिरधारी ॥
भयो न तिमि पवित्र गिरिराई । तोसम उमा, सुता जिमिपाई ॥
उत्तम तीनि वर्ग महँ धर्मा । आजु विसेख लखौं यह मर्मा ॥
तोहिलखि अर्थकाम दोउत्यागी । सेवत एक धर्म हितलागी ॥
जाहि पूजि अति प्रेम दिखावा । सो मोंहिजानु न उमा, परावा ॥
सन्तप्रीति नित देखु बिचारी । दस बातन सन होत कुमारी ॥
छमहु उमा अपराध हमारा । बाम्हन ढीठ विदित सन्सारा ॥
मैं कछु पूछन चाहहुं तोही । जो नहिं गुप्त, बतावहु मोही ॥
जन्म प्रजापतिवंश तुम्हारा । तन जनु रुचिररूपअवतारा ॥
सुलभसकल सुखनववय तोरा । कहचाहतफलकरि तपघोरा ॥
लहिदुखदुसह ग्लानिबड़िमानी । कबहुं करत तप नारि सयानी ॥
यदपि उमा बहु कियों विचारा । नहिं लखात सो काज तुम्हारा ॥
नहिं अपमानजोग यह देहा । को आदर न कीन्ह पितुयेहा ॥
पर दुख दीन्ह न सम्भव सोऊ । फनिसनमनि नहिछोरत कोऊ ॥
क्यों यहि बय आभरन उतारी । वृद्धजोग छाला तन धारी ॥
कै कबहुंक शशि तारन त्यागी । कलपत रैन अरुन हितलागी ॥
चहहु स्वर्ग जो राजकुमारी । बृथा तपस्या सकल तुम्हारी ॥
जिते देव किन्नर जग अहहीं । तो तव पितु प्रदेस महँ रहहीं ॥
जो बर हित, तो तजु तप भारी । नहि ढूंढत मनि गाहक बारी ॥

लखिसुन्दरि, तव गरम उसासा । होत मोहिं यहिकर विश्वासा ॥
पै जग महँ नहि देखौं सोई । जो गिरिजा तोहि दुर्लभहोई ॥
अहह कासु अस हृदय कठोरा । लखि भूषनविहीन मुख तोरा ॥
तहँ धूसर रँग जटा निहारी । जाहि न होत दुःख सुकुमारी ॥
लखि मुनिव्रतन होततोहि छीना । भानुजोति बस वदन मलीना ॥
चन्द्रकला सम तोर शरीरा । केहिचेतनहि होत नहिपीरा? ॥
करिहौकबलगि यह व्रत धारा । है मोरेहु कछु पुण्य बटोरा ॥
तासु अर्ध लै निज वर पावहु । पै मोहि ताकर नाम बतावहु ॥
चितअनुकूल सुनत द्विजबानी । उत्तर देत उमा सकुचानी ॥
अंजनबिन दोउ लोचन फेरी । सखी एक गिरिजा तहँ प्रेरी ॥
लखि बोली तब सखी सयानी । सुनहु जु सुननजोग तुमजानी ॥
निजअँग कञ्जसरिस जेहिकारन । तपकरि इन कीन्हो तपबारन ॥
इन्द्र आदि दिगपालन त्यागी । यह शिवपद सेवत अनुरागी ॥
शङ्करमोहन हित एक बारा । जो सर कामदेव तेहि मारा ॥
शिवप्रचण्ड हुंकार लहि भागा । सोई उलटिगिरिजाहियलागा॥
तब सन तासु हृदय अस दहेऊ । हिमपट्टहु पर सुख नहिलहेऊ ॥
किन्नरनारि सङ्ग यह बाला । गावत शम्भुचरित बहु काला ॥
आंसुन बस रुकि पदन सुनाई । अमित बार निजसखी रुलाई ॥
पिछले पहर आंखि जब लागी । बार अनेकन चौंकत जागी ॥
उठी कहत कहँ जाहु पुरारी । झूठे कण्ठ बांह निज डारी ॥
तोहि सर्वज्ञ कहै वृषकेतू । नहिं जानत मोगति केहिहेतू ॥
निजकर चित्रखैंचि यह भांती । झिरक्यो उमा त्रिपुरआराती ॥
शङ्कर मिलन हेत सुकुमारी । करिकरि यतनअमित जबहारी॥
तब निज गुरुजन आज्ञा पाई । यह हम सँग तप हित बन आई॥
जो तरु इन निज हाथ लगाए । तिनफल रुचिर बाढ़ि दिखराए॥
पै जाहित सब तनसुख छूटा । तेहि तरु अजहुं न अंकुर फूटा ॥
नहि जानहुं नर दुर्लभ सोई । यहि मिलिहै प्रसन्न कब होई ॥

तप सन जरत धरनिकी नाई। करै सुखी यहि घन सम आई॥
यहि विधिसुनत सखीमुख बानी। गौरीसकलमनोरथ जानी॥
सत्यकहत यह कै परिहासा। कह्यो रोकि निज हर्षप्रकाशा॥
सुनत बचन गिरिराजकुमारी। फटिक अक्षमाला कर धारी॥
रहीं मौन छिन एक लजानी। बोलीं सिर निहुराय भवानी॥
सखी तोहिद्विज सत्य सुनावा। चहत फाँदि हम यह पद पावा॥
यह तप तुच्छहिबल हम पाहीं। कहां मनोरथ की गति नाहीं॥
तब बोल्यो बरनी हम जाना। तुम चाहत सोइ हर भगवाना॥
असुभवस्तुतोहिनिरतिबिचारी। चहौं न तव उत्साह कुमारी॥
तव कङ्कनयुतकर केहि भांती। धरिहैं उमा, त्रिपुरआराती॥
लसत भयङ्कर सांपन देखी। ह्वैहै ताहि न दुःख बिसेखी॥
उचित जोग नहि इनकर होई। लखहु बिचारितुमहि यहसोई॥
एकदिशि शुचि दुकूलयहतोरा। शङ्करनागचर्म एक ओरा॥
जे पद रचे महाउररञ्जन। बिचरनजोग कुसुमयुत अंगन॥
परैं परेतभूमि पद सोई। चाहत,अस न तोर रिपु कोई॥
यहिते अनुचित कहु को आना। जो तोहि मिलैं उमा, भगवाना॥
हरिचन्दन कर लेप बिहाई। लगि है चिता भस्मअँग आई॥
जो गजराज चढ़न के जोगा। सोइ विवाह पाछे सब लोगा॥
चढ़त बूढ़ बृष तोहि निहारी। करिहैं गिरिजा हँसी तुम्हारी॥
तन कुरूप, कोउ मूल न जानत। धनहिं दिगम्बर रूप बखानत॥
जो कछु नर देखहि बर माहीं। सो शङ्कर महँ एकहु नाहीं॥
तजहु अनिष्ट मनोरथ बारी। कहँ तव रूप कहां त्रिपुरारी॥
वैदिकक्रिया कबहुं बुध लोगा। कहत मसानसूल के जोगा॥
सुनि द्विजबचनक्रोधकरिभारी। तादिशि करि भ्रूभङ्ग निहारी॥
बोली मूढ़, न जानसि वोही। जो असि बचनसुनावस मोही॥
जासु मंदमति हेतु न जानत। बड़नचरितसोइ तुच्छबखानत॥
जो यहि लोक बिपति अतिपाई। कै चाहत जग लहन बड़ाई॥

ते सेवन मंगल शुभ जानी। जगअधार शङ्कर गुणखानी ॥
जगसम्पति हित मंगलआसा। करत स्वतंत्रवृत्ति नित नासा ॥
निरभिलाष जगपालक सोई। तेहि न काम कछुइनकरहोई ॥
यदपि लखात दरिद्र समाना। सकल ऋद्धिकारन भगवाना ॥
यदपि मसान बीच नित रहहीं। त्रिभुवनपतिपुरानतेहि कहहीं ॥
धरत यदपि प्रभु रूप भयङ्कर। तऊ प्रसिद्ध सदा शिव शङ्कर ॥
महिमा अगम अलौकिक सोई। यहि जग मांहि न जानत कोई ॥
कै भूषनन सँवारत अँगा। कैवा चहुंदिशि लसत भुजङ्गा ॥
कै सोहत कपाल इक लीन्हे। कै चन्द्रहि चूडामनि कीन्हे ॥
सोहत सकल मूढ़ अँग ताके। विस्ववस्तु सरूप सब जाके ॥
जो मसानरज धरत सुहावन। छुवत शरीर होत सोइ पावन ॥
नृत्यकाल जब धरनि गिरावत। साइरजसुरनिजसिरनउठावत ॥
वृष चढ़ि चलतबदपित्रिपुरारी। इंद्र जासु सुरगज असवारी ॥
स्वर्गफूलरज करत गिराई। लाल तासु अँगुरिन सिरनाई ॥
कह्यो यदपि बड़ दोषबिचारी। तऊ बात एक सत्य तुम्हारी ॥
विधि कारन पुरानजेहिगावत। कहु को तासु मूल नर पावत ॥
तुम जस सुनेहु होहिं हर सोई। कछु बिवाद कर काज न होई ॥
मो मन एक भाव तेहि लागा। डरत न लोक काम अनुरागा ॥
बरजहु सखि यह बोलनचहहीं। अधरओठकछु फरकत अहहीं ॥
करत बड़ननिंदा नहिं सोई। सुनत सोउ अघभाजक होई ॥
मैं आपहि जैहों यहि त्यागी। अस कहि उमा उठन जबलागी ॥
तब निज रूप तुरत प्रभु धारी। गिरिजहिगह्योबिहँसित्रिपुरारी॥

चल्यो स्वेद अँग अँग उठयो, कांपि महेश निहारि।
परे शैल सरि सम चकित, खढ़ी गिरीशकुमारि ॥
प्रभु बोले "धनि, धनि, उमा, भयो आजु तब दास।
"कीन्हो निज बस मोहिं करि,तप अनुराग प्रकाश ॥"

सुनत बचन सब दुख मिटे, श्रम को रह्यो न लेस।
काजसिद्धि लहि भूप नित, बिसरत सकल कलेस॥

छठा सर्ग।

श्री पार्वतीजी की मंगनी।

उमा शिवहि प्रसन्न जब पावा। सखिहिप्रेरि यह बचन सुनावा॥
नाथ पिता मम भूधरराजा। तेहि परमानि करहु सबकाजा॥
ह्वै है जो तुम बात विचारी। असकहितज्योउमहित्रिपुरारी॥
जोतिसरूप मुनिन तेहि काला। सुमिर्‌यो तहँ शिवदीनदयाला॥
निज जोतिन नभ करतप्रकासा। आये सोइ तुरंत प्रभु पासा॥
दिव्य फूल दिग्गजमद साने। जे मंदाकिनिनीर नहाने॥
मोती लसत जनेऊ धारे। सुवरन बकलन अङ्ग सँवारे॥
करन धरे मनिमाल अनूपा। जनु सुरतरु वैखानसरूपा॥
जिन्हलखि निजरथकेतु झुकावा। करि हय नीच भानुसिरनावा॥
लह्यो बराहदसन गुनधामा। प्रलय काल महिसंग बिश्रामा॥
बिधि पीछे निज सृष्टि बनाई। सृजनहारपदवी जिन पाई॥
यदपि पूर्वतपफल सोइ पाये। तऊ जो तापसवेष बनाये॥
अरुन्धती पतिपद दृग डारे। ज्यों तपसिद्धि नारितन धारे॥
मुनि सम तासु कीन्ह सनमाना। नहिं कछु भेद कीन्ह भगवाना॥
सन्तगुनहिं पूजत संसारा। करत न नारी पुरुष बिचारा॥
तब मुनिवर शंभुहि सनमानी। बोले पुलकि प्रीति बस बानी॥
जो श्रुतिपढ़ा सहित अनुरागा। जो हम कीन्ह होम ब्रत यागा॥
जन्म जन्म हम जो तप कीन्हा। आजुबिरंचितासुफल दीन्हा॥
जहँ न मनोरथ की गति होई। धर्‌यो हमहिं प्रभु निजमनसोई॥
बसहु जासु मन त्रिभुवनसांई। सकै तासु महिमा को गाई॥
अहो धन्य प्रभु भागि हमारी। जे तव चित्त आये त्रिपुरारी॥

रवि शशि परे जु हम पदपावा। प्रभुसुमिरत सोइ और बढ़ावा॥
लहत अनुग्रह आजु तुम्हारा। भयो सफल यह भेस हमारा॥
जगदीसन सों आदर पावत। निज गुन सदा प्रतीत करावत॥
हम का कहैं प्रोति निज स्वामी। सब जानहु प्रभु अन्तरजामी॥
देखत यदपि प्रगट भगवाना। तदपि न तोर मरम हम जाना॥
नाहि कृपालु बुद्धिपथ रहहू। निज स्वरूप प्रभु आपहिकहहू॥
जो धरि सकल सृष्टि विस्तारी। कै जो धरि पालहु त्रिपुरारी॥
कै जेहि रूप करहु संहारा। रूप कौन यह नाथ तुम्हारा॥
है दुर्लभ यह विनय कृपाला। करु अज्ञा, प्रभु दीनदयाला॥
ऋषय बचन सुनि उत्तर दीन्हा। दसनजोतिचन्द्रहिसुचिकीन्हा॥
"तुम जानत मुनि मोर सुभाऊ। निजस्वारथ लागि करौन काऊ॥
आठ अलौकिक मूरति धारी। पर स्वारथहितप्रकृतिबिचारी॥
शत्रुहाथ देवन दुख पाई। घन विलोकि चतुक की नाई॥
चाहत सुर एक तनय हमारा। जो दानवगन करै संहारा॥
अग्निजन्म कहँ अरनि समाना। सुतहितउमहिजोग हम जाना॥
अब मम हित सोई करहु उपाई। उमा शैल सन मांगहु जाई॥
ताके सँग संबन्ध लगाई। नाहिन कछु हमार हरुआई॥
सकल भूमिकर भार सँभारत। शैलन बीच ऊंच सिर धारत॥
जेहि बिधि बोलब शैलहि जाई। सो तुम सब जानहु ऋषिराई॥
तुम्हरे रचे नीतिआचारा। मानत सन्त सकल संसारा॥
अरुन्धतिहु तहँ होइ सहाई। इहां लगत गृहिनिनचतुराई॥
अबसोइसिद्धकरहु निज काजा। जाहु रहै जहँ भूधरराजा॥
कोशीरुचिरप्रपात किनारे। ह्वै हैं संगम फेरि हमारे"॥
मुनिगन आदियतिहि जब देखा। करत विवाहउछाह बिसेखा॥
तप महँ रहत नारि अनुरागी। तासुलाज इन्हतु रतहिं त्यागी॥
गिरिदिशिमुनिन गवनतबकीन्हा। प्रभु कोशीतट आसन लीन्हा॥
देवऋषय चढ़ि तुरत अकासा। औषधिप्रस्थ गये गिरिपासा॥

पुरी सो करिअलकहि जनुदूरी। लखतमनहुसबऋधिसिधिपूरी॥
अमरनगर जनु सकल उजारी। रचिविरंचिसोइपुरी सँवारी॥
जहँ बिलजोनि अनेक तुरंगा। सिंहहि जहां न डरत मतंगा॥
किन्नर यक्ष पुरुष जहँ रहहीं। बनदेवी सब जहं तिय अहहीं॥
बजतमृदङ्ग लसत घन गेहा। जहां होत गर्जन संदेहा॥
ताल हीन पुनि घनहि बिचारी। संशय करत दूर नर नारी॥
ध्वजसम होत दुकूल सुहाए। जहँ सुरतरुडारन फैलाए॥
विद्याधर अनेक जेहि माहीं। सोवत संतानक तरु छाहीं॥
पुर बाहर एक उपवन सुन्दर। जहा गन्धमादन एक गिरिवर॥
हिमवतपुर सोइ मुनिननिहारी। स्वर्गलहनबिधि व्यर्थबिचारी॥
द्वारपाल सब ऋषिन बिलोका। पूज्य जानि पै तिनहिं न रोका॥
उतरत क्रमसन ऋषिगनपांती। भइ जलसूर्य्यबिम्ब की भाँती॥
मुनिन्हबिलोकिहिमाचल आवत। चल्यो अर्घ लै धरनिनवावत॥
करि आदर पुनि मार्ग देखाई। बैठायो घर भीतर जाई॥
करि पूजा बिधिवत गिरिराई। हाथ जोरि बोल्यो सिरनाई॥
लखत आज यह कृपा तुम्हारी। फल बिन फूल मेघबिन बारी॥
मनहुं लोह सन भयो सुजाना। तजि मूढ़ता लह्यो जनु ज्ञाना॥
तीर्थ समान मोहिं अब जानी। शुद्ध हेतु पुजिहैं सब प्रानी॥
साधु सन्त जेहि मानत सोई। जगपावन तीरथ शुचि होई॥
तव चरनोदक सुरसरिनीरा। मोहिकीन्होपवित्र मुनिधीरा॥
जंगम रूप करत तब सेवा। थावर चरन परत मुनिदेवा॥
बिलग विलग मम दोउ आकारा। लह्यो ऋषीस प्रसाद तुम्हारा॥
चहुंदिशि यद्यपि अँगबिस्तारा। नहिं समात यह हर्ष हमारा॥
पावत प्रभु तव तेज प्रकाशा। भयो न एक गुहातम नासा॥
अंतःकरन तमहु मुनिराऊ। बिनस्यो प्रभु तव दरसप्रभाऊ॥
नहिं लखात प्रभु काज तुम्हारा। सुलभ तुमहिं सबयहिसंसारा॥
जानौं एक मोहिं पावनकाजू। अहै तुम्हार अनुग्रह आजू॥

तदपि मोहिं कछु आयसु दीजै । दास बिचारि कृतारथ कीजै ॥
प्रभुप्रसाद जानत जन सोई । जब सेवा हित अज्ञा होई ॥
मैं अरु यह प्रभु दासि तुम्हारी । यह कन्या कुलप्रानपियारी ॥
जेहि अनुसासन देहु मुनीसा । सो करिहैतेहिधरिनिजसीसा"॥
तब अंगिरहि जोगसब जानी । प्रेरयो सो बोले मृदुबानी ॥
जो कछुकहे बचन गिरिनायक । अहैं सत्य सबतुम सबलायक ॥
जग ऊपर ज्यों शृङ्ग तुम्हारा । त्योंगिरीश तब चित्त उदारा ॥
निजमहँसबचरअचर जियावहु । यहितें हरिगिरिरूप कहावहु ॥
निजमृनालसम फनन अहीसा । धरि न सकतमहिभार गिरीसा॥
जो न पतालमूल लगि जाई । धरतेहुधरनि खंचि गिरिराई ॥
जिमि धारतसुचिनीर सुहावन । तब सरिकरतसकलजगपावन॥
तव कीरति निज पुराय प्रभाऊ । त्यों जगशुद्ध करत गिरिराऊ ॥
ज्यों हरिपदसन निसरन काजा । पूजत गंगहि संत समाजा ॥
त्यों तव सीस चलनहित सोई । सकल जगतबंदित नितहोई ॥
बामन रूप धारि एक बारा । हरिचहुंदिशिनिजअंग बिस्तारा॥
पै स्वभावसन गिरि, अँगतोरा । सदा रहत फैल्यो चहुँ ओरा ॥
यज्ञभाग तुम सुर सम पाई । सुरगिरिमहिमा सकल घटाई ॥
रही जेति तव तनकठिनाई । सो सब थावररूप बहाई ॥
सज्जन सेवन काज बिचारी । यह जंगममूरति तुम धारी ॥
अब हमार सुनु आवनकाजा । यदपिकामतुम्हारहिगिरिराजा॥
यह शुभकाजसिखाय महीधर । हमहुंलहबकछुफलअतिसुन्दर ॥
जो अनिमादि आठगुन धारत । जेहि महेशकहिजगतपुकारत ॥
जो महिआदिक मूरति धारी । सकलसृष्टिनिजशक्ति सँभारी ॥
जेहि निजमहँखोजतमुनि ज्ञानी । जो लहि सब भवपीरनसानी ॥
त्रिकालज्ञ सोइ हमहिं पठाई । तव कन्या मांगत गिरिराई ॥
अब तव उचितधर्म यह होई । तुरतहि देहु महेशहि सोई ॥
सतपति दीन्हिकिकबहुं कुमारी । लहतसोच लखिपितुमहतारी॥

सातवां सर्ग।

श्रीपार्वतीजी का विवाह।

तिथि जामित्रयुक्त शुभ बारा। हिमिगिरिसुताविवाह सँचारा॥
घर घर करत विवाहतयारी। साजत मङ्गलबिधि पुरनारी॥
तेहि अवसर भूधर अनुरागा। सकलनगरएककुल समलागा॥
पथ मंदार फूल छितराये। घर घर सुन्दर ध्वजा लगाये॥
शैलराजसन्तान अनेका। तिन महँ यदपि पार्वती एका॥
बहु दिन पर देखी समजानी। भई ताहिप्रिय अतिहि भवानी॥
निज निज अंक बंधु बैठारी। दै भूषन आसीस उचारी॥
मैत्र मुहूरति जब राकेशा। उतरफाल्गुनी कीन्ह प्रवेशा॥
पतिसुतयुक्त शैल कुलनारी। उमामनोहरदेह सँवारी॥
बांधि दूब सरसव के फूला। धरि सायक एक मंगल मूला॥
शुचि कौशेय नाभि लगिधारी। तहँ सोही गिरिराजकुमारी॥
शर लहि भई उमा छबि कैसी। इन्दुकला रविकर सँगजैसी॥
हरि लोध सन तेल चिकनाई। अँग छबि हित कालेय लगाई॥
स्नान जोग सारी पहिराई। गई चौक महँ नारि लेवाई॥
तहँ बाजत बाजन विधि नाना। गिरिजहिसखिनकरायोस्नाना॥
करि मज्जन ह्वै विमल शरीरा। धारयो शैलसुता शुचिचीरा॥
सोही नीरसेक कछु पाई। कासफूल युत महिकी नाई॥
सखिन संग गिरिजा तहँ आई। जहँ मंडपयुत वेदि बनाई॥
तेहि तहँ पूरब मुख बैठारी। रहीं चकित छिन एकनिहारी॥
बैठीं करन सिंगार सयानी। उमासहजछबि निरखिलजानी॥
धूप धूमसन केस सुखावा। एक फूलन तेहि बांधिबनावा॥
अंग श्वेतरंग अगर लगावा। गोरोचन सन चित्र बनावा॥
लागी उमा, चकोरन संगा। सुन्दर छबि पावत जिमिगंगा॥
लसत मेघ शशिछबि अधिकाई। मधुप समेत सरोज दुराई॥

शैलसुतामुख अलकन संगा। काटे सब उपमान प्रसंगा॥
छविपावन हत श्रुतिजवअंकुर। निरखत मनहुं कपाल मनोहर॥
सुन्दरताफल निकट विचारी। ओंठन छबि अनूप अति धारी॥
"यहिते छुवहु भूतपतिसीसा"। चरन रंगि एकदीन्ह असीसा॥
गूढ़ बचन सुनि उमा लजानी। मारयो तेहिनिजमालभवानी॥
विकसितकंज सरिस दृग जाके। यदपि सिंगार व्यर्थ अंगताके॥
तउँ काजल कहं मंगल जानी। उमानयन महं दीन्ह सयानी॥
विकसित कुसुमलता की भांती। जगमगात नछत्र संग राती॥
चकचकई संग सरित समाना। भई धारि भूषन बिधि नाना॥
लै दरपन गिरिराजकुमारी। भईचकित निजछबिहिनिहारी॥
शैलसुता मन बढ़यो उछाहू। मिलैं प्रानपति त्रिभुवननाहू॥
तरुनिसिंगार एक फल एही। होइ प्रसन्न नाथ लखि तेही॥
तब अंगुरिन हरिताल लगाई। मेना गिरिजामुखहि उठाई॥
उमा मनोरथ मानहुं बिचारी। कीन्ह विवाहतिलक महतारी॥
बूड़त प्रेमपयोधि अगाधा। सुताहाथ कंकन तब बांधा॥
फेन सहित छीरोद तरंगा। शरद रैन जिमि हिमकर संगा॥
पहिरि दुकूल स्वेत गिरिबाला। लै दरपन सोही तेहि काला॥
कुलदेवन तब बंदि भवानी। गहे सतिन के चरन सयानी॥
"लहु पतिप्रेम अखंड कुमारी"। सुनिअसीसलजानिगिरिबारी॥
जो असीस प्रिय बंधुन दीन्ही। अर्द्धङ्गिनी तुच्छ सो कीन्ही॥
निज अनुरूप सकल गिरिराजा। करि बिवाहमंगल सबकाजा॥
शिवआगमन समीप बिचारी। बैठ बंधु संग सभा मँझारी॥
इहँ प्रभुकर श्रृंगार अनूपा। मातन कीन्ह समय अनुरूपा॥
तिनके आदर हेत पुरारी। तहँ आपहिमंगल छबिधारी॥
लखि अवसर सोइ वेष भयंकर। ब्याह जोग अतिभयोमनोहर॥
लसत रुधिर गजचर्म भयंकर। भयोदुकूलसरिस अतिसुन्दर॥
चमकत नयन सीस पर जोई। भा हरिताल तिलकसमसोई॥

लसत भुजंग अंग पर जैसे । फनमनिसहित रहे सोइ तैसे ॥
देखि न परी देह तिन केरी । रही एक मनिजोति घनेरी ॥
दिनहुंजासुसुचि किरन न जाहीं । नहि दरसत कलंक जेहिमाहीं ॥
जासु सीस सोइ चंद बिराजा । तेहिन औरमनिककछु काजा ॥
निजमुख, करिसिंगारयहिभांती । असिमहलख्यो त्रिपुरआराती ॥
धरि तब नन्दिकेसकर हाथा । वृषपति चढ़े भूतगननाथा ॥
चलीं शंभु पाछे सब माता । धरि मंडलयुत मुख जलजाता ॥
पग पग कर कुंडलन हिलावत । चलत कंजसर नभहि बनावत ॥
लिये एक कर खड्ग बिशाला । चलो तासु संग कालि कराला ॥
सोहत धरि कपाल यहि भाँती । ज्यों बक संग नील घनपांती ॥
तब बरात आगे सब जाई । मंगल तुरुही गनन बजाई ॥
बैठे सुर बिमान बिधि नाना । निज सेवा अवसर तब जाना ॥
तब दिनेस बिसुकर्मबनावा । प्रभु पर सुन्दर छत्र लगावा ॥
तासु दुकूल निकट सिर धारी । जनु गंगाधर भए पुरारी ॥
धरे रूप रविनंदिनी गंगा । चामर करत चलीं प्रभु संगा ॥
निजसरिमूर्त्तिगदपितिन त्यागी। तऊ हंसयुत अंगछबि लागी ॥
आए प्रभु पहं प्रथम बिधाता । ता पाछे श्रीपति जगत्राता ॥
हरमहिमा जयस्वरन बढ़ावत । मनहु कृसानु माहिंघृत लावत ॥
सुनि संदेह करै जनि कोई । त्रिभुवनपतिमूरति एक होई ॥
निज उपाधि सनतोनि लखाहीं । तउ इन बीच भेद कछु नाहीं ॥
हरि बिधि आदि कबहुं बृषकेतु । हरि कबहुंकहरबिधि कर हेतू ॥
कबहुं आदि रह सिरजनहारा । इहां न कछु बड़ छोट बिचारा ॥
तहं निज वेष बिनीत बनाए । इन्द्र आदि सुरगन चलिआए ॥
लहि अवसर जबनन्दि बतावा । दृष्टिप्रसाद हेत सिर नावा ॥
सिर नवाय ब्रह्महि सतकारा । हरिहिनिरखिकछुबचनउचारा ॥
मुसुकाने सुरनाथ निहारी । और सुरन पर दृष्टिहि डारी ॥
जो जेहिजोग कृपानिधि चीन्हा । तासु नाथ तस आदर कीन्हा ॥

सुनि जयधुनि सप्तर्षिनकेरी। प्रभु बोले दृग तिनदिशि फेरी॥
'किये प्रथम यहि मंगल काजा। तुमहिपुरोहितनिजमुनिराजा'॥
विश्वावसु आदिक गन्धर्वा। गावत त्रिपुरविजयजस सर्बा॥
नहिं सपनेहु विकार जेहि होई। चले जात पथ पर प्रभु सोई॥
करत खेल नभ महँ वृषराई। होत किंकिनिन शब्द सुहाई॥
घन महं सींग बार बहु मारत। मनहुं मत्तगज तटहि बिदारत॥
चलियहिबिधि हिमवतपुरपाहीं। आए एक मुहूरति माहीं॥
दृष्टि हेमडोरिन शिवशङ्कर। खैंच्यो जनु सोइ नगर मनोहर॥
पुर बाहर जन मुखन उठाईं। देखे भरे उछाह गुसाईं॥
निजशरअंकित नभ सन नाथा। उतरे महि पर सुरगन साथा॥
प्रभुआगमप्रतीत गिरिराई। चल्यो करन बरातअगवाई॥
चढ़े अनेक अमोल मतंगा। निज जगतीधर बन्धुन संगा॥
तरु डोलत सैलहु अस लागा। जनु सोउ चल्यो ईस अनुरागा॥
उघरत नगरद्वार तेहि काला। मिले देवगिरि यूथ बिशाला॥
एकहि सेत भंजि दुइ सरिता। मिलतमनहुं पावसजलभरिता॥
लखि जगवंद्यहि करत प्रनामा। लज्जित भयो शैल गुनधामा॥
पशुपतिमहिमा बस हिमवाना। निजसिरझुकतआपनहिं जाना॥
अति प्रसन्न मन सहित उछाहू। ह्वै बरात आगे गिरिनाहू॥
हाट बाट जहं फूल बिछावा। सोइ निजपुर भीतर लै आवा॥
तेहि अवसर हिमवतपुरनारी। प्रभु दरसन लालसहियधारी॥
चढ़िचढ़ फटिकशिलागृहपांती। तजि घरकाज भई यह भांती॥
बिकसत केस संभारत धाई। एक झपटि झरोखदिशिआई॥
करसों पकरि खरी वह बाला। नहि बांधव सूझो तेहि काला॥
गीले चरन एक सुकुमारी। तुरत दासि आगे सन टारी॥
निजअतिमन्द चाल तहं त्यागी। रंगत महि झरोख दिशिभागी॥
एक नयन अंजन एक लाई। दौरी तहं कर लिए सलाई॥
खरीझरोख सौंह एक भामिनि। टुटीनीबिबांधतनहिं कामिनि॥

भूषन सरिस नाभि कर डारी। खरी तहां निज बस्त्र संभारी॥
लै अधबनि करधनि एक बामा। धाई लखन शंभु अभिरामा॥
पद पद पर मनिरत्न गिरावत। सूत्रमात्र तेहि तरुनि बनावत॥
तिनके बदनसरोजन संगा। चंचल नयन लसत जनुभृङ्गा॥
सोहे पुर झरोख तेहि अवसर। मानहु धरे सरोज मनोहर॥
चंद्रजोति महलन पर डारी। करत प्रकास अटन त्रिपुरारी॥
रचे विचित्र पताक सुहाए। तोरन युत नरपतिपथ आए॥
एकटकतहं पशुपतिहि निहारी। भूलीं सकल विषय पुरनारी॥
जनु सब इन्द्रिन शक्ति विहाई। एक सुन्दरिनयनन महं आई॥
छकींनिरखिछवि नगरसयानी। बोलीं सखिन टेरि मृदुबानी॥
"जो यहि हेत घोर तप कीन्हा। अति सुकुमारिउमाभलचीन्हा॥
दासिहु होत कृतारथ जाकी। को सम होइ नारि के ताकी॥
जो सुन्दर ए अँग जल जाता। तहिं जोरत एक संग विधाता॥
तो यह जोरि अनूप बनाई। प्रगटावत निज बुद्धि खोटाई॥
नहिं ए तन करि क्रोध अपारा। इन कबहुंक कुसुमायुधमारा॥
प्रभुछबिनिरखिग्लनिबड़ि मानी। आपुहि जरयो काम हमजानी॥
सखि इन संग संबंध लगाई। निज मन बांछित फलसबपाई॥
महिधारन हित विदित प्रभाऊ। ह्वैहैं और बिदित गिरिराऊ॥
सुन पुरनारि बचन यहि भांती। होत प्रसन्न त्रिपुरआराती॥
परत अनाजमूठ मन भाए। भूधरनाथद्वार पर आए॥
शरदमेघ सन भानु समाना। धरि हरिकर उतरे भगवाना॥
पैठे प्रभु सोइ गिरिआगारा। जहां विरंचि आगे पगु धारा॥
ता पाछे सुरसहित वज्रधर। सतऋषिआदिकसकलजोगिवर॥
गन तव गए शैलगृह माहीं। अर्थ उपाय संग जिमिजाहीं॥
बैठे तहं आसन पर ईसा। आदर बहु विधिकीन्हगिरीसा॥
रत्न सहित मधुपर्क सुहावा। दुइ दुकूल गिरिपति लैआवा॥
हि सब वेदमंत्र अनुसारा। ग्रहन कीन्ह प्रभु करुनागारा॥

तब पहिराय दुकूल सुहाए। बधू पास सेवक लै आए॥
ज्यों नवशशिकर सिंधु बढ़ावत। शुचिवेला समीप नितलावत॥
बिकसत कुमुदनयन त्रिपुरारी। बाढ़त मुखशशिजोति कुमारी॥
सोहत एक संग दोउ कैसे। पावत लोक शरद ऋतु जैसे॥
मिले दुहुन लोचन तहं धाई। गुरुसमाज लखि रहे लजाई॥
मिलतखिचतछिनरुकिसकुचाहीं। परे लाजबंदीघर माहीं॥
तब गिरिगुरु गिरिजाकर हाथा। दियोधरयोतेहि त्रिभुवननाथा॥
पानिग्रहन छिन यहि संसारा। बरदुलहिनिछबि लहतअपारा॥
धरे निकट जो जोरि अनूपा। केहि मुख कहै तासु छबिभूपा॥
भांवर फिरत सोह यहि भांती। मिलतमेरुतट जिमिदिनराती॥
मूंदत नयन परस सुख पाई। वार तीनि तहँ दुहुन फिराई॥
दुलहिनिसनकुलगुरु द्विजराजा। छुड़वायो पावक मह लाजा*॥
तब गिरिजा गुरुअज्ञा पाई। गंधधूम दिशि निज मुख लाई॥
बार बार कपोल लगि घूमा। सोहत करनफूल सम धूमा॥
भीजिकपोल अरुन छबि पाई। मुरझाने जवप्रसव सुहाई॥
उमहि गुरू सिखयो यह भाखी। सुनियकुंवरि, पावकयहसाखी॥
करेहु धर्म विचार नित त्यागी। सदा शंभुपतिपद अनुरागी॥
सोई निजकान आंखिलगितानी। सुन्यो गोत्रगुरुबचन भवानी॥
ता पाछे ध्रुवदेखन हेतू। शैलसुतहि बोले वृषकेतू॥
कंठहि शब्द लाज बस रहेऊ। सिर उठाय "देखा" असकहेऊ॥
यहिबिधि चतुर पुरोहित पाई। लहि विवाहउपचार सुहाई॥
जगपितुमातु महेस भवानी। बंद्यो बिधिहि पितामह जानी॥
दुलहिहिदीन्ह असीसबिधाता। पुत्रि होहु बीरन की माता॥
पै सोचत शिव हेत असीसा। रह्यो चकित यद्यपि बागीसा॥
फूलन रची बेदि पर जाई। बैठे बधू सहित यतिराई॥

---

*लावा, खील।

अच्छुत छिरकनकर ब्यवहारा । सह्यो जानि प्रभु लोकाचारा ॥
लसतस्वच्छजल बिंदु बिसाला । लखत मनहु मुकुतामनिजाला ॥
धर्‌यो मृनालदंड गहि सुंदर । कमला कमलछत्र तिन ऊपर ॥
प्रगटत भाव बृत्ति अनुरूपा । घटत रसन महँ राग अनूपा ॥
एक छिन लहत अनंद विशेखा । तिन अप्सरानाच तहँ देखा ॥
ता अंतर प्रभुपद परि देवा । मांगी कुसुमबान की सेवा ॥
सुनि प्रभु आशुतोष भगवाना । निज अंग तासु बानपथमाना ॥
लखिअवसरप्रभु विनबत जोई । अवसि तासुकारजसिधिहोई ॥
तब देवन तजि त्रिभुवननाथा । गहि पुनि पारबती कर हाथा ॥
कनककलस युत फूल बिछाए । शुचि सुहाग मंदिर चलि आए ॥

परसत बदन प्रभुकर निवारत गड़त कछु दृग मींच कै ।
वस ब्याहलाज विचारि गिरजहि निकट निज तब खींचिकै ॥
कोउ भांति उत्तर देति तहं निज सखिन अतिसकुचायकै ।
गिरिजहि हंसावत शंभु नागर प्रमथमुखन जनाय कै ॥

इति श्रीअवधवासी भूप उपनाम सीताराम कृत कुमारसम्भव भाषा—
काव्य समाप्त हुआ ।
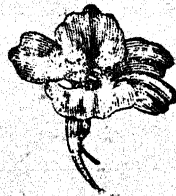
ऋतुसंहारभाषा

छः ऋतुओं का वर्णन

महाकवि श्री कालिदास के प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थ

का

भाषा छन्दों में अनुवाद

श्रीअवधबासी भूपउपनाम

लाला सीताराम बी. ए.

का रचा हुआ

(*Fifth Edition*)

इलाहाबाद :
बाबू मङ्गलराम मैनेजर के प्रबन्ध से राजपाली प्रेस में छपा

१९२१

दाम ~) यह किताब किशोर ब्रदर्स के पास २०३ मुट्ठीगंज
इलाहाबाद में मिलेगी।

श्रीसीतारामभ्यान्नमः

ऋतुसंहारभाषा ।

ग्रीष्म

(जेठ—असाढ़)

प्रानप्रिया, ग्रीषमऋतु आई । दुसह भयो रवि, चंद सुहाई ॥
सांझ होत जनमन हुलसांहीं । जन्तु नहात तड़ाग झुराहीं ॥
छुटि तम नीलधार की भांती । सोहत विमल जोन्हयुत राती ॥
कहुं गेहन महं चलत फुहारा । कहुं मनिजोति अनेक प्रकारा ॥
कहुं चन्दन घसि अंग लगावत । यहिऋतु नर तनताप नसावत ॥
मधुरगन्धयुत विमल अटारी । सुरा प्रियामुखजलजजुठारी ॥
बाजत तंत्रि यंत्र बिधि नाना । मधुर मनोजजगावत गाना ॥
आधी रात रसिक नरलोगा । करैं सदा तपऋतुमहं भोगा ॥
पहिरे अब अति पातर सारी । ऊपर मंजु करधनी डारी ॥
हार अमोल कुचन लटकाए । उर बिच चन्दनलेप लगाए ॥
केस सुगन्ध रुचिर सन बासत । रसिकनतापनारि अब नासत ॥
जावकरग सन विरचि संवारी । नूपुर चरन कमल महं धारी ॥
हंसबोल सम शब्द सुनावत । रसिकनमन अब नारि लुभावत ॥
उर सीतल करि चंदन लाई । हारहि शेखर तासु बनाई ॥
मृदु नितंब पर करधनि सोहत । कासुन मन ग्रीषम तिय मोहत ॥
भीजी सकल पसीनन सारी । जानि मोटि तिय तुरत उतारी ॥
वस्त्र झीन उकसे उरवारी । पहिरैं तुरत तरुनि सुकुमारी ॥
राति समय नित फटिक अटारी । सोवत तिय मुख चंद निहारी ॥
मानि गलानि भए परभाता । पीयर परत मनहु बिलखाता ॥

जरत प्रचंड भानुतप पाई। प्रबल बात बस रजजहंछाई॥
सो महि, बिरह आगि के जारे। सकैं न देखि विदेसि बिचारे॥
प्रबल घामबस मृग बन भटकत। प्यासहेत तारू जब चटकत॥
नीलरंग आकास निहारी। धावत तेहि जलरासि बिचारी॥
सलियुत रैन सरिस यहिकाला। लखितिरछे करि नैनबिसाला॥
तियमुसुकाय बिलास जनावत। कामआगिसन पथिक जरावत॥
दागत पेट जरत मगधूरी। भानु किरन बस व्याकुल भूरी॥
मुहँबाए निज चाल बिहाई। बैठत मोर छांह अहि जाई॥
विकल प्याससन तेज नसाए। हांफत चलत सिंह मुंह बाए॥
केसर हिलत जीभ निज काढ़े। छुवत न गजन यद्‌पिढिगठाढ़े॥
प्रबल भानुकर बस अकुलाई। ढूंढ़त जल इत उत बन जाई॥
निकट सिंहसन, बुधि बल नासे। डरैं न गज पानी के प्यासे॥
आगि लपट सम रविकर लागे। यहऋतुशिखिबलबुधिसबत्यागे॥
बैठो साँप पूंछ फन डारे। छुवत न तउ जनु बैर बिसारे॥
रविकार बस बराह घबराने। परे मोथयुत ताल झुराने॥
खोदत बरत भूमि यहि काला। जनु पैठन सोइ चहत पताला॥
कठिन घाम बस धौंकत नीरा। दादुर सर महं तचत सरीरा॥
कछुक छांह अहिफन तर देखी। बैठत कूदि न रिपु जनु लेखी॥
मीन मरी सब नाल उखारे। भजत त्रास बस सारस सारे॥
किए भीर तन घसत उछारत। गज सब जल कीचर करि डारत॥
चमकत मनिफनि रविकर पाए। बायु पियन हित जीभ बढ़ाए॥
बमत आगि सम विषएकओरा। परत सीस रविताप कठोरा॥
प्रबल प्यास सन व्याकुल होई। छुवत न भेक फिरत ढिग सोई॥
लगेझाग निजमुखन डोलावत। कछुकलालनिज जीभ दिखावत॥
निसरि खोह सन ढूंढत पानी। घाम माहिं अरनी घबरानी॥
बन लगत ढाढ़ा प्रबल कहुँ दिसिभूमि सब लखियतजरी।
लू चलत इत उत उड़त सूखे पात रूखन सन झरी॥

दिननाथ तेज प्रचण्ड बस नहिं नीर देखिए ताल में ।
डर लगत देखत बन सकल यहि कठिन ग्रीषमकाल में ॥
सब पात गिरत झुराय सूखे रूख खग अकुलात हैं ।
घबराय बानरयूथ गिरिके कुञ्ज भीतर जात हैं ॥
बनरोझ ढूंढत नीर मिलि चहुं ओर व्याकुल धावहीं ।
एक तार बांध शरभमृग जल कुण्ड सन हलिलावहीं ॥
अति खिले फूलकुसुम्भ सम सिन्दूर रंग लपटैं छुई ।
पुनि चलत प्रबल बयार बाढ़त वेग सो हौंकी गई ॥
तट रूख डार लतान जनु घबराय पकरत फिरत है ।
छिन एक माहिं दवागि सन बनभूमि चहुँदिशिघिरत है ॥
गिरिखोह भीतर पैठि बमकत प्रबल पवनझकोर में ।
मृगकुल बिनासत कतहुँपाय प्रसार सोइ बन छोर में ॥
कहुं बरत चट चट करत घुमरत उमड़ि सूखेबांस में ।
छन माहिं प्रबल दवागि फैलत बाढ़िचहुँदिशि घास में ॥
अनलगिद्दु लागी सी लगत फल लसत सेम्हलकुञ्ज में ।
अति बेगि लपटत झपटि सूखी डार पातनपुंज में ॥
तरु कोल फुरफुर कटत उछरत सुबरन रंग से ।
चहुँओर नाचत फिरत बन महं वायुझोंकन संग सो ॥
गज सिंह सुरागाय झरसत अंग व्याकुल भागहीं ।
एक एक संग मिलि चलत वैर बिरोध तेहि छनत्यागहीं ॥
चट छांड़ि घन वनकुञ्ज आंच प्रचंड सन घबराय कै ।
तट जरत बालूबिपुल सरि महं झपटि कूदत जाय कै ॥
नित न्हाय फूल गुलाब महंकतलसत कमल सुनीर में ।
उर लसत फूलनहार हिमकरजोतिलगत शरीर में ॥
निसि होत सुन्दरगान बिमल अटान पर मन मनमोद सों ।
यह बितै ग्रीषमकालतियसंग भूप परम बिनोद सों ॥

———

वर्षा

(सावन—भादौं)

मेघन कुञ्जर मत्त बनाए। बिजरी की सुचि ध्वजा उड़ाए॥
गरज सहित जनु बजत नगारा। कामिचित्त हुलसावन हारा॥
नृप समान साजे सब साजा। आयो, प्रिया, सुपावस राजा॥
काजलरासि सरिस छबिधारे। कहुं सगर्भतियकुचसम कारे॥
कहुं नीलोत्पलपत्र समाना। छाए नभ बादर बिधि नाना॥
उनए भरे नीर बस जोई। लखि माँगत चातक जल सोई॥
देत श्रवन सुख गरज सुनावत। मूसरधार नीर बरसावत॥
गरजि मनहुँ रन ढोल बजाई। बिज्जुडोर युत धनुष उठाई॥
सायक सरिस बुंद बरसावत। परदेसिनचित मेघ दुखावत॥
तृन लस्सुनमनिखंड समाना। लसत पत्र केरन महं नाना॥
लागत धरनि बीरबहुटिन संग। धरे मनहु भूषन रंग रँग अँग॥
उत्सव मनहुँ मानि बनमोरा। पूंछ फुलाय करत कल सोरा॥
मिलि मोरिन संग करतबिहारा। नाचत भरे उमंग अपारा॥
बढ़त तीर के रूख गिरावत। मैलो नीर सवेग बहावत॥
पावस सरित सिन्धुपति पाहीं। कुलटासरिस झपटि अब जाहीं॥
नव अंकुर की घास सुहाई। बीच बीच हरिनिन की खाई॥
रूखन महं नव पल्लव सोहत। बिन्ध्य भूमि पावस मन मोहत॥
फेरत बन चहुंदिसि चंचलदृग। धावत घन बिलोकि इतउत मृग॥
फैलत रेत भूमि पर देखी। बनराजी छबि लहत बिसेखी॥
घन घमंड गरजत भयकारी। यद्यपि रैन घोर अंधियारी॥
बिज्जुजोति महं राह निहारत। रमनगेह अब नारि सिधारत॥
मधुर गंभीर मेघ अब गरजत। बिज्जुकड़कसुनिअब जिय लरजत॥
लेपरहित भूषनबिहीन हिय। बैठि उदास प्रवासिनको तिय॥
कंज सरिस दृगसन यहिकाला। परत अधर जलबुन्दबिशाला॥
मैलो अतिहि कीट रज संगा। चलत बक्रगति मनहुं भुजंगा॥

डर सन लखत भेक सरि तीरा। भरत खात महँ नवघननीरा ॥
गूंजत भंवर हरत रसिकनमन। रहि रसभरे खिले पंकजबन ॥
नाचत शिखि जब पूंछफुलावहिं। सोइसरोजभ्रमसनचलिआवहिं ॥
सुनि वनगज नव नीरदकीधुनि। मदमाते चिघरतसोइपुनिपुनि ॥
दान लसत कट पर तिनकेरे। लसैं भ्रमर के यूथ घनेरे ॥
नाचत शिखि नवनीरद झूमत। बार बार चोटी जनु चूमत ॥
झिरने चलत शैल चहुँ ओरा। लखि गिरि होत उमंगअथोरा ॥
केतकि अर्जुन कदम खिलावत। फूलन बास संग निज लावत ॥
मेघ परसि ह्वै ठंढ बयारी। केहि बिरहिहि नहिं करत दुखारी ॥
लसत इन्द्रधनु बिज्जु सोहाई। घन जल भरे गगन महँ छाई ॥
तिय नाना भूषण धरि अंगा। बिरहिन चित्त हरैं एक संगा ॥

केसर केतकि कदम की, माल धरैं सिर नारि।
ककुभमंजरी कान में, झुमका रचैं सवारि ॥
गंधफूल सजि केश महँ, चन्दन लाए देह।
सुनि घनधुनि तिय राति चट, चलत सैनके गेह ॥
चलत मंद जल बस झुके, लसत इन्द्र कर चाप।
नीलकमलरंग घन करै, बिरहिन मन सन्ताप ॥
होत कदम्ब कुसुम लसत, जनुसोइ पुलकित गात।
खिलत केतकीकी कली, मनहुँ हँसत मुसुकात ॥
हिलत पवन बस तरुन सन, जनु नाचत हर्षाय।
नवजल छिरकन पाय बन, निज तनताप नसाय ॥
कर्नफूल कानन रचै, बिकसे कंज सुहाय।
लै पुनि जूही की कली, बद्धी बिरचि बनाय ॥
गूंधि चमेली बीच बिच, मौलसिरी की माल।
धारत सिर तरुनीन के, नायक पात्रसकाल ॥
उभरे उर तरुनीन के, लसै कुसुम कर हार।
झलकत सित सारीन में, बिमल नितम्ब अकार ॥

जल भीजत ठाढ़ी कछुक, रोमावली बलीन।
पावसऋतु यहि बिधि रहैं, सुन्दरि नारि नवीन॥
चलत मन्द ह्वै सीत कछु, नवजलसेकन पाय।
झुके कुसुम के भार सन, तरुन नवावत बाय॥
धूरि केतकी फूल की, भरि फैलावति बास।
लागि बियोगिन के हिये, चित अति करत उदास॥
"द्रवत नीर के भारसन, गिरति हमहिं नितदेखि।
"धारतगिरिनिजसीसपर, करियहकृपाबिसेखि॥"
प्रबल घाम सन बिन्ध्य कहं, तपत मेघ जनुजानि।
बार बार सुख देन हित, अब बरसावत पानि॥
सुभग सकल गुनदेखि, जासु तरुनिनमन रांचा।
लता रूख तरु पात, मित्र सब बनकर सांचा॥
यह पावस सुखकन्द, लोक कर प्रानअधारा।
करै, प्रिया, सब पूर, भूप मनकाम तुम्हारा॥

शरद

(क्वार—कातिक)

कास चीर तन धरे, कमल सम बदन दिखावति।
मद बस कूजत हंस, मनहुं घुंघुरून बजावति॥
पके कछुक जो धान, सोई तन गोर जनावति।
मन मोहत यह सरद, सुघड़ दुलहिन सी आवति॥
चन्द्रकिरन सन रैन, कास फूलन महि सारी।
कोकाबेलिन ताल, हंस यूथन सर वारी॥
फूल भार सन नवत, ससछद सन वन छोरा।
रुचिर चमेलिन बाग, सेत लखियत चहुंओरा॥
नाचत चंचल मीन, हिलत करधनी बनाए।
लसत हंस उपकंठ; हार जनु गर लटकाए॥

भरे रेत शुचि कूल, श्रोणि की छबि परकासी ।
मन्द मन्द अब चलैं, सरित मदभरि प्रमदासो ॥
शंख नाल से सेत, कतहुँ चांदी के रंगा ।
हलुक होइ बिन बारि, होत घन छन छन भंगा ॥
उड़त पौन के साथ मेघ, सन नभ अब छाजत ।
नृप समान चहुंओर, चंवर डोलत से राजत ॥
धौरे नील सुरंग, अकाश अब लगै सुहाई ।
दुपहरिया के खिलत, भूमि छाई अरुनाई ॥
पकत धान की बालि, खेत सब लखियत गोरे ।
लखि तरुनन के चित्त, होयं अब उमंग न थोरे ॥
डोलत मंद बयार डार फुनगी कछु झूमत ।
छके किये मधुपान, भ्रमर फूलन जनु चूमत ॥
खिले फूल के गुच्छ, लसत पल्लव कछु सोहै ।
शरद माहिं कचनार, लाल सब कर मन मोहै ॥
भूषन पहिरि जड़ाय, खिलत नभ महं जब तारे ।
छटत मेघ अति बिमल, चंद निज बदन उघारे ॥
लसत बिमल अंग अंग, जोन्ह की उज्जल सारी ।
बाढ़त दिन दिन रैन, मनहुं श्यामा कोउ नारी ॥
उठत लहर हारील चोंच सन फारत नीरा ।
बत्तक सारस यूथ बैठि, नाचत मिलि तीरा ॥
चक्रवाक उत चलत, हंस कूजत मद भरि इत ।
परी कमल की धूरि, सरित मोहैं सब कर चित ॥
जोन्ह जाल फैलाय, सबन कर चित लुभावति ।
करि प्रसन्न संसार, ठंढ किरनैं बरसावत ॥
पिय बियोग की आगि, जिनहिं यहि अवसर जारै ।
तिनहिं आज यह चंद, जारि मानहुं फिरि मारै ॥
झुकी बालि के भार, शालि के खेत कंपावत ।

दबी फूल के बोझ, सेवती डार नचावत ॥
खिले कमल बन लसत, नलिनि चहुंओर हिलावत ।
शरदकाल को पौन, तरुनजन चित्त चलावत ॥
जल महं मद भरि हंस, चलत ठाढ़े कछु कूलन ।
भूषन सम जनु धरे, देह पंकज के फूलन ॥
मन्द प्रात के पौन, चलत कछु उठत तरंगा ।
लखि लखि यहि ऋतु मांह, होत मन प्रबल उमंगा ॥
इन्द्रधनुष यहि काल, मेघ बीचही हिराना ।
चमकत नहिं अब बिज्जु, उड़त नभ ध्वजा समाना ॥
नभ कहं बगुलियन यूथ, आज नहिं पंखन मारैं ।
मुख उठाये आकाश ओर नहिं मोर निहारैं ॥
छाँड़े नाच प्रयोग मोरकुल कहं अब त्यागत ।
गावत सुनि सुनि हंस; काम इनके तन लगात ॥
कदम कुरैया साल, छाँड़ि अर्जुन बन सारा ।
सप्तच्छदतरु माहिं, फूल की गई बहारा ॥
खिले नेवाड़ी फूल, रङ्ग अति लगै मनोहर ।
सुख सन बैठे डार, डार कूजत खग सुन्दर ॥
नील कमल से हरिन, नैन राजत एक ओरा ।
मोहत रसिकन चित्त, शरदऋतु महँ बन छोरा ॥
चलत बायु नित प्रात, ताल महं कमल हिलावत ।
पातन पर सोइ ओस, बूंद इत उत ढुलकावत ॥
जल परसत अति होय, सीत लै संग कछु सीकर ।
हरै चित्त नहिं भूप शरदऋतु केहि तरुनी कर ॥
पुर बाहर की ओर, धान की लखिय हरेरी ।
तालतीर धुनि सुनिय, हंस अरु सारसकेरी ॥
चरत घास कछु ढोर, बैठि कछु पागुर करहीं ।
खेत बाग बन सकल, शरद देखत मन हरहीं ॥

ललित तियन की चाल, आज हंसिन जनु पाई।
खिले कमल भे मंजु, प्रियामुख सरिस सुहाई॥
मद बस चितवनि चपल, नील कमलन छबि छोरी।
लहरन भृकुटि बिलास, लीन्ह मनहुं अंग तोरी॥
झुकी कुसुम के भार, शरद श्यामा की डारैं।
लहैं बांहछबि रुचिर नारि भूषन जब धारैं॥
लाल ओंठ की जोति सहित तियमुख मुसुकाना।
लसत निवाड़ि असोक माहिँ पावत उपमाना॥
टेढ़ी लटके बीच बीच तिय धरत चमेली।
कानन कुण्डल संग कमल पहिरं अलबेली॥
कछु चंदनरस लाय हार सन उरज संवारत।
कनककिंकिनी मंजु सुभग कटि ऊपर धारत॥
पहिरैं चरन सरोज रुचिर घुंघुरुन की माला।
ह्वै प्रसन्न यहि भांति देह साजैं अब बाला॥
खड़े हंस जल नील पर लसत कुमुद चहुं पास।
शशि तारन सँग ताल सम अब लखिपरै अकास॥

पाय के फूलन संग बहैं अब सीतल मन्द सुगंध बयारी।
मेघछुटे अति नील अकास दिसान के भाग गए सुखकारी।
भूमि पै कीच सुखानी चहूं दिशि तालन में गए निर्मल वारी।
तारे खिले नभ में लखिए पसरी शशिकी जग में उजियारी॥
नायकज्योंकरसों निजभानु जो प्रीतिसों आजुजगावत आई।
प्रात समै तरुनीमुख के सम तालन लेत सरोज जम्हाई।
डूबत देखि निशापति को अब कूंईके फूल मनौं दुख पाई।
होत है बंद बिदेश गये पिय भूप प्रियामुसुकानकी नाईं॥
नील सरोजन माहिं निहारत नैन पियारिन के कजरारे।
देखि के हंसकी कूजत पांति सुवर्णकीकिंकिनकी छबिधारे।
लाल दुपहया की पखरीन विलोकिकै ओंठनचेति बिचारे।

रोवत औ अकुलात फिरैं परदेसी वियोग की आगि के जारे॥
नील सरोज बनाए बिलोचन पंकज से सुचि आननवारी।
फूली जो कास लसैं महिपै पहिरे अतिसेतमनौंसोइ सारी।
कूंई फुलात मनौ मुसुकातसो कामिनिसीशरदामतवारी।
देइ अनंद अनूपम, भूप बनै सो, प्रिया, सुखमूरि तुम्हारी॥

हेमन्त

(अगहन—पूस)

लोध्र फुलावत धान पकावत। जवमहँ अंकुर रुचिर दिखावत॥
मूंदत कमल तुषार गिरावत। लखु हेमंत प्रिया, यह आवत॥
हरदी रंग अंग पर लाई। मुख पर रचि रचि चित्र बनाई॥
अगुर धूप सन केसहि बासी। भोग जोग अँग करत बिलासी॥
यहि ऋतु महं तिय अँगअलसानी। अब नहिं हंसैं बड़हु सुख मानी॥
फटे ओंठ मुख खोलत नाहीं। अवसरपाय कछुक मुसुकाहीं॥
हरिनिनिझुंड चरत एक ओरा। सारस कतहुं करत कलसोरा॥
निसरत बालि खेत महँ देखी। उपजत हिए उमंग बिसेखी॥
बिनरज निर्मल सीतल पानी। नीलकुंई चहुं ओर फुलानी॥
चलत मत्त कलहंस मराला। मोहत मन तड़ाग यहि काला॥
हिलत वायु बस बारहि बारा। है सीतल अति गलत तुषारा॥
पीयर परत कांक अब छिन छिन। ज्यों कोउ सतीनारि पीतमबिन॥
मधुर फूलमदसन बासे मुख। लहैं सोइ एक संग पिय तियसुख॥

छुटे केस दोउ नैन लाल जागत निसि सारी।
परी सेज एक ओर घाम सोवै एक नारी॥
मुरझानी बिन गंध खोलि फूलन की माला।
बांधति जूरो घाम बैठि एक सुन्दरि बाला॥
पुलकि उठत अँग अँग होत तन नस नस ढीली।
लावति उबटन तेल घाम महँ एक रसीली॥

रंगे पान रंग ओंठ मुदित दृग लटके बारन ।
पहिरै सारी लाल दबी एक छबि के भारन ॥
कुलकत सारस, परत तुषारा । तरुनिनचित्त लुभावनहारा ॥
पकवत धान खेत जग सारे । बढ़वै सुख हेमन्त तुम्हारे ॥

शिशिर

(माघ—फागुन)

पाकी शालि ऊँख चहुं ओरा । सारस करत मुदितमनसोरा ॥
करन जोग सब भोग अनन्दा । आयो शिशिरकाल सुखकन्दा ॥
किए गेह कोउ बन्द किवारे । मोटे वस्त्र अंग कोउ धारे ॥
कोऊ सीतबस थर थर कांपत । बैठत घाम आगि कोउ तापत ॥
शरदजोन्हयुत विमल अटारी । सीतल मन्द सुगन्ध बयारी ॥
चन्द्रकिरनसम सीतलचन्दन । यहिऋतुमहंभावतनहिंजनमन ॥
ह्वै सीतल अति बरसत पाला । मलिनतारभूषित यहिकाला ॥
होइ ठंढ शशिकर बस राती । नहि काहुहु यहि काल सुहाती ॥
मधुसन बदन सुबासित कीन्हे । पान गंधमाला कर लीन्हे ॥
अगर धूप बासे घर माहीं । भरी उछाह तरुनि अबजाहीं ॥
पहिरे रंगी कुसुमरँग सारी । आंगिन अंग कसे बरनारी ॥
बिच बिच फूल केस महं धरहीं । रुचिरसिंगारशिशिरमहंकरहीं ॥
जो दलमदसाधनहित डारत । निजउसासमनताहिनिवारत ॥
पीतम संग माघ की राती । पियैं मद्य जोबनमदमाती ॥

उतरत मद उनये कुचन कोउ तिय होत प्रभात ।
भोग चिन्ह निज अंग लखत हंसत गेह सन जात ॥
टूटी माल बिखरी लटैं बसे अगर सन केस ।
निसरत पिय के गेह सन कोउ एक नारि सुबेस ॥
धोए कनक सरोज सम धारे नैन बिसाल ।
लसत लटैं मुख पर खरीं श्रिय सम तिय यहि काल ॥

गुरु नितंब बस सिथिल तन लचकत कटि सुकुमार।
मन्द मन्द डोलत तरुनि उभरे कुच के भार॥
होत प्रात निसि सैन के जोग सुबसन उतारि।
दिवस काज के जोग अब धरैं बसन बरनारि॥
ऊख धान सोहत लए गुड़ उपजावन हार।
शिशिर काल सुख भोग के हित नित रहै तुम्हार॥

बसन्त

(चैत—बैसाख)

भंवर पांति धनु डोर किय बौरन तीछन बान।
कामिन चित बेधन चल्यो यह बसन्त बलवान॥
पवन सुगन्ध, सकाम त्रिय जल सरोज, तरु फूल।
सांझ सुहावन, दिन रुचिर सबयहिऋतु सुखमूल॥
मनि करधनी तड़ाग जल चन्दकिरन बरनारि।
बौर लसत आमन करै यह बसन्त सुखकारि॥
कुसुम रँग सारी लसत तियनितंब की छांह।
कुंकुम रंग की कुंचुकी लसै तरुनि उर मांह॥
चोटी पर नव मल्लिका लट अशोक, उर हार।
कर्णिकार कानन लसत सोभा लहै अपार॥
स्वर्ण कंज से मुखन पर चित्रसुरेख बिगारि।
मिलि मोतिन महँ कुचन बिच लखिय पसेऊ बारि॥
गोरे तन मद बस झुकत बार बार जमुहाय।
सुन्दरताफल लहन की चाह भरी रतिराय॥
सकल अँग आलस भरे मद बस बोलत बैन।
किए मदन तरुनीन के कुटिल तिरीछे नैन॥
कुंकुम केसर घोरि कै कस्तूरी के संग।
यहि मधु ऋतु महँ मद भरी चन्दन लावत अङ्ग॥

अगर धूप मृगमद बसे रंगे लाल रंग चीर ।
भारी बसन उतारि अब कामिनि धरत शरीर ॥
पिये मधुर रस पिक छुवत प्रिया बदन हरषात ।
बैठि कमल दल भ्रमरहूँ भँवरी संग बतरात ॥
झुके लाल दल आम तरु डोलत कुसुमित डार ।
देखि देखि तरुनिन हिये होत उछाह अपार ॥
जर सन मूंगे रँग लसत पल्लवयुत नव फूल ।
जोबनमाते के हिये उपजावत अब सूल ॥
मदमाते जनु भ्रमर फूल चहुँ दिशि लसि झूमत ।
सीतल मन्द बयार चलत नव पल्लव झूमत ॥
रुचिर माधवीकुञ्ज मञ्जु यहि काल निहारे ।
उठत बेग घबराय काम के बानन मारे ॥
रुचिर सेवती फूल गुच्छ मृदु मंज सुहाए ।
रमनीबदनसरोज सुछबि सोइ मनहु चुराए ॥
को अस चेतन जीवजन्तु अब, प्रानपियारी ।
काम पीर नहि होत जाहि यहि काल निहारी ॥
झुकी कुसुम के भार डार टेसू महि परसत ।
डोलत डोलत पौन आगि धधकत सम दरसत ॥
व्यापत जब यहि लोक मांहि मधुऋतु सुखकारी ।
लगै बधू सी भूमि लाल पहिरे जनु सारी ॥
सुआ चोंच सम टेसु कासु हिय नहिं अब फारा ।
कर्णिकार के फूल काहि यहि ऋतु नहिं जारा ॥
जो पिक बोल सुनाय बृष्टि विषकी जनु डारत ।
प्रियामुखन महँ लसत तरुनहिय फिरि फिरि मारत ॥
अति अनन्द सम फूलि बोल कोकिला सुनावत ।
मद भरि कूंजत भृङ्ग पुंज फूलन जब गावत ॥
निपट लजीली बहुत बड़े कुलह्न महँ यहि छन ।

सुनि सुनि छूटत धीर होत चञ्चल व्याकुल मन ॥
लसी बौर के पुंज आमकी डार हिलावत ।
कोकिल के कल बैन लोक चहुँ दिशि फैलावत ॥
मोहत तरुनन चित्त बहै यहि समय बयारी ।
बिते शिशिर कछु मिटत ठार है अति सुखकारी ॥
खिलत कुन्द कँ फूल भईं अति मंजुल बागैं ।
सहित सकोच बिलास तरुनि हांसी सी लागैं ॥
मोहत छांड़े विषय राग मुनिमन सोई देखे ।
रागविषय महं लीन युवन के चित कहि लेखे ॥
हुनकिंकिन कटि बांधि हार उर पर लटकाए ।
बाढ़त प्रबल अनंग अङ्ग सब अल अलसाए ॥
झौंरत भौंरन पांति मधुर कोकिल जब कूकत ।
हरन हेत नर चित्त नारि यहि ऋतु कब चूकत ॥
चोटिन पर चहुं ओर रँग रँग फूल फुलाने ।
कुहकत कोकिल तरुन कुंज भीतर हरषाने ॥
पाथर ढेरिन बीच परो शैलेय घनेरा ।
यहि ऋतु लखत पहार लेत हरि मन सबकेरा ॥
रोवत सोचत बैठि नैन मूंदत अकुलाई ।
चिघरत फेरत बदन हाथ सन नाक दबाई ॥
जे तलफत तियबिरहआगिसायक के लागे ।
लखि लखि बौरे आम आज परदेसि अभागे ॥
एक दिशि भृङ्ग गुंजाय, एक दिशि पिक कुहकावत ।
कहूँ आम बौराय, कहूं कठचम्प खिलावत ॥
अबलन कहं लखि करत मान मारत तीछन शर ।
तानि तानि हिय माहँ मदनअनुचर कुसुमाकर ॥
चम्पाकलि सिर गूँधि केस महँकत अब नारी ।
बहत जाय नित परत ओस कछु ठंढ अटारी ॥

फूल गिरावत हेम रँग लखि बौरे तरु आम ।
लगे मदन सर ह्वै विकल गिरैं पथिक तन छाम ॥
टेसू कलीकी बनाए कमान रसालकी मंजुल मंजिर लै सर ।
भौरन पांतिकी डोर कसे अति निर्मल छत्र लगाए सुधाकर ॥
दक्खिन वायु गयंद सवार पुकारत जै पिक बन्दि चढ़ेस्वर ।
संग लिए कुसुमाकर मंगल नित्य तुम्हारे करैं रतिनागर ॥
दिखराय मूँगे रँग पल्लव हँसत जनु करकमल को ।
विकसाय कुन्दकलीन चमकत दसनकी छवि अमल को ॥
अति मधुर कोकिल बैन सन मृदु बोल सोभा हरत है ।
तरुनीन संग ऋतुराज नागर होड़ मानहुँ करत है ॥
अति गोर सुबरन रंग कमल समान बदन देखाय कै ।
गर लसत फूलन हार उर श्रीखण्ड सुरस लगाय कै ॥
कछु झुकी उरके भार मद भरि सौंह तिय जब आवहीं ।
हिय लगत लोचन बान सोइ मन मुनिहुंकर ललचावहीं ॥
सुनि कुहुक कोइल की रुचिर मनभावनी धुनि भृङ्गकी ।
गंभीरता सब छुटत तन महँ पीर उठत अनंगकी ॥
पिक कुहुक पौन सुगंध निर्मल जोन्ह सांझ सुहावनी ।
मद पान निसि, गुंजत भँवर सब बात रतिपति की बनी ॥
तरु छांह ढूंढत दिवस महं निशि जोन्ह निर्मल सब चहैं ।
चढ़ि अटन सोवत ठंढ बस उर लाय तिय जन सुखलहैं ॥
कोकिल कुहुकत चित्त लुभावत । चहुंदिशिमलयसमीरबहावत ॥
तरुरस चुवत गंध सुचिपावत । घेरे ताहिं भ्रमर जनु गावत ॥
यह ऋतुराज सुकाल बसन्ता । मुद मङ्गल तव करै अनन्ता ॥

इति श्री अवधबासीभूप उपनाम सीताराम कृत
ऋतुसंहारभाषाकाव्य समाप्त हुआ ।